संगीतशास्त्र.

छपावी प्रसिद्ध करनार

राजकवि नथुराम सुदरजी शुक्ल.

भावनगर, पोरबंदर, लींबडी

तथा

वांकानेरना राजकवि.

संवत १९७४ सने १९१८

प्रथमावृत्ति. प्रत. १०००

मूल्य रा. ५-०-०.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्पणपत्रिका.

अखंड प्रौढ प्रताप गौ ब्राह्मण प्रतिपाल काव्य संगीतादि ललित कला-विलासी नेक नामदार ठाकोर साहेब श्री १०८ दोलतसिंहजी बहादुर.

स्व. लींबडी.

कृपासिन्धु !

आप नामदारनो बाल्यवयथीज संगीत उपरनो प्रेम प्रातः स्मरणीय महाराजा जामसाहेब श्री विभाजी जामना सहवासथी तेमज संगीताचार्य आदित्यरामजी जेवाना परम गुणज्ञ कुटुंबना परिचयथी दिनप्रतिदिन वृद्धि पामतो रह्यो छे ए हुं लांबा समयथी आपना सहवासमां होइ जोइ शक्यो छुं.

आपना हर वखतना काव्य सबंधी तेमज संगीत सबंधी विचारोथी वाकफ थइ आ "संगीतशास्त्र" नामे पुस्तक में तैयार कर्युं; अने आपश्रीए तेनो स्वीकार करी उदार मनथी जे मदद आपी छे तेना स्मरण चिन्ह तरीके आ पुस्तक हुं आपनेज अर्पण करी कृतकृत्य थाउं छुं.

ली. भवदीय.

कवि नथुराम सुंदरजी शुक्ल.

वांकानेर निवासी.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संगीत शास्त्र.
अनुक्रमणिका.

विषय.		पृष्ठ.
संगीत लक्षण	....	१
पिंडोत्पत्ति	....	२
नादनां स्थान	....	१७
श्रुति	....	१७
स्वर	....	१९
स्वर स्थान	....	२०
षड्ज स्वर स्वरूप	....	२१
रिषभ स्वरूप	....	२२
गान्धार स्वरूप	....	२३
मध्यम स्वरूप	....	२३
पञ्चम स्वरूप	....	२३
धैवत स्वरूप	....	२४
निषाद स्वरूप	....	२४
अन्यमतानुसार स्वरोत्पत्ति	....	२५
स्वरजन्मतिथि	....	२५
स्वरजन्मनक्षत्र	....	२६
स्वरकुलदेवी	....	२६
स्वरऋषि	....	२६
स्वरगोत्र	....	२७
स्वरग्रहप्रमाण	....	२७
स्वरगुणागुण	....	२७
स्वरऋतुभेद	....	२८
स्वरानुमान	....	२८
स्वररसप्रमाण	....	२९
स्वर विकृत	....	२९
विकृत स्वरसंख्या	....	३०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विकृत स्वर विधान ३०
संगीतपारिजातानुसार विकृतभेद ३२
अनोपविलासानुसार विकृतभेद ३४
विकृत स्वर विषे विशेष समजुती ३६
स्वरमित्रशत्रुभेद ३८
ग्रामविचार ३९
ग्रामदेवता ४०
ग्रामोत्पत्ति ४०
मूर्छना ४०
मूर्छनादेवता ५०
शारीरवीणाना ग्रामोनी मूर्छना ५२
तान ५२
वर्णविचार ५८

अलङ्कार

स्थाइगत अलङ्कार ६१
आरोही अलङ्कार ६५
अवरोही अलङ्कार ७२
संचारी अलङ्कार ७५
अलङ्कार सप्तक ८६
अलङ्कार पञ्चक ८९
मेल ९१
गमक १००
गान गति भेद १०४
वीणा विचार—स्वर स्थान १०५
स्वग जाति १०७
गीत १११
गीत जाति ११२
विकृत जाति ११७
कपालगीतोत्पत्ति १२६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कंबल गीतोत्पत्ति १२९
सामान्य गीति-लक्षण १३०
मद्रकादि गीत-लक्षण १३३
ताल १३४
ताल प्राण-नाग १३४
काल-प्राण १३५
मार्ग-प्राण १३६
क्रिया-प्राण १३९
अंग-प्राण १४१
ग्रह-प्राण १४६
जाति-प्राण १४७
कला प्राण १४८
लयं प्राण १४९
यति प्राण १५०
प्रस्तार प्राण १५४
षट्पितापुत्रादिक मार्ग ताल १९४
देशी ताल १९६
भिन्न भिन्नमतानुसार राग लक्षण २०७
संगीतरत्नाकरानुसार गीतिभेद २०७
भात्रभट्टमतानुसार राग भेद २०९
सारंगदेवमतानुसार रागभेद २१०
नव राग भेद संख्या २१२
शुद्धादिक पंच गीति राग भेद २१२
याष्टिकमतानुसार मुख्य उपराग भेद २१४
याष्टिकमतानुसार गौण उपराग भेद २१५
भाषा राग भेद २१५
अन्य सकल आचार्य मतानुसार भिन्न भिन्न रागोना भिन्न
भिन्न भाषा विभाषा अन्तर भाषा राग २१६
प्राचीन रागांग रागनाम २२२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्राचीन भाषांग रागनाम	....	२२२
प्राचीन क्रियांग रागनाम	....	२२३
प्राचीन उपांग रागनाम	....	२२३
अर्वाचीन रागांग रागनाम	....	२२३
अर्वाचीन भाषांग रागनाम	....	२२३
अर्वाचीन क्रियांग रागनाम	....	२२४
अर्वाचीन उपांग रागनाम	....	२२४
संगीतपारिजातानुसार सामान्य रागनाम	....	२२५
संगीतरत्नाकरानुसार नाटसंख्या	....	२२६
अनोपविलासानुसार नाटसंख्या	....	२२७
याष्टिकमतानुसार कान्हडा संख्या	....	२२७
अनुष्टुप चक्रवर्तीमतानुसार भैरवसंख्या	....	२२७
भिन्न राग	....	२२८
संगीतरत्नाकरानुसार राग तथा रागिणी	....	२३१
हनुमतमतानुसार षडरागोत्पत्ति तथा लक्षण	....	२९०
गायकनां नाम तथा लक्षण	....	३३७
अन्यमतानुसार गायकप्रकार	....	३३८
गायक दोष	....	३३९
गायक गुण	....	३४१
वाद्य	....	३४३
वीणामहात्म्य	....	३४५
वीणावादकनां लक्षण	....	३४५
वीणा शीखनार उत्तम तथा अधम शिष्यनां लक्षण	....	३४६
वीणा धारण विधि	....	३४६
वीणा वादन विधि	....	३४७
दक्षिण भुजना नव व्यापार	....	३४९
वाम हस्तना द्वय व्यापार	....	३५०
उभय हस्तना त्रयोदश व्यापार	....	३५१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वीणा हस्त ३५४
वादन ३५४
वादन प्रकार ३५६
अन्यमतानुसार चतुर्वीणालक्षण ३५६
वीणा करण लक्षण ३५७
करण भेद ३५७
वीणा धातु करण तथा धातु भेद ३५९
गुरुरहित चतुर्धातुलक्षण ३६४
वृत्ति लक्षण ३६६
वाद्य विचार ३६८
शुष्क वाद्य लक्षण ३६८
शुष्क वाद्यनां दश भेदनां नाम तथा लक्षण ३६९
यथाक्षर द्विसंख्यात, त्रिसंख्यात लक्षण ३७१
ब्रह्म वीणा लक्षण ३७२
तौम्बुरी वीणा लक्षण ३७२
स्वरमंडल वीणा लक्षण ३७३
मत्तकोकिला लक्षण ३७४
रावणहस्त वीणा लक्षण ३७४
पिनाकी वीणा लक्षण ३७४
किन्नरी वीणा लक्षण ३७५
दंडी वीणा लक्षण ३७५
किन्नरी वीणा भेद ३७६
लघु किन्नरी वीणा लक्षण ३७६
बृहत् किन्नरी वीणा लक्षण ३७७
देशी किन्नरी भेद तथा लक्षण ३७८
एक तंत्री वीणा ३७९
सारंगदेवमतानुसार रुद्रवीणाभेद ३८१
शुद्धमेल वीणालक्षण ३८१
मध्यमेल वीणालक्षण ३८१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्धमेलवीणा प्रथम भेद	....	३८२
शुद्धमेलवीणा द्वितीय भेद	....	३८५
शुद्धमेलवीणा तृतीय भेद	....	३८६
शुद्धमेलवीणा चतुर्थ भेद	....	३८८
मध्यमेलवीणा लक्षण तथा प्रथम भेद	....	३९०
मध्यमेलवीणा द्वितीय भेद	....	३९१
आनद्ध वाद्यनां लक्षण तथा भेद	....	३९४
पटहभेद तथा तेनां लक्षण	....	३९४
पटह पाठाक्षर	....	३९५
हस्त पाठ भेद	....	३९८
अन्य षोडश हस्त	....	३९९
अष्टा पाठ हस्तक	....	४००
पाद्व चरास भेद	....	४०१
गमक रचनाना त्रयोदश भेद	....	४०४
वाद्य प्रबन्ध भेद	....	४०७
मृदंग	....	४१६
मृदंगना शुद्ध पाटाक्षर	....	४१६
कूट पाटाक्षर	....	४१७
अकारादि स्वरोनां उदाहरण	....	४१७
पाठ रचना	....	४१७
पाठ प्रस्तार	....	४१७
अन्य पाठ उदाहरण	....	४१८
मृदंग वादक लक्षण तथा तेना भेद	....	४१८
स्थापन	....	४२०
टाकणी वादन लक्षण तथा भेद	....	४२०
हुडुक्का लक्षण	....	४२१
हुडुक्क लक्षण	....	४२२
करटा लक्षण	....	४२२
घडा लक्षण	....	४२२

घडसलक्षग ४२३
ढवसलक्षण ४२३
ढक्कालक्षण ४२३
कुडुवालक्षण ४२४
रुंजालक्षण ४२४
डमरुलक्षण ४२५
चक्रवाद्य लक्षण ४२५
रवावहलक्षण ४२५
दुन्दुभिलक्षण ४२६
डंकालक्षण ४२७
मंडीडक्कालक्षण ४२७
डक्कुलीलक्षण ४२८
सेल्लुकालक्षण ४२८
झल्लरीलक्षण ४२९
त्रिवलीलक्षण ४२९
घोंसालक्षण ४२९
भेरीलक्षण ४३०
निशानलक्षण ४३०
तंवकीलक्षण ४३१
सुषिर वाद्य लक्षण तथा तेना भेद ४३१
वंसी लक्षण ४३२
अन्य आचार्यमतानुसारवंसीप्रमाण ४३३
अन्यमतानुसार वंसी हस्त ४३६
वंशीधारणविधि ४३६
अन्यमतानुसार स्वरोत्पत्ति ४३६
मुखपवनानुसार स्वरभेद ४३७
पावा लक्षण ४३८
पाविका लक्षण ४३८
मुरली लक्षण ४३८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मधुकरी लक्षण	.... ४३९
काहल लक्षण	.... ४३९
तुंडकिनी लक्षण	.... ४३९
चुक्का लक्षण	.... ४४०
शृंग लक्षण	.... ४४०
शंख लक्षण	.... ४४०
सुनारि लक्षण	.... ४४०
नागसर लक्षण	.... ४८१
मुख वीणा लक्षण	.... ४४१
चंग लक्षण	.... ४४२
पत्रिका लक्षण	.... ४४२
स्वरसागर लक्षण	.... ४४२
वक्रीरण श्रंग लक्षण	.... ४४३
चतुर्विविवाद्यगुण तथा तेमनां लक्षण	.... ४४३
वादुक लक्षण	..... ४४७
वादुक हस्त गुण	.... ४४७
फुत्कार लक्षण तथा तेना भेद	.... ४४९
घना लक्षण	.... ४४९
फुत्कार विकार लक्षण	.... ४५१
फुत्कार दोष भेद	.... ४५१
वंसी वादकगुण	.... ४५२
घन वाद्य लक्षण	.... ४५३
घन वाद्य भेद तथा तेनां लक्षण	.... ४५३
चतुर्वाद्य भेद	.... ४५५
नर्तन भेद	.... ४५६
नर्तक भेद	.... ४५७
नृत्यमंदिर लक्षण	.... ४५९
सभा लक्षण	.... ४५९
सभापति लक्षण	.... ४६०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आचार्य लक्षण ४६०
संप्रदाय लक्षण ४६०
संप्रदाय भेद तथा तेनां लक्षण ४६१
शुद्ध पद्धति लक्षण ४६२
पेरुणी लक्षण ४६२
तांडव लक्षण ४६३
अंगहार लक्षण तथा तेना भेद ४६३
नृत्तकरण तथा तेना भेद ४६४
लास्य लक्षण तथा तेना भेद ४६६
मार्गी लास्य भेद ४६६
देशी लास्य भेद ४६७
संगीतसारानुसार मार्गी द्वादश लास्यांगनां लक्षण ४६७
श्री अशोकमल्लकथित देशी सप्तत्रिंश लास्यांग ४७०
१ चाली. २ आलीवड. ३ सुक. ४ मनम् ५ लढी ४७०
६ उरोङ्गण ७ ढिल्लाइ ८ त्रिकली ९ फितु १० देशीकार ४७१
११ निजायत १२ उल्लाससंग १३ धसक १४ भाव
१५ सोपहास्य ४७२
१६ संघतलय १७ ढाल १८ छदा १९ अंगहार
२० लंघित २१ विहस ४७३
२२ नीकी २३ नमानिका २४ शंका २५ वितड
२६ गीतवाद्यता २७ निर्वन २८ थरहर २९
स्थापना ३० सौष्ठव ३१ स्तुवा ४७४
३२ मसृणत ३३ उपार ३४ अंगानंग ३५ अभिनय
३६ कोमलिका ३७ मुखरी ४७५
नृत्य वृक्ष ४७५
निर्णय ४७६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अमारा पुस्तको.

झाळावंश वारिधि (विविध व्यावहारिक विषयोथी भरपुर झाला राजाओनो इतिहास)	किंमत रुां. १२-०-०
नाटयशास्त्र- (अभिनय कळानो अद्वितीय ग्रन्थ)	किंमत रु. ५-०-०
काव्यशास्त्र- (श्राव्य काव्यना दशे अंगो सहित)	५-०-०
नथुरामकृतकाव्य संग्रह (परचुरण रसमय काव्योथी भरपुर)	२-०-०
श्रृंगारसरोज (रसप्रद श्रृंगारकाव्यनोसंग्रह)	१-०-०
प्रतापप्रतिज्ञा (वीर तथा श्रृंगार रसथी भरपुर नाटक)	१-०-०
श्रीकृष्ण बाललीला संग्रह (श्रीकृष्ण परमात्मानी बाल-लीलाओनुं वर्णन)	१-०-०
विवेकविजय (सरलताथी समजाय तेवो आध्यात्मिक ज्ञाननो अपूर्व ग्रन्थ.)	१-०-०

नाटको

१	हरिश्चन्द्र	०-२-०
२	माधवकामकन्दला	०-२-०
३	राजयोगी	०-२-०
४	कुमुदचन्द्र	०-२-०
५	हलामण	०-२-०
६	लालखांनी लुचाइ	०-२-०
७	गुमानसिंह	०-२-०
८	भक्तकुटुंब	०-२-०
९	कबीरविजय	०-२-०
१०	सती सरोजनी	०-२-०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रस्तावना.

चैतन्यं सर्वभूतानां विवृतं जगदात्मना ।
नादब्रह्म तदानंदमद्वितीयमुपास्महे ॥

सं० र० १, ३, १.

वंदे नादतनुं तमुद्धुर जगद्गीतं मुदे शंकरम् ॥

सं० र० १, १, १.

जेने शैव कहे महान **शिवजी**, **वेदांतियो ब्रह्म** ने,
न्यायी शास्त्रतणा प्रमाणपटुओ **कर्त्ता** कहे जेमने ;
अर्हन्नित्य ज जैनशास्त्र वदतुं, **कर्मेति** मीमांसको,
बौद्धौ बुद्ध कहेज, **योग** करता जोइ कहे **इश** छे ; १
सांख्योना करता कहे **पुरुष** जे **विज्ञान विज्ञानीओ**.
वादी **काळतणा** तमाम वदता **कालस्वरूपेज** ए,
ए रीते सहु शास्त्रवाद पटुओ, स्थापी कहे जेमने,
नादब्रह्म कही उपासन करुं आपे अति प्रेमने,

(बरवे).

आङ्गिकं भुवनं यस्य, वाचिकं सर्व वाङ्मयम् ।
आहार्य चन्द्रतारादि तं नुमः सात्विकं शिवम् ॥

सं० र० ७, १.

ततं येनावनद्धंच भुवनं निजमायया ।
आनन्दघन मध्येपि, तं ब्रह्म सुषिरे हरम् ॥

सं० र० ६, १.

नाना मार्गैर्लयो यत्र, यतीनां स्यात्कलानिधौ ।
तं दक्षिणं शिवं नौमि, चित्रं वृत्तिमयं ध्रुवम् ॥

सं० र० ५, १.

ब्रह्मात्मेज विवर्त्त एक उपजी **माया** खडी त्यां थइ,
ते माया सह शुद्ध चेतन थकी **चिद्ग्रन्थि** त्यां जे बनी ;
इशानीश समष्टि व्याष्टि रचना **चिद्ग्रन्थिथी** विस्तरी,
ब्रह्मग्रन्थितणीज एह समशा संगीत शास्त्रे वदी. १

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

ब्रह्मग्रन्थिमहींज इक्षण थइ, चित्तें बनी एषणा,
चित्ते व्याष्टि समष्टि तत्व अनिलोने त्यां करी प्रेरणा ;
एथी ते अनिलो सहु प्रकटोंने तत्वें थइ घर्षणा,
शब्द ब्रह्म थइज नाद प्रकटया, आनंद व्याप्या घणा. २
एथी गीत ज वाद्य, नृत्य प्रकटी संगीत त्यां तो बन्युं,
आ ब्रह्मांड समस्त नाटय रुप थइ नाना रुपे विस्तर्युं ;
जेना ग्राम, विभाग, राग रुप जे आलाप, तालो क्रमे,
वंदुं नाद स्वरुप ब्रह्म विभु जे अर्पे सदा मोहने.

(बरवे)

सच्चित आनंद नाद ब्रह्म विभु जामें विश्व विवर्त्त भयोरी,
व्यष्टि समष्टिज ब्रह्मग्रन्थिसें नाद, शब्द, रस, स्थूल बन्योरी ;
प्रातिभ काव्य कला अरु संगीत, आत्माके चिद अंश सुहेरी,
विश्व विवर्त्त गणेश प्रभूको, आपमें आप समाय रहेरी. १.

(बरवे).

स्वर, व्यंजन, पद, संधि सब, जाके भूषण रूप ;
नमुं अक्षर नादात्म जो, नाद शब्द, रस रूप. १.
शब्द नादसें होत है, पद सब शब्दाधीन ;
पदसें भाषण होत है, जगत नाद आधीन, २.
गायन वादन नृत्य रुप, सुंदर विश्व प्रपंच ;
श्रुति, स्वर, रागालाप, लय, गद्य, पद्य सह बंध. ३.
संगीत, काव्य, कला सभी, जाके भूषणभुत,
वो मुद नाद ब्रह्ममें, नाद, शब्द, रसरूप. ४.
सुंदर मनहर विश्व सब, मेरा अल्प विवर्त्त
नाद ब्रह्म गणेशसें, करे जगत सब नृत्य. ५,

(बरवे).

समस्त कच्छ, काठीयावाड अने गुजरातना घणा खरा भागमां प्रसिद्धिने पामेला **कविराज नथुराम सुंदरजी शुक्ल** एमणे आ **संगीत शास्त्रनो** ग्रंथ रचीने गुजराती भाषा जाणनार वाचको उपर अति उपकार कर्यो छे. गुजराती भाषामां प्राचीन संगीतनी परंपरावाळा ग्रंथोनी घणीज खोट छे. अत्यार सुधी एवी

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

परंपरावाळो एक पण ग्रन्थ गुजराती साहित्यमां रचायेलो नथी, आ ग्रंथथी तेमणे पहेल करीने गुजराती साहित्यमां अगत्यनो वधारो कर्यो छे एम दरेक जण कबुल करशेज. संगीत ए केवडुं विशाळ शास्त्र छे, तेनी अंदर केटकेटलां शास्त्रोनो विचार करवामां आवे छे, प्राचीन काळमां ए शास्त्र उपर केटकेटला विचारकोए प्रयत्न करी कया कया ग्रन्थो रची राखेला छे अने तेमां साधारण रीत्या कया विषयोनो केवी दृष्टिथी विचार करवामां आवेलो छे ए सर्व विषयोथी गुजरातनी प्रजा केवळ अज्ञ छे. प्राचीन संगीत अने तेनां सर्व अंगो प्राचीन संगीत रसिकोए केवी रीतथी शणगारी राखेलां छे ते विषेनो ख्याल संपूर्ण अंशे आ ग्रंथनां अवलोकन उपरथी सारी रीते थइ शकशे. प्राचीन संगीत अने अर्वाचीन प्रायोगिक संगीतमां हवे घणो फेरफार थइ गयो छे. आपणा हमणाना व्यवहारमां जे रागरागणीओ सांभळीए छीए तेनां स्वरुपो घणांज फरी गयां छे. जेथी प्राचीन ग्रंथोक्त संगीत अने वर्त्तमान प्रायोगिक संगीत, ए बंनेनो मेळाप करी वर्त्तमान समयने माटे एक व्यवहारु संगीतनो ग्रंथ रचवानी घणी जरुर छे. एवो ग्रंथ रचवो ए दीर्घ परिश्रम, शोध, संगीतनो गायक तरीकेनो निगूढ अनुभव अने हिंदुस्तानमां आज सुधी कया कया आचार्यो, गुणीओ अने तत्वज्ञोए केटला रागो अने तेनी गीतिओ रचीने तेमां स्वरसौंदर्य, कालसौंदर्य अने रागसौंदर्य केवी रीतनुं राखेलुं छे एनो अनुभव करी, तेनुं सतत पृथक्करण करवा उपर आधार राखनारी बाबत छे, अने ते कंइ एकज व्यक्तिनुं काम नथी. तो पण प्राचीन संगीत ग्रंथ रुपे केवा प्रकारनुं हतुं तेना संपूर्ण प्रतिबिंब तरीके कविराजे रचेला आ ग्रंथने गणी शकाशे. आ ग्रंथनी रचना करवामां कविराजे अनेक संस्कृत ग्रंथनो तेम प्राकृत प्राचीन ग्रंथोनो आधार लीधो छे. अने तेमनाथी बनी शक्युं त्यां सुधी वर्त्तमान प्रायोगिक संगीतमां वपराता राग तालनां स्वरुपो यथास्थित आप्या छे, के जे प्रशंसनीय छे.

आ ग्रंथनी प्रस्तावना लखवा माटे कविराजे म्हने फरमाव्युं, अने ए फरमान माथे चढावी, आ ग्रंथमां आवेला दरेक विषयनां स्वरुपोना संबंधमां खरी वस्तुस्थिति शी छे तेनुं भान गुजरातने आ लेखद्वारा करावावनुं म्हें सुयोग्य धार्युं छे, अने बनी शके त्यां सुधी संगीतना समग्र प्रदेशनुं सिंहावलोकन कराववुं एमां म्हने म्हारा शास्त्र प्रत्येनो म्हारो उंडो स्वार्थ पण तेम करवा दोरी जाय छे ; अने भविष्यना काळनो प्रेमसौंदर्यरुप सुचिन्हित आशावाळो योग्य समय आवतां, कोइ हरिनो लाल, म्हें अत्रे सूचीत करेली सुधारणाओ अने उन्नतिओने हाथमां लइ ते

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रमाणे संगीतनां शास्त्र अने कलाने खीलवी परार्थमां रमणीय स्वार्थ साधे ए घणे अंशे शक्य छे.

अने एक बाबत विषे म्हारे खास जणाववुं घटे छे ते ए के प्राचीन काळथी ते आज सुधी संगीतना जेटला ग्रंथो रचाया हशे, तेमांना जेटलानी नोंध लइ शकाइ छे तेनी संक्षिप्तमां ऐतिहासिक यादी आ प्रस्तावनामांज आपवानुं म्हें योग्य धार्युं छे. अने तेम करतां लेखनो विस्तार घणो थाय तो ते अस्थाने छे एम कही शकाशे नहीं. परंतु ए ऐतिहासिक माहिती आपवा पूर्वे संगीत अने तेनी सहचरीरुप सूक्ष्म ललित कलाओ, ते सर्वमां संगीत कलानी श्रेष्ठता संगीतमां कयां कयां शास्त्रो अने अंगोनो विचार करवामां आवे छे, ए बधाना संबंधमां खास टुंकामां माहिती आपवी योग्य छे. ते आप्या पछी, अने संगीतना लगभग ३१० ग्रंथो महा कालाब्धिमां डुबकी मारी गएला हता तेनुं सपाटी उपर दर्शन कराव्या पछी, वर्तमानमां संगीतना दरेक अंगोनी शी परिस्थिति छे तेनुं टुंकामां दिग्दर्शन करावी, आ ग्रंथनी योग्यता तपासी कविराजनो यत्न केटले अंशे सफळ थयो छे ते तपासवुं योग्य थइ पडशे. संगीतना मुख्य आत्मारुप रागनो विषय छे. ए विषे शास्त्रीय रीत्या निर्णय आज सुधी कोइए पण कर्यो नथी. जेथी नादशास्त्र रीत्या जे सिद्धांतो उपर लक्ष्य आपी निर्णय थवो जोइए, ते रीते लगभग १२८ रागोनो निर्णय करी तेना आरोही, अवरोही स्वरो, ग्रह, अंश, न्यास अने समयनुं कोष्टक आपवामां आवेलुं छे, के जे संगीतना अभ्यासीओने तात्कालिक उपयोगी छे. ए उपर सघळा संगीतचिंतकोए मनन करवानी खास जरुर छे. संगीतना सुधारणा अने उन्नतिना कया उपायो छे तेनुं पण बनी शकशे तो दिग्दर्शन कराववामां आवशे. ए उद्देश प्रमाणे हवे क्रमप्राप्त संगीत अने तेनी सहचरीरुप इतर ललित कलाओनां स्वरुपो अने तेमना परस्पर संबंध विषे विचार करीए.

संगीत अने तेनी सहचरी रुप ललित कलाओ.

संगीत ए महान पवित्र अने दैवी कला छे. तेनी व्याप्ति विश्वमां सर्वत्र जोवामां आवे छे. दरेक प्राणी, पदार्थ अने समग्र सृष्टि दरेक क्षणे जे जे भावो बतावे छे ते ते क्षणे तेओ संगीतज करे छे, जेवो भाव स्थूल के सूक्ष्म होय ते प्रमाणे संगीत मानुषी के दैवी स्वरुपे जणातुं रहे छे, चित्र, शिल्प, काव्य, नाटय, गान, वादन, नृत्य अे बधी कळाओ मूळ स्वरुपे तो एकज छे, जे भाव जे प्रकृति द्वारा प्रत्यक्ष थाय, ते प्रकृतिना स्वरुप उपरथी आ अमुक कला प्रत्यक्ष थइ एम

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कहेवाय छे, शक्ति सर्वत्र तो एकज छे; परंतु ते जे द्वारा प्रत्यक्ष थाय छे ते प्रमाणे त्हेनां भिन्न भिन्न नामो पडे छे. रसायनिक शक्ति, गुरुत्वाकर्षण, अण्वाकर्षण, विद्युत् चुंबन, प्रकाश, उष्णता, ध्वनि अने छेल्ले चित्‌शक्ति ए सघळां एकज शक्तिनां भिन्न भिन्न नामो छे. ए नामो ते शक्ति जे पदार्थरचनाद्वारा व्यक्त थाय ते प्रमाणे जुदां जुदां आपवामां आवे छे. संगीत अने तेनी सहचरीरुप चित्र, शिल्पादि ललित कलाओनुं पण तेमज छे. दरेक कलानो भेद स्थूलत: अमुक मर्यादाने लइनेज पाडवामां आवे छे, ते मर्यादाओ कइ छे अने दरेक कलाने परस्पर शो संबंध छे ते विषे संक्षिप्त जणावीए छीए.

आपणा शास्त्रकारोए **गायन, वादन,** अने **नर्तन** ए त्रणे क्रियाओ थवाथी जे एक संमिश्र रुप थाय छे तेनेज **संगीत** कह्युं छे. साधारण बोलवामां शुं थाय छे त्हेनो जराक सूक्ष्मताथी विचार करीशुं तो जणाइ आवशे के, आपणा मनमां अमुक—चोक्कस भावना उभी थइ छे अने ते ज्यारे शब्दोथी बीजाने समजाववी पडे छे त्यारे, भावनाने वहन करनारा उच्च नीच स्वरो, ए भावनाना मार्दव प्रमाणे साथे साथे उत्पन्न थाय छे. जेम स्वर उत्पन्न थाय छे तेम, ते स्वर जेटला काळ सुधी स्थिर करवो पडे छे ते काळ ए पण भावनानो वाहक के उत्तेजक बने छे. आ उपरांत ए भावनाना स्वरुप प्रमाणे शरीरथी पण अमुक भाव (एक्टींग) करी बताववो पडे छे. एटले के, साधारण बोलवा चालवामां पण मूळ **भावना,** ते भावनाना बोधक **शब्दो,** ए शब्दने वहन करनार उद्दिपक **स्वरो.** ए शब्द अने स्वरोनो **काळ** अने तदनुरुप शरीरनुं **चलन—भाव** के एक्टींग ए बधा अंशो समरुप बनी, परस्पर वाहक बनी, भावनारुप मूर्तिने शणगारवाने प्रयत्न करे छे. आटली बधी क्रिया थाय छे त्यारेज आपणा भाषणनो व्यवहार संपूर्ण रीते प्रवर्ते छे. ते विना नहि. आ बधामांथी एक पण अंश कमी होय. छे तो बोलनारनो भाव, अने तेनी असर (छाप), जेवी जोइए तेवी सामा माणसना मन उपर स्पष्टपणे पडी शकती नथी. संगीतनुं पण तेमज छे.

कोइ पण साहित्य के काव्य बोलवुं होय तो ते काव्यनो जे भाव, अर्थ के रस हशे, तेने पुष्टि आपी खीलवनारा स्वरोमां ए काव्य बोलवुं तेनुं नाम **गायन** छे. गायनथी काव्यनो पोतानो जे स्वर के ध्वनि हतो ते स्पष्ट थइ शकशे खरो, परंतु काव्यनी भावना जे कालरुप शरीरथी बद्ध हती ते कालरुप शरीरनुं प्रकटीकरण मात्र गायनथी थइ शकशे नहिज. जेथी ए स्वर अने काळनुं प्रकटीकरण अमुक

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साधनो (वाद्यो) द्वारा करी बतावी, काव्यमां रहेला स्वर तथा काळने स्पष्ट करवा तेनुं नाम वादन छे. आटलुं थवा छतां हजी संगीत थयुं एम कही शकाशे नहि, गायनथी काव्यना स्वर—नादनी अने वादनथी काव्यना स्वर तथा काळनी प्रकटता थइ खरी ; परंतु हजी एक अंशनी न्यूनता रही गइ ते अंश मात्र के एकटींगनो छे, काव्यनो प्रभाव के अर्थसूचक शारीर व्यापारोथी स्पष्ट करी बताववो ते नर्त्तन कहेवाय छे. आ उपरथी समजी शकाशे के, गायन, वादन अने नर्तन ए त्रणे क्रियाओ परस्पर एवी रीते रहे के, काव्यना मूळ भावनेज स्पष्ट करे, अने तेथी काव्य पोते मूर्तिमंत आ स्थूल विश्वमां समग्र आंतरभावोथी प्रकट थाय तेनेज शास्त्रकारोए सामान्यतः **संगीत** शब्दथी प्रबोधेलुं छे. जरा ऊंडा उतरीने विचारीशुं तो जणाइ आवशे के, अमुक भावना—कल्पना के विचारो केवळ शब्दथी ज प्रदर्शित करी शकाय छे एम कंइ नथी ; भिन्न भिन्न प्रकारना मृदु, मंजुल, स्थूल उच्च के नीच नादथी पण प्रदर्शित करी शकाय छे. पक्षीओनां मंजुल स्वरो, मुग्ध बाळकोना मधुर कंठथी नीकळता रडवाना के हसवाना अवाजो, कुतरा, बिलाडां बकरां, गाय, भेंस वगेरे चतुष्पादनां ; तेमज चकली, कुकडां, बुलबुल, पोपट वगेरे पक्षीओनां बच्चांनां अवाजो तरफ ; तेमज दरेक क्षणे तेओ पोतानो भाव पोतानी माताओ प्रति बतावती वखते जे अशब्द परंतु केवळ नाद (ध्वनि) मय ध्वनि पूर्ण भाषा वापरे छे, ते तरफ लक्ष आपीशुं तो जणाइ आवशे के सृष्टिमां केवळ शब्द जेटलुं कार्य करे छे, ते करतां पण ध्वनि, नाद के स्वर विशेष कार्य करे छे. ने ज्यारे एम छे तो पछी चोक्कस स्वरोथी भावना स्पष्ट करी बताववानुं कार्य संगीतथी थइ शके छे एम जे कहेवाय छे ते सहज समजी शकाय छे, मात्र नादथीज भावना स्पष्ट करवी, अथवा नादमय भाषाथीज भाव प्रकट करवो, अथवा नादथीज भावनामय सृष्टि रचवी एनुंज नाम शुद्ध के केवल संगीत छे. संगीतना आ उच्च के केवल स्वरुप साथे काव्यनो यत्किंचित् पण संबंध होतो नथी. आखी सृष्टिनुं बंधारण नादथीज छे. अने एज नाद मानुषी शब्देन्द्रिय द्वारा बहार नीकळी कंठ, दंत ओष्ठ, तालु अने मूर्धा द्वारा अमुक रीते प्रकट थाय त्यारे ते शब्द संज्ञाने पात्र थाय छे. संगीतनुं अधिष्ठान ते **नाद** छे, ने काव्यनुं अधिष्ठान ते शब्द छे. आ उपरथी अन्य रीते एम पण कही शकाय के प्राणी मात्रना अंतःकरणमां उभी थती कल्पनासृष्टिमां जे भावनाओ स्थूल के सूक्ष्मरुपमां उद्भूत थाय छे ते अनाहत के आहत नादथी नादित थाय छे, अने ते आगळ चालतां विशेष

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्थूल के स्पष्ट रुप पकडी मानवीवाणीव्यापारथी शब्दरुपे झरे छे. आ अंदरथी बहार आवती उर्मिओ, भावनाओं के प्रतिभाओ वाणी द्वारा स्थूल विश्वमां बहार नीकळवानी पूर्वे अनाहतरुपमां नादरुपे सजाएली होय छे. ए नादरुप मनोव्यापार, तेज शुद्ध, साचुं अने उच्च संगीत छे. उत्पत्ति क्रममां अने सूक्ष्मतामां आ कलानो नंबर पहेलो आवे छे. तेनी नीचेनो नंबर काव्यनो आवी शके छे. तेम बंनेनी असरमां पण तेवोज भेद रहेलो छे. संगीतनी असर घणीज उंडी अने सज्जड होय छे. काव्यनी ते करतां घणी ओछी होय छे. आ पृथ्वी उपर मानवसृष्टि उत्पन्न थइ हशे ते पूर्वे तमाम प्राणीओना स्थूल मनोव्यापार तो नादद्वाराज चालता हशे एम सहज समजी शकाय तेम छे. वस्तुस्थिति आ छे छतां साधारण व्यवहारमां तो संगीत अने काव्य परस्पर सहायक थइ प्रवर्ते तेमांज लाभ छे. केमके केवळ नादथीज भावना स्पष्ट करवामां आवे के अमुक भावना नाद रुपे स्पष्ट करवामां आवे तो ते सघळाथीज ग्रहण थइ शके तेम नथी. घणाए मनुष्यो "नाद" ए शी वस्तु छे ते जाणता पण नथी. सघळा मनुष्यो पोतपोतानो व्यवहार वाणी के शब्दथीज चलावे छे, तो ते शब्द अने तेनी कला रुप जे काव्य तेनेज प्रमुख पद आपी, संगीतने तेना मददगार के उद्दिपक तरीके स्वीकारी लइ व्यवहार चलाववामां आवे तो, तेथी समग्र मानवसमाजने एक सरखो लाभकारक थइ शके तेम छे. ए उपरथी एम पण सहज ख्यालमां आवी शकशे के, संगीत पोताना शुद्धतर स्वरुपमां केवळ नादमय वाणी रुपे छे, अने काव्य पोताना शुद्धतर स्वरुपमां केवळ भावना बोधक शब्दरुपे छे. बंनेनो प्रदेश भिन्न भिन्न छे, छतां संगीतने काव्य विना चाली शके, परंतु काव्यने संगीत रुप अलंकार पहेरावेला होय तो तेना सौंदर्यमां वधारो करेज. छतां ए बंने कलाओ जे हृदयमां उभी थाय छे ते हृदयनो भेद पण समजवा जेवो छे. जे हृदयमां संगीतनो लेश अंश पण न होय ते उत्तम काव्य पण रची शके, तेम जे हृदयमां काव्यनो किंचित् अंश न होय ते उत्तम स्वर रचना पण रची शके छे. संगीतना ज्ञान विना घणा कविओए उत्तमोत्तम काव्यो रचेलां छे, तेमज काव्यना ज्ञान विनाना घणा गायकोए सुमधुर गीतलहरीओ रची छे. आम छे तो पण आ प्रकारे जो बन्ने कलाओ परस्परथी भिन्न रहे ए तो योग्य नथीज. संगीत अने साहित्य बंने एक रुप बनी रही, बंनेनो स्वर जेम एकज कंठमांथी नीकळे छे, तेम बंनेनो ध्वनि पण एक रुपे संवादित थवोज जोइए ने तेम

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

थशे तोज बंने कलाओ परस्पर उपकारक बनी स्थूल रीते मानव जातिने सरखी रीते अद्‌भूत आनंद आपी शके.

काव्य उपरांत चित्र अने शिल्प ए बे ललित कलाओनां स्वरूपो पण संगीत साथे मेळवी जोवानी जरुर छे. सृष्टिनी सघळी कलाओ व्यष्टि के समष्टिनी बुद्धिगत रहेली **प्रतिभा**नां कार्य के फळरुपे छे. ए प्रतिभा व्यष्टि समष्टिमां प्रेराइने तेनुं प्रकटीकरण थवा पामे छे त्यारे व्यष्टि के समष्टिनी जेवी प्रकृति होय ते प्रमाणे ते बहार दर्शन दे छे. एक एक व्यक्ति ते **व्यष्टि**, घणी व्यष्टिनो समुह ते **समष्टि** अने सर्व समष्टिओनो (विश्वनो) समुह ते **परमेष्टि** कहेवाय छे. विश्वगत परमेष्टिभावनुं पण तेमज छे. आ समग्र विश्वना उत्पादक परमेष्टि रुप केन्द्र, के जेने शास्त्रकारो **हिरण्यगर्भ** कहे छे तेना मनमां गत कल्पना संस्कारानुसार भावी सृष्टि सरजवानी सत्य संकल्प रुप प्रतिभा स्फुरी आवे छे के तुरतज प्रकृति तत्त्वमां क्षोभ उत्पन्न थइ जीवस्फुलिंग रुपे असंख्य व्यष्टि केन्द्रों बंधाइ तेमां स्पंदन शरु थाय छे, ने पछी, स्वप्नमां जेवी रीते सृष्टि रचाय छे तेवी रीते आभासरुप रचना थवा मांडे छे. ए रचना मात्र भावि सृष्टिना आभास के देखाव रुपे थती होवाथी तेनुं दर्शन प्रकाश अने अंधकारनी छायाथी थतुं होवाथी तेने चित्ररुप कही शकाशे. ते पछी ए सजातीय अने विजातीय केन्द्रों भिन्न भिन्न समूहमां वहेंचाइ जइ तेमनी प्रथमनी जे छायारुप रचना होय छे ते विशेष संघट्ट रुपमां प्राप्त थइ मूर्त बनी व्यष्टि समष्टिना पिंड ब्रह्मांड रुपे बने छे ; के जे आ स्थूल रचनाने शिल्प एवुं नाम आपी शकाय. आ द्रश्य ब्रह्मांड ते प्रभुए पोताना संकल्पानुसार धारी राखेली सृष्टिरुप शिल्परचनाज छे. आ प्रमाणे शिल्परुप रचना थया पछी ए रचना द्वारा, हिरण्यगर्भने पोतानी भावना स्पष्ट करवा माटे जे कंइ बोलवानुं होय छे ते अनेक व्यष्टि समष्टिरुप जीवो द्वारा नीकळता अर्थसूचक स्फोटरुप शब्दरचना उभी करे छे, तेनेज काव्य कहे छे. परंतु तेटले सुधी आवतां ज्यारे हिरण्यगर्भने एम समजाय छे के, म्हारी पोतानी भावना प्रकट करवा माटे चित्र, शिल्प अने काव्य ए घणांज स्थूल थइ पडे छे त्यारे ते भावना बोधक नाद के स्वरो द्वारा पोतानी भावना व्यक्त करवा प्रयास करे छे. एनुंज नाम संगीत छे. चित्र अने शिल्प ए बंने कलाओ प्रतिभाना शृंगार तरीके होइ, अन्य रीते साधन रुपे, करण रुपे, गोलक रुपे, भूमिका के यंत्र रुपे छे एम कही शकीए तो ते अयोग्य नथी. केमके ए बे कलारुप भूमिका के करण तैयार थया पछीथीज

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

તે દ્વારા સંગીત અને કાવ્ય આ સ્થૂલ વિશ્વમાં વહેવા માંડે છે, અથવા તો અભિવ્યક્ત એમ કહી શકાય. અથવા અન્ય રીતે, ચિત્ર અને શિલ્પ એ શરીરરુપે અને કાવ્ય એ અંતઃકરણરુપે, અને સંગીત એ જીવાત્મા રુપે છે એમ કહીએ તો તે વિશેષ સયુક્તિક અને વસ્તુસ્થિતિનું નિદર્શક થશે.

સઘળાં મનુષ્યો કંઇ એક સરખાં મગજનાં હોતાં નથી. કોઇ પ્રકાશ અને અંધકારથી પોતાની ભાવના બતાવી શકે છે (ચિત્ર); કોઇ દ્રવ્યને અમુક પ્રકારે કે આકારે ગોઠવી પોતાની ભાવના સ્પષ્ટ કરી શકે છે (શિલ્પ), કોઇ શબ્દને અમુક સંવાદિત પ્રવાહોમાં મૂકી ભાવના વતાવી શકે છે (કાવ્ય), અને જેમની રસિકતા અત્યંત ઉચ્ચ કોટિએ પહોંચી ગએલી હોય છે તેઓ અમુક નાદ કે સ્વરોદ્વારા પોતાની ભાવના બતાવી શકે છે. **સંગીત** તે એનેજ કહેવાય છે. આ બધી બાબત સમજી શકાય તેવી છે જે ઉપરથી સહજ ખ્યાલમાં આવી શકશે કે ચિત્ર, શિલ્પ અને કાવ્ય એ ત્રણે કલાઓમાં સંગીતકલા ઘણીજ સૂક્ષ્મ, નાજુક અને ઉચ્ચ છે; ઉપરાંત નાદદ્વારા ભાવના વ્યક્ત કરવાનું કાર્ય ઘણુંજ વિકટ છે. એજ કારણથી આ પણા આર્ય શાસ્ત્રકારોએ ગાનશાસ્ત્રને વેદની પંક્તિમાં ગણ્યું છે; અને તેની સ્થળે સ્થળે સ્તુતિ કરેલી છે.

ચિત્ર અને શિલ્પ કરતાં કાવ્ય સાથે સંગીતને ઘણીજ પ્રીતિ છે. જો એ બન્નેનો સ્નેહ તોડી નાખવામા આવે અને કાવ્યનો નાદ (સ્વર) ખેંચી લેવામાં આવે તો કાવ્ય મુંગુંજ બની જશે, એ કારણથી કેટલાક તો સંગીત શબ્દનો સં–સાથે, સહ, કાવ્ય સાથે અને ગીત–ગાવું, ગાન—અર્થાત્ "કાવ્ય સહ ગાન" એવો પણ અર્થ કરે છે, કે જે ઘણોજ સુસંગત છે. આ અર્થ પ્રમાણે કાવ્યની શક્તિ, સંગીતદ્વારા અસાધારણ બળ અને ઉત્સાહથી કેવી રીતે ખીલી નીકળે છે એનો અનુભવ સર્વને છેજ. આ પ્રમાણે ચિત્રાદિ લલિત કળાઓ સાથે સંગીતનો વિવેક સમજ્યા પછી, સંગીતના કાવ્યોદ્દીપક સંગીત (અપ્લાઇડ મ્યુઝિક) અને શુદ્ધકેવલ સંગીત (પ્યોર મ્યુઝિક) એવા બે પ્રમુખ વિભાગો તરફ જરા લક્ષ આપીએ. તેમાં **કાવ્યોદ્દીપક સંગીતનો** અર્થ એ છે કે, "ફક્ત કાવ્યને લઇ, તેનાજ ભાવ, અર્થ, રસને વહન કરી શકે એવા, નાદ કે સ્વરોને લઇને, કેવળ કાવ્યનેજ શણગારી તેને આ સૃષ્ટી ઉપર મૂર્તિમંત પ્રગટ કરવું તે." **કેવલ સંગીત** તો માત્ર નાદ કે સ્વરથીજ ભાવના વ્યક્ત કરેછે. પરંતુ એ બન્ને પ્રકારના સંગીતને તેમ કરવા માટે અનેક શાસ્ત્રીય સાધનો પ્રયોજવાં પડે છે. અને તે દરેક સાધનોનો વિચાર નાદ, સ્વર, પ્રસ્તાર, રાગ, વાદન, તાલ, લે-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ધ્વન, નાટય, નૃત્ય, નૃત્ત, એ સઘળાં શાસ્ત્રોમાં કરવામાં આવે છે, કે જે વિષે હવે એ દરેક અંગોના પ્રદેશોનું વિસ્તૃત ભાન કરાવવામાં આવશેજ. કેવલ સંગીત એજ ખરું અને ઉચ્ચ સંગીત છે. કાવ્યોદ્દીપક કે કાવ્યાનુસારી સંગીતમાં સંગીત એ માત્ર કાવ્યના અર્થને વહન કરનાર સાધનરુપે હોઇ તેના એક કાસદરુપે થઇ રહે છે; અને તેવી અવસ્થામાં કાવ્ય પ્રધાનપદે અને સંગીત ગૌણપદે રહે છે, પરંતુ સંગીત પોતે પોતાના કેવલ સ્વરુપમાં તો મુખ્યજ હોય છે. એ ઉચ્ચ અવસ્થામાં તે કાવ્યને તજીજ દઇ, પોતે પોતાના સ્વરુપમાં મસ્ત હોય છે. સંગીતની આ અવસ્થા તે ઘણી ઉચ્ચ ભૂમિકા રુપે છે, અને જુદા જુદા ભાવરુપ રાગોની કેવળ આલાપ્તિ કરી, અંતરની ભાવનાઓ કેવળ નાદ રુપે પ્રકટાવવામાંજ એ ભૂમિકાનું ખરું માહાત્મ્ય સમાયલું છે. આ પ્રકારે સંગીતની આ બે અવસ્થાઓનો ખ્યાલ આપ્યા પછી, એ શાસ્ત્રમાં કેટકેટલાં શાસ્ત્રોનો વિચાર આવે છે તે વિષે હવે વિચાર ચલાવીએ.

સંગીત અને તેનાં અંગભૂત શાસ્ત્રો.

૧. **નાદવિદ્યા** (એકોસ્ટીક્સ અથવા થીઅરી ઓફ સાઉંડ) આ દુનિયામાં જેટલા શબ્દો, અવાજો કે જડ ધ્વનિઓ માણસ જાતથી સાંભળી શકાય છે તે સર્વ **નાદ** શબ્દથી વ્યવહારાય છે. દુનિયામાં જેટલા નાદો છે તેમની પ્રકૃતિ, ઉત્પત્તિ, સ્થિતિ, વર્ધન અને વિનાશ કયા નિયમે થતાં રહે છે એ વિષે પ્રયોગશાળામાં અનુભવસિદ્ધ પ્રયોગો કરી જે નિયમો મળી આવે તે સઘળા નિયમોનો વિચાર આ શાસ્ત્રમાં કરવામાં આવેછે. કોઇ પણ વાદ્યમાં નાદ ઉત્પન્ન થવા માટે કયા પ્રકારની અનુકૂળ રચના આવશ્યક છે, ઇચ્છિત નાદ કયા વાદ્યમાંથી કેવી રીતે કહાડી શકાય છે. નાદની મધુરતા અને અમધુરતાના નિયમો શા છે, તેમજ કોઇ પણ બે અથવા વધારે નાદો વચ્ચે શું પ્રમાણ રહેલું છે, અને તમામ નાદના ૭ પ્રકારના વર્ગો પાડી તેમને અનુક્રમે ષડ્જ, રુષભ, ગાંધાર, મધ્યમ, પંચમ, ધૈવત અને નિષાદ એ સ્વર તરીકેનાં સાત નામો આપી, તેમના પણ પેટા સ્વર કયા નિયમથી પાડી શકાય છે એ સઘળાંનો નિર્ણય આ શાસ્ત્ર કરે છે. સ્વરની મધુરતા અને તેનાં ભૌતિક પ્રમાણો, જુદિ જુદિ સ્વર માળાઓ, સ્વરની પરસ્પર મૈત્રી અને શત્રુતા કયા નિયમે અને કયા પ્રમાણોથી બનેલી રહે છે એ સઘળાંનો નિર્ણય **નાદશાસ્ત્ર** કરે છે.

૨. **સ્વર શાસ્ત્ર**— સરિગમપધની એ સાત સ્વરો, તેના વિકૃત પ્રકારો, ભિન્નભિન્ન પ્રકારના આરોહ અવરોહ, ગ્રામરચના (સ્કેલો) તાન, મૂર્છના, ક્રમ,

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रस्तार, कूटतान वगेरे तेमज स्वरोना भिन्न भिन्न प्रकारना प्रस्तारादिनो विचार स्वरशास्त्रमां करवामां आवेछे.

३. **रागशास्त्र**–संगीतनो आत्मा **राग** छे. अमुक अमुक स्वरो अमुक नियमे लइ तेनुं मिश्रण करी, चोकस प्रकारना भावोने वहन करनारी नादमय सृष्टि रचवी ए रागनुं कार्य छे. ते सृष्टि अनेक रागोथी थइ शके छे. रागनी अंदर आवता स्वरोमां कयो स्वर मुख्य छे, कयो गौण छे, रागनुं एकंदर अवसान कया स्वर आवे छे तेनो निर्णय; तेमज वादी, संवादी, अनुवादी अने विवादी स्वरो कया नियमे रहेला छे तेनो निर्णय रागशास्त्रमां करवामां आवे छे. जोके, आ वादी संवादीनो विषय स्वरशास्त्रमां पण आवे छे, परंतु अत्रे तेनुं प्राधान्य खास निश्चित करवामां आवे छे.

अनुक्रमे पांच, छ अने सात स्वरो चोकस नियमे लइ तेनी अनेक प्रकारनी स्वरमालाओ बनावी, ओडव, षाडव अने संपूर्ण रागो केटला अने कया कया थइ शके छे; अने तेमनाज मिश्रणथी वक्र संपूर्ण अने संकीर्ण रागो सेंकडो बने छे ते सघळांमां स्वरुपोनो निर्णय आ शास्त्र करे छे.

स्वरोनी चोकस स्वरमालाओ लइ, तेनी आलाप्ति करवाना नियमो अने खरुं कलाविधान शामां छे अने ते केवी रीते प्राप्त थइ शके तेनो पण विचार आ शास्त्रज करे छे. आथी दरेक रागनी अमुक अमुक भाववाळी स्थायी नाद सृष्टि विस्तृत थइ शके छे.

रागनो एक अवयव ते **स्थायी** कहेवाय छे. एम भिन्न भिन्न रागना अवयवो लइ, तेमना मिश्रणथी **शुद्ध, सालग, संकीर्ण** अने **महासंकीर्ण** एवा चार प्रकारना वर्गो थाय छे, ए अने उपरना मळी तमाम सेंकडो रागोनो रस, समय, साहित्यनी साथे संबंध वगेरेनो सघळो विचार राग शास्त्रमांज करवामां आवे छे.

४. **गानरचनाविद्या के प्रबंधशास्त्र**. पद्यनी रचना, अने तेना साहित्यना अंगनो विचार करी, संगीतानुकूळ साहित्यो तेमज साहित्यानुकूळ संगीतो रचवां, एनो विचार आ शास्त्र करे छे. संगीतना ग्रंथोमां प्रबंधोना सेंकडो प्रकारो आपेला होय छे. आ विषयना संबंधमां प्रजानो म्होटो भाग अंधारामां रही गयो छे. हाल आपणा देशमां सर्वत्र पद, गजल, ठुमरी, रेखता, धोळ भजनो, प्रभातीयां, गरबीओ वगेरे साहित्य गवाय छे तेनो समास आ अंगमांज करवामां आवे छे. तेमज होरी, ध्रुपद–चौताल, झुमरा, दादरा, धमार, झंपा वगेरे संगीतो उच्च कोटीनां

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गणाय छे. तेना सेंकडो प्रकारो सर्वत्र गवाय छे. ए सघळांनो विचार आ शाखामांज करवामां आवे छे. प्राचीन काळना घणा उत्तमोत्तम प्रबंधो हाल गवाता नथी, मात्र तेमांथी अष्टपदी, रागार्णव, तालार्णव वगेरे प्रबंधो क्यांक क्यांक गवाय छे. परंतु ग्रंथोमां तो एवा लगभग ४ हजार प्रबंधोमां वर्णनो उपलब्ध थएलां छे. आ बधा संगीतानुकूळ पद्यरचनायुक्त साहित्यनो समावेश सामान्यतः **गान** ए शब्दमां शास्त्रकारोए कर्यो छे. जेथी आ बधा अंगने आपणे **गानरचनाविद्या** एवा नामथी व्यवहारीशुं तो अयोग्य नहींज गणाय.

५. **वादनकलाशास्त्र**.—आखा हिंदुस्थानमां अनेक प्रकारनां वाद्यो वपराय छे. ते सर्वमां तंबुरो, सितार, दिलरुवा, बीन, पखवाज, तबलां, मंजीरां, झांझ, करताळ, बंसी एटलां वाद्यो स्थळे स्थळे वागतां जोवामां आवशे. वाद्यना एकंदर ४ प्रकारना वर्गो शास्त्रकारोए पाडया छे. तंतुवाद्य ते तत, चामडांने मढीने बनाववामां आवतां वाद्य ते **अवनद्ध**, धातुनो रस करीने रेडीने बनाववामां आवतां नक्कर (घन) जातनां वाद्यो ते **घन** अने पवननी सहायताथी वागतां ते **सुषिर**, एम चार प्रकारनां वाद्योमां एकंदर १२८ जातनां वाद्यो गणवामां आवेलां छे. ए दरेक वाद्यो, तेमनी रचना, ते वगाडवाना नियमो, ए सवळांनो समावेश आ शास्त्रमां करवामां आवे छे. एक एक वगाडनार आखी जींदगी सुधी अभ्यास करी तेमां अपूर्व कुशळता मेळवे छे; ने ए रीते जोतां वाद्यविद्यानो विषय अमर्यादित थइ पडे छे.

सघळां वाद्योना पुनः २ वर्गो पाडवामां आवेछे तेमां जे वाद्यमांथी स्वरो उत्पन्न करवामां आवे छे तेने आपणे **स्वरोत्पादक वाद्य** कहीशुं, अने जेमांथी मात्र ताल के लय उत्पन्न करवामां आवे छे, अर्थात् के जे, वखतनुं माप चोक्कस रीते जाळवी राखे छे तेने आपणे **लयोत्पादक वाद्य** कहीशुं. स्वरो अने लय प्रकटाववा माटे खास पलटा, गतो, लहेरो पाटवरण वगेरे बधुं साहित्य आ अंगमां आवेछे, ने महान समय व्यतीत करवा पछीज आ कलासाध्य थइ शके छे.

६. **तालशास्त्र**.—ताल ए संगीतमां महत्वनो विषय छे, काल अथवा लयनुं स्वरुप शुं ते तालथी समजी शकाय छे. अमुक तालो अमुक रसने उद्दीपन करनारा होय छे. जेथी जे प्रकारनी स्वरमाला अने रागनी रचना होय ते प्रमाणे तेने अनुकूळ ताल होवो जोइए ए समजी शकाय तेम छे. एवा तालो ग्रंथोमां अनेक आपेला छे, परंतु जेमां, वर्ण के स्वरनुं नर्तन संपूर्ण सौंदर्ययुक्त लागतुं होय, तेने अंगे जे तालो शोभी शके एवा होय छे तेवा तालो तो थोडाज छे. जो के शास्त्र

P. P. Ac. Gunratnasuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रंथोमां तो ३५० उपरांत तालो जणावी, तेनी अनंतता दर्शावी छे; परंतु ते विस्तार केवळ निरर्थक छे. साधारण व्यवहारमां तो ८–१० तालोज वपराय छे अने तेज सार: छे; म्होटा ताल वपराय ए खरुं छे, परंतु तेवा तालोए विशेष होइ शके तेम नथी. कोइ पण ताल लइ तेना काल, मार्ग, क्रिया, अंग, ग्रह, जाति, कला, लय, यति अने प्रस्तार ए १० प्रकारना प्राणनुं स्वरुप बहु सूक्ष्मताथी जोवानुं होय छे. काव्य, पद्य, गीतादिनी रचना जे काल (ताल) रुप शरीरनी साथे उत्पन्न थाय छे ते कालनुं पण नर्तन अनेक प्रकारे चलाववुं तेमां जखरुं कलाविधान समायलुं छे. परंतु आ बधुं सहज साध्य नथी. ताल–काल, तेनुं सौंदर्य, तेथी कया रसनी निष्पत्ति थाय छे, तेना अनेक आवर्तो केवी रीते करी शकाय ए बधो निर्णय अने दरेक आवर्तनुं स्वरुप आ शास्त्र निश्चित प्रकारे बांधे छे. अने ताल कालनो विषय महान अभ्यासनो विषय थइ पडे छे, साधारणत: ताली अने खाली आपवा मात्रथीज ताल आप्यो गणी शकातो नथी, परंतु तेमां संपूर्ण कला विधाननो चमत्कारो उत्पन्न करी गानार स्वरनी भिन्न भिन्न लहरीओ ऊभी करे छे ते दरेक लहरीने अंगे कालनो क्रम संबंध तपासी ते प्रमाणे श्रोताओने तेनी गतिमयतानुं भान करी डोलाववामांज खरो ताल आपेलो गणी शकाय छे. स्वर, राग, के पद्यनी सम, तालना सम साथे समरुप बनी जाय तोज स्वर अने कालनो संयोग थएलो गणी शकाय; नहीं तो नहींज.

७. **नाट्यशास्त्र**:—आ शास्त्र विषे विशेष जणाववानी आवश्यकता नथीज. ए शास्त्र हवे सर्व प्रसिद्ध छे. नाटक ए दृश्य काव्य छे, अथवा अन्य रीते जीवतुं जागतुं काव्य छे; तो ते साथे संगीतनो संबंध घणोज प्रगाढ होइ शके ए स्पष्ट छे. दरेक रसनो अने तेने अंगे उभी करेली अमुक कुदरती रचनानो अनुकूळ के प्रतिकूळ कयो राग छे, अने ताल पण केवो होवो जोइए; तेम ते राग, ताल, अने काव्यना मृदु तीव्र कठोर भाव प्रमाणे दरेक नटे (एक्टरे) गळामांथी केवा स्वरो उत्पन्न करवा जोइए ए समजीने ते प्रमाणे भाव भजववामांज नाट्य कलानुं खरुं कलाविधान समायलुं छे. हाल केटलेक स्थळे संगीतने तद्दन बाद करीने नाटक भजववामां आवे छे. तेम केटलीक दक्षणी नाटक कंपनीओ तो संगीतने एटलुं बधुं प्राधान्य आपी खेलो भजवे छे के, तेथी नाटक काव्यनी केवळ क्षतिज थाय छे; अने रसभंग तो दरेक पळे पळे थतो रहे छे. आ शास्त्रनी साथे संगीतनो जेटलो पुरतो संबंध छे तेनो विचार संगीतना नर्तन प्रकरणमां विस्तारथी चलावेलो होय छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अने आ एक महत्वनुं शास्त्र अने तेने अंगे संगीतनुं कलाविधान ए बंनेनी चिकित्सा आ अंगमां करवामां आवे छे.

८. नृत्यशास्त्र—आ शास्त्र खास स्वतंत्र छे. नाटकमां तो काव्यनो भाव भिन्न भिन्न पात्रो द्वारा भजववामां आवे छे, परन्तु तेज भाव जो एकज पात्र के व्यक्ति भजवी बतावे तो तेने **नृत्य** एवुं व्यापक नाम आपेलुं छे. रस के भाव जो भव्य, कठोर के उद्धत होय तो ते भाव पुरुषना शरीर द्वारा सारी रीते अदा (व्यक्त) थइ शकशे. परंतु तेज भावो जो करुण, मृदु, ललित के मोहक हशे तो ते स्त्री शरीर द्वाराज उत्तम रीते अभिव्यक्त थइ शकशे. आ उपर ध्यान आपीने शास्त्रकारोए नृत्यना तांडव अने लास्य एवा बे प्रकार पाडेला छे. तेमां पुरुषना नृत्यने तांडव अने स्त्रीना नृत्यने लास्य कहेलुं छे. केवळ आंगिक अभिनयथी (शारीरिक भावोथी-एक्टींगथी) भावोने प्रकट करवा ए नृत्यशास्त्रनो प्रधान विषय छे आ शास्त्रना अंग, प्रत्यंग अने उपांगो नीचे प्रमाणे छे. अने ते दरेकना केटकेटला प्रकारो रत्नाकरादि ग्रन्थोमां आपेला छे. ते नीचेना कोष्टक उपरथी समजी शकाशे.

७ अंग.*		८ प्रत्यंग.		१२ उपांग.	
(१) शिर.	१९	(१) ग्रीवा	९	(१) दृष्टि	३६
(२) हस्त	६७	(२) बाहु	९०	(२) भ्रू	७
(३) वक्षः	५	(३) पृष्ठ	०	(३) पुट	९
(४) पार्श्व	५	(४) उदर	४	(४) तारा	१७
(५) कटि	५	(५) उरु	५	(५) कपोल	६
(६) चरण	१७	(६) जंघा	१०	(६) नासिका	६
(७) स्कन्ध	६	(७) मणिबंध	५	(७) अनिल	९
	——	(८) जानु	७	(८) अधर	१०
	११९		——	(९) दंत	८
			१३०	(१०) जिह्वा	६
				(११) चिबुक	८
				(१२) वदन	६
					——
					१२८

* आ विषय शुद्ध गुजरातीमां वांचवो होय तो कविराजना बनावेला नाटयशास्त्रमां विस्तारथी बतावेल छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आ बधो विस्तार अने दरेक प्रकारनां लक्षणो रत्नाकरादि ग्रन्थोमां आव्यां छे. नृत्यशास्त्र उपर तो म्होटा म्होटा ग्रन्थो रचाया छे. नृत्यशास्त्रमां अंगभूत नृत्त-विद्या पण जाणवा जेवी छे. अभिनय विना केवळ शारीरिक अवयवोथी अंगविक्षेप करवाने नृत्त कहे छे. नृत्तना **करण** अने **अंगहार** एवा बे प्रकार छे. तेम ज रेचक, चारी अने स्थानकोना प्रकार आ प्रमाणे आप्या छे.

कारण १४४	रेचक ४
*अंगहार ३२	चारी ११९
	स्थानक ५१

आ प्रमाणे एकंदर ३४२ प्रकारो रत्नाकरमां आपेला छे. वळी नृत्तना विषम, विकट अने लघु ए त्रण प्रकारो प्रसिद्ध छेज. संगीतना दरेक भाग उपर जेम स्वतंत्र ग्रन्थो छे तेम आ भाग उपर पण थोडाक ग्रन्थो रचायला जोवामां आव्या छे. खरी रीते तो नाटय, नृत्य अने नृत्त ए त्रणे नर्तनशास्त्रनांज अंगो छे. एटले के नर्तनशास्त्र ए महान शास्त्र होय ए स्पष्टज छे. परंतु आजकाल नाटयने केटलाक स्वतंत्र शास्त्र तरीके गणे छे तेम आपणे पण गणीए तो नृत्य अने नृत्तनो प्रथक निर्देश करवो पडे ए स्पष्टज छे.

९. संगीतविज्ञान.—एटले संगीतनुं शास्त्र, अथवा संगीत विषेनुं तत्वज्ञान. आ शास्त्रनो विचार केवळ नवीनज छे. अने ते संगीतना दरेक अंगभूत रहेलां शास्त्रोना एकंदर व्यापक स्वरुप उपर विहंगमदृष्टिन्यायथी निरक्षण करी तेना कलाविधाननां स्वरुप अने सौन्दर्यना निबन्धननी मीमांसा करवाथी आ शास्त्र पृथक्पणे उपस्थित थइ शके तेवुं छे, एटलुंज नहि पण संगीतना आत्मानी संपूर्ण रुपरेखा आ स्थूल विश्वपट उपर आलेखवाने माटे घणु उपयोगी छे. संगीत, काव्य अने तेनो स्वरुप आत्मा, अने ते आत्मानो भाव, तेमज ते भाव मूर्तिमंत रुपे बताववामां करवामां आवतुं कलाविधान ए सर्वना नियमो आ शास्त्रनी दृष्टिथी बांधी शकाय तेम छे. कोइ पण स्त्री के पुरुष गायक, वादक, नर्तक के साहित्यरसिक हशे तो तेणे कया नियमे पोतानुं कार्य करवानुं छे; अने स्वर, काल, राग, कंठ, हावभावादि, शारीर प्रेक्षक उपर असर करी तेमने आनंद समाधिमां उतारी देवानी युक्ति इत्यादि अनेक विषयोनी खुबीओ आ शास्त्र बतावी आपे छे.

पूर्ण ज्ञान स्वरुप अनंत कलापूर्ण नटराज श्री शंकर परमात्मा आ जगत्-रुपे संगीत करी रह्या छे, अने तेनी पत्नी पार्वतीने पण साथे लइ, बंनेए जे आ

*आ विषय पण कविराजे पोताना नाटयशास्त्रमां सरलताथी समजावेल छे,

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जगतविलास रुपे **तांडव** अने **लास्य** आरंभ्युं छे, तेमज समग्र विश्वना अनेक देवो जात जातनां साहित्यो, वाद्यो बजावी अनंत धूनमय स्वरोथी श्री शंकरने सहायता आपी रही तेना संगीतनी साथ करी रह्या छे अने पोतानुं संगीत आ अनंत दुःखी तेम विलासी जीवोने संभळावी रह्या छे, ते दैवी संगीत सांभळवा मनुष्योए रसिक बनी पोताना कान सुरीला बनावी, नेत्रने उज्वळ करी केवी रीते सांभळवुं तेनो विचार आ शास्त्रमां करवामां आवे छे. आ शास्त्रनी रचना नवीन छे; प्राचिन काळना कोइ पण ग्रंथमां आने माटे वर्णुं लखायलुं नथी ए अत्र म्हारे स्पष्ट रीते जणाववुं घटे छे.

१०. **साहित्य शास्त्र.**–संगीतना कोइ पण अभ्यासीए साहित्य शास्त्र खास जाणवानी आवश्यकता छे कारण के, आ शास्त्र संगीतना हृदयरुप छे. काव्य शुं, तेना भेद केटला[१] तेनो ध्वनि शुं, नायक, नायिका, रस अने तेना प्रकार, भाव, काळ, स्थळ, सौंदर्य, वर्ण, पद्यरचन, इत्यादि अनेक विषयोनो स्वरुपनिर्णय प्रथम आ शास्त्र करे छे, ने त्यार बाद तेना ऊंडा आत्मानी पासे संगीत गवरावे छे. गवैया-ओ के जे बीचारा निरक्षर होय छे तेओ तो आ शास्त्रना संबंधमां भयंकर अज्ञानता धरावे छे, परंतु संगीतना साक्षर तरीके गणाता विद्वानोमां, आ शास्त्रनुं भयंकर अज्ञान जोवामां आवे छे. साहित्यनो केवळ उपलकीयो अभ्यास नहीं, पण तेना विज्ञाननो ऊंडो अभ्यास कोइ पण उत्तम संगीतकला निपुणे करवानी जरुर छे ते थया पछीथीज तेनामां " रसिकता " ए शी वस्तु छे तेनुं भान थशे; ते विना तो नहिंज. अत्रे ए पण सूचववुं इष्ट छे के, जेम दरेक संगीतकला निपुणे साहित्य शास्त्र जाणवानी जरुर छे तेम दरेक साहित्यरसिके पण संगीत थोडुं घणुं पण जाणवानी जरुर छे, अत्यारे गुजरातमां उत्तम पंक्तिना गणाता घणाक कविओमां संगीत विषयनुं उत्तम अज्ञान जोवामां आवे छे, ए तेमनी रसिकता गमे तेटली उच्च शिखर उपर वधी गयेली होय तो पण, ते शिखर उपर नहीं गणाता कलश रुपेज गणी शकाशे. धारो के कोइए साहित्यना दरेक अवयवनुं ऊंडुं विज्ञान प्राप्त कर्युं होय तो पण ते सघळा अवयवोथी घटीत एवा समग्र शरीरमांथी नीकळता तेना प्रभावंत आत्मानो ध्वनि ना पारख्यो तो पछी तेणे गमे तेटलुं साहित्य विज्ञान

---

१. आ विषय उपर आपणा कविराजे काव्यशास्त्र नामनो ग्रन्थ तैयार कर्यो छे. जेमां काव्यना तमाम अंगोनुं वर्णन कर्युं छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मगजमां भर्युं हशे, अने रसिकतानो गमे तेवो ख्याल—फांको राख्यो हशे तोपण ते व्यर्थ छे. जेनामां एम होय तेने ते वात भले मुबारक हो ; परंतु संगीतशास्त्र अने कलाना जिज्ञासुए पहेलो एकडो तो साहित्यशास्त्रथी शरु करीनेज घुंटवो जोइए. एमां कांइ संदेह नथी.

आ अने हिंदुस्थानी संगीतमां (१) नादविद्या, (२) स्वरशास्त्र, (३) रागशास्त्र, (४) प्रबंधशास्त्र, (५) वादनकलाशास्त्र, (६) तालशास्त्र, (७) नाट्यशास्त्र, (८) नृत्यशास्त्र, (९) संगीत कला विज्ञान अने (१०) साहित्यशास्त्र ए दश प्रकारनां शास्त्रोनो समावेश थइ शके छे. ते उपरांत हाल सर्वत्र जोवामां आवती नोटेशन कलानो एमांज समास थइ शके तेवो छे. ने एकंदरे आटलां शास्त्रो संगीतने संपूर्णरुप आपवामां मददरुप छे. यूरोपियन संगीतमां मात्र गायन, स्वरसंमेलन (हार्मनी अने मेलेडी). स्वरशास्त्र, नोटेशन अने वाद्यवादन ए पांचनोज विचार करवामां आवे छे, नाटक अने नृत्य ए बंनेने पृथक् तरीके माने छे. बंने देशना संगीतनो तुलनात्मक विचार करतां भारतीय संगीतनो प्रदेश अत्यंत विस्तीर्ण छे. संगीत रत्नाकरमां उत्तम वाग्गेयकार (गवैया) नुं लक्षण आप्युं छे तेनी नोंध अत्रे लइए छीए. ते उपरथी समजी शकाशे के, संगीतना कलाकुशले केटलां शास्त्रो जाणवानी जरुर छे.

शब्दानुशासनज्ञानमभिधानप्रवीणता ।
छन्दःप्रभेदवेदित्वमलंकारेषु कौशलम् ॥ ३ ॥
रसभावपरिज्ञानं देशस्थितिषु चातुरी ।
अशेषभाषाविज्ञानं कला शास्त्रेषु कौशलम् ॥ ४ ॥
तूर्यत्रितयचातुर्यं हृद्यशारीरशालिता ।
लयतालकलाज्ञानं विवेकोऽनेक काकुषु ॥ ५ ॥
प्रभूत प्रतिभोद्भेद* भाक्त्वं सुभग गेयता ।
देशी रागेष्वभिज्ञत्वं वाक्पटुत्वं सभाजये ॥ ६ ॥
रागद्वेषपरित्यागः सार्द्रत्वमुचितज्ञता ।
अनुच्छिष्टोक्तिनिर्बन्धोनूत्न धातु विनिर्मितिः ॥ ७ ॥
परचित्तपरिज्ञानं प्रबन्धेषु प्रगल्भता ।
द्रुतगीतविनिर्माणं पदान्तरविदग्धता ॥ ८ ॥ ८ ॥

---

* प्रतिभा शब्द उपर संगीत रत्नाकरना टीकाकार जणावे छे के:—
स्मृतिर्व्यतीतविषयामती रागादिगोचरा ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

**त्रिस्थानगमकप्रौढीर्विविधालप्तिनैपुणम् ।
अवधानं गुणैरेभिर्वरो वाग्गेयकारकः ॥ ९ ॥**

सं० रत्नाकर प्रकीर्णाध्याय,

भावार्थ--व्याकरण शास्त्रमां कुशळ, कोशमां प्रवीण, छंदना अनेक प्रभेदोमां प्रविण, उपमा वगेरे अलंकारोमां तेमज अनुप्रासादिमां पण प्रवीण, शृंगारादि रसोमां कुशळ, भाव विभावादि तेमज नवे रसोमां कुशळ ; बधी कळाओ (देशस्थितिमां, पांचात्यादि) मां चतुर ; समग्र भाषाओमां प्रवीण, संगीतमां कुशळ ; तूर्यत्रितय एटले नृत्य वाद्य गीतमां चतुर, वैद्यकमां (शारीर संबंधमां) कुशळ ; द्रुतादि लयोमां, चच्चत्पुटादि तालोमां अने कलाओ (एटले आवाप, निष्काम वगेरे सशब्द अने निःशब्द कलाओ) मां ज्ञानी, अनेक काकुस्वरमां प्रवीण, समग्र प्रतिभाना भेदोने जाणनार, सुंदर गेय करनार, देशी रागमां प्रवीण, सभाने जीतवामां वाक्पटु, रागद्वेश नहि करनार, आर्द्र चित्तवाळो, उचित अनुचितने जाणनार, सुंदर वाणीना प्रबंधने करनार, नवां नवां गीतो बनावनार ; बीजाना चित्तने जाणनार; प्रबंध रचवामां चतुर; द्रुतगीतोने रचनार ; तिरिपादि गमकोमां चतुर ; रागालप्ति अने रुपकालप्तिमां प्रवीण ; एकाग्र चित्तवाळो तथा अवधानी अने सुंदर गुणोथी जे युक्त होय ते उत्तम वाग्गेयकार के उत्तम गवैयो कहेवाय छे.

वाक् एटले वाणी, वाचा के 'मातु' कहेवाय छे, अने **गेय** एटले गायन के धातु कहेवाय छे. तेथी जे वाचा अने गायनने करनार अर्थात् जे मातु धातुने करनार होय ते वाग्गेयकार, एवो गवैयाने माटे शब्द वापरेलो छे, अने तेनुं विस्तारथी लक्षण उपर आपेलुंज छे. उत्तम गवैयानां बधां आपेलां लक्षणो तपासवाथी जणाइ आवशे के, संगीत अने तेने लगतां घणां शास्त्रोनुं ज्ञान गवैयाओए धरावबुं जोइए. प्राचीन काळमां संगीतशास्त्रना विषयप्रदेशनी मर्यादा घणी विशाळ हती एमां कंइ शक नथीज. हमणां संगीत एटले मात्र गावुं के बजाववुं एटलुंज मानी लेवामां आवे छे ; परंतु अत्यार सुधीना विवेचन उपरथी दरेक जिज्ञासुनी पूरी खात्री

**बुद्धिस्तात्कालिकी प्रोक्ता प्रज्ञा त्रैकालिकीमता ।
प्रज्ञां नवनवोन्मेष शालिनीं प्रतिभां विदुः**

व्यतित विषयवाळी मति ते **स्मृति**, रागादिरुपे जणाइ आवती ते ते समयनी तात्कालिकी बुद्धि ते **प्रज्ञा**, के जे त्रयकालिकी मानेली छे, अने नवा नवा उन्मेष (उभराओ, उर्मीओ, तरंगो, वृत्तिओ) वाळी जे प्रज्ञा तेने **प्रतिभा** कहे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

थशेज के, ए एक विस्तीर्ण शास्त्र छे. पूर्वे जणावेला सवळा विषयो संगीतना जुदा जुदा ग्रंथोमां विस्तारथी वर्णवेला छे. हाल आपणी समक्ष एवा ८-१० गण्यागांठया-ज ग्रंथो प्रसिद्ध थएला जोवामां आवे छे, परंतु जे ग्रंथो हजु सुधी प्रसिद्धिमां नथी आव्या एवा ग्रंथो सेंकडो छे. संगीतना ग्रंथोनो विस्तार केटलो छे तेनी यथार्थ कल्पना आववा माटे तेनी एक संपूर्ण यादी आपीए छीए, के जे आ ग्रंथनी प्रस्तावनाने अंगे घणी उपयोगी गणी शकाशे. अने आ ग्रंथना वाचकोमांथी जेओ शोधक बुद्धिना हशे तेमने माटे महत्वनी थइ पडशे.

हाल भरतनाटयशास्त्र; संगीतरत्नाकर, तेनी उपरनी कल्लिनाथ अने सिंह-भूपालनी टीका; राग विबोध, पारिजात, दर्पण एटलाज ग्रंथो प्रसिद्ध थइ जनसमाजना परिचयमां आव्या छे, परंतु बाकीना सेंकडो ग्रंथो अप्रकाशितपणे हिंदुस्तान अने यूरोपना देशोमां पडी रह्या छे. काशी, कलकत्ता, बिकानेर, जयपुर, मद्रास, तंजोर, तेमज यूरोपमां फ्रान्स, इंग्लांड अने जर्मनी ए त्रण देशोमां ग्रंथो छपाइ रह्या छे. एम हिंदुस्ताननां अने यूरोपनां कयां कयां स्थानोमां कये कये स्थळे कया कया ग्रंथो होवा विषे जणाइ आव्युं छे, ते ए विषयना शोधक पुरुषोनी यादीयो, कर्णोपकर्णे अमने मळेली माहिती, अमारा प्रयत्न, अमारा शोध अने अवलोकन उपरथी जेटला ग्रंथो होवा विषे समजायुं छे तेनी विस्तृत यादी आ स्थळे आपीए छीए. ए यादी आप्या बाद, वाचकजना आ ग्रंथनी योग्यता अने तेमां आवेला विषयनी योग्यता वगेरे तपासवुं ठीक थइ पडशे.

बीकानेरनी पेलेस लायब्रेरीमांना ग्रंथो.

	ग्रंथ नाम.	कर्ता, कालादि.	प्राप्त स्थलादि.
१	**स्वरमेलकलानिधि.**	तोडरमलनी मूळना उपरथी रामामात्ये रचेलो	नंबर. ९३०
२	**स्वरमेलकलानिधौ** (राग प्रकरणम्)	राजा तोडरमल संवत	
३	**रागतत्त्वबोध.**	श्री निवास. १७४३	९१७
४.	**रागध्यानादिकथनाध्याय.**	?	९१९
५.	**रागमंजरी.**	पुंडरीक विठ्ठल.	९१९
६.	**रागमाला अथवा रागरत्नमाला.** इंडीया ओफिसनी लायब्रेरीमां	क्षेमकरण सं. १६७०	९१६ नं. १९११

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अने ओकसफर्डनी बोडलीयन लायब्रेरीमा नं. २०१B

एवी बे प्रतो छे.

७. **रागमाला.** पुंडरीक विठ्ठल. ५१५

८. **रागविबोध.** मुग्दल पुत्र सोमदेव रचित इ. सं. १६०८ ५१८

ओकसफर्डनी बोडलीयन ला. नं. २००A

९. **श्रुतिभास्कर.** भीमदेव. पोथीना आकारे पाना ६४. ५३०

१०. **सद्रागचंद्रोदय.** पुंडरीक विठ्ठल. ५२९

११. **संकीर्णरागाध्याय.** ?. ७०९

१२. **संगीतकल्पतरु.** रंगनाथ, एना उपर गणेशदेवनी **सुबोधिनी** नामनी ५१२ टीका छे. आरंभनो थोडो भाग खंडित छे; विक्रमोर्वशीय नाटकमां आनुं नाम आव्युं छे.

१३. **सुबोधिनी.** (टीका) गणेशदेव. ,, ५१२

१४. **संगीतदर्पण.** दामोदर भट्ट. ५१९, ५२०

(अ) इंडीया ओफिसनी लायब्रेरी नं. १७०९, २२३१, २३९९, २४१०, अेवी ४ नकलो छे.

(ब) ऑकसफॅार्डनी बॅाडलीयन लाय. मां २००B अने २०१ A अेवी बे नकलो छे.

(क) तंजोर पेलेस लायब्रेरीमां ६०A

(ड) पेरीस लायब्रेरी २८१A

१५. **संगीतपुष्पांजली.** कल्याण. ५२१

१६. ,, ,, **वेद** ,,

१७. **संगीतमकरंद** ,,

पोथीने आकारे ८४ पाना छे. दरेकमां १०–१० लींटीओ होइने प्रथमनां ३ पानां खंडित छे. ५१०

(अ) तंजोरनी पेलेस लायब्रेरीमां पण छे. ६०A

१८. **संगीतमुक्तावलि** देवेंद्र. ग्रंथ संपूर्ण रुपमां छे. ५२१

१९. **संगीतराज** कुंभकर्ण नरेंद्र.

२०. **संगीतविनोद** ,,

एनी बे प्रतो छे. तेमां नं. ५२७ A नी प्रतमां ३३ पानां छे अने B वाळी प्रतमां १० पानां छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

२१. संगीतशिरोमणि ? ५२७

२२. संगीतसार ? सं० १५६३. ५२६

(अ). लाहोरमांना पंडित राधाकृष्णनी खानगी लायब्रेरीमां एक नकल छे.

२३. संगीतोपनिषद् सुधाकलश सं० १३२४. ५२९

२४. संगीतोपनिषत्सार ,, सं० १३५०. ५२८; ५२९

२५. संगीतसारोद्धार हरिभट्ट. ?

(अ). ओपर्टे दाक्षिण हिंदुस्थानना ग्रंथोनी करेली यादीमां नंबर ४३७२

(ब). डॉ. बुल्हरनी यादीमां नंबर २. ५२७

२६. अनूपसंगीतविलासनृत्याध्याय.

(व्याख्यासहित)

आरंभमां—आंगिकं भुवनं यस्य××

टीका—अथ गीतवाद्योपकार्य.

अंतमां—इति श्रीमद्राठोडकुलदिनकरमहाराज.

२७. आनंदजीवन राजा मदनपाल. सं० १५८५.

आरंभमां—देवतानां. ×

अंतमां—देशी पंचम. ×

२८. भरतनाट्यशास्त्र. भरत मुनि.

२९. हृदयप्रकाश. हृदयनारायणदेवविरचित.

३०. मुरलीप्रकाश. भाव भट्ट. आरंभमांनो भाग त्रुटित.

३१. नर्त्तननिर्णय. पुंडरीकविठ्ठल

३२. नष्टोद्दिष्टप्रबोधक भाव भट्ट. ध्रौपद टीका

३३. नृत्याध्याय. अशोकमल्ल.

३४. रागविचार. श्री रागमल्ल. (हिंदी भाषानो ग्रंथ) सं. १७३२

३५. रागविबोधविवेक. ?

३६. रामकौतुहले नृत्यप्रकरणम्. रामकृष्ण भट्ट. आरंभमांनो थोडो भाग खंडित छे.

३७. रुद्रडमरुद्भवसूत्रविवरणम् (मार्ग संगीतनो आ ग्रंथ छे.)

३८. संगीतदर्पण. हरिवल्लभ सं. १७२० हिंदी भाषानो ग्रंथ. आ ग्रंथनी अेक प्रत अमारा संग्रहमां छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

३९. संगीतोपनिषद् सारे तालप्रकाशाध्याय.

४०. ,, ,, नृत्य पद्धति.

आ उपरांत नीचेना ग्रंथो पण छे अेम मी. भातखंडे पोतानी संगीत पद्धतिना १ ला भागमां जणावे छे.

४१. रागकाव्यरत्न.

४२. रागचंद्रोदय.

४३. गमकमंजरी.

४४. स्वराध्याय–भाषा.

४५. संगीतराजरत्नकोष.

४६. संगीतशृंगारहार.

४७. संगीतसूत्र.

४८. संगीतोद्देश

४९. संगीतानूपरागसागर

५०. संगीतवर्त्तमान

५१. संगीतसारकलिका.

५२. संगीतसारनृत्याध्याय.

५३. अनूप संगीतरत्नाकर.

५४. हृदयकौतुक.

५५. नृत्यभेदनिर्णय.

५६. मुखादि चाली. नृत्याध्याय.

५७. संगीतानंदजीवन

५८. संगीतरामकौतुक.

५९ हनुमन्मतीय राग विभाषा

६० संगीत रत्नाकर. शार्ङ्गदेव.

एना १ नृत्याध्याय, २ रागविवेकाध्याय, ३ शारीरअध्याय, ४ स्वरगताध्याय, ५ तालाध्याय एवा पांच अध्याय छे अने ते उपर एक टीका पण छे. तेमां आरंभनो भाग त्रुटित छे.

रा. भातखंडे लखे छे के ते उपर सिंहभूपालनी अने कल्लिनाथनी टीकाओ पण छे.

(२).

भूज (कच्छ) ना आयना मेहेलमां संगीतना ग्रंथो.

संस्थान कच्छना महाराओ श्रीखेंगारजी सवाइ बहादुरना आयना मेहेलमां प्राचीन हस्त लिखित ग्रंथो छे, जेनी व्यवस्थित यादी गुजरातना सुप्रसिद्ध साक्षर रा. रा. केशवलाल हर्षदराय ध्रुवे करी हती ते उपरथी नीचेना ग्रंथो म्हारा जोवामां आव्या छे.

६१. **संगीतदर्पण**—हरिवल्लभ. सन १८९४.

आ ग्रंथ हिंदी भाषामां होइ संपूर्ण छे. पानां १२० छे, तेना स्वर, राग,

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रकीर्ण, वाद्य, ताल, अने नृत्य एटला अध्याय छे. संस्कृत संगीतदर्पण उपरथी भाषामां रचेला आ ग्रंथनी एक नकल मारी पासे छे.

६२. **संगीतदीपन**—हरिवल्लभ. १७९१ सन.

भाषा हिंदी. पानां २१८ होइ संपूर्ण छे. संगीत दर्पण उपर टीकारुपे होइ तेना नीचे प्रमाणे अध्यायो छे.

रागाध्याय—कर्ता हरिवल्लभ.		इ. स. १८००	पृष्ठ	३६
स्वराध्याय— ,,	,,	?	,,	३२
नृत्याध्याय— ,,	,,	,, १७९२	,,	१०२?
रागाध्यायनुं ओळीयुं ,,	,,	,, ?		?

६३. **वाद्यविवेकविलास**—यदुभान सुत मयाराम सुत फकीरचंद. पानां १०५. ग्रंथ संपूर्ण छे. आ ग्रंथ त्यांनां महाराव श्रीलखपतजीए रचावेलो हतो.

आज ग्रंथनी बीजी नकल छे, तेनो काळ संवत १३१४ नो लखेलो छे. पानां ३९ होइ संपूर्ण छे.

६४. **नृत्यसुधारसमंजरी**—मयाराम सुत फकीरचंद. इ. स. १८११.

६५. **रागलक्षण**—कर्ता ? पानां ४२ होइ पूर्ण छे. दरेक पानामां एक एक रागनुं लक्षण आप्युं छे, एवां ४२ रागोनां लक्षणो आपेलां छे.

६६. **रागभेद**—लक्ष्मीधर सुत चतुरदास. पानां १८ होइ अपूर्ण छे.

(१). **संगीत रत्नाकर**—पुनाना आनंदाश्रम तरफथी मुंबइना संगीत प्रेमी रा. रा. मंगेशराव तेलंगे संशोधन करी प्रसिद्ध थएलो आ ग्रंथ सर्व प्रसिद्ध छे. ते ग्रंथ ज्यारे संशोधित थतो हतो त्यारे, तेनी एक नकल अहिंथी, त्यांना ते वखतना दिवान अने गुर्जरसाक्षरवर्य **श्रीयुत रणछोडभाइ उदयरामे** एक नकल करावी तेमना उपर मोकलावी हती.

(३)

जोधपुरना प्राचीन ग्रंथोनी यादीमां नीचेना ग्रंथो छे.

६७.	**संगीतखंड** कर्त्ता	?	संस्कृत ग्रंथ.
६८.	**संगीतटीका**	,,	,,
६९.	**संगीतकल्पतरु**	,,	,,

बीकानेर पेलेस लायब्रेरीमां (ग्रंथ नंबर १२ वाळो) आज ग्रंथ हशे एम लागे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१) संगीत दर्पण संस्कृत ग्रंथ. (जुओ नं. १४)
(२) संगीत रत्नाकर ,, (,, नं. ६०, ६६ (१)
७०. रागसागर कर्ता ? हिंदी भाषा
७१. रागबत्तिशी ,, ,,
७२. रागनिबंध. ,, ,,
७३. रागका अनेक ग्रंथ ,, ,,
७४. रागोंकी वही ,, ,,
(१) रागरत्नमाला ,, (जुवो नं. ७)

जयपुर शेहेर विद्यानी बाबतमां पूर्वे कालथी घणुं प्रसिद्ध छे. तेनी योग्यता काशी

(४)

जेवी गणाय छे. त्यां लाहोरना पंडित राधाकृष्णना ग्रंथ संग्रहमां नीचेना ग्रंथो छे.

७५. रागरागिणीस्वरुपवेलावर्णन ?
७६. संगीत कल्पद्रुम त्यांना ग्रंथोनी यादीमांनो नं. ३८
७७. संगीतसागर ,, ,, ४४
७८. संगीतसार ,, ,, ,,
७८. संगीतरत्न ,, ,, ३८. ४४

कलकत्ता अने बंगाल इलाकामां नीचेना ग्रंथो छे.

८०. राग कल्पद्रुम. संवत १९०६ वैशाख वद्य १ बंगालीसन १२५६ इ. स. १८४९ तारीख ११ ने दीवशे आ प्रचंड ग्रंथ प्रसिद्ध थयो. आ ग्रंथमां अनेक संस्कृत ग्रंथोना आधारो आप्या छे. तेमांना नीचेना. ग्रंथोनां वचनो उतारी लीधेलां छे. ए उपरथी जणाय छे के, आ नीचेना वधाए ग्रंथो ग्रंथकार पासे होवा जोइए.

८१. पर्णसागर—शरुआतमां मृदंगाध्याय प्रारंभः थी आरंभ करी तेमाथी मृदंगना पाटवर्ण (परन) ना अक्षरो आप्या छे. कच्छ–मुंद्रा–ना प्रख्यात स्वर्गवासी शेठ जटुभा के जेओ संगीतशास्त्रमां घणा कुशळ हता अने जेओ मारा पोताना मित्र पण हता तेमणे मने जणावेलुं के आ ग्रंथनी एक प्रत उदेपुरमां छे. ग्वालीयरमां पण छे. तेमज श्रीनाथजी–नाथद्वारा–ना मंदिरमां एक पखवाजी छे तेनी पासे पण छे. नाथद्वाराथी थोडाक माइल उपर कांकरोली नामे गाम छे त्यां तपास करवाथी मळी शकशे.

८२. संगीत महोदधि. संस्कृत.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

८३. बृहत् संगीतरत्नाकर. (इंद्रप्रस्थीय युधिष्ठिर श्रीकृष्णमतानुयायी).

८४. संगीतभाष्य—कर्त्ता मतंगज. (नारायण हेमचन्दनी नाट्यचर्चा पृष्ठ २० मां उदाहृत) आ ग्रंथनां २२ श्रुतिनां नामो जुदी तरेहनां छे. "संगीत भाष्ये मृदंगाध्याये वाद्याक्षराणि सन्ति" एम लखीने तेना घणा महत्वना श्लोको कल्पद्रुमना स्वराध्याय पृष्ट २५ मां आपेला छे. ते उपरथी जणाय छे के, ए ग्रंथ सारो होवो जोइए.

८५. नाद महोदधि

८६. नादपुराण.

८७. संगीत ब्रह्मा विष्णु महेश्वरसंवादसंहिता

८८. नारद संहिता

८९. संगीतमंजरी

९०. संगीत साहित्य

९१. संगीतचन्द्रिका.

९२. सं० रत्नमाला

९३. सं० दामोदर.

९४. सं० रत्नावलि

९५. सं० कौमुदी.

आ बधा ग्रंथो कल्पद्रुमना कर्त्तानी पासे हता एम लागे छे. कर्त्ताए कलकत्तानुं ठेकाणुं "बडा बाजार. पुरणाथ पासे, श्रीकृष्णानंद व्यासदेव राग सागरजी" आवुं आप्युं छे. शोधकोए आनी शोध करवा जेवी छे.

नीचेना ग्रंथो कलकत्तामां अने बंगाळ तरफ होवा विषे अनुमान थाय छे. नारायण हेमचंद्रे गुजराती भाषामां नाट्यचर्चा लखेली छे ते प्रसिद्ध छे. ए ग्रंथ बंगाळी लेखनुं भाषांतर होय एम जणाय छे. तेमां नीचेना केटलाक उताराओ लीधेला छे, ए उपरथी ए ग्रंथो ते तरफ होवा जोइएज. शोधकोए त्यां अवश्य शोध करवो.

९६.	ध्वनिमंजरी	कर्त्ता	विश्वावसु.
९७.	राग सर्वस्वसार	"	सिंहलन.
९८.	संगीत भास्कर	"	भास्कराचार्य
९९.	संगीत कौस्तुभ	"	?
१००.	तांडव तरंगेश्वर	"	अन्युकभट्ट
१०१.	गीतसिद्धान्तभास्कर	"	रामानंदतीर्थस्वामी.
१०२.	तुंबरु संहिता	"	तुंबरु.
१०३.	रंगोदय	"	सांभवाचार्य.

कलकत्तानी रोयल एशीयाटीक सोसाइटीमां नीचेना ग्रंथो छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१) संगीत रत्नाकर

(२) ,, टीका कल्लिनाथ.

(३) ,, ,, सिंहभूपाल

१०४. संगीत नारायण कर्ता पुरुषोत्तम.

१०५. संगीत कल्पद्रुम.

१०६. संगीत भाषा

१०७. सं० पारिजात.

१०८. सं० शिरोमणि.

१०९. सं० सागर.

११०. अघोबनंदिनी शिक्षा,

१११. रागमाला (अपकर्ण)

(१) सं० दर्पण.

११२. नारदीय शिक्षा.

११३. संकीर्ण राग लक्षण.

कलकत्तानां महेन्द्रनाथ चतरजी. एम. डी. एम. ठे. हेरिसनरोड. मीर्झापुर. स्ट्रीट नं. ९. एमनी पासे नीचेना ३ ग्रंथो छे. एम संगीतना पहेला कहेला महाराष्ट्रीय मासिक संगीत मीमांसाना मालेक अने संगीतना चिंतक रा. रा. अन्नासाहेब वारपुरे मने कहेलुं हतुं.

११४. शिव संगीत.

११५. गंधर्व रहस्य.

११६. भरतशास्त्र.

(६)

श्रीकाशीक्षेत्रमां गायघाट उपर बालमुकुंदजी, मालवी कर्मकांडी, एमनी पासे अनेक हस्तलिखित ग्रंथो छे, एम मने बे त्रण शोधकोए तेमज रा. रा. अन्नासाहेब वारपुरेए कह्युं हतुं. मी. वारपुरेए पोते संगीत नारायण, सं. दर्पण, पारिजातना ४ अध्याय, राग विबोध वगेरे ग्रंथो जोया हता, अने तेनी नकलो पोते उतारी लीधी हती. ते तेमणे मने बतावी हती. श्रीयुत बालमुकुंदजी पोते अनेक हस्तलिखित ग्रंथोनी नकलो करी लइ, पोताना संग्रहमां राखे छे, अने ते ते ग्रंथोना शोधकोने वेचवानो धंधो करे छे. कलकत्ताना प्रसिद्ध महामहोपाध्याय पंडित हरिप्रसादजी (एम. ए) एमणे, तेमनी पासेथी नीचेना ग्रंथो लीधा छे एम मी. भातखंडे पोतानी संगीत पद्धति भाग १ मां (पृष्ठ १९३) जणावे छे.

११७. गांधर्व वेद.

११८. रागचुंबकमणिरुचिमालिका.

११९. संगीतसंग्रह.

१२०. संगीतविद्यानिधान.

१२१. संगीत कल्पलता.

१२२. संगीतरघुनंदन.

१२३. आनंदजीवन-कर्ता. मदनपाल. १२४. सोमेश्वरमत.
१२५. गीतगिरीशकाव्य. १२६. संगीतरसकौमुदी.
१२७. संगीतसार-कर्त्ता-केदारनाथ. १२८. गीतसार.
१२९. गानशास्त्र-(भरतकृत) १३०. सामप्रकाश.
१३१. राग विबोध. (कर्ता सोमदेव)

श्री वृंदावन (जील्हो मथुरा) मां गोरीयाजी नामे एक गृहस्थ छे, तेमने त्यां पण संगीतना घणा ग्रंथो छे एम मने श्रीयुत् अन्ना साहेब वपुरेए कह्युं हतुं. ए स्थळे शोधकोए अवश्य ध्यान आपवुं. वृंदावननुं ठेकाणुं—टीकारी वाळी महाराणीनुं मंदीर.

कालीकोटमां त्यांना झामोरीन राजासाहेब पासे नीचेनो ग्रंथ घणो उपयोगी छे एम म्हने मी. मंगेशरावतेलंगे कह्युं हतुं.

१३२. आमापरय. आ ग्रंथ ताडपत्र उपर संस्कृत भाषामां लखेलो छे.

(३)

त्रिवेंद्रुमनी. पेलेस लायब्रेरीमां नीचेना ग्रंथो छे.

१३३. अंगहार लक्षण.	१४०. रसार्णव सुधाकर.
१३४. नाटय ग्रंथ.	१४१. संगीत चिंतामणि.
१३५. नाटयवेद.	१४२. संगीत चूडामणि.
१३६. नाट्यवेद विवृत्ति.	१४३. संगीत सुधा.
१३७. नृत्यरत्नाकर.	१४४. सं. सुधाकर. (हरिपाळ)
१३८. बालराम भरत.	१४५. सप्तस्वर लक्षण.
१३९. भाव प्रकाश.	१४६. स्वर तालादि लक्षण.

आ नामो शोधकोनी यादीओमां तेमज रा. भातखंडेनी संगीत पद्धतिमां पण आवेलां छे.

(७)

तंजोर (तंजावर) नी पेलेस लायब्रेरीमां जे ग्रंथो छे ते आ प्रमाणे.

१४७. तालदश प्राण दीपिका.	गोविंद.	नं. ६१ A
१४८. तालदीपिका.	तिप्पभूपाल	,, ६० B
१४९. तालप्रस्तार.	?	,, ,,
१५०.ताललक्षण.	नंदिकेश्वर	नं. ६० B.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

१५१. ,, कोहलाचार्य ,, ६१ A.
१५२. रागप्रस्तार. ? ,, ,,
१५३. रागरत्नाकर गंधर्वराज ,, ९० A.
१५४. रागलक्षण. ? ,, ५१ A.
१५५. संगीतनृत्तरत्नाकर. विठ्ठल ,, ५० A.
१५६. संगीत सारामृत. (तंजावरना तुळजीराव महाराजा-
श्रीना नामनो ग्रंथ)
१५७. संगीत सुंदर. सदाशिव दीक्षित.
१५८. स्वर परिभाषा अथवा सामलक्षण.
१५९. संगीत मुक्तावलि. १६०. अभिनयदर्पण.
१६१. अष्टोत्तरशतताल लक्षण १६२. दंतिलकोहलीयम्.
१६३. चत्वारिंशच्छतरागनिरूपणम्,
(१). संगीतदर्पण दामोदर नं. ६० A.
(२). संगीतमकरंद वेद ,, ,,
आ ग्रंथनी एक प्रत बीकानेरमां पण छे.
(३). संगीत रत्नाकर.

(८)

म्हैसूरनी पेलेस लायब्रेरी (सरस्वति भांडार) मां संगीतना घणाक ग्रंथो हता, परंतु ते लायब्रेरी अग्निनारायणना सपाटामां आवी जवाथी नाश पामीने साथे स्वाहा थइ गया. तेमांथी नीचेना बे ग्रंथो घणा उपयोगी जणाया छे.

१६४. संगीत गंगाधर—व्याख्या श्रवणानंदिनी
कर्त्ता—काशीपति. नं. तेमज ८ मद्रासनी ओरीअेंटल लायब्रेरी पार्ट नं. १८६ जुओ.

१६५. स्वर पंचाशत्—ते उपर टीका पण छे. नं. २
ते उपरांत म्हैसूरनी ओरीअेंटल लायब्रेरीमां जे ग्रंथो छे ते आ प्रमाणे.

१६६. अभिनयदर्पण. १७०. आदिभरतम्.
१६७. अभिनयप्रकरणम्. १७१. भरतसारसंग्रह.
१६८. अभिनयमुकुरम्. १७२. संगीत चूडामणि.
१६९. अभिनवभरतसारसंग्रह. १७३. संगीत मकरंद.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

१७४. संगीत लक्षणदीपिका· (२) स्वरमेलकलानिधि
१७५. संगीत लक्षण· (३) संगीतरत्नाकर–व्याख्या.
१७६. „ समयसार·
१७७. स्वरप्रसार.
(१) संगीत दर्पण

(९)

मद्रासनी गवर्नमेंट ओरीअंटल लायब्रेरीमांनीचेना ग्रंथो छे, एम त्यांनी यादी उपरथी जणाय छे.

१७८. संगीतसारदर्पण. १७९. संगीतसारसंग्रह.
१८०. संगीतसारोद्धार· १८१. नृत्तालपुराणसंग्रह.
१८२. रागविशेष· (१). स्वरमेलकलानिधि.
(२). संगीतरत्नाकर (३). संगीतदर्पण.

(१०)

मुंबइ हाइकोर्टना वकील रा. रा. विष्णुनारायण भातखंडे (बीए एल. एल. बी.) ना संग्रहमां संगीतना जे ग्रंथो छे ते आप्रमाणे.

(१) राग विबोध
१८३. सारामृत·
(१) स्वरमेलकलानिधि·
१८५. चतुर्दंडप्रकाशिका.
१८६. भरतकल्पलतामंजरी.
१८७. संगीत चिंतामणी.
१८८. अनूपांकुश भावभट्ट.
(१) अनूप रत्नाकर·
१८९. अनूप विलास·
१९० सं· सारसंग्रह
१९१. सं· सुधाकर.
१९२. राग माला·
१९३. रागतरंगिणी
(१) सं. पारिजात. *
१९४. राग मंजरी.
१९५. सं· कलिका.
१९६. सं. समयसार·
१९७. सं. चन्द्रिका *
१९८. सं· मकरंद·
१९९. सं· कल्पद्रुम *
२००. सं. विलास.
२०१. सं. शिरोमणि.
(१) सद्रागचन्द्रोदय *
२०२. रागकल्पद्रुमांकुर *
२०३. अष्टोत्तरशततारलक्षण.
२०४. रागचन्द्रिका·
२०५ रागचन्द्रिका सार (हिंदी) *
(१) संगीतसारामृतोद्धार.*

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एमांथी ※ आ [illegible] ग्रंथोना रागाध्याय अने केटलाक आखा ग्रंथना साररूपे प्रसिद्ध करेला छे. बाकीना क्रमे क्रमे प्रसिद्ध थशेज.

(११.)

हिंदुस्थानना जुदा जुदा स्थळोमां चोक्कस ठेकाणा नहि समजायला एवा केटलाक ग्रंथो नीचे प्रमाणे होवा विषे जणाव्युं छे.

(१) **संगीत रत्नाकर.**
(२) ,, ,, नी काल्लिनाथकृत " कलानिधि " नामनी टीका
(३) ,, ,, सिंहभूपाल " सुधाकर "

आ बन्ने टीकामांनी प्रथमनी टीका आनंदाश्रम (पुना) ग्रंथावलीमां प्रसिद्ध थइ छे. अने बीजी मात्र एकज अध्याय उपरनी टीका कलकत्तामां प्रसिद्ध थएली ते प्रसिद्ध छेज. ए उपरांत रत्नाकर उपरनी नीचेनी टीकाओ छे, परंतु ते उपलब्ध नथी तेथी प्रसिद्ध थइ शकी नथी.

(४) चितोडना **कुंभाराणा** नी एक टीका छे. ते कदाच नं. १९ वाळो ग्रंथ जे **संगीतराज** पूर्वे जणाव्यो छे ते हशे एम अनुमान थाय छे.
(५) गंगाराम पंडितनी हिंदीभाषामां एक टीका हती एम मी. शारदाप्रसाद घोष एमणे जोइ हती (कलकत्ता)
(६) हंसभूपालकृतटीका
(७) तैलंग भाषामांनी टीका.
(८) भाष्यरुपे बांचेली टीका.

२०६. **गीतप्रकाश** संगीत नारायणमां आनुं नाम आवेलुं छे. तेनी १ नकल ऑक्सफोर्डनी बोडलीयन लायब्रेरीमां छे.
२०७. **गीतशंकर. भीष्ममिश्रकृत** अयोध्या तरफ मळी शकशे.
२०८. **तालोपनिषद** डॉ. बुल्लरनी गुजराती ग्रंथोनी यादी खंड १ नंबर ८४.
२०९. **मेलरागस्वरसंग्रह.** ? मद्रास तरफ शोध करवी.
२१०. **रागचंद्रोदय** विभल कृत. डॉ. बुल्लरनी गुजरातना ग्रंथोनी यादी.
२११. **रागमाला जीवराज दीक्षित.** बंगालना ग्रंथोनी डॉ. राजेंद्रलाल मित्रनी यादी.
२१२. **रागविवेक.** मध्यप्रांत, नागपुर वगेरे स्थळे तपास करवाथी कदाच मळी शकशे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

२१३. **रागार्णव** संगीतदर्पणमां तेमज सुरतरंगिणीमां नाम आवेलुं छे.
२१४. **रागोत्पत्ति** मद्रास तरफ तपास करवा जेवी छे.
२१५. **वीणातंत्र** " " "
२१६. **संगीतकलानिधि-हरिभटकृत** वायव्यप्रांत, कनोज, दिल्ली वगेरे स्थळे शोध करवो.
२१७. **संगीतकलिका--** रघुवंशनी टीकामां हेमाद्रिए आ ग्रंथनुं नाम लीधेलुं छे, ते उपरथी तेनुं प्रामाण्य ठीक होवुं जोइए
२१८. **संगीतकौमुदी--**संगीत नारायणमां आ ग्रंथनुं नाम आवेलुं छे ऑकसफोर्डनी लायब्रेरीमां एज नामनो जे बीजो ग्रंथ छे ते जुदो छे
२१९. **संगीत चिंतामणि--**कमललोचन कृत. नागपुर मध्यप्रांत तरफ
२२०. **संगीतताल** ?
२२१. **संगीतमीमांसा--कुंभकर्णनरेंद्र** चितोडना प्रसिद्ध कुंभाराणाकृत. राजपुताना मध्यप्रांत वगेरे तरफ
२२२. **संगीतदामोदर--**दामोदर. नागपूर मध्यप्रांत किलहार्नना यादीमांनो नं. ९५ एज नामनो हरिवल्लभनो बीजो ग्रंथ छे ते जुदो
२२३. **संगीत रत्नमाला--मम्मट** (काव्यप्रकाशनो कर्ता) आ महापंडित काश्मीर देशमां १२ मा सैकामां थइ गयो संगीत नारायणमां आ ग्रंथनुं नाम आवेलुं छे
२२४. **संगीत रागलक्षण** कनोज वगेरे स्थळे मळी शकशे
२२५. **संगीतशास्त्र** शाङ्गधर. मद्रास तरफ
२२६. **संगीतसर्वस्व--**वेणीसंहार उपर द्धरनी टीकामां अने कर्पूरमंजरी उपरनी वासुदेवनी टीकामां एम बन्ने टीकाओमां आ ग्रंथनुं नाम आवेलुं छे
२२७. **संगीतसारसंग्रह** --दक्षिणमद्रास वगेरे स्थळे जोवुं
२२८. **संगीतसुधा--**भीमनरेन्द्र अयोध्या " "
२२९ **संगीतामृत-कर्त्ता-कमललोचन** (नागपुर वगेरे स्थळे जोवुं)
२३० **संगीतार्णव**-संगीत दर्पणमां उदाहृत. ऑक्सफोर्ड ला. नं. २०१A
२३१ **स्वरप्रस्तार-** } आ ग्रंथो मद्रास तरफ मळी शकशे.
२३२ **स्वरसमुच्चय-** }
२३३ **संगीतनृत्याकर-भरताचार्य-**औध. भाग १६. नं. १००
२३४ **संगीतरघुनंदन-विश्वनाथ** " " ९ " १८

२३५ **संगीतरत्नावलि–सोमराजदेव** डॉ. बुल्हरनी यादी नं. ४-२३४
२३६ **संगीतसिद्धांत–रामानंदतीर्थ** राजेंद्रलालमित्रनी यादी नं. १०१७
२३७ **नाददीपक**–राजेंद्रलालमित्रनी यादी नं. ९३४

(१२)

संगीतरत्नाकरनुं संशोधन करनार पंडित मंगेशराव रामकृष्ण तेलंगे पुना आनंदाश्रमग्रंथमालामांनो सं० रत्नाकर नामे जे ग्रंथ प्रसिद्ध कर्यो छे तेमां छेवटे ग्रंथोनी एक यादी आपी छे. तेमांना घणा खरा ग्रंथो उपर आवी गया छे, परंतु जे ग्रंथो उपरनी कोइ पण यादीमां आव्या नथी ते ग्रंथो आ प्रमाणे छे : ते क्यां छे एतो प्रभु जाणे; परंतु शोधकोए ते वात ध्यानमां राखवा जेवी छे.

२३८ अर्जुनभरतम्	कर्त्ता	अर्जुन
२३९ गीतालंकार	,,	अनंतनारायण
२४० तालप्रस्त (स्थ ?) म्	,,	?
२४१ तालादिलक्षणम्	,,	?
२४२ तालाभिनयलक्षणम्	,,	नन्दिकेश्वर
२४२ ध्रुवपदटीका	,,	भावभट्ट
२४४ नाददीपिका	,,	भट्टाचार्य
२४५ नृत्यरत्नावलि	,,	गणपतिदेवसेन
२४६ भरतभाष्य	,,	न्यायदेव
२४७ भरतलक्षणम्	,,	?
२४८ भरतशास्त्रम्	,,	रघुनाथ
२४९ भरतशास्त्रसंगीतम्	,,	?
२५० भरतसारसंग्रह	कर्त्ता	चंद्रशेखर
२५१ मतंगभरतम्	,,	लक्ष्मणभास्कर
२५२ मुक्तावलिप्रकाशिका	,,	?
२५३ मेलाधिकारलक्षणम्	,,	?
२५४ रागनिरुण	,,	नारद
२५५ रागविचार	,,	श्रीराम
२५६ रागादिस्वर निर्णय	,,	रघुनाथ प्रसाद
२५७ वीणावाद्यलक्षणम्	,,	?

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

२५८ वीरपराक्रम	,,	वासुदेव
२५९ सप्तांगलक्षणम्	,,	?
२६० सरागचंद्रोदय	,,	?
२६१ संगीतदीपिका	,,	निप्प (म्ब) भूपाल
२६२ ,, पाठ	,,	?
२६३ ,, राघव	,,	वोमभूपाल (?)
२६४ ,, वृत्तरत्नाकर	,,	विठ्ठल
२६५ ,, समयसार	,,	पार्श्वदेव
२६६ ,, सर्वार्थसंग्रह	,,	?
२६७ ,, सारावली	,,	?
२६८ ,, सुधाकर	,,	हरिपाल
२६९. ,, सुरामृतम्	,,	तंजावर निवासी भोसले तुलाजी महाराज
२७० ,, सेतु	,,	गंगाराम्
२७१ ,, सारसंहिता	,,	नारद
२७२ ,, स्वरमंजरी	,,	?

(१३)

भरुच (गुजरात) थी १२ माइल उपर शुकलतीर्थ नामे एक जूनुं स्थळ छे. त्यांना श्रीमाळी ब्राह्मणो सामवेदना अध्ययनने माटे घणा पंकायला छे. त्यां सामवेद अने सामगानना घणाक ग्रंथो मळी शकशे एम म्हने एक गृहस्थे कह्युं हतुं. अने नीचेना ग्रंथो त्यां छे एम जणाव्युं हतुं.

२७३ गांधर्ववेद–वेदनां गान केवी रीते गावां ए विषेनी घणीज माहिती आ ग्रंथमां छे. जोधपुरना दानाध्यक्ष श्रीमाळी ब्राह्मण छे तेमना संग्रहमां पण सामगान विषेना घणाक ग्रंथ छे एम एक बीजा गृहस्थे मने जणाव्युं हतुं.

२७४. सामदर्पण

२७५. सामतंत्र

२७६. धातुतंत्र

२७७. ऋक्तंत्र.

२७८. नारदीय शिक्षा

२७९. पंचमसारसंहिता

२८०. साममात्रालक्षण—सामवेदना मंत्रोमां आवती मात्राओ केवी रीते गणवी तेनां उदाहरणो आपी स्पष्ट समजावेलुं छे. आ ग्रंथनी एक प्रत म्हारी पासे पण छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(१४)

यूरोपादि पाश्चात्य देशमां जे ग्रंथो छे ते नीचे प्रमाणे छे. ए ग्रंथो त्यांनी लायब्रेरीओमां अत्यंत काळजीथी व्यवस्थित रीते राखवामां आवेला छे.

२८१. **नारदसंहिता**—नारायण देवे आ ग्रंथमांनां केटलांक वचनो लीधां छे. जेमके **नारदसंहितायां चत्वारिंशत् रागनिरूपणं.** ऑक्सफर्डनी बॉडलियन लायब्रेरी नं. २०१ A.

२८२. **संगीतार्णव**	ऑक्सफॉर्ड०	नं. २०१ A.
२८३. **गीतप्रकाश**	,,	,,
२८४. **ताललक्षण—कोहलाचार्यकृत**		नं. ३०२५
२८५. ,, **नंदिकेश्वर**		,, ३०८९

आ बंने ग्रंथनी प्रतो लंडननी इंडिया ऑफिस लायब्रेरीमा पण छे.

२८६. **पंचमसारसंहिता—नारद**	ऑक्स०	नं. २११ A
२८७. **संगीतनारायण—गजपति**	,,	,,

इंडिया ऑफिसमां पण एक नकल छे.

२८८. **संगीतदामोदर**	,,	नं. १४८९
२८९. **रागमाला**	ऑक्स०	नं. १०१ B.
	इंडिया०	नं. १५१६
२९०. **रागविबोध**	ऑक्स०	नं. २०० A
२९१. **संगीतदर्पण**	,,	,, २०० B
२९२. **संगीतकौमुदी**	ऑक्सफोर्ड०	नं. २०१ A.
२९३. **संगीतशास्त्र**	सारंगधर (?)	,, १०८ A.

पारिसना ग्रंथ संग्रहालयमां पण अनेक ग्रंथो छे, तेमज जर्मनीमां पण तेवोज संग्रह छे. जे शोधक प्रवासीओ त्यां जइ आर्यसंगीतनी उन्नति माटे काळजी धरावता होय तेमणे अवश्य संग्रह करी आ दैवी विद्या उपर उपकार करवो एवी तेमने अमारी नम्र प्रार्थना छे.

(१५)

(१) पुनामां पण जुदी जुदी लायब्रेरीओमा थोडाक ग्रंथो छे एम जणाय छे. त्यां **"पुना गायन समाज"** नामे एक संस्था छे. ते तरफथी हमणांज लगभग ४-५ वर्ष पूर्वे प्रसिद्ध थएलो **राधागोविंदसंगीतसार**

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नामनो प्रचंड ग्रंथ बहार आवेलो छेज. ए उपरांत ए संस्था पासे केटलाक हस्त लिखित पुस्तको छे. (२) तेमज श्रीयुत् **अन्ना साहेब घारपुरेनी** पासे संगीतना केटलाक ग्रंथो छे. ते ग्रंथो मने दूरथी बताव्या हता ! ! आखा महाराष्ट्रनुं संगीतशास्त्र प्रत्येनुं ध्यान खेंचनार तेओ प्रथमज हता. तेमणे घणा वर्ष पूर्वे **संगीतमीमांसा** नामे एक मासिक पुस्तक चलावेलुं हतुं. त्यार बाद **रागविबोध, संगीतपारिजात, नारदीशिक्षा, वगेरे ग्रंथो हाल जे बधा प्रचलित छे** ते **प्रथम तेमणेज प्रसिद्ध करेला** हता. उपरनी यादीमां आवेला ग्रंथो उपरांत

२९४. **तानसेनसंगीतसार**—तानसेनकृत. भाषा हिन्दी

ए नामनो ग्रंथ प्रसिद्ध करेलो हतो अने पोताना मासिकद्वारा आखा महाराष्ट्र अने गुजरातना थोडाक भागमां संगीतशास्त्रनी चर्चा सारी चलावेली हती.

पुनानी आनंदाश्रम संस्थापासे संगीतना २–४ ग्रंथो छे, ते हवे छपाइने प्रसिद्ध थवानाज छे. ए ग्रंथो तेना चालकोए मने बताव्या हता तेमज त्यांनी डक्कन कॉलेजमां जे लायब्रेरी छे तेमां पण प्राचीन (छशसैकापूर्वेनां) पुस्तको छे तेमां संगीतना पण ग्रंथो होय एम अनुमान थाय छे एम म्हने एकबार साक्षर श्रीयुत केशवलाल हर्षदराय ध्रुवे कह्युं हतुं. परन्तु त्यां जइ ए संबंधी तपास करवानुं माराथी बनी शक्युं नथी.

हिंदुस्थानना प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथो मेळवीने तेनी तेमज जे ग्रंथो मळी शक्या नथी एवा, अथवा जे ग्रंथोनां वचनो इतर ग्रंथोमां आवेलां होय ते उपरथी पत्तो लागेला; एवा एवा प्राचीन ग्रंथो जे जे कंइ आज सुधी समजी शक्या छे तेनी चोकस यादीओ अनेक शोधकोए तेमज संस्थाओए करी छे. ए शोधकोमां **डॉ. राजेंद्रलालमित्र, डॉ. बुल्लर, डॉ. बरजेस** वगेरे पण प्रख्यात छे. तेमनी अखंड उद्योगशीलता' शोध अने प्रगाढ परिश्रमथीज प्राचीन ग्रंथसमूह केटलो महान छे तेनुं भान आपणने थयुं छे. आज सुधी जे जे शोधकोए अने संस्थाओए प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकोनी यादीओ प्रसिद्ध करेली छे ते सघळी उपरथी प्रख्यात जर्मन शोधक आफ्रेचे (आफरेकट) एक एक म्होटी यादी ३ भागमां प्रसिद्ध करी छे, ते यादीमां संगीतना जे जे ग्रंथो जणावेला छे तेमांना लगभग तमाम नामो उपर आवी गयांज छे. परंतु हजी हिंदुस्थानमां खूणेखोचरे पडेलो ग्रंथसमूह एटलो म्होटो छे के, जेनी

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कल्पना अत्यारे करी शकाती अशक्यवत छे. नवा नवा ग्रंथो मळता जाय छे तेम ते ते ग्रंथो शोधकोनी यादीओमां संकलित थताज जाय छे- पण जे ग्रंथो हजी अज्ञात अवस्थामां छे तेवा जे केटलाक समजी शकाया छे ते विषे टुंकामां माहिती आपवामां आवे छे के जे तरफ शोधको अवश्य ध्यान आपशेज.

२९५. **नटसूत्र.** आर्येतिहासमां प्राचीन सूत्रकाळ प्रसिद्ध छ. ए काळमां दर्शनो व्याकरण, ज्योतिषादि शास्त्रो सूत्ररुपेज रचायां हतां. जेम इतर विषयनां तेम संगीतना पण सूत्रो रचायां होवां जोइए. संगीतना नृत्य अंग उपर तो सूत्र बद्ध ग्रंथ हतोज एम पाणिनीना (अ.४, पाद ३, सूत्र ११०) **पाराशर्य शिलालिभ्याम् भिक्षुनटसूत्रयोः ।** ए सूत्र उपर अनुमान थइ शके छे. पाणिनीनो समय बुद्धकाळनी पण पूर्वनो छे ते स्पष्ट छेज.

२९६. **कोहलाचार्य कृत संगीतग्रंथ** होवा विषे एक पूरावो मळी शक्यो छे ते एवो के, –नवमा शतकमां काश्मीरी दामोदर भट्ट (ते वखतना काश्मीरना दिवाने) **कुट्टनी मत** नामे पुस्तक लखेलुं छे, तेमां कोहलाचार्यनुं नाम आवे छे जेमके **विट खेट** केका नृत्यादि कोहल **भरतोदितप्रियया ।** आमां भरतनी साथे प्रथमथीज कोहलनुं नाम गणावेलुं छे. ते उपरथी नवमा शतकनी पूर्वे संगतिना आचार्य तरीके कोहलनी प्रसिद्धि होवी जोइए पण विचारवा जेवुं छे के, तेना करतां तेना ग्रंथनी छाप विद्वान वर्ग उपर विशेष पडेली होवी जोइए.

२९७. **ज्ञानराजकृत संगीत ग्रंथ.** शके १४२५ मां ज्ञानराज नामे प्रख्यात ज्योतिषी थइ गया तेणे सुंदर सिद्धांत नामे ज्योतिष ग्रंथ लख्यो छे. ज्ञानराजे ज्योतिष उपरांत साहित्य, अने संगीत ए विषयो उपर पण ग्रंथो रच्या छे. एम सूर्य भास्करीय बीजा भाष्यमां लख्युं छे. ते उपरथी जणाय छे के, ज्ञानराजकृत कोइ ग्रंथ होवो जोइएज.

भरत कृत नाट्यशास्त्र सर्व प्रसिद्ध छे, अने तेनुं भाषांतर आपणा प्रसिद्ध सौराष्ट्र कविशिरोमणि श्रीयुत् नथुराम सुंदरजीए गुजराती भाषामां कर्युंज छे. ए भरतना समय इ. स. ना ३ थी ५ मा सैकानी वच्चमांनो छे एम मनाय छे. हवे संगीतरत्नाकरनो समय इ. स. १३ मा शतकना पूर्वार्धमांनो मनाय छे. ए भरत अने शार्ङ्गदेवनी वच्चमां लगभग ८०० के १००० वर्षने

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

समय चाल्यो गयो छे ए वचगाळामां जे आचार्यो थइ गया तेमांना केटलाक नां नामो रत्नाकरकर्त्ताए आप्यां छे ते आ प्रमाणेः— १ सदाशिव, २ पार्वती, ३ ब्रह्मा, ४ भरत, ५ कश्यपमुनि, ६ मतंग, ७ याष्ट्रिक, ८ दुर्गा, ९ शक्ति, १० शार्दूल, ११ कोहल, १२ विशाखिल, १३ दंतिल, १४ कंवल, १५ अश्वतर, १६ वायु, १७ विश्वावसु, १८ रंभा, १९ अर्जुन, २० नारद, २१ तुंबुरु, २२ हनुमान, २३ मातृगुप्त, २४ रावण, २५ नंदिकेश्वर, २६ स्वाति, २७ गुण, २८ विंदुराज, २९ क्षेत्रराज, ३० राहल ३१ रुद्रट, ३२ भोजराजा, ३३ सोमेश, ३४ लोल्लट, (भरत उपर व्याख्या करनार) ३५ उद्भट, ३६ शंकुक, ३७ अभिनवगुप्तभट्ट, ३८ कीर्तिधर, तेमज अन्य आचार्यो० आ बधां नामो गणाव्या पछी कर्त्ता लखे छे के,

अन्ये च बहवः पूर्वे ये संगीतविशारदाः ।
अगाध बोधमन्थेन तेषां मतपयोनिधिम् ॥
निमथ्य श्रीशार्ङ्गदेवः सारोद्धारमिमंव्यधात ॥ सं० २०१.

ए उपरांत पूर्वे थइ गएला संगीतशास्त्रना अनेक तत्वचिंतकोना अगाध बोधनुं मथन करी, तेना माखणरुप आ सारोद्धार श्रीशार्ङ्गदेवे कर्यो छे. आ उपरथी एटलुं तो समजी शकाय ते छे के ! कर्त्ताए ग्रंथ रचना करी हशे त्यारे ए बधा संगीतविशारदो पोते तेमनी पासे तो नहीज होवा जोइए, परंतु तेमना बनावेला ग्रंथोज पासे राखीने सं० रत्नाकर नामे ग्रंथ बनाव्यो. काल अनंत छे. आशा पण अमर छे, मनुष्य प्रयत्न सतत छे अने कार्य कारणभाव अबाधित छे तो ए बधा ग्रंथो उपलब्ध थइ शके एवो पण सुवर्णमय वखत आवशे एवो संभव छे."

(१६)

जे ग्रंथो कोइ पण शोधकोनी यादीमां जोवामां नहोता आव्या छतां मळी शके तेवा छे, अने केटलाक तो प्रसिद्ध पण थइ चुक्या छे एवा थोडाक ग्रंथो विषे अने ते साथे थोडाक फारसी के उरदु अने एकाद बे उपयोगी ग्रंथो विषे इसारारुपे बे शब्द जणावीए छीए.

२९८. **सुरतरंगिणी**—आशरे २०० वर्ष पूर्वे इनायतखां नामे कोइ मुसलमान संगीतज्ञ थइ गयो. तेणे ते वखते जे संगितपद्धति अने मान्यताओ **प्रचलित** हती तेनो संग्रह करीने हिंदी भाषामां ग्रंथ रच्यो छे. तेनी १ प्रत मने कच्छ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भूज शहेरमांथी एक नागर गृहस्थ तरफथी मळी हती. ते म्हें छापी प्रसिद्ध करी छे. आ ग्रंथ कोइ पण शोधकनी यादीमां जोवामां आव्यो नथी.

२९९. **तालचक्रपद्धति**—आ ग्रंथ घणाक संगीत प्रेमीओना जाणवामां छे, परंतु तेनुं नाम एक पण शोधकनी सूचीमां नथी. आनां केटलांक हस्तलिखित पानां वडोदराना बाळशास्त्री द्रवीडे मने बताव्यां हतां. तेमां वर्तमान संगीतमां जे बधा ताल व्यवहारमां वपराय छे ते सवळानां लक्षणो आपेलां जोवामां आव्यां. एनी नकल में उतारी लीधी छे.

३००. **नादसिद्धांत**– आ ग्रंथनो त्रुटित भाग मने वडोदरामांथी मळ्यो हतो. वडोदरामां शामराव बुवा नामे सितार वगाडवामां अति कुशळ ग्रहस्थ थइ गया. तेमना संग्रहमां केटलाक ग्रंथो हता. ते तमाम उधइने भोग थइ पडया. एमांथी आ ग्रंथनां केटलांक पानां मने स्वर्गस्थ गणुबुवा निघोसकरना पुत्र रामचंद्रावे आप्यां हतां. तेमांनो विषय, प्रणालि, वगेरे जोतां ग्रंथ सारो हतो. ए ग्रंथनी असर त्यांना कलावानोमां सारी हती. छतां ते ग्रंथ दुनियांनी नजरे चढी शक्यो नहि.

३०१. **गायनमानमनोरंजन**— वडोदरानी संस्कृत लायब्रेरीमां नंबर १९६९ नो ग्रंथ जोवामां आव्यो ते साधारण ठीक छे.

३०२. **राधागोविंदसंगीतसार**—आ प्रचंड ग्रंथनां ७ पुस्तको छपाइने प्रसिद्ध थयां छे. ए ग्रंथ पुनाना गायनसमाज तरफथी छपायो छे. ते पूर्वे मारवाड वगेरे तरफ प्रसिद्ध हतो, छतां तेनुं नाम एक पण शोधकनी यादीमां नथी.

३०३. **संगीतचंद्र**– (हरिप्रसाद शास्त्री, कलकत्तानी यादी)

३०४. **संगीतसूत्र**— गुजरातीना दीवाळीना वधाराना अंकमां आपणा गुर्जर साक्षरबंधु श्रीयुत तनसुखराम भाइए अेक लेख लखी, अेमांना केटलांक सूत्रो उपर विवेचन कर्युं हतुं. तेनो उल्लेख कोइ पण सूचिपत्रेकामां जोवामां आवतो नथी.

३०५. **मानकुतूहळ**—आ ग्रंथनुं नाम सुरतरंगिणीमां आवेलुं छे. तेना वखतमां हनुमानना मतना पांच ग्रंथो प्रचलित हता एम जणाय छे, तेमां आ ग्रंथ पण गणाव्यो छे. एनां केटलांक त्रुटित पानां एक गवैयाने त्यांथी मारा हाथमां आवेलां हतां.

३०६. **तोफेतुल्हिंद**—आ फारसी भाषानो ग्रंथ गवैयाओमां घणो प्रसिद्ध छे. अने

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुरतरंगिणीमां पण उदाहृत छे. ते उपरथी २०० वर्ष पूर्वे आ ग्रंथ रचायलो तो होवोज जोइए. पारिजात, दर्पण, संगीतार्णव, मानकुतूहल, तोफेतुलहिंद ए पांच ग्रंथ हनुमन्मतना गणावेला छे.

३०७. **नगमाते आसफी**—फसली सने १२२४. कर्ता गुलामरजाइबने बनावेलो. एनी प्रत मुंबइना संगीतपंडित मी. भातखंडे पासे छे. अेम संगीत पद्धतिना २ जा भाग उपरथी जणाय छे.

३०८. **सरमाए–ए–अशरत**—आ ग्रंथ पण उपर प्रमाणे उर्दुमां लखायो छे. ते पण मी. भातखंडे पासे छे. अने ते हिंदुस्थानी संगीत पद्धति उपर रचायेलो छे.

३०९. **गुंचएराग**—जेने संस्कृतमां **रागमंजरी** कही शकाय. अे ग्रंथ उर्दुमां होइ म्हने भावनगरना राज्य गायक अने **संगीतकलाधरना** रचनार मी. डाह्यालाल शिवरामे बताव्यो हतो.

३१०. **ओकदेगोशा**–कर्त्ता नायक बेजुबावरा, आ ग्रंथना संबंधमां सरविलियम-जोन्से खास.

३११. **रागमाला.** कर्ता–गंगाधर. सरमा-अे अशरत ग्रंथ लखनार महम्मदसादक अलीखाने (दिल्हीना) पोतानो ग्रंथ जे बेचार संस्कृत ग्रंथो जोइने बनाव्यो तेमां आ ग्रंथ पण आधार रुपे राखेलो हतो. तेना कर्ता तरीके तेणे गंगाधर-नुं नाम आप्युं छे. पूर्वे जणाव्या प्रमाणे क्षेमकर्ण अने पुंडरीक विठ्ठलनी रागमाला ते आ नहिज अे आ उपरथी सिद्ध थाय छे.

३१२. **सभाविनोद**–आ ग्रंथनी स्तुति सरमा–ए-अशरतमां तेम सरविलीयम जोन्से पोताना ग्रंथमां करी छे तोफेतुलहिंद बनावती वखते आ पुस्तकनो आधार लीधो हतो. कर्त्ता कोण छे तेनुं नाम नथी.

३१३. **रागदर्पण**–सरमा–ए अशरतमां आनो आधार लिधेलो छे. आ ग्रंथ संस्कृत होवो जोइए एम तेना जणाववा उपर अनुमान थाय छे.

३१४. **बृहद्देशी**–कर्त्ता **मतंगाचार्य** आ ग्रंथ होवा विषे सं० रत्नाकर पृ. १९४ श्लोक ४२ मांना श्लोक उपरथी जणाय छे, तेम रागविबोधकार सोमदेव पण पृ. ९ मां **बृहद्देशी** ग्रंथनो उतारो आपी ते ग्रंथ मतंगाचार्यनो छे **एम स्पष्ट** कह्युं छे. आ ग्रंथ देशी संगीत उपर रचायलो होवो जोइए एम जणाय छे.

३१५. **हनुमानकृत देशीसंगीत**—हनुमान नामना आचार्ये देशी संगीत उपर

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एक ग्रंथ रचेलो हतो एम तेमांथी चतुरकल्लिनाथे तेमज रामविबोधकारे एक श्लोक उतारी लीधो छे ते उपरथी जणाइ आवे छे. ए ग्रंथ हालनी चालु सालनी पद्धति उपर रचायलो होवो जोइए एम इतर अनेक पुरावाओ उपरथी जणाइ आवे छे. शोधकोए आ संबंधमां अवश्य शोध करवी जोइए.

३१६. **संगीतललांकुर**. सरविलियम जोन्से आ ग्रंथ जोएलो हतो एम तेना लखाण उपरथी जणाय छे ते उपरांत तेणे रत्नमाला, दर्पण, वगेरे ग्रंथो जोया हता, के जे उपर आवी गया छे.

३१७. **याष्टिकमत**. रत्नाकरनी पूर्वेना याष्टिक नामे आचार्यनो कोइ संगीत ग्रंथ होवो जोइए. कारण के शार्ङ्गदेवे रत्नाकरमां तेना मत प्रमाणे १९ राग आपेला छे.

३१८. **गोपालनायक**. आनुं नाम कल्लिनाथे पोतानी टीकामां (पृ.-४३३-३४) मां आपेलुं छे. ते १४ मा सैकाना आरंभे अलाउद्दीन पठाणनी कारकीर्दीमां थइ गयो. ते दक्षिणनो पंडित हतो. एम मनाय छे. जे उपरथी गोपाल नायकनो ग्रंथ कोइ होवो जोइए.

३१९. **हरदन्तमिश्र** कल्लिनाथे पोतानी टीकामां (सं. २० पृ. २६३) आनुं नाम लीधुं छे. जे उपरथी तेनो कोइ ग्रंथ होवो जोइए, एम निश्चित अनुमान थाय छे.

३२०. **गायनकलाप**. ३२१ **भरतमित्रसंवाद**. आ बे ग्रंथो पुना गायनसमाजना हस्तपत्रकमां गणावेला छे.

३२२. **हस्ताध्याय** (पुना गायनसमाजना हस्त०) ते उपरांत

३२३. **पक्षधरमिश्र**. ३२४ **अशोकमल्ल** अने ३२५ **रामदासनायकना ग्रंथो** होवा विषे जणाय छे. (पुनागा० ना हस्तपत्रक उपरथी)

संस्कृतनी साथे हिंदी भाषाना अने उपर जणावेला फारसी-उरदुमां रचायला घणाए ग्रंथो हालमां मळी आव्या छे. जे विषे प्राचीन शोधकोए पोतानी यादीमां किंचित् पण इशारो कर्यो नथी. न जाणे एवा केटलाए ग्रंथो उपलब्ध थशे. कालरूप महासागरमां उंडी डुबकी मारी रहेला ग्रंथो जेम जेम सपाटी उपर आवता जशे तेम तेम भारतवर्षीय संगीत उपर अवनवो प्रकाश पडतो जशे ए स्पष्ट छे. अने तेनो चोक्कस इतिहास तैयार करी शकाशे.

आ प्रमाणे आपणा संगीत उपर अनेक वर्षो सुधी, अनेक महा पंडितोए-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आचार्योए अने संगीत निपुणोए प्रयत्न करीने सेंकडो ग्रंथो रची राख्या छे अने ए सर्वेए आपणने अनंत ऋणी बनाव्या छे. ए ऋणमांथी मुक्त थवुं ए दरेक संगीतज्ञोनुं प्रथम कर्म छे. आखा भारत वर्षमांथी जेटला पंडितो होय तेमनुं संमेलन करी, दरेक विषयोनो शास्त्रीय तेम प्रत्यक्ष प्रायोगिक निर्णय करी महाभारत ग्रंथ रचवो जोइए, अने ते उपर सतत मनन थवुं जोइए. तेम थशे तोज आ आपणी वडिलोपार्जित कलानी वृद्धि थती रहेशे.

आपणा भारतवर्ष जेवा महाभारत देशमां संगीत बे प्रकारे वहेंचाइ गयेलुं छे. तेमां प्रथम प्रकार **उत्तर हिंदुस्थान**ना संगीतनो अने बीजो प्रकार **दक्षिण हिंदुस्थान**ना संगीतनो छे. ए बंनेने अनुक्रमे आपणे **हिंदी संगीत** अने **कर्नाटकीय संगीत** एवां बे नाम आपीशुं. आपणे जे विचार चलावीए छीए ते हिंदी संगीत विषेनो छे. आखो पंजाब, बंगाल, राजपुताना, सिंध, वायव्यप्रांत, काश्मीर, नेपाळ, गुजरात अने महाराष्ट्र, ए बधा उत्तर हिंदना देशोमां जे संगीत चालु छे तेज खरुं हिंदी संगीत छे. आपणे हाल जे उपयोगी कार्य हाथ धरवुं छे ते ए के, हिंदीसंगीतनो इतिहास तैयार करवानो छे. अने ते माटे जे ग्रंथो मळी शके ते उपरोक्त बे प्रकारना संगीतमांथी कया प्रकारना संगीतना छे तेनो विचार प्रथम करवानो छे. उपरनी यादीमां, बंने प्रकारना संगीतना ग्रंथो छे. तेमां म्हैसूर, तंजोर, त्रिवेंद्रम, मद्रास वगेरे स्थळे उपलब्ध के प्रचलित होनारा ग्रंथो दक्षिण संगीतना होय ए संभवित छे, अने उत्तर तरफ मळी आवता ग्रंथोमांना घणा खरा हिंदीसंगीतना होय ए स्वाभाविक छे, हवे आपणे हिंदीसंगीतनुं प्रचलित स्वरुप टुंकामां तपासी जइए अने त्यारबाद संगीतना ग्रंथो हाल जे मळी आवेला छे तेमनो हिंदीसंगीत साथे शो संबंध घटी शके छे ए विषे थोडोक विचार चलावीए. तेमज ऐतिहासिक काळ विभाग केटला पडी शके तेनो पण ख्याल बांधी ग्रंथोनुं कालिक वर्गीकरण करवानी आवश्यकतानो विचार करीए.

हिंदी संगीत वणुंज सादुं अने सरल छे. एमां **सरिगमपधनि** ए सात शुद्ध स्वर, **रिगधनि** ए ४ कोमल स्वर अने **म** एक तीव्र मळी १२ स्वरोज स्थूळ रीते व्यवहारमां वपराय छे. ते स्वरोमां परस्पर वादी, संवादी, अनुवादी अने विवादिनो संबंध एकज नियमे स्वीकारवामां आवेलो छे. ग्रामनी रचना घणीज सहेली, अने जे स्वरने आरंभक तरीके गणो त्यांथीज स्वीकारी शकाय एवी छे. आरोह के अवरोहमां अमुक नियमे लेवाय ते अलंकार के तान तरीके मनाय छे. रागना

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

સ્વરોનીમાલાઓ વાદી સંવાદીના તત્વ ઉપરથી ઉપજાવવામાં આવે છે. અને તે પ્રમાણે ઉપજી આવતી સ્વરમાલાના સ્વરોમાં અમુકજ સ્વરને પ્રધાન પદ આપી, તેનેજ અંશ તરીકે ગણી, તેના સંવાદિ અને અનુવાદી સ્વરોને યોગ્ય પ્રકારે લઇ રાગનો વિસ્તાર કે આલાપ કરવામાં આવે છે. ને એ રીતોથી જેટલા રાગો ઉપજાવી ગાવામાં આવે છે તે સઘળાએ રસિક, મધુર અને મોહક હોય છે. આ ઉપરાંત હિંદી સંગીતમાં તાલ પણ બહુજ થોડા વપરાય છે. મુખ્યતો ૭ કે ૮ તાલજ વ્યવહારમાં વપરાય છે. એ તાલોમાં બાંધેલાં ગાયનો **ધ્રુવપદ** (ધ્રુપદ, ચોતાલ), **ખ્યાલ, ટપ્પા, ઠુમરી** કે **કવ્વાલી**માં રચેલાં હોય છે. એ પાંચ પ્રકાર તે હિંદી સંગીતના ફળરુપે છે. તેનાં શરીરો પણ જે તે વિષય, રાગ, કાળને યોગ્યજ મોહક નાજુક, કે લઘુ હોય છે. આ બધામાં શાસ્ત્રને નામે બીહી જઇ મ્હોટો ડુંગર ઓળંગવાની પંચાતી હોતીજ નથી. જ્યાં સાધારણ સ્વરજ્ઞાન થવા માંડયું કે, તુરતજ રાગનાં શાસ્ત્રીય ગાયનો શીખી આશરે ૪૦–૯૦ રાગનાં ગાયનો અને તેમાં થોડો તાન પલટો લેતાં આવડયો કે તુરત ગવૈયા બની જવાય છે. અને સ્વર, રાગ, તાલ, આલાપ ઉપર મન પસંદ કાબુધરાવી સંગીતનાં મધુર ફલોનો તુરત આસ્વાદ લઇ શકાય છે. આ રીતે જોતાં હિંદી સંગીત ઘણુજ સારું, સુંદર, કર્ણમનોહર, સર્વાંગભાવપૂર્ણ, લઘુ અને સુરીલું છે. એ સંગીતના સૌંદર્ય આગળ કર્નાટકીય સંગીત ઉત્તમ રસિકોને તો ફીકું ને ઝાંખુજ લાગશે. એનું કારણ કે, આપણું સંગીત અતિશાસ્ત્રીય, નૈસર્ગિક અને તેમ છતાં સરલ તે છે. કેમકે હિંદી રાગ રાગણીઓની સ્વરમાલાઓ શ્રવણેંદ્રિયની તૃપ્તિના સંવાદના તત્વને અનુસરી બનાવવામાં આવેલી છે. અને કર્નાટકીય રાગની સ્વરમાલાઓ સંવાદના તત્વને બાજુ ઉપર રાખી કેવળ ગણિતક્રમે બનાવેલી છે. એ ઉપરાંત ગાયનની પદ્ધતિ અને રાગસંવર્ધનમાં રહેલા વાદીસંવાદીના સંબંધ ઉપરથી કરવામાં આવતી આલાપાદિ કલ્પના એ બંનેમાં પણ ફેર છે. સંગીતના આત્મભૂત વિષય જે રાગ, તેના ગાન અને **આલાપની** પદ્ધતિમાં મહોટો ભેદ પડી ગયો છે, હમણાં જણાવવામાં આવી હતી તે ગાનની એકંદર પાંચ પાયરીયોઓ હિંદી સંગીતમાં ઉત્તન્ન થએલી છે, તે ઘણીજ નૈસર્ગિક છે. એ વિષે થોડુંક સમજાવિએ. રાગો અનેક છે, તેમાં કેટલાક (૧) અતિગંભીર પ્રકૃતિના (૨) કેટલાક સાધારણ ગંભીર, (૩) કેટલાક મધ્યમ, (૪) કેટલાક સાધારણ ચંચલ અને (૫) કેટલાક અતિચંચલ પ્રકૃતિના રાગ છે. હવે એ પાંચે પ્રકૃતિના સ્વભાવ પ્રમાણે દરેકમાં કયી કયી ગાન પદ્ધતિ ઉભી થતિ ગઇ તેનું અતિસંક્ષિપ્તમાં અવલોકન કરી લઇએ. જે રાગોની પ્રકૃતિ અતિગંભીર હોય તેવા રાગોની આલાપ ઘણીજ મંદ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गतिथी करवामां आवे तोज तेनुं गांभीर्य कायम रही शके; जेथी तेवा रागोना आलाप तथा गायनो विलंबलयमां गावामां आवे छे. एने आपणे ध्रुवपद (ध्रुपद) नी पद्धति कहीशुं. ते संबंधमां मुख्य ४ मतो पडी गया छे, तेने **बानी** नामथी गवैयाओ ओळखे छे. ध्रुवपदनी पद्धतिना उत्पादको **शंकर, कृष्णा, हनुमान** अने **भरत** ए चार आचार्यो मनाय छे. ए दरेक आचार्योनी परंपरा जे गवैयाओ संभाळी रह्या छे. ते विषेनी संक्षिप्तमां माहिती गायनवादन पाठमालामां पृष्ठ २८७ –२८८ मां आपवामां आवेली छे. शंकर मतनी पद्धतिने **नोहारीबानी** कहे छे. ए बानी दिल्हीना प्रख्यात बीनकार **नोबतखांए** चालु करी संभाळी राखी, तेथी तेना नामथी ए प्रसिद्ध छे. कृष्णमतना प्रवर्तक मूळ **तानसेन** गणाय छे, ने तेनी पद्धतिने **गुबरहारी** बानी कहे छे. भरत मतनी पद्धतिने **डागुरी** बानी कहे छे, अने **हनुमान**नी पद्धतिने **खंडारी** बानी कहे छे. ए बानीनो प्रचार हाल आखा उत्तर हिंदमां चालु छे. एने खीलववानुं खरुं मान **इच्छाबरस** नामना प्रख्यात गवैयाने घटेछे. ए रीते ध्रुवपद, प्रबंध, धमार वगेरेनी गायन पद्धतिनी ४ शाखाओ छे.

ध्रुवपदना प्रतिबिंबरुप परंतु जरा कमी गंभीर प्रकृतिनी **ख्याल** नामे एक बीजी पद्धति सर्वमान्य छे. एना मूळ प्रस्थापक **सदारंग** अने **अदारंग** ए बे महा प्रतिभाशाळी दैवी पुरुषो गणाय छे. अर्वाचीन तेम प्राचीन संगीतना इतिहासमां आ बे महापुरुषोनां नाम सुवर्णाक्षरे कोतरायलां कायम रहेशे एमां शक नथीज. तानसेनना समय पूर्वे जुनी पद्धतिनां ध्रुवपद, धमार अने होरीनांज गीतो गवातां हतां, तेने जरा वधारे मरोड आपी सौंदर्यप्रधान बनाव्युं, अने ते उपर पोलीश चढावी **सदारंगे** तेजस्वी बनाव्युं. आ पद्धतिना गायकोमां मीयां चेलारंग, तेना पुत्र मीयां नथ्थनबक्ष तथा अबदुल्ला कादरबक्ष अने तेमना पुत्रो हद्दुखां हसुखां ए बे घणा प्रख्यात पुरुषो थइ गया छे.

ख्यालनी पद्धति पछी **टप्पा**नी पद्धति अस्तित्वमां आवी. ए पद्धतिना उत्पादक **मीयां** गुलामहुसेन वल्दे गुलाम रसुल उर्फे **मीयां शौरी** नामे पुरुष थइ गयो. जे रागोनी प्रकृति साधारण होय अने कंइक चंचल पण होय तेवा रागोनी गान पद्धति ते टप्पानीज छे. एमां तान पल्टा विशेष होय छे.

जे रागो साधारण मध्य, चंचळ के कोमळ प्रकृतिना होय छे तेवा रागोनुं गान मध्य, द्रुत के ए बंनेनी मिश्रलयथी करवामांज रागनुं स्वरुप योग्य रीते जळवाय छे. ने तेने माटे ठुमरीनी पद्धति अस्तित्वमां आवी ; के जे सर्व प्रसिद्ध छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

જે રાગો અતિ ચંચલ, સાધારણ ભાવવાળા અને સરલ છે તેવા રાગનાં ગાયનો સાધારણ રીતે ગઝલ, દાદરા, દીપચંદી, ઠુમરી, રેખતા વગેરેમાં રચાયલાં હોય છે. એને **કવ્વાલી** પદ્ધતિ કહે છે.

જેમ રાગોનું છે તેમ તાલોનું પણ છે. જે તાલના વિસ્તાર ગંભીર હોય તેવા તાલોમાંજ ગંભીર પ્રકૃતિના રાગોનાં ધ્રુવપદની રચના કરવામાં આવે છે. અને સાધારણ તેમ મધ્યમસર ગંભીર પ્રકૃતિના રાગોનાં ગાયનો ત્રિતાલ, એક્કો, ઝુમરા વગેરે તાલોમાં રચવામાં આવે છે. અને સામાન્ય તેમ ક્ષુદ્ર ગણાતા રાગોનાં ગીતો **કવ્વાલી**ના તાલોમાં રચવામાં આવે છે.

સંગીતના તાંડવ અને લાસ્ય એવા બે પ્રકાર છે. પુરુષના શરીરમાંથી ભવ્ય, ઉદાર, ગંભીર પ્રકૃતિમાં રાગો અને તેના ભાવો વધારે સારી રીતે સ્પષ્ટ થઇ શકે અને કોમલ, મૃદુ, લલિત પ્રકૃતિના રાગો અને તેના ભાવો સ્ત્રી શરીરમાંથી વધારે સારી રીતે સ્પષ્ટ થઇ શકે તે સમજી શકાય તેમ છે. એ ઉપરથી રાગમાં સ્ત્રીપુરુષાદિની કલ્પના કરવામાં આવી છે. અને તે સાથ સાહિત્ય શાસ્ત્રનો યોગ મેળવી અમુક રાગ સ્ત્રી કે પુરુષ સ્વભાવ વાળો હોય તો તે કયા પ્રકારની નાયિકા કે નાયકને પાત્ર છે, તે કયા રસને પ્રદીપ્ત કરી શકે છે તેની પણ યથાર્થ, ધ્વનિપૂર્ણ સૌંદર્યપૂર્ણ અને અર્થપૂર્ણ કલ્પના કરવામાં આવી છે. આ કારણને લીધે અમુક રાગ પુરુષ હોય તો તે પુરુષેજ ગાવો, કેમકે તે માટે પુરુષનોજ કંઠ સુયોગ્ય હોઇ શકે છે, અને જો અમુક રાગ સ્ત્રી (રાગિણી) હોય તો તે સ્ત્રીએજ ગાવો ; કેમકે તે માટે સ્ત્રીનોજ કંઠ સુયોગ્ય હોઇ શકે છે. પુરુષોમાં જેમ ઉત્તમ ગાયકો **નાયક** ગણાયા છે તેમ સ્ત્રીઓમાં પણ ઉત્તમ ગાનારી તે **નાયકણ** તરીકે ગણવાનો રીવાજ પરાપૂર્વથી પડી ગએલો છે.

જે રાગ જેવી પ્રકૃતિનો હોય તે પ્રમાણે તેમાં રચવામાં આવતું ગીતનું શરીર અને વિષય પણ તેને યોગ્યજ હોવો જોઇએ, તેની સંભાળ રાખી સુયોગ્ય કલ્પના સંગીતના જ્ઞાતાઓએ પ્રાચીન કાળથીજ કરી રાખી છે. એથી મોટા—પુરુષ રાગોમાં ધ્રુવપદો, અસ્તાઇયો, ધમારોની રચના અને તેમાં પ્રેમ, શૌર્ય, વીરતા, ધીર ગંભીર ભાવનાં વર્ણનોના વિષયો આવે છે, અને ન્હાના સ્ત્રી રાગોમાં ઠુમરી દાદરા, ગઝલોની રચના કરવામાં આવી, તેમાં નાયક નાયિકાના હૃદયોના સુકોમળ શૃંગારી ભાવોના વિષયો વર્ણવવામાં આવે છે. આ સઘળાંનો દરેક રીતે વિચાર કરતાં આપણું સંગીત સંપૂર્ણ અંશે કાવ્યોદ્દીપક (એપ્લાઇડ મ્યુઝીક) કે કાવ્યાનુસારી અથવા સાહિત્યોદ્દીપક છે. આ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सूक्ष्म कलाविधान अने ते विषेनी विस्तृत विचारणा अमे गायनवादन पाठमाळामां करेली छेज एटले अत्रे तेनो विशेष विस्तार करता नथी.

आ उपरांत अमुक राग अमुक ऋतुए अथवा दिवसना के रात्रिना अमुक-ज भागमां गावाना नियमो पण घणा सुयोग्य रीते करवामां आवेला छे. केमके भाव, रस के ध्वनि अर्थपूर्णरुपे प्रकट थवा माटे जेम स्थळनी तेम समयनी पण अपेक्षा राखे छे. जेथी ए आशयने लइ ऋतु अने दिवसना भागमां अमुक राग के रागिणीओ गावानी युक्तिपूर्ण कल्पना हिन्दी संगीतमां जेवी छे तेवी दाक्षिणी संगीत-मां के दुनियाना कोइपण संगीतमां उद्भवीज नथी. कदाच उद्भवी होय तो ते हिन्दी संगीतना जेटली व्यवस्थित तो नहीज हशे. राग पोताने प्रकट थवाने माटे अमुक प्रकारनो समय स्वाभाविकपणे ले छे ए कल्पना घणी अपूर्व अने प्राचीन छे. विचारवानुं ए छे के ए कल्पना रत्नाकरमां नथी; परंतु पारिजात, राग विबोधादि तमाम ग्रन्थोमां छे. आ उपरथी रत्नाकर संपूर्ण रुपे दक्षिण संगीतनी पद्धति उपर चायेलो होवो जोइए एम पण अनुमान करी शकाय.

आ प्रमाणे चालती आवेली पूर्वनी परंपरा प्रमाणे हिन्दी संगीतनुं स्वरुप छे. जेने हाल संगीतना शास्त्र तरीके अमुक ग्रन्थोने गणे छे, अने जे रत्नाकर, रागविबोध, पारिजात, चतुर्दंडि प्रकाशिका, वगेरे गण्या गांठया ग्रन्थो हाल प्रसिद्ध थया छे, तेमांथी हिन्दी संगीतनुं संपूर्ण शास्त्र शोधवानो प्रयत्न चाले छे, परन्तु तेमनो संबंध प्रचलित संगीत साथे मेळवी जोतां कोइपण विषयमां परस्परनो मेळ जोइए तेवो सघळी बाजुथी मळतो नथी. त्यारे हिन्दी संगीत के जे वस्तुत: नैसर्गिक शास्त्रीय छे तेने अशास्त्रीय ठरावी उलटुं कर्णाटकीय संगीत के जे अस्वाभाविक निःशास्त्रिय छे, तेने शास्त्रीय तरीके मानी लइ, ते प्रमाणे हिन्दी संगीतने सुधारवा इच्छा अने प्रबल प्रयत्न धरावनारा विद्वानो पोते अंधारा कुवामां पडे छे, अने बीजाने पण साथे लेता जाय छे. हाल मळी आवेला रत्नाकरादि ग्रन्थोमां आवेली श्रुति, स्वरोनां नाम, जाति, वादि, संवादि, मेल, राग, ताल वगेरे विषयो जे रीते वर्णेला छे, ते बधा हमणां पण दाक्षिण संगीतमां चालू छे. केवळ प्रस्तारथीज उप-जाववामां आवता मूर्च्छना, स्वरप्रस्तार, कूटतानो, मेल, राग वगेरे दाक्षिणमां वपराय छे; के जेनो विचार करतां ए बधो प्रकार नादशास्त्रनी रुइए अशास्त्रीय, अरसिक, अनैसर्गिक अने अरुचिकर छे. ए कारणथीज शास्त्रीय तरीके मनाता कर्नाटकीय संगीतने सांभळवामां आपणने तेम रसिकोने आनंद प्राप्त थतो नथी. परंतु एथी

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उलटुं नो ज्यारे हिन्दी संगीतनी नजीवी चीजो अने क्षुद्र मनाता रागो कर्नाटकीय संगीत रसिको सांभळे छे के, तुरतज मोहित थइ जइ तेओ पोतेज खरा अन्तःकरणथी हिन्दी संगीतनी स्तुति करवा मंडी जाय छे. मतलब के वर्तमान चालु हिन्दी संगीतनां मूळो रत्नाकरादि ग्रन्थोमां मळी आवतां नथी पण ते कोइ जुदाज ग्रन्थोमां होवां जोइए एम अनुमान करी शकाय छे. तोपण केटलाक विद्वानो एमज माने छे के रत्नाकर, रागविबोध, पारिजात, चतुर्दंडिप्रकाशिका वगेरे ग्रन्थोज घणा शास्त्रीय होइ तेमांथी हिन्दी संगीत उद्भव्युं छे तो ते केटले अंशे योग्य छे ए संबंधमां रत्नाकरादि ग्रन्थोनां टुंकामां स्वरुपो तपासीए; अने विचारीए के, तेमांथी हिन्दी संगीतनुं शास्त्र समजावी शकाय एम छे? अथवा ते ग्रन्थो खास हिन्दी संगीत उपरज रचायेलो छे के केम? प्रथम आपणे भरतनाटयशास्त्र लइए, अने त्यारबाद रत्नाकरादि बे चार प्राचीन ग्रन्थो लइए.

१. **भरतनाटयशास्त्र**—भरतनाटयशास्त्र लखनार जे भरत मुनि, तेमना समय माटे विद्वानोमां चोक्कस निर्णय थयो नथी; तोपण ४था ५मा सैकाथी अर्वाचीन छे एम तो मनातुं नथीज. ए ग्रन्थ नाट्य विषयना संबंधमां छे, परंतु तेमां २७ अने २८ ए बे अध्याय संगीतना विषयोथी चर्चेला छे. तेमां ७ स्वर, चार चार **स म प** नी त्रण त्रण **रि ध** नी अने बे बे **नि ग** नी मळी २२ श्रुतिओ छे. ते व्यवस्थाथी जोतां हाल आपणे जेने काफीनो थाट कहीए छीए ते आवे छे. अने तेथी हाल व्यवहारमां जे शंकराभरण (नेचरल स्केल) नो थाट या तो बीलावलनो थाट वपराय छे. तेमांना शुद्ध (तीव्र) **ग नि** नें अंतर काकली कह्या छे. स्वरोना शुद्ध, तीव्र, कोमलना भेद हाल जे रीतथी गणाय छे ते रीतना नथी. जातिना विभागो माटे "शुद्ध" अने "विकृत" ए बे शब्दोनो उपयोग करेलो छे. ए पछी षड्ज अने मध्यम ए बे ग्रामो समजावी, ते दरेकमांथी उत्पन्न थती सात सात मूर्च्छनाओ अने तेनां नामो आप्यां छे. त्यारबाद जातिना विभाग करी शुद्ध अने विकृत मळी १८ जातिओ आपी छे. आमां आश्चर्य ए छे के आखा ग्रन्थमां रागनुं एक पण नाम आवेलुं नथी; अने "राग" ए शब्द पण एकज वखत वपरायलो छे; अने ते पण अंशना लक्षणमां आवेलो छे. अंश एटले जातिनां जे १० विशेषो गणावेला छे तेमांनो एक. शार्ङ्गदेवे जे प्रमाणे संगीतना मार्ग अने देशी एवा बे विभागो कहेला छे तेवा आमां नथी: ते उपरथी अनुमान थाय छे के, भरतना वखतमां संगीतना ए बे विभागो उत्पन्न थया नहोता. अने अमुक तरेहनी स्वरच-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नाने **राग** कही शकाय ए व्यवस्था बंधाइ न्होती. ते वखते जुदी जुदी स्वर रचनाओने माटे बनाववामां आवेला थाटनोज जाति शब्दथी व्यवहार थतो, अने ए जातिनेज **राग** कहेता.

२. संगीतरत्नाकर—भरतना समयमां अने आ ग्रन्थना समयमां लगभग १ हजार वर्षनो युग व्यतीत थयो छे. संगीत रत्नाकरनो कर्ता शार्ङ्गदेव इ. स. ना १३ मा सैकाना पूर्वार्धमां थइ गयो एम जणाइ आव्युं छे; तेमज ते उपर टीका लखनार चतुर कल्लिनाथ १४ मा के १५ मा सैकामां थइ गयो हशे एम अनुमान करी शकायुं छे. पुनानी आनंदाश्रम संस्था तरफथी रत्नाकर अने तेनी टीका ए बन्ने प्रसिद्ध थइ चुक्यां छे. शार्ङ्गदेवनो जन्म दौलताबादमां थयो हतो; अने त्यांज तेणे दक्षिण संगीतनुं अध्ययन करी रत्नाकर रच्यो. अेने माटे एक अंतर्गत प्रमाण मळी आवे छे ते विचारवा जेवुं छे. शार्ङ्गदेवे प्रबंधाध्यायमां मराठी **ओवी** वृत्तनुं कानडी **कंद** वृत्तनुं लक्षण आप्युं छे, अने कर्नाटक, लाट, गौड, आंध्र अने द्राविडी एटली भाषाओ गणावेली छे; परंतु उत्तर हिंदमां ते समये प्रचलित थएली ध्रुवपद वगेरे पद्धतिना प्रबंधोनां नामो तेना ग्रन्थमां जोवामां आवतां नथी. ए उपरथी स्पष्ट एमज जणाइ आवे छे के, रत्नाकरनो कर्ता पोते हिन्दी संगीतमां नहीं पण दक्षिणी संगीतमांज विशेष कुशळ हतो. अने संगीतनो उपपत्तिविषयक विभाग तेणे प्राचिन ग्रन्थमांथी लइ तेना समयमां दक्षिणमां जे प्रयोग चालु हतो तेनोज संग्रह करीने पोतानो ग्रन्थ बनाव्यो. हवे संगीत रत्नाकर अने भरतनाटयशास्त्रमांना विषयोनी तुलना करीए तो भरत करतां रत्नाकरमां नवुं शुं छे तेनी कल्पना थइ शकशे.

भरतनाटयशास्त्र.	संगीतरत्नाकर.
१. नादोत्पत्ति विषे भरते कशुं कह्युं नथी.	१. नादोत्पत्ति विषे प्राचिन मत प्रमाणे व्यवस्था समजावी छे.
२. भरत संगीतना **मार्ग** अने **देशी** एवा बे भेद विषे लखता नथी. शार्ङ्गदेव लखे छे. ते उपरथी ते समये मार्ग संगीतज वपरातुं हशे, के जे पाछळथी देशी संगीत उत्पन्न थतां, पूर्वना संगीतने मार्ग एवुं नाम पाछळथी अपायुं हशे.	२. शार्ङ्गदेव **मार्ग** अने **देशी** एवा बे भेद पाडेल छे. अने कहे छे के, **मार्ग** संगीत ब्रह्मदेवादिओए वेदमांथीज उत्पन्न कर्युं. अने जुदा जुदा देशमां लोकनी रुचि प्रमाणे **देशी** संगीत उत्पन्न थयुं.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

૩. સ્વર, શ્રુતિ વિભાગ પૂર્વનાજ જે હતા તેજ લીધા છે.

૩. સ્વર, શ્રુતિ વિભાગ ભરત પ્રમાણેજ છે, માત્ર કેટલાક વિકૃત સ્વરો માન્યા છે. તેમાં તીવ્ર કોમલ ભેદો નથી જોવામાં આવતા.

૪. વાદી, સંવાદી, અનુવાદી, વિવાદી એ ૪ પ્રકાર કહ્યા છે, જે બે સ્વરોની કે ૧૩ શ્રુતિનું અંતર હોય તે બન્ને સંવાદી કહ્યા છે.

૪. ભરત પ્રમાણેજ. પણ જે બે સ્વરો વચ્ચે ૮ કે ૧૨ શ્રુતિનું અંતર હોય તે સંવાદી એમ કહ્યું છે.

૫. ભરતે ગ્રામનું લક્ષણ આપ્યું નથી, પણ ષડ્જ અને મધ્યમ બેજ ગ્રામો બતાવ્યા છે.

૫. શાર્ઙ્ગદેવે ગ્રામની વ્યાખ્યા આપી **સ મ** અને **ગ** એ ત્રણ કહ્યા છે તેમાંનો ગાંધાર ગ્રામ નારદોક્ત તરીકે સ્વીકારી તે સ્વર્ગમાં ચાલુ છે એમ જણાવ્યું છે. તેથી આ ગ્રામ ભરત પછીના સમયમાં થએલ નારદ અને તેણે બનાવેલા નારદી શિક્ષા ઉપરથી લીધો હોવો જોઇએ.

૬. બન્ને ગ્રામની ૧૪ મૂર્ચ્છનાઓ કહી છે. પણ સંખ્યા ૮૪ ની ગણાવી છે.

૬. શાર્ઙ્ગદેવે પણ તેમજ કર્યું છે પણ મૂર્ચ્છનાઓ કૂટતાન (પ્રસ્તાર) રુપે ૫૦૪૦ થાય છે એમ જણાવ્યું છે ભરતે કૂટતાન એ શબ્દ વાપર્યોજ નથી તેમજ ૬. ૫. ૪ સ્વરોની કૂટ-તાનો, નષ્ટ, ઉદ્દિષ્ટ, પ્રસ્તાર ખંડમેરુ ભરતે આપ્યાં નથી.

૭. ભરતે ૧૮ જાતિઓ કહી છે. અને લક્ષણો આપ્યાં છે. પણ તેનાં ઉદાહરણ ગીતસહિત આપ્યાં નથી.

૭. શાર્ઙ્ગદેવે પણ ૧૮ જાતિઓ કહી, તેનાં લક્ષણો આપી ઉપરાંત તેમાં ગવાતાં ગીતો નોટેશનથી આપ્યાં છે. જેથી વ્યવસ્થિત નોટેશનની પદ્ધતિ ભરત પછીથી ઉત્પન્ન થઇ હોવી જોઇએ.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

८. भरतना दखतमां जाति तेज राग तरीके गणाती हती एम जणाय छे. जाति उपरांत रागनी कल्पना स्वतंत्र रीते उत्पन्न थइ न्होती.

८. शार्ङ्गदेवे जातिनां लक्षणो आप्य पछी कह्यं छे के ए जातिओमां वराटी, गांधार, पंचम, देशी वीला-वळ वगेरे रागोनुं मळतापणु जोवा-मां आवे छे. ते उपरथी रागने पूर्वे जाति शब्दथी संबोधता हशे.

९. भरते राग के ग्राम रागोनो विषय जणाव्योज नथी. जे उपरथी एम समजाय छे के, संगीतरत्नाकरमां कहेला ग्राम रागो, भरतना समयनी जाति (राग) नी पद्धति उपरथी, तेनी पछीना संगीताचार्योए मनाव्या होवा जोइए.

९. शार्ङ्गदेवे ५ प्रकारनी गीतिओने लीधे जुदा पडी जता ग्राम रागोना पांच प्रकारो कहेला छे; ने तेनी संख्या ३० नी आपी छे. अने तेनां नामो २८ उपरागो सहित आपेलां छे. ए पछी याष्टिक मत प्रमाणे १५ रागो जणावी, तेमांथी बीजा अनेक राग उत्पन्न थाय छे एम जणावी ते जन्य रागो **भाषा** अने **विभाषा** ए बे वर्गथी संग्रहित करेला छे. एमां तेणे बधा मळी २६४ राग आपेला छे एवा तेना समयमां चालु थएला देशी रागो पण आवी गया छे.

आ रीते भरत अने शार्ङ्गदेवना ग्रन्थोमां अावेला संगीतना विषयनी तूलना छे. रत्नाकरना संशोधक मी. मंगेशराव तेलंग कहे छे के "तेमां वर्णवेला रागोनुं स्वरुप समजी शकावाने माटे मोटी मुश्केली ए छे के, ए राग जे मेल (थाट) मां गावाना होवा जोइए ते मेळना स्वरो क्यांय आप्या नथी." अने तेथी हाल जे ग्रन्थो-मांनु संगीत मृतप्राय थयुं छे, तेनी स्थितिमां केवळ थाटना ज्ञान उपरथीज केवळ प्राचीन संगीतना मूळ रुपनुं पुनरुज्जीवन करवा माटे आपणे शक्तिवान थइ शकीशु के केम ए प्रश्न घणो विवादित थइ पडशे. आ कहेवुं ए घणुं विचार करवा योग्य छे एमां शक नथीज.

३. **संगीतपारिजात**—आ ग्रन्थ पण घणो प्राचीन एटले के रत्नाकर

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

પછીનો હોઇ ઉપયોગી ગણાય છે. તેનો કર્તા કૃષ્ણ પંડિતનો પુત્ર અહોબલ નામે વિદ્વાન પુરુષ હતો. તે તૈલંગી બ્રાહ્મણ હતો એમ મી. મંગેશરાવનું માનવું છે; કેમકે એવા પ્રકારના નામનો પ્રચાર તૈલંગી બ્રાહ્મણોમાંજ વિશેષ જણાઇ આવે છે એમ તેમના તૈલંગી મિત્રોએ તેમને જણાવ્યું હતું. અહોબલ પોતે તૈલંગણ કે દ્રવિડ દેશમાંનો હોવો જોઇએ. તેમ તેણે દક્ષિણ તરફની પ્રચલિત સંગીત પદ્ધતિ અને ઉત્તર હિન્દની અતિ પ્રસાર પામેલી દેશી સંગીતપદ્ધતિ એ બન્નેના મિશ્રણરુપ ગ્રન્થ રચેલો છે. તોપણ તે પોતે વિશેષે કરીને દક્ષિણ હિન્દમાંનોજ હતો એમ તો ચોકસજ છે. કેમકે તેણે એક સ્થળે કહ્યું છે કે "**ઔત્તરાદિક ભાષાભિર્યત્તુધ્રુવપદં સ્મૃતં**" એટલે કે ઉત્તર તરફની ભાષામાં રચેલા ગીતને ધ્રુવપદ કહે છે. હવે અહોબલ ઉત્તર હિન્દનો રહીશ હોત તો આ પ્રમાણે કહી શકેજ નહીં. તે કયા સમયમાં થઇ ગયો તે વિષે ચોક્કસ અનુમાન કરી શકાતું નથી. તોપણ તે સંગીતરત્નાકર પછીના સમયમાં થઇ ગયો હશે એમ જણાય છે. અને રાગવિબોધ તે પછી થયો છે. કેમકે રાગ વિબોધમાં સોમનાથ પંડિતે (૧૬૦૯ ઇ. સ.) ઇરાખ, હુસેની, જીલફ, નવરોઝ, વાખરેજ, હિજેજ વગેરે મુસલમાન ગવૈયાઓએ રચેલા રાગોનાં નામો આપ્યાં છે. તે નામો પારિજાતમાં નથી. જેથી રત્નાકર (૧૪ મો સૈકો) અને રાગવિબોધ (૧૬ મો સૈકો) એ બેની વચ્ચેના સમયમાં થઇ ગયો એ તો ચોકસજ છે. એ સબંધમાં બીજો એક પુરાવો પણ વિચારવા જેવો છે. અહોબલે ઇશાનસ્તુતિ નામે એક ગ્રન્થ લખ્યો છે. તેમાંના ૭ મા શ્લોકમાં શ્રી વિદ્યારણ્યસ્વામીને શ્રીશંકરના અવતાર તરીકે ગણાવેલા છે. આ પંડિત દક્ષિણનો વતની હતો. વિદ્યારણ્ય સ્વામીનો જન્મ શકે ૧૩૦૦ એટલે ઇ. સ. ૧૪૭૮ માં થયો હતો એમ એક તામ્રપત્ર ઉપરથી સમજાયું છે. તે ઉપરથી અહોબલ ઇ. સ. ૧૪૭૮ ની પછીજ થયો હોવો જોઇએ એ સ્પષ્ટ છે.

અહોબલે રત્નાકરમાંથી ઘણી બાબતો લીધી હતી એમ ઘણાઓએ અનુમાન કર્યું છે. પણ રત્નાકરનું નામ નિશાન પારિજાતમાંથી મળતું આવતું નથી. નાદોત્પત્તિ, પ્રબંધ, તાલ, વાદ્ય વગેરે વિષયોની માહિતી તેણે રત્નાકરમાંથી ઘણી લીધી છે. તેના ગ્રન્થની જો કોઇ અપૂર્વતા હોય તો તે એ છે કે, તેણે સ્વરોનાં સ્થાન વીણા ઉપર અમુક અંતરે કહેલાં છે તે છે. એ ઉપરથી સ્પષ્ટ, નિર્વિવાદ રીતે સમજી શકાય છે કે, હાલ આપણે જેને કાફીનો થાટ કહીએ છીએ તેજ પ્રાચીન સમયનો શુદ્ધ થાટ હતો. સ્વરોના શુદ્ધ, કોમલાદિ અને તીવ્રાદિ પ્રકારો, પ્રાચીન કાળના કોઇપણ ગ્રન્થના કરતાં નવિન અને સશાસ્ત્ર દ્રષ્ટિથી આપ્યા છે. વાદી સંવાદીની વ્યવસ્થા રત્નાકર પ્રમાણે

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

८ के १२ श्रुत्यंतरना प्रमाणथी आपी छे, पण ते रीते जोतां रि अने पनो संवाद सधातो नथी. तेणे ३ ग्राम कहीने तेनां लक्षणो पण आप्यां छे. रत्नाकरे गांधार ग्रामनुं लक्षण न आपतां स्वर्गनो रस्तो बताव्यो छे. मूर्च्छनाओ अने कूटतानोनी पद्धतिमां रत्नाकरनुं समानपणुं छे. अलंकार ६८ आप्या छे, त्यारे रत्नाकरमां ६३ कहेला छे. पछी तेणे ७ जातिओ कही छे, पण ते विषे विशेष कंइपण कहेतो नथी.

अहोबले पोताना ग्रन्थमां १२२ रागोनां लक्षणो आप्यां छे, तेमां तेना थाट अने स्वरो पण आप्या छे. तेणे आपेला रागोनां ग्रामोमांना घणाक अत्यारे चालु छे; परन्तु तेमां स्वरोनो मेळ मळतो नथी. राग प्रकरणने अंते लखे छे के, 'रागो अनंत छे, अने ते जुदा जुदा देशना लोकोए बतावेला छे. भरते कहेला जाति राग अने रत्नाकरना ग्राम राग विषे तेणे कशी पण चर्चा करी नथी; पण ते वखते तेना समयमां जे देशी संगीत प्रचलित हतुं ते प्रमाणेज रागो लइ वर्णन कर्युं छे.

४. राग विबोध—आ ग्रन्थ सोमनाथे शके १.५३१ एटले के इ. सं. १६०९ मां पूरो कर्यो एम ग्रन्थने अंते पोतेज लखे छे के सोमदेवनो पिता मुद्गल अने प्रपिता मंगनाथ नामे हतो. तेणे वर्णवेला राग दक्षिण संगीत साथे घणा मळता आवे छे ते उपरथी ते दक्षिण हिन्दुस्थानमांनो ब्राह्मण हतो एम जणाय छे. "तेणे शुद्ध थाट तरीके मुखारीने गण्यो छे, अने ए थाट हजी पण तेवाज रुपमां दक्षिणमां वपराय छे. एनो समानरुप थाट उत्तर संगीतमां नथी मळी आवतो, केमके एकज जातना बे स्वरो, एकज थाटमां वपराता हिन्दी संगीतमां छेज नहि." आ वात उपर मी. मंगेशरावे ध्यान खेंच्युं छे, ते विचारवा जेवुं छे. वळी चतुः श्रुति स्वरने तीव्र, पंच श्रुतिकने तीव्रतर, षट् श्रुतिकने तीव्रतम अने उपांत्य श्रुतिवालाने मृदु संज्ञा आ ग्रन्थकर्ताए नवीज वापरी छे. अलंकारो ३४ कह्या छे, अने ते असंख्य छे. एम पण कह्युं छे. बीजा अध्यायमां वीणा उपर पडदा बांधवानी रीत बतावेली छ. ते पारिजात करतां विशेष सारी नथीज. त्रीजा अध्यायमां गणित रीते जुदा जुदा थाटोनी संख्या आपी छे अने मुख्य २३ थाट कहीने, ते दरेक थाटमांथी उत्पन्न थता रागनां नामो आप्यां छे. चोथा अध्यायमां रागना समय, ग्रह अश न्यास कह्या छे. पांचमा अध्यायमां तेणे पोते बनावेली स्वरकाल लिपि (नोटशन)मां ५० रागोना स्वरो आलापनां उदाहरणोसाथे आप्या छे. एज तेना ग्रन्थनी पूर्वना कोइ पण ग्रन्थना करतां अपूर्वता छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आ प्रमाणे आ चार ग्रन्थो के जे आज सुधी मळी आवेला तमाम ग्रन्थोना करतां प्राचीन छे. स्वरमेलकलानिधि, सद्रागचन्द्रोदय, संगीतदर्पण, चतुर्दंडिप्रकाशिका वगेरे हाल जे ग्रन्थो उपलब्ध थएला छे ते उपरोक्त चार ग्रन्थोना करतां तो अर्वाचीनज छे. अने ते दक्षिण संगीतनी पद्धतिथी भरपुर छे ए खास ध्यानमां राखवा जेवुं छे. वळी ए प्रमाणे हजी पण संगीतनो बधो व्यवहार दाक्षिणमां चालु छे.

त्यारे प्रश्न ए उपस्थित थाय छे के, हिन्दी संगीतनुं मूळ क्यां छे, ते कया ग्रन्थो उपर आधारभूत छे, तेना मूळ प्रस्थापक कोण? अने ते क्या समयमां उद्भव्युं? आ प्रश्नोनुं समाधानकारक उत्तर उपरोक्त ग्रन्थो उपरथी जोइए तेवुं मळी शके तेम नथी. तोपण उत्तर हिन्दमां जे ग्रन्थो रचाया तेनी ग्रन्थसंकलना जोतां तेना मूल आचार्य तरीके हनुमानने गणवामां आवे छे. रागार्णव, संगीतार्णव, पारिजातनो केटलोक भाग, मानकुतूहल, सुरतरंगिणी, तानसेनकृत संगीतसार तेमज तोहेफतुलहिन्द जेवा घणाक मुसलमानी ग्रन्थो, संगीतदर्पण, दामोदरादि अनेक ग्रन्थोनी जे संकलना, विषयप्रतिपादन शैली, विषयरचना, अने उपपात्ति जोवामां आवे छे ते दक्षिणसंगीत अने तेना ग्रन्थोना करतां जुदीज तरेहनी छे. तेमज ए सघळा उत्तरीय ग्रन्थोमां हनुमाननुं नाम अनुस्यूत रीते चाल्युं आवेलुं जोवामां आवे छे ए पण निर्विवाद छे. अर्वाचीनमांथी प्राचीन काळ तरफ शोध करतां चाल्या जइए तो प्रथम सुरतरंगिणीमांज एक पुरावो आ रीते मळे छे के—

हनुमान मतके ग्रन्थ.

पंचग्रन्थ हनुमतमतें, सुनीयें तीनके नाम,
पारिजात, दर्पण सुमत, अर्णवमें गुनधाम. ४६५

मानकुतूहलमें लखो, और तहोफतुलहिन्दु,
राग रागिनी एकमत, ज्यों जगपूरन इन्दु. ४६६.

सुरतरंगिणीनी रचना संवत १७९५ मां पूरी थइ हती एम ग्रन्थकार पोतेज जणावे छे. एटला वर्ष पूर्वे देशमां जे पद्धति सर्वत्र चालु हती ते गायक गुणिमंडळमां तो हनुमानने नामे गणाती हशे ए निर्विवाद छे. रत्नाकरादि प्राचीन ग्रन्थोमां पण तेना पूरावा छे. रत्नाकरनी पूर्वेना थइ गयेला आचार्योमां **आंजनेय** एटले

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

હનુમાનનું નામ આવે છે. પારિજાતમાં પણ તેનું નામ આપ્યું છે. તેમજ ૧૬ સૈકાના પૂર્વાર્ધમાં થઇ ગએલા ચતુર કલ્લિનાથે (પૃ. ૨૧૮) અને સોમનાથે પોતાના રાગ વિ-બોધ ગ્રન્થમાં (સત્તરમા સૈકામાં) યે પ્રાચીન સંગીત ગ્રન્થકાર તરીકે હનુમાનનું નામ ગણાવ્યું, તેના ગ્રન્થમાંથી નીચલું વચન એ બન્ને ગ્રન્થકારોએ ઉતારી લીધું છે.

येषां श्रुतिस्वरग्रामजात्यादि नियमो न हि ।
नानादेशगतिच्छाया देशीरागास्तु ते स्मृताः ॥

राग विबोध—पृ. २६.

આનો ભાવાર્થ એ છે કે, જેમાં શ્રુતિ, ગ્રામ, જાતિ વગેરેના નિયમો નથી એવી જે અનેક દેશમાં જુદી જુદી સ્વતઃ સિદ્ધ ઉદ્ભૂત થતી સ્વરલહરીરૂપ છાયાઓ તે બધી દેશી રાગો તરીકે કહેવામાં આવે છે. આ હનુમાન ઇ. સ. ના. ૪થા અને ૧૩ મા સૈકાની વચમાં ગમે ત્યારે થઇ ગયો હશે એવું સ્થૂલ અનુમાન કરી શકાય, તોપણ આ બાબત વિષે સર વિલિયમ જોન્સ હિન્દી સંગીતના સબંધમાં જે એક ઉતારો આપે છે તે ઉપરથી વિચાર કરી જોતાં તેનો સમય ઘણોજ પ્રાચીન હોવા વિષે અનુમાન કરી શકાય છે. પ્લુટાર્કે સંગીતશાસ્ત્રના એક ઇતિહાસમાં લખ્યું છે કે, યુરોપમાં હિન્દુ-સ્થાનનુંજ સંગીત ગયું હતું. હવે આ બાબત ઇ. સ. પૂર્વે ૧૨૬૦ ની પહેલાંની છે, કે જે સમય રામચન્દ્રજીના યુગનો ગણવામાં આવે છે, અને જે હનુમાનના અસ્તિત્વનો સઘળા હિન્દમાં સ્વીકારવામાં આવેલો છે.

આપણા સંગીતવિષે કોઇપણ જાતનાં ઐતિહાસિક અનુમાનો કરવાં એ ઘણુ જાખમભરેલું છે. કેમકે પ્રાચીન ગ્રન્થો હજી ઘણા ઉપલબ્ધ થયા નથી. તે થશે અને તે કયા કયા સમયમાં થયા એ વિષે ચોક્કસ જણાશે ત્યારેજ અમુક સમયમાં અમુક પ્રક્રિયાઓ ઉત્પન્ન થઇ હતી એમ નિશ્ચિતપણે કહી શકાશે. સામવેદના સમયમાં સામ ગાન થતું ત્યારે તે કયા નિયમે થતું હશે એને માટે પણ આપણે કંઇ જાણતા નથી. એને માટે માત્ર નારદીય શિક્ષા નામનો ન્હાનો ગ્રન્થ છે. તે ગ્રન્થ ભરતની પછીનો છે, ઘણો પ્રાચીન નથી. ભરતની પહેલાં કેવળ સંગીતજ વ્યવહારમાં ચાલુ હશે એમ તો કંઇ કહી શકાતુંજ નથી; કેમકે તે ધાર્મિક યજ્ઞયાગાદિમાં કરવામાં આવતું. પરંતુ એ સમયમાં સઘળા ચાલુ સંસાર વ્યવહારમાં જે સંગીત થતું હશે તે માર્ગને નામે કહેવાતું હશે. પરન્તુ સંગીત જેવું પ્રગમનશીલ શાસ્ત્ર કંઇ અમુક નિયમોને તાબે રહી કેદખાનામાં પડી રહી શકે તેવું નથીજ, જેથી એ સમયે માર્ગ અને દેશી એ બન્ને

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संगीतो साथेज प्रवर्तता हशे. अने घणाक समय सुधी आ "मार्ग" अने आ "देशी" एवा भेद पृथक नामोथी पड्या नहीं हशे. ए कारणथी भरते एवा वे भेद पाड्या नही हशे. पछी मार्ग ए ओछुं मनोरंजक होवाने लीधे पाछळ पडी गयुं हशे, ने देशी संगीत के जे मानव जातिनी स्वच्छन्द विहार करती प्रतिभाना नृत्यरुप होय छे. तेनो अतिशय प्रसार थतो गयो हशे ते प्रमाणे तेना उपर हनुमान, मतंगादि आचार्योए ग्रन्थलेखन करवा मांडयुं हशे, एम अनुमान थइ शके छे. एज कारणथी संगीतरत्नाकर मार्ग अने देशी संगीतनो मिश्र ग्रन्थ छे एम कही एकतो अयोग्य नथीज. केमके मार्ग संगीतनी उपर देशीसंगीतनी असर सजड रीते थवाथी ए संगीत सुधारी तेना नियमो अने व्यवस्था देशी संगीतनी साथे अनुकूळ थइ पडे तेवी करवी पडे ए स्वाभाविक छे. **रागविबोध** तो स्पष्ट रीतेज मिश्र ग्रन्थ छे. पारिजात घणे भागे देशीसंगीत उपर द्रष्टि राखी रचायलो ग्रन्थ छे. मार्ग संगीतमां वपराती श्रुति, स्वरव्यवस्था, जाति (राग) प्रपंच, मूर्च्छनादिव्यवस्था जेम एक तरफ व्यवस्थित हती तेम बीजी तरफ देश देशनी लोकनी प्रतिभानुं वहन अनिरुद्धपणे थतुं रहेतुं, ने देशी संगीत घणुंज आगळ पडतुं त्यारे हनुमानादि आचार्योए जोयुं के, देशी संगीतमां श्रुति, ग्राम, जाति वगेरे कशुं काम नथी लागतुं; ने तेवुं स्पष्टपणे जणाया पछी तेमणे मार्ग संगीतना नियमोने बाजु उपर राखी तेमांना लेवा योग्य बंधनोनी योजनाओ करी लइ, स्वतंत्रपणे ग्रन्थ रचना करवा मांडी.

ए ग्रन्थ रचना करवामां एम थयुं के, मार्गसंगीत के जे शास्त्रीय गणातुं अने देशी संगीत के जे अशास्त्रीय रुपे मनातुं तेने शास्त्रीय रुप आपवानी ज्यारे फरज पडी हशे त्यारे ते, मार्ग संगीतना घणाक शास्त्रीय मनाता (परन्तु वस्तुतः तो अशास्त्रीय) नियमोथी ग्रथित कर्युं हशे. एज कारणथी देशी संगीतनी बांधणी घणी खरी अशास्त्रीय थती गइ छे. जो ए प्राचीन समयमां मार्ग संगीत ते केवल साम संगीतना अवयवरुपेज रही गयुं होत तो एज देशी संगीत काळे करीने संपूर्ण शास्त्रीय नियमोथी संघटित थइ जात. आवां आवां कारणोथी अमुक ग्रन्थ अने तेमांनी अमुक अमुक बाबतो शुद्ध मार्गी के देशी ए बेमांथी कया संगीतनी छे तेनो निर्णय चोकस रीते आपी शकातो नथी. अने बन्नेनां अंतरंगो परस्परथी मिश्रित थइ गयां छे. वस्तुतः आम होवाथी शास्त्रीय गणातुं संगीत दक्षिणना संस्कृतज्ञोना हाथमां गयुं, अने ओछुं शास्त्रीय गणातुं संगीत उत्तर हिन्दना निरक्षर गायक वर्गमां गवातुं गयुं तेम तेम मा-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नव जातिनी कर्णरसिकताए तेना मधुर मधुर अंशोने वधावी लइ स्वाभाविक सुन्दरताए पहोंचतुं गयुं. दक्षिणमां कर्नाटक वगेरे तरफ जे संगीत हाल प्रचलित छे. ते प्राचीन कालना सारोमांना मार्ग संगीतना अवशेष (फॉसील्स) रुप छे. हवे आपणे संगीतना ऐतिहासिक काल विभाग पाडीए, अने ते विभाग कया युगोथी ओळखी शकाय तेम छे तेनां नामो पण आपीए.

संगीतना ऐतिहासिक युग.

१. **सामसंगीतना युग**—वेद काळथी ते बुद्धकाळ (इ. स. पूर्वे ६००) सुधीना काळने "सामसंगीत" युग कहेवामां हरकत नथी.

२. **मार्ग संगीत युग**—बुद्धकाळथी ते इ. स. ना ४ के ५ सैका सुधीना लगभग १००० वर्षना काळने आपणे मार्ग संगीतनो युग कहीशुं.

३. **देशी संगीतनो उषःकाल**—इ. स. ९ मा सैकाथी ते १९ मा सैका सुधीना लगभग १००० वर्षना समयने आपणे देशी संगीतनो आरंभकाळ के उषःकाळ कहीशुं.

४ **देशी संगीतनो मध्यान्ह युग**—इ. स. ना १५ मा सैका पछीथी ते छेक १९०० मा सैका सुधीनो समय देशी संगीतना परम उत्कर्षनो गणी शकाय तेम छे.

आ प्रमाणे चार युग पाडवामां आवे तो जे जे ग्रन्थो उपलब्ध थता जाय त ते कया युगमांना छे तेनो निश्चय थतो जाय अने समग्र ग्रन्थसमूहनुं कालिक वर्गीकरण करी शकाय.

आमांना प्रथम युगना सामसंगीतनी रचना केवी हशे ते जाणवाने माटे आपणी पासे कशुं साधन नथी. काळे करीने ए साधनो मळी आवतां जे प्रकाश पडशे ते भविष्यमां जणाशेज. मार्गसंगीतयुगमांनुं संगीत केवुं हशे तेनो ख्याल रत्नाकर उपरथी सहज थइ शकशे. तोपण भरतनी पूर्वना समयना अने त्यारपछीना उत्तर समयना ग्रन्थो उपलब्ध थवानी घणी जरुर छे. देशी संगीतना उषःकालमांना अनेक आचार्योना ग्रन्थो मळी आववानी जरुर छे. मात्र देशी संगीतना मध्यान्हयुगमांनुं संगीत केवुं हतुं ते आपणी स्हामे मोजुद छे. ए संगीत तानसेन अकबर (इ. स. ना १६ मा सैकाना) समयनी पूर्वे, मार्ग संगीतथी घणुं मिश्रित हतुं, अने

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ते वखते जुदी तरेहना ध्रुवपद, धमार, प्रबंधो जे गवाता हता तेने अत्यंत सुंदर रीते घडीने, तेने सुसंस्कृत करी, तेना दरेक अंगो विशेष आकर्षक बनाववानुं मान तानसेन अने तेना गुरु हरिदास डागुरने तेमज ते वखतना बैजुबावरा वगेरे सुविख्यात नायकोने घटे छे. तानसेन अने ते पछीना समयनां ध्रुवपदोनी पद्धतिओ जे जुदा जुदा संप्रदायपणे आखा उत्तर हिन्दमां मुख्य ४ अखाडाओमां वहेंचाएली हती तेना उपर पण देशी संगीतना मुख्य हरिदास जेवा साधु पुरुषोए संस्कार करी ते प्रमाणे स्वरूपो फेरवी नाखवा जेटली असर करी अने गायकीनुं जुनुं स्वरुप एकदम फरी गयुं. ए ध्रुवपदना समय पछी घणीज मोहक अने सर्वांगपूर्ण एवी ख्याल (अस्ताइ) नी पद्धति शरु थइ, ने तेनी आगळ ध्रुवपदोनी पद्धति झंखवाणी पडी गइ. त्यारबाद टप्पो अने ठुमरी ए बे पद्धतिओ उभी थइ. एम एक सरखो संगीतनो परम उत्कर्ष सं. १९०० सुधी थतोज गयो. गया ६०–७० वर्षमां नवा प्रतिभाशाळी गायक वादको उत्पन्न थयाज नथी एम कहीए तो ते अयोग्य नथीज. अने ए समयमां जे गायकवादको निर्माण थया ते तो मात्र पोतानी पूर्वना संगीतनो खरडोज घुंटवावाळा हता. माटे हिन्दुस्थानी संगीतनो परमोत्कर्षनो जो कोइ काळ होय तो ते इ. सं. ना १६ मा सैकाथी ते इ. स. १९०० सुधीना ३०० वर्षना दरमियाननोज गणी शकाशे.

उपर कह्यो ते देशी संगीतनो मध्यान्ह युग घणोज तेजस्वी, परम उज्वळ अने सुन्दर स्वरुपे तपी रह्यो हतो एमां कशोज शक नथी. तेमज ए युगमां जे ग्रन्थलेखन थयुं ते पण घणु विशाल थयुं. परन्तु दिलगीरी साथे कहेवुं पडे छे के ए लेखन तानसेन, अदारंग, सदारंग जेवा दिव्य प्रतिभाशाली पुरुषोना हाथथी खास थवानी जरुर हती; ते थयुं नहीं. (जो के तेने माटे प्रतिकूळ कारणो पण घणांक हशे ए खरुं छे.) परंतु तेम न थवा नामदाथी पारिणाम ए थयुं के, संगीत कला उपर प्रीति करनारा जे विद्वान पुरुषो हता; के जेओनी योग्य नियमो तथा सिद्धान्त बान्धनारा तर्ककेरी हती, तेमांना घणाखरा दक्षिण देशीय हता. अने तेमना मगज उपर दक्षिण पद्धतिना ग्रन्थो ठसेला होवाथी, तेमनाथी हिन्दी संगीतनुं स्वरुप बराबर ख्यालमां आवी शक्युं नहीं. एथी करीने स्वर, श्रुति, ताल, मूर्च्छना, ग्राम राग वगेरे विषयोना सबंधमां तेमना पोताना देशमां ए विषे जे कल्पनाओ प्रचलित हती तेनोज अनुवाद तेमणे करी दीधो.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

खरी रीते जोतां हिन्दी संगीत घणुंज मधुर, दिव्य, प्रतिभाशाळी होइ, तद्दन सादुं, लघु अने नादशास्त्रना अत्युच्च तत्त्वोनी कसोटीए कसाइ शुद्ध शास्त्रीय स्वरुपे सिद्ध थइ शके तेवुं छे. एटलुं छतां ते घणाज थोडा नियमोथी सुव्यवस्थित-पणे बंधायलुं छे. एज संगीतनी ग्रन्थसंकलना हिन्दुस्थानना कलानिपुण गायक वादकोए करी होत तो ते केटले अंशे साध्य थइ शकत ए पण विचार करवा जेवुं छे. कारणके प्रचलित कलाने व्यवस्थित करीने तेने शास्त्रनुं स्वरुप आपवा माटे कोइ अलौकिक शक्ति जोइए छे ए स्पष्ट छे. एवी अपूर्व **शक्ति ए** गायकोमां नहोती. ते शक्ति तो शास्त्रीमंडळमां हती. वळी ए शास्त्रीओ पण केवा हता ? ते पण एवाज हता के जेमने गायकोनी माफक पूर्ण कुशळताथी गातां आवडतुं नहोतुं, पण थोडुं स्वरज्ञान, गायन, वादन जाणवा उपरांत घणे भागे कर्णरसिक हता. एज शास्त्रीओ बीजी रीते शास्त्रीय विचारणा करवानी बाबतमां प्राचीन ग्रन्थना पूर्ण परिचित होइ आप्त वाक्यो आगळ पोतानी प्रतिभापूर्ण स्वतंत्रता वेची बेसे एवा हता, ते उपरांत दक्षिण पद्धतिना ग्रन्थ अने कलाना पूर्ण संस्कारवाळा हता. एवा पुरुषोए हिन्दुस्थानी संगीत उपर जे कंइ लख्युं तेथी फळ ए थयुं के हिन्दी संगीत थोडे अंशे सुव्यवस्थित थतुं गयुं. हालमां जेटला ग्रन्थो उपलब्ध थया छे ते सघळाना कर्ताओ घणा खरा दक्षिण कर्नाटक तरफना छे एम जणाइ आवशे. हिन्दी संगीत जे महान नायकोए पूर्णरुपे उच्च स्थितिमां आण्युं ते नायकोए पोतेज, पोतानी कला उपर जो ग्रन्थरचना करी होत तो ते केवी थइ होत ते पण विचार करवा जेवी बाबत छे. मुसलमान गायक मंडळना हाथनी कृति जोवी होय तो उर्दु अने फारसी भाषामां तेमणे जे कंइ लख्युं छे तेना अवलोकन उपरथी ए विषेनी थोडी घणी कल्पना करी शकाशे. हिन्दी भाषामां सुरतरंगिणी, तानसेनसार, संगीतदर्पण वगेरे ग्रन्थो जोतां पण एज प्रतीति थइ शकशे. केमके आ बधा हिन्दी ग्रन्थकारोनी रचना अने शैली, दक्षिण तरफना ग्रन्थकारोनी शैलीथी तुरतज भिन्न पडी जाय छे. जेमना मगज उपर दक्षिण देशीय ग्रन्थोमां प्रतिपादन करेला शास्त्रीय नियमो अने सिद्धान्तोनी असर थइज नहोती. एवा जे जे ग्रन्थकारो, हिन्दी संगीत उपर ग्रन्थ रचीने ते ते व्यवस्थित करवाना प्रयासमां रह्या हता तेमना ग्रन्थो घणाज विचारणीय अने उत्तम बन्या छे. हिन्दी संगीतना नायकोना मगज उपर पोताना पूर्व कालमां थइ गएला संस्कृत ग्रन्थोनी असर घणी थइ हती. ए पूर्वकालीन अनेक संगीत प्रक्रियाओनुं गुंचवाइ गएलुं कोकडुं उकेलवानो प्रयत्न तेमणे कर्यो, परन्तु तेमां ते फावी शक्याज नहि. ए कार-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

णथी परिणाम ए आव्युं के, तेमांथी व्यवहार योग्य स्थूल स्थूळ विषयो लइने, बाकीना विषयोनी संकलना पोतानी स्वतंत्र कल्पनाओ अने अनुमानोना बळ उपर करी दीधी. एमांथीए घणा नायको तो एवा पण थइ गया छे के, प्राचीन ग्रन्थोने टोल्ला उपर मुकी दइ, तेमांनी भाषानुं काठिन्य, विषयकाठिन्य अने अनेक संदिग्ध बाबतो ए सघळांने बाजु उपर मुकी, पोताना प्रगाढ अनुभवो, स्वतंत्र स्वाभाविक कल्पनाओ अने हृदयंगम अनुभवोना बळ उपर तेमणे स्वतंत्र ग्रन्थरचना करी राखी. एवा स्वतंत्र बुद्धिशाली ग्रन्थकारोनी जेटली स्तुति करीए तेटली थोडी छे.

हवे आपणा उपर बन्ने देशोना संगीतनो इतिहास तैयार करवानी जवाबदारी आवी पडी छे. ते तैयार करवा माटे जेम बने तेम वधारे ग्रन्थो एकत्र करवानी जरुर छे. अने तेमांथी खास करीने हिन्दी संगीतनी दरेक प्रक्रियाओनो व्यावर्तक इतिहास प्रथम तैयार करवो छे. चालु प्रयोग आखा उत्तर हिन्दमां जे चालु छे तेनो अनुभव आपणने छेज. ते उपरांत ग्रन्थगत तत्तत्कालिक कल्पनाओ. अने गुणिजनोमां जे कल्पनाओ, अनुभवना बल उपर रचायली होय ते कल्पनाओ ए बन्नेनो योग करी ए गंगा यमुनाना प्रवाहो ते ते देशकालमां केवा स्वरुपे वहेता हता; ने ए स्वच्छन्द वहनमां ग्रन्थना कृत्रिम संस्कारथी वांकाचुंकां वळणो केवी रीते थतां गयां ए ख्यालमां राखीने वर्तमान संगीतनो सर्वांग पूर्ण ग्रन्थ थवानी घणीज जरुर छे.

संगीत ए ज्योतिष, वैद्यक, रसायन, पदार्थविज्ञान वगेरे भौतिक शास्त्रोनी माफक प्रगमनशील शास्त्र छे. ते स्थाणु नथीज. भाषानी अने तेनी सरखामणी ठीक थइ पडशे. जेम जेम समय व्यतीत थाय छे तेम तेम नवा नवा रुढ प्रयोगो अने कल्पनाओनी वृद्धि थतांनी साथे नवा नवा नियमो अस्तित्वमां आवता जाय छे अने तेम थवाथी जुना काळमां रची राखेला नियमो के ग्रन्थोमां जे ते वखते सुधाराओ करवा पडे छे. जुनां व्याकरणो रद थाय छे, ने नवां अस्तित्वमां आवे छे. ते अस्तित्वमां आवतां जुनां व्याकरणोनी प्रतिष्ठा कमी थती जाय छे. संगीतनुं पण तेमज छे. संगीत ए पण एक प्रकारनी भाषाज छे. पूर्वकालना संगीतमां अने वर्तमान कालना संगीतनां स्वरुपमां महदंतर पडी गयुं छे. केटलाक पंडितमन्यो जुना ग्रन्थगत नियमोनो, वर्तमान कलानी साथे मेळ बेसाडवानो प्रयत्न करवा जाय छे. त्यारे तेमां तेओ निष्फळ निवडे छे ते कारण एज छे. कॅमके ज्यारे शास्त्रनो अने लक्ष्यनो एटले के व्यवहारमां चालु रहेला गायन प्रयोगनो परस्पर विरोध प्राप्त थाय छे त्यारे व्य-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

વહારના કે રુઢિમાંના પ્રયોગોને અનુસરીને શાસ્ત્રનો અર્થ કે નિયમ બદલવો જોઇએ. એજ વાત નીચેના શ્લોકમાં સંગીતરત્નાકરમાં અક્ષરે અક્ષર સ્પષ્ટ રીતે જણાવી છે કેઃ—

યદ્વા લક્ષ્યપ્રધાનાનિ શાસ્ત્રાણ્યેતાનિ મન્વતે
તસ્માલ્લક્ષ્યવિરુદ્ધં યત્તચ્છાસ્ત્રં નેયમન્યથા ॥

સં. ર. પૃ. ૬૧૬.

સાચી વસ્તુસ્થિતિ આ પ્રમાણે હોવાથી વર્તમાન સંગીતના સ્વરુપને પૂર્ણ રીતે સમજી, તે કયા નિયમોને આધીન છે, તે નિયમો શોધી કહાડી, નાદમાધુર્યના તરંગો પુનઃ પુનઃ અવનવા ઉપજાવવા હોય તો એજ નિયમોથી ઉપજાવી શકાવા જોઇએ, એવા ચોકસ પાયા ઉપર તેનું બંધન પ્રયોજી એક વર્તમાન પ્રચલિત સંગીતનું શાસ્ત્ર નવેસરથી બનાવ્યા સિવાય છુટકોજ નથી. જુના સંગીતને સંપૂર્ણ રીતે કર્ણરસિક બનાવવાનું માન વ્યહવહારમાં જો નિરક્ષર તરીકે ગણાતા, પરન્તુ સંગીતમાં તો જેની યોગ્યતા મહાન દેવ તરીકે પુજાતા કેટલાક મુસલમીન ગુણીઓનેજ ઘટે છે. હાલના કેટલાક પંડિતમન્યો જુના ગ્રન્થમાંના મૃતપ્રાય થઇ ગએલા સંગીતનું પુનરુજ્જીવન કરવા જાય છે, પરન્તુ તેમનો પ્રયત્ન મૃત શબ્દને પુનરુજ્જીવન કરવા જેવો નિષ્ફળ નિવડેલોજ જોવામાં આવ્યો છે. ઉપરાંત એવા પંડિતો, હાલના નિરક્ષર ગાયકો પાસે જવાબ માગે છે કે, તમે કયા ગ્રન્થના આધારે ગાઓ છો ? આ જવાબ કેટલો બધો હાસ્યાસ્પદ છે તે તેઓ સમજી શકતા નથી. ને પોતાનું પોકળપાંડિત્ય પોતાનેજ હાથે ખુલ્લું થઇ જાય છે એ તેમના લક્ષ્યમાં પણ આવતું નથી. ઉપર ૩૨૯ ગ્રન્થો ગણાવ્યા તેમાંથી એક પણ ગ્રન્થ વર્તમાન સંગીત કલાના નિયમોથી સંગ્રહિત છે એમ કોઇ પણ બતાવી આપશે ? કાદિજ નહીં. માટે ખરો અને ઉપયોગી રસ્તો તે એ છે કે, વર્તમાન સમયમાં જે જુના ઉત્તમ ગુણિઓ હાલ હયાત છે તેમની પાસેથી તેમને આવડતું સંગીત શીખી, સમજી, તનું મનન કરી લઇ પછી તે ઉપર, એની વ્યવસ્થા પ્રમાણેનો ગ્રન્થ રચવો જોઇએ; પરન્તુ તેમ નહીં કરતાં ઉલટ રીતે જુના ગાયકોને "તમારું સંગીત અમુક ગ્રન્થ પ્રમાણે છે કે નાહિ ?" "જો ન હોય તો તે અશાસ્ત્રીય છે" એમ કહી તેમને હસી કહાડનારા પંડિતો, તેઓનામાં રહેલી મૂલભૂત મોહક કલાની સ્તુતિ નાહિ કરતાં, મૂાતને બદલે દેવળનેજ માત્ર પૂજનારા છે એમજ કહી શકાશે.

વે આપણે કયા વિષયો હાલ તુરત હાથમાં લઇ તેનો નિર્ણય કરવાની જરુર છે તે વિષે અલ્પમાં સૂચવીએ છીએ, કારણ આપણા સંગીત વ્યવહારમાં રત દિ-

P. P. Ac. Gunratnasuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वस जेनी अगत्यनी जरुर छे एवा विषयो पैकी, स्वर, श्रुति, वादी संवादी, रागना आरोह अवरोह अने ताल ए पांच विषयो पहेलीज शरुआते हाथमां लइ तेनो चोकस निर्णय करी नाखवानी जरुर छे, स्वर व्यवहारमां स्थूल रीते तो १२ ज लेवाना छे. अने ते आपणे जे वापरीए छीए तेनाज प्रमाणोने निश्चित करी देवानी जरुर छे. अंग्रेजीमां ए विषे पुष्कळ लखायलुं छे, आपणा देशमां ए विषे घणा विद्वानोए पुष्कळ विचार करेलो छे. ए बधा विद्वानोमां पुनाना प्रसिद्ध पेन्शनर एन्जीनीअर अने अमारा परम स्नेही गणितशास्त्री मी. गणेशराव खरे घणो सारो निर्णय करेलो छे. तेमणे स्वर अने श्रुतिओनां आंदोलनो, प्रमाणो अने गणित निश्चित करीने तेनो कायमनो निर्णय करी नाख्यो छे. श्रुतिओनी प्राचीन गणना प्रमाणे तेमणे पण बावीशज गणी छे. हुं पोते २४ श्रुतिना पक्षनो छुं. ते प्रमाणे तेमणे गणित नियमे २४ श्रुतिओना प्रमाण भागो निश्चित करी आप्या छे. वादी संवादीना विषय संबंधमां तो स्पष्टज छे के सात के बार स्वरमांना गमे ते स्वरने वादी गणीए तो तेनाथी चोथो अने पांचमो एवा बे संवादी, त्रीजो अनुवादी अने आसपासना विवादी समजवाने माटेनी सादी रीत व्यवहारमां उपयोगमां लेवाने कोइ प्रकारनी अडचण नथी. तोपण दरेक स्वरना संवादी वगेरे नीचेना कोष्टकमां आप्या छे, के जे जिज्ञासुने घणा उपयोगना छे एथी करीने कोइ पण स्वरनी बीजा कया स्वरनी साथे मित्रता के शत्रुता छे ते समजी शकाशे.

स्वरोनी परस्पर मित्रता अने शत्रुता.

(अंश—वादी, संवादी, अनुवादी अने विवादी विषे)

सात स्वरो एक बीजानी साथे केवो संबंध धरावे छे ते जाणवानी घणी जरुर छे. सघळा स्वरमां स स्वर मुख्य छे, ते आरंभक स्वर छे, ते स्थपाया पछी बाकीना छ स्वरो उपजावी शकाय छे. ए कारणथी सनुं नाम षड्ज एटले के छ स्वरोने उत्पन्न करनार पडयुं छे. एक सथी ते तेनी उपरना बीजा स सुधीनुं जे एक सप्तक गणाय छे, तेना वचमांथी सरखा भाग करीए तो स. रि. ग. म. अने प. ध. नि. स. एवा बे विभागो पडी शके तेम छे. तेमां स. रि. ग. म. ए सप्तकनो पूर्व भाग छे अने प. ध. नि. स. ए उत्तर भाग छे. हवे जो पूर्व भाग ए बिंबरुपे अथवा ध्वनिरुपे छे एम कहीए तो उत्तर भाग ए प्रतिबिंबरुपे अथवा प्रतिध्वनि (पडघा) रुपे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छे एम कही शकाय. जेथी स अने प. रि. अने ध. ग. अने नि. म. अने स ए बन्ने परस्पर बिंब प्रतिबिंबरुपे अथवा ध्वनि प्रतिध्वनिरुपे छे. तेनो प्रत्यक्ष अनुभव जोवो होय तो हारमोनियममां स अने प ए बन्ने पडदा साथे दाबीने वगाडशो तो, ते बन्ने एक बीजामां मित्रभावे कानने भळी गएला लागशे. जेथी स ने जो राजा के वादी कहीए तो पने तेनो प्रधान के संवादी कहेवामां आवशे. ए रीते साते स्वरो क्रमेक्रमे वादी तरीके लइए तो तेनाथी पांचमो स्वर संवादी थतो जशे, एवो सर्व मान्य नियम छे.

परन्तु स नी साथे पंचम स्वरनी जेवी संवादी तरीकेनी मित्रता छे तेम तेनाथी चोथा स्वर एटले के मनी पण छे. ए स अने मना पडदा हारमोनियममां साथेज दाबीने वगाडशो तो ते पण परस्परमां भळी गएलाज लागशे, परन्तु ते प करतां सहेज जुदा तरीके कानने लागशे. आथी जो कोइ पण स्वरने वादी तरीके लेवामां आवे तो तेनाथी ४ थो स्वर संवादी थइ शकशे. आ रीते संवादीना २ प्रकार थया. ५ मो ते पंचम भावे अने चोथो ते मध्यम भावे संवादी, हवे जो मध्यम भावे सप्तकना पूर्व अने उत्तर भाग पाडीए तो स. रि. ग. म. अने म प ध नि. एवा बे भाग पडी शकशे. नीचेना कोष्टकमां ए बन्ने प्रकारना संवादीओ आपेला छे.

वादी स्वरथी ३ जा स्वर ते अनुवादी होय छे. अने वादीनी आसपासना स्वरो विवादी तरीके गणाय छे. आ बधो विषय गायनवादनपाठमालामां (पृ. २४१ थी २४६ सुधी) अने श्रुति स्वर-सिद्धान्तमां विस्तारथी आपेलो छे. तथी विषेश समाधान माटे ते भाग मनन करवो. तोपण नीचेनां कोष्टको मनन करी ध्यानमां राखवानी रुर छे.

पंचम भावे बिंबप्रतिबिंबरुपे वादी संवादी. बिंब स रॅ रि गॅ ग म मॆ प सप्तकनुं पूर्वार्ध (वादी) प्रतिबिंब प धॅ ध नि सं रिं रिं सप्तकनुं उत्तरार्ध. (संवादी)

मध्यमभावे बिंबप्रतिबिंबरुपे वादी संवादी.

बिंब—स रॅ रि गॅ ग म मॆ प सप्तकनुं पूर्वार्ध. (वादी).

प्रतिबिंब—म मॆ प धॅ ध नि नि सं सप्तकनु उत्तरार्ध (संवादी).

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दरेक स्वरना संवादी, अनुवादी अने विवादी.

वादी.	स्वरोनी मित्रता.				स्वरोनी शत्रुता.	
	संवादी.		अनुवादी.		विवादी.	
	पंचम भावे.	मध्य आवे.	आरोहमां	अवरोहमां	अवरोहमां.	आरोहमां.
स	प	म	ग	ध॑	नि	रि
रॅ	धॅ		म	निॅ॑	स	गॅ
रि		प	मॆ	नि	रिॅ	ग
गॅ	निॅ	धॅ	प	स	रि	म
ग	नि	ध	धॅ	रिॅ	गॅ	मॆ
म	स॑	निॅ	ध	रि	ग	प
मॆ	रि॑	नि	निॅ	गॅ	म	धॅ
प	रि॑	स॑	नि	ग	मॆ	
धॅ	गॅ॑	रिॅ॑	स॑	म	प	निॅ
ध	ग॑	रि॑	रिॅ॑	मॆ	धॅ	नि
निॅ	म॑	गॅ॑	रि॑	प		स॑
नि	मॆ॑	ग॑	गॅ॑	धॅ	निॅ	रिॅ॑
स	प	म॑	ग॑	ध	नि	रि॑

आ कोष्टक तमाम राग शास्त्ररुपी भंडारना बारणानी बराबर छे. रागना स्वरोना आरोह अवरोह, दरेक रागना अंश स्वरो, रागना आलाप ए सघळा जे नियमे रचवामां आवे छे ते वादी संवादीना सिद्ध बंधारण उपरथीज.

ए रीते वादी संवादीनो निर्णय थया पछी रागना आरोह अवरोह, तेना

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रह, न्यास, अंश, वादी संवादी स्वरो कया ते जाणवा माटे.

राग स्वर निर्णय.

करवानी घणी जरुर छे. रागो तो अनेक छे, परन्तु हाल आखा हिंन्दुस्थानमां जे ६०–७५ रागो घणा गवाय छे तेना स्वरोनो निर्णय थाय तो सारुं छे एम धारी अमे लगभग १२५ रागोनो निर्णय करी नाख्यो छे ते नीचे अमे अमारा **गणेश मतना** नामथी आपीए छीए. ए निर्णय प्रमाणे आपेला स्वरो लगभग चोकस छे एम समजवुं, समग्र उत्तर हिन्दमां राग (पुरुष) अने रागिणी (स्त्री)ओनी कल्पना चालु छे. ते कल्पना क्यारे, कया कारणोथी उत्पन्न थइ हशे तेनी हाल आपणने विशेष जरुर नथी. अमुक रागो पुरुष, अमुक तेनी स्त्रीओ अने अमुक राग तेना पुत्रो ए वगेरे कल्पनानो विस्तार कविराजे आ ग्रन्थमां समजावेलोज छे. परन्तु एथी जिज्ञासुने रागालाप्ति करवामां कशो तात्कालिक उपयोग थवानो नथी. जेथी ए कल्पनाने हाल तुरत बाजु उपर मुकी रागना स्वरोनो निर्णय अमे जे कर्यो छे ते कोष्टकना रुपमां नीचे आपीए छीए.

गणेशमतानुसार रागस्वरदर्शककोष्टक.

औडवराग.

(प्रकृतिभूत औडवराग.)

	राग नांम.	आरोह अवरोह.	अंश-वादी संवादी.	ग्रह. न्यास.
१.	भूप.	सरिग. पध. सं	ग	ग
		(स्वरुप सिद्धि–स-प; ग-ध)	ध	स
२	शाम-जलधर.	सरि. मपध. सं	ध	ध
		(स्व. सि.=म-स; ध-रि)	रि	
३	सारंग.	सरि. मप. निॅ सं	परी	स
		(स्व. सि.–निॅ-म; रि-प)	रिप	
४	हिंदोल.	स. गर्म. धानि सं	ध स	
		(स्व. सि.–ध-ग)	ग	
५	मालकौंस.	स. गॅम. धॅ निॅ सं	मसं	स
		(स्व. सि.–धॅ-गॅ; स म)	निॅम	म

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

६	धानी (१)	स. गॅ म प. निॅ सं	गॅ	गॅ
		(स्व. सि.–प-सं; गॅ-निॅ)	निॅ	

विकृतिरुप औडव राग.

७	देसकार.	सरिग. पध. सं	ध प	ध
			रिं	प
८	विभास.	स रिॅ ग. प धॅ. सं	रिंॅ	धॅ
			धॅ	रिंॅ
९	जैत. (१)	सरिॅग. पध. सं	प	स
			सं	प
१०	रेवा.	सरिॅग. पधॅ. सं	सग	
			पध	
११	गुनकली.	सरिॅ. मपधॅ. सं	रिॅ	रिॅ
			धॅ	स
१२	भठीयारी. (१)	स. रिॅ. मपधॅ. सं	मधॅ	ध
			सं रिंॅ	म
१३	मधुमाध सारंग.	सरि. मप. निसं	मनि	स
		(२)	निॅम	रि
१४	दुर्गा.	स. ग. म. धनिसं	ग	ग
			ध	
१५	मालश्री.	स. ग मं प. नि सं	प	स
			स	प
१६	तिलंग.	स. गमप. निसं	ग	स
		(२)	नि	ग

२ षाडवराग.

१७	पुरिया रेनकी.	स रिॅ ग मं. धॅ नि सं	गध	नि
		(स्व. सि.–ग-नि; धॅ-रिंॅ)	निॅरि	स
१८	मारवा.	सरिॅगमं. धनि सं	धॅरि	स
		(स्व. सि.–ध-ग; रिॅ मं)	गमं	ध

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

१९	षाडव भैरवी.	सारॅगॅ म. धॅनिॅ सं	मनिॅ	रॅ ?
		(स्व. सि=म-निॅ; निॅ-गॅ: रॅ-धॅ)	निॅगॅ	धॅ
२०	षाडव विलावल.	स रि ग. पधनिसं	पनि	?
		(स्व. सि.–प-रि; नि-ग)	रि	ग
२१	षाडव तोडी.	सारॅ गॅ मं. धॅ निसं	निमं	गॅ ?
		(स्व. सि.=नि-मं; मं-रॅ, गॅ-धॅ)	मं	रॅध
२२	षाडव कल्याण.	स रि ग मं. धनिसं	मं	
		(स्व. सि.–मं-नि)	नि	
२३	शंकरा	सरि ग. प ध नि सं	सं	सं
			प	स
२४	कौशिक कानडा.	सरि गॅ म. धनिॅ सं	निॅ	म
			म	स
२५	सोहनी.	स रॅ ग मं. धॅ नि सं	म ग	म
			सं नि	स
२६	ललत.	स रॅ ग म. धॅ नि सं	म	स
		(२)	नि	म
२७	त्रिवेणी.	स रॅ ग. प धॅ नि सं	रॅ	रॅ
			धॅ	स

३. संपूर्ण वर्गीय राग.

२८	शंकराभरण.	स रि ग म प ध नि सं	स	स १
			प	प
२९	झिंझोटी.	स रि ग म प ध नि सं	नि	स २
		(२)	ग म	
३०	काफी.	स रि गॅ म प ध निॅ सं	प गॅ	स ३
			स निॅ	प
३१	पीलु.	स रि गॅ म प धॅ नि सं	गॅ प	स ४
			धॅ स	
३२	कालंगडा.	स रॅ ग म प धॅ नि सं	प	धॅ ५
			सं	प
३३	जिल्ला	स रि ग म प ध नि सं	रि	स
		(२) (२)	प	प

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

३४	भैरवी.	स रॅ गॅ म प धॅ निॅ सं	धॅ	स ६
			गॅ	धॅ
३५	सिन्ध भैरवी.	स रि गॅ म प धॅ निॅ सं	प	प ७
			स	स
३६	जिल्ला भैरवी.	स रि ग म प ध नि सं		
		(२) (२) (२) (२)		
३७	कल्याण.	स रि ग र्म प ध नि सं	नि	नि ८
			र्म-ग	स-प
३८	यमन कल्याण.	स रि ग म प ध नि सं	प	ग
		(२)	स	स
३९	पूर्वी.	स रॅ ग र्म प धॅ नि सं	गर्म	स ९
		(२)	नि	ग
४०	दिनकीपुरिया.	स रॅ ग र्म प ध नि सं	प	स१०
			स	
४१	रामगारि.	स रॅ ग म प ध नि सं	ध	ग११
			ग	स
४२	तोडी.	स रॅ गॅ र्म प धॅ नि सं	गॅ	धॅ
			धॅ	गॅ

वक्र संपूर्ण राग वर्ग.

४. औडव संपूर्ण राग.

(भूप प्रकृतिक.)

४३.	बीलावल (१)	स रि ग. प ध. सं	स ध	ग
		सं निॅ ध प म ग रि स	प रि	स
४४	भूप कल्याण.	स रि ग. प ध. सं	ग	ग
	(शुद्ध कल्याण)	सं नि ध प र्म ग रि स	ध	स
४५	पहाडी	स रि ग. प ध. सं	ग	सं
		सं नि ध प म ग रि स	ध	स

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

४६	रामकली.	स रॅ ग. प धॅ. सं	धॅ	
		सं नि धॅ प म ग रॅ स	रॅ	
४७	जैत.	स रॅ ग. पधॅ. सं	प	स
		सं नि धॅ प मं गरॅ स	स	प
४८	भूपाली भैरवी.	स रॅ गॅ. प धॅ. सं	धॅ	
	(भूपाल)	सं निॅ धॅ प म गॅ रॅ स	गॅ	

(जलधर शाम प्रकृतिक.)

४९	गौड मलार.	म रि. मपध. सं	रि	रि
		सं नि ध प म ग रि स	प	ग
५०	मुखारी.	स रि. म प ध. स	रि	प
		सं निॅ ध प म गॅ रि स	प	स
५१	जोगीया.	स रॅ. मप धॅ. सं	स	रॅ
		सं नि धॅ पमग रॅ स	प	प
५२	भठियारी (२)	स रि. मपध. स	म	धॅ
		स नि धॅ पम ग रॅ स	स	म
५३	आसावरी.	स रॅ. मपधॅ. सं	धॅ	स
		सं निॅ धॅ पम गॅ रॅ स	रॅ	ध
५४	जोगी आसावरी.	स रि. मपधॅ. सं	स धॅ	रि
	(आशा जोग)	सं निॅ धॅ पमगॅ रि स	पारि	प

(सारंग प्रकृतिक.)

५५	देस.	स रि. मप. नि सं	रि	स
		सं निॅ धप म ग रि स	प	रि
५६ (?)	सोरठ.	स रि. मप. नि सं	रिं	रि
		सं निॅ ध प म ग रि स	प निॅ	स
५७	केदार गौल.	स रि. मप. निॅ सं	रि	रि
		सं निॅ धप मगरि स	प	स
५८	सिन्धुरा कानडा.	सरि. मप. निॅ सं	प	प
		स निॅ धप म गॅ रि स	सं	सं

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

५९	विद्रावनी सारंग.	सरि. मप. नि सं	रि	रि
		सं निं ध प म गॅ रि स	प	
६०	पट मंजरी.	स रि. मप. निं सं	स	
		सं निं ध प म गॅ रि स	प	
६१	गौरी.	सं रि. मप. नि सं	रॅ	निं
		स नि धॅ प म ग रॅ स	धॅ	स
६२	जौनपुरी.	स रि. मप. निं सं	स	प
		सं नि धॅ पम गॅ रि स	प	धॅ
६३	देशी.	स रि. मप. नि सं	संनि	नि
		सं नि धॅ प म गॅ रि स	पम	सं
६४	श्री.	स रॅ. मंप. नि सं	रॅ	रॅ
		सं नि धॅ प मं ग रॅ स	धॅ	

(कौशिक–हिंदोल प्रकृतिक.)

६५	खमाच. (१)	स ग म. धनि सं	ग	ग
		सं नि धप मग रि स	ध	
६६	लच्छासाख. (२)	स. गम. ध नि सं	म	स
		सं नि धप मग रि स	स नि	म
६७	बागेसरी कानडा.	स. गॅम. धनि सं	नि	नि
	(बागीश्वरी")	सं नि ध पम गॅ रि स	गॅ	स
६८	बहार. (१)	स. गॅम. ध नि सं	नि	नि
		सं नि ध प म गॅ रि स	म	स
६९.	मालव भैरव.	स. गम. धॅ नि सं	धॅ	ग
		सं नि धॅ प म ग रॅ स	रॅ	धॅ
७०	दोल कल्याण	स. गमं. ध नि सं	?	?
	(वसंत कल्याण.)	सं निध प मं ग रि स		
७१	चंद्रकौंस.	स. गॅम. धॅ नि सं	म	म
		सं नि धॅ पम गॅ रि स	स	स
७२	कौशिक भैरवी.	स. गॅ म. धॅ नि सं	धॅ	नि
		सं नि धॅ पम गॅ रॅ स	गॅ	धॅ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

७३	वसंत.	स. गमॅ. धॅ नि सं	सं	मॅ
		सं नि धॅ पम ग रॅि स	प	स
		(धानि–तिलंग प्रकृतिक.)		
७४	धनाश्री.	स. गॅ मप. निॅ सं	गॅ	निॅ
		सं निॅ ध पम गॅ रिं स	निॅ	स
७५	काळी धानी.	स. गॅ मप. निॅ सं	गं	गॅ
		सं निॅ धॅ पम गॅ रि स	निॅ	
७६	पीलु धनाश्री.	स. गॅ मप. नि सं	गॅ	स
		सं नि धॅ पम गॅ रि स	धॅ	
७७	पीलु जिल्ला.	स. गम प. नि सं	मग	ग
		सं नि धॅ पम गॅ रि स	निॅ नि	स
		(२)		
७८	भीम पलासी.	स. गॅ म प. निॅ सं	म	निॅ
		सं निॅ धॅ पम गॅ रि स	निॅ	स
७९	पट दीपकी.	स. गॅ मप. निॅ सं	स	
		संनिॅ धपम गॅ रि स	प	
८०	देवगांधार.	स. गॅ मप. निॅ सं	स	म
		सं निॅ धॅ पम गॅ रि स	प	स
८१	भैरव.	स. गम प. नि सं	धं	ग
		सं नि धॅ पम ग रॅि स	रॅि	ध
८२	जेतश्री.	स. ग मॅ प. नि सं	प	स
		सं नि धॅ प मॅ ग रॅि स	सं	प
८३	मुलतानी.	स. गॅ मॅ प. नि सं	प	नि
		सं नि गॅ प मॅ गॅ रॅि स	सं	प
८४	विहाग.	स. गम प. नि सं	ग	नि
		सं नि ध पम गरि स	नि	गनि
८५	मालसी कल्याण.	स. ग मॅ प. नि सं	?	?
		सं नि ध प मॅ गरि स	?	?
८६	विहागडा.	स. ग मॅ प. नि सं	मग	प
		सं निॅ ध प मॅ ग रि स	नि	ग

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

८७	मल्हूहा केदार.	स. गमप. नि सं	प	रिं
		सं नि ध प म ग रिं स	रिं	स

५. षाडव संपूर्ण राग.

८८	माढ. (१)	स. गम प ध नि सं	म	स
		सं निॅ ध प म ग रि स	निॅ	
८९	खमाच. (२)	स. गमप ध नि सं	ग	ग
		सं निॅ ध पम ग रि स	ध	
९०	परज.	स रिॅ गमं. धॅ नि सं	नि	सं
		सं नि धॅ प म ग रिॅ स	म	
९१	प्रभात.	स रिॅ ग मं. धॅ नि सं	म	ग
		सं नि ध प म ग रिॅ स	नि	प
९२	अलैया बिलावल.	सरिग. पधनिसं	रीस	रि
		सं नि ध प ग रि स	प	सं
९३	शुक्ल बीलावल.	स. गमप धनि सं	म	म
		सं निॅ धप म ग रि स	निॅ	

६. संपूर्ण औडव.

९४	नट.	स रि ग म प ध नि सं	म	म
		सं नि. पम. रि स	स	
९५	दरबारी कानडा.	स रि गॅ मप धॅ निॅ सं	गॅ	स
		सं निॅ. पम. रि स	निॅ	
९६	मीयांकी मलार.	सरि गॅ म प ध नि सं	सम	स
		संनिॅ. पम. रि स	मनि	

७. संपूर्ण षाडव.

९७	माढ. (२)	स रि ग म प ध नि सं	सम	स
		सं नि ध पम ग. स	मनि	

संकीर्ण रागवर्ग.

८. (अ) औडव औडव.

९८	मेवाडो.	सरि. मपध. सं	सम	स
		सं निध. मग. स	मनि	

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

९९	बहार. (२)	स. गॅम. धनि सं	सम	निॅ
		संनिॅ. पम्र. रिस	मनिॅ	स
१००	शामसारंग.	सारि. मपध. सं		?
		सं निॅ. पम. रि स		
१०१	तिलंगधानी	स. गमप. नि सं	?	?
		सं निॅ. प म गॅ. स		
१०२	दोलभूप.	स. ग मं. ध नि सं	?	?
		सं. धप. गरि स		
१०३	देवगिरि.	स रि ग. प ध. सं	स	स
		सं निॅ. पम. रि स	प	

९ (ब) औडव षाडव.

१०४	केदार.	स रि. म प ध. सं	म	म
		सं नि ध प म. रि स	सं	धम
१०५	जलधरकेदार.	सारि. मपध. सं	मप	स
		सं नि ध प म. रि स	सारि	सं
१०६	तिलक कामोद.	सारि. मप. नि सं	प	प
		सं निॅध प म ग. स	स	सानिं
१०७	गौड सारंग.	स. ग मं प. नि सं	ग	नि
		सं नि ध प म. रि स	नि	स
१०८	धानी. (२)	स. गॅ म प. निॅ सं	गॅ	गॅ
		सं निॅ. पम गॅ रि स	निॅ	
१०९	तिलंग. (२)	स. गमप. नि सं	ग	ग
		सं निॅ. पम ग रि स	नि	
११०	सोरठ. (२)	स रि. मप. नि सं	रि	रि
		सं निॅ ध प म. रि स	प	स
१११	विलावल (२)	स रि ग. पध. स	प	ग
		सं निॅ ध प म. रि स	सं	सं

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

१० (क) षाडव औडव.

११२	अडाना कानडा.	स. रि गॅ म प. नॅि सं	सं	सं
		सं नॅि. पम. रिं स	मप.	स
११३	शहाना कानडा.	सं रि गॅ मप ध. स	प	स
		स नॅि. मप. रि स	सं	सं
११४	सूरमल्लार.	सरि. मपध नॅि स	संरिं	सं
		सं नॅि. पम. रि स	मप	
११५	बहार. (२)	स रि गॅ म. ध नि स	नॅि	स
		सं नॅि. पम. रि स	म	
११६	मेघमल्लार.	स रि. मप ध नि सं	सं	सं
		सं नॅि. पम. रि स	पम	संरि
११७	सुघराई कानडा.	संरि गॅमप. नि स	नॅि	स
		सं नॅि. प म. रि. स	गॅ	गॅ

११ (ड) षाडव षाडव.

११८	कामोद.	सरि गम प ध. सं	प	ग
		सं नि ध प म. रि स	सं-रि	प
११९	छायानट.	सारि गम पध. सं	प	म
		सं नॅि ध पम. रि स	रि	स
१२०	जयजयवंती.	स रि गम. ध नि सं	रि	रि
		सं नि ध पम गॅ. स	ध	
१२१	हमीर.	सरि गम. धनि स	ध	स
		सं नि ध प म रि. स	रि	ध
१२२	चांदनीकेदार.	स रि. मॅ पध नि सं		
		सं नि धप म. रि स		
१२३	मालवी.	स रॅि ग मॅ प धॅ. स	प	स
		सं नि. प मॅ ग रॅि स	स	
१२४	शाम.	स रि ग मॅ प. नि स	स	म
		स नि धप म. रि स	म	स
१२५	बरवा	सरि. मप ध नि स	रि	रि
		सं नॅि. पम गॅ रि स	प	स

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रागोनां पृथक्करण करती वखते घणी बाबतोनी संभाळ राखवी पडे छे. एक एक रागनी लगभग त्रण त्रण चार चार असली उस्तादी चीजो (गीतिओ) मळी आवे तो तेनां स्वरनी बांधणी उपर विचार करी तेनां स्वर समूहोनुं पृथक्करण करवामां आवे छे. ते पृथक्करण कर्या पछी सर्व सामान्य स्वरसमूहो कया कया मळी आवे छे; अने ते इतर रागोथी केवी रीते भिन्न पडी शके छे ते व्यावर्त्तक अंश उपर ध्यान आपवुं पडे छे. एम करतां जतां रागनी आरोह अवरोहनी जे स्वरमालाओ चोकस बंधाय, अने तेमां जो वादी संवादीनो कोइ पण चोक्कस नियम जळवातो होय तोज ते स्वरमालाने रागना स्वरूपदर्शक तरीके कायम करी शकाय छे. आरोही अने अवरोही स्वरमाला एज रीते निश्चित करवामां आवे छे. ए रीते कसोटी करतां जतां, दरेक चीजमां जो कयांक दोष रही गयलो होय तो ते उपर प्रमाणे पृथक्करण करतां मळी आवेला सर्व सामान्य स्वरसमूहो उपरथी सुधारी शकाय छे. वळी ए प्रकारथी उत्पन्न थता आखा राग स्वरूपमां कयो स्वर प्रधानपणे उपर तरी आवतो मालुम पडे छे ते जोवामांथीज ए स्वरने अंश तरीके स्थापी शकाय छे. ए अंशनेज वादी गणी लइ तेना साथेना सम अने सप भाव ए बन्ने प्रकारना संवादी स्वर पैकी कयो स्वर अंशनो साथे भळतो रहे छे ते तपासवाथी संवादी स्वर जडी आवे छे. रागनां गीतो अने आलापनी शरुआत जे स्वरथी थती होय ते ग्रह अने रागनी समाप्ति जे स्वर उपर थई जती होय ते स्वर न्यास तरीके जडी आवे छे. आम आरोह अवरोह वादी संवादी, ग्रह अने न्यासनुं स्वरूप बांधवा जतां दरेक पृथक्करणकारोमां परस्पर मतभेद पडे ए स्वाभाविक छे. अने समग्र हिंदुस्तानमां संगीतना जे अनेक संप्रदायो

आ ग्रन्थनो अभ्यास करवानी इच्छा होय तेवा अभ्यासीने माटे सूचना करवानी के आ कोष्टकमां आपेला दरेक रागना आरोह, अवरोह, अंश-वादी, संवादी, ग्रह, न्यासना संबंधमां जे सर्व सामान्य स्वरो प्रयोगमां वपराय छे, ते आप्या छे. तेमां देश, मत अने अमुक द्रष्टि परत्वे मतभेद होय ए स्वाभाविक छे. तोपण शरुआतमां तो विद्यार्थीने कोइ पण अमुक निश्चित स्वरुप बताववानी जरुर छे. अने ए स्वरुप प्रमाणे अभ्यास करी विद्यार्थी तैयार थाय त्यारबाद जे जे मतभेदो प्रचलित होय ते ते प्रमाणे राग स्वरुप केवुं बंधाय छे ते विषे तेणे स्वतंत्र रीते अनुभव करी ज्ञान प्राप्त करी लेवुं जोइए.

P. P. Ac. Gunratnasuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

(बानीओ) पडी गएला छे ते तरफ जोतां एवा मतभेदो पडवानाज. मतभेद द्रष्टि-भेदथीज पडी शके छे. एकनी नजरमां अमुक नियम आव्यो, तो बीजानी नजरमां बीजो नियम जणायो. एज हेतुथी अनेक पृथक्करणकारोथी अमारो मत पृथक् बताव-वानी खातर अमे अमारा मतने गणेशमत एवुं नाम आप्युं छे. अने ते मत सारा सारा तत्वज्ञ अनुभवी, नादशास्त्रना विद्वान गुणीओ (गायको) ना मतने मळतो आवतो होवाथी तेने गुणीजनमत कहेवामां आवे तो ते अयोग्य नथीज. एटले के गुणीजनोनो जे शास्त्रीय मत तेज गणेशमत; अर्थात् एवाज मतने, इतर अनेक मतो करतां प्रमुखत्व (इशत्व, गणेशत्व) मळी शके ए स्पष्ट छे.

शिक्षण आपवा माटे शरुआतथीज पसंद करवामां आवता रागो (नहि के राहो) घणाज सहेला, व्यवहारु, प्रसिद्ध अने सरल—निर्विवाद स्वररचनावाला होवा जोइए तेना आरोही अवरोही स्वरो, अंशग्रह न्यास स्वरो, मतभेद विनाना होवा जोइए. जेमके भूप, मालकोंस, सारंग, हिन्दोल, धानी, पुरिया, मारवा, भैरवी, कल्याण, काफी, झींझोटी, शंकराभरण वगेरे रागोना सबंधमां मतभेद जोवामां आवशे नहीज; परन्तु बीलावल, गौड मलार, बहार, वसंत, भैरव, पूरज, दरबारी, मीयांकी मलार, गौड सारंग, अडाना, शहाना, कामोद, जयजयवंती, वगेरे जेवा व्यवहार प्रसिद्ध रागोना स्वरो, चालु व्यवहारमां गायक लोको जे रीते गाय छे तेज प्रमाणे पृथक्करण करी, तेमनुं स्वरुप व्यवस्थित करवामां सारा सारा पंडितो पण गुंचवाइ जाय छे. ए रागोनुं पृथक्करण जोइए तेवुं कोइए पण कर्युं नथी. आ देशमां आ विषयना शास्त्रज्ञो घणाज थोडा छे. परन्तु जेओ थोडाक छे अने जेमणे ए बधा रागोनां स्वरुप समजावेलां छे, तेमणे अनेक दोषो कर्या छे. केटलाक पंडितोए तो पोताना दोषो उघाडा पडी चोख्खे चोख्खा जणाइ आवे नहीं ते विषेनी संभाळ राखवा गोळ गोळ वर्णनो करी, लांबा लांबा शास्त्राधारो आपवानो डोळ कर्यो छे; परन्तु खरा चिकित्सको तो तेमना पोकळपांडित्यविषे तुरतज समजी जाय छे. घणी वखते एवा पंडितमन्यो मुसलमान निरक्षर गवैयाओना गानाक्रियाकौशल्यथी अंजाइ जइ, ए गवैयाओ स्वरनुं अने रागनुं जे स्वरुप बतावे ते, "ए रुप पण कामनुं छे," "एम मानवुं ए खोटुं नथी," "ते एक मतभेद तरीके गणी शकाशे" वगेरे कारणो आपी स्वीकारी ले छे; परन्तु ए खां साहेबे कहेलुं रुप केटले अंशे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शास्त्र सिद्ध छे ते विषे तोल करवानो कांटो तो पंडितमन्यो खोइज बेठा छे. तेमने ए विद्या सिद्ध छे के नहीं ए विषेनुं तेमनुं आत्मबळ आवे प्रसंगेज जणाइ आवे छे. एकज रागनां मतभेदथी वधारे रुपो होइ शके ए खरुं छे, परन्तु मतभेद होवो अने मूळनुं अमुक सिद्धरुप मुकरर होवुं ए बेमां तफावत छे. आपणे तो विद्यार्थीने तेमज शास्त्रना सिद्धान्त तरीके प्रारंभमां तो सिद्धरुपज आपवुं घटे छे. ते रुपनुं अभिज्ञान थया पछीथीज मतभेदोनुं प्रदर्शन करावबु ए योग्य छे. परन्तु ए मतभेदवाळुं मळी आवेलुंरुप, मूळ नियमनुं बाधक छे के साधक छे तेनुं पण तोलन करवुं पडे छे, ए तोलन करवानी कसोटी खोवाइ गएली होय छे तो पछी परिणाम ए आवे छे के, तेओ पोते तो उंडी अंधारी खीणमां पडे छे, अने तेमना उपर भरोसो राखनार आखो जनसमाज पण वगर समजे तेमना मतना अभिमानी बनी तेमनी पाछळ आंखो मींची झंपलावे छे. शास्त्रीय नियमोना बळथी खां साहेबोने पण नमावी तेमणे बतावेलुं रागनुं स्वरुप सुधारीने तेमनी भूल तेमनी पासे कबुल करावी आपवा जेटलुं आत्मबळ तेमनामां होतुं नथी, एथीज एवां परिणामो आवे छे. माटे एवा पंडितोना विदग्ध के संदिग्ध लेखोथी अने तेमनी कहेवाती शास्त्रीय उपपत्तिथी शिक्षकोए तेमज विद्यार्थीओए बहु सावचेत रहेवुं घटे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दिवस अने रात्रिना कया भागमां कया राग गवाय छे ते दर्शावनारूं

समयानुसार वर्गीकरण.

रागगानसमय.

समय अने प्रयोगमां वपरातां स्वर.				दिन गेय राग.
प्रहर	कलाक.	स्वर प्राधान्य		दिवसना भागमां गवाता राग
उष:काल	५ थी ६	रि	ध	(१) रामसरि, प्रभात, विभास, जोगिया.
	६ थी ७			(२) रामकली, भैरव (सर्व प्रकार सहित) गुनकली.
१ प्रहर प्रातःकाल सवार.	७ थी ८	रि ध	ग नि	(३) भैरवी (सर्व प्रकार सहित) जिलफ, भूपाली, भैरवी (भूपाल) आसावरी.
	८ थी ९	ग म	ध नि	(४) सिन्ध भैरवी, जोनपुरी, देवगान्धार, खट, जोगी आसावरी.
	९ थी १०	ग म	ध नि	(५) तोडी (सर्व प्रकार सहित) षाडव तोडी, जोनपुरी, गांधारी, लक्ष्मी, मीयांकी तोडी.
	१० थी ११	म	नि	(६) बीलावल (सर्व प्रकार सहित) अलैया बीलावल, देवगिरि बीलावल, शुक्र बीलावल, देसकार.
२ प्रहर मध्यान्हकाल बपोर.	११ थी १२	म	नि (२)	(७) देस, सोरठ, गौड सारंग, शुद्ध सारंग.
	१२थी १	,,	,,	(८) सारंग (मीयांका), मधुमाध, सामंत सारंग, लंकदहन, वडहंस, वृंदावनी वगेरे सर्व सारंग.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

३ प्रहर अपराण्ह नमता पहोर.	१ थी २	,,	(९) मल्हार (मीयांका), मेव, सूर, नट, रामदासी, गौड वगेरे सर्व मल्हार, जलधर.
		गॅ नि	(१०) धानी, सुहा, सुघराई, काफी, काफी धनाश्री, पटमंजरी, जयजयवंती.
	२ थी ३	गॅ भॅ म नि रिॅ गॅ धॅ मॅ निॅ	(११) बरवा, पीलु, पीलु धनाश्री, भीमपलासी.
			(१२) मुलतानी, पटदीपकी.
४ प्रहर	३ थी ४	रिॅ धॅ मॅ ग	(१३) पूर्वी, पूर्वी, श्री, चैती, टंक, जेतश्री मालवी.
	४ थी ५	रिॅ ध म नि	(१४) दिनकी पुरिया, मारवा, त्रिवेणी.
सन्ध्या काळ.	५ थी ६	रिॅ धॅ	(१५) गौरी ललितागौरी. मालीगौरा, चैत.
	६ थी ७	मॅ नि	(१६) मालश्री, शामकल्याण, दीपक.

रात्रि गेय राग.

रात्रिना भागमां गवाता राग.

१ प्रहर	७ थी ८	म नि	(१) कल्याण, यमन, हेम, खेम, भूपकल्याण (शुद्ध कल्याण) वगेरे सर्व कल्याण.
		(२)	
	८ थी ९		(२) भूपाली, भूप, पहाडी.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.

Jin Gun Aaradhak Trust

२ प्रहर पूर्वरात्रि.	९ थी १०	म नि (२) (२)	(३) केदार, जलधर, मलोहा, नट केदार वगेरे सर्व प्रकारना केदार.
	१० थी ११	,,	(४) कामोद, श्याम, जलधरश्याम, नट, नटनारायण, छायानट, हमीरनट, हमीर.
	११ थी १२	,,	(५) तिलककामोद, बिहाग, बिहागडा. शंकरा.
			(६) झिंझोटी, जंगला, खमाच, तिलंग, दुर्गा.
३ प्रहर मध्यरात्रि	१२ थी १	गॅ निॅ ग नि (२) (२)	(७) काफी, दरबारी, अडाना, शहाना, नायकी, सिन्धुरा, धानी, सुघराइ, वगेरे सर्व कानडा, जयजयवंती. पटमंजरी (२)
	१ थी २	गॅ निॅ म नि	(८) बहार, अडानाबहार. वसंतबहार वगेरे सर्वप्रकारना बहार.
	२ थी ३	गॅ निॅ	(९) बागेसरी कानडा, कौशिक कानडा.
		गॅ धॅ म निॅ	(१०) मालकौंस, चन्द्रकौंस.
उत्तररात्रि		म॑ नि	(११) हिंदोल, पंचम.
	३ थी ४	रिॅ धॅ म नि (२)	(१२) पुरियारेनकी, वसंत, परज, ललत.
	४ थी ५	,,	(१३) सोहनी, परज, सोहनीपरज, परज कालिंग–कालंगडा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उपर बतावेला रागोमांथी शंकराभरण, झींझोटी, पीलु, जंगला, कांफी, जील्लो, सिन्धी काफी, माढ, पहाडी वगेरे रागोने माटे समयनो नियम नथी. ए बधा रागो गमे त्यारे गाइ शकाय एम मानवामां आवेलुं छे. तोपण उपरना कोष्टकोमां जणाववामां आव्युं छे ते प्रमाणे तो अमुक राग अमुकज वखते गाइ शकाय एवो नियम छे. जेमके स्हवारना भैरव, भैरवी, आसावरी, वगेरे रागो सांजे नज गाइ शकाय तेमज सांजना रागो स्हवारे के बपोरे के उत्तर रात्रिए नज गाइ शकाय एवो चोकस नियम छे. आ कोष्टकमां दरेक समयमां कया कया राग गाइ शकाय छे ते आवेलुं छे; परंतु एमां जणाव्या प्रमाणे अमुक कलाकनी अंदर गवाता राग अमुकज मिनिट के सेकन्डमांज गवाय ने तेनी आगळना के पाछळना कलाकमां नज गवाय तेम कंइ नथी; तेम पण थइ शके परन्तु ए अन्तर एकाद कलाकथी विशेष न होवुं जोइए एतो चोकसज समजवुं. आ सबन्धमां विशेष विचार अमारी गायनवादनपाठमाळामां छेज एटले अत्र विशेष विस्तार करवानी आवश्यकता अमे धारता नथी.

आम छे तोपण शिक्षण आपतां अने लेतां वखते, रंगभूमि उपर राजा अथवा फरमायश करनारनी आज्ञा थाय त्यारे, वाद विवादमां, अने मननी मोज के उर्मी थइ आवे त्यारे गमे ते समये गमे ते राग गावाने माटे कशी हरकत नथी. तोपण साधारण व्यवहारमां तेमज मीजलसोना कायदाओ प्रमाणे सामान्यतः गायन वादन थतुं होय त्यारे तो ए नियम अवश्य पाळवामां आवे छे.

आ उपरांत संगीतना इतर विषयो सुधारवा योग्य घणाए छे; परन्तु लेखनो विस्तार घणो वधी जाय ते भयथी विशेष सुचववानुं मोकुफ राखवामां आवे छे. हवे आपणा कविराजे प्रस्तुत ग्रन्थ बनाव्यो छे तेना अवलोकन उपर आवीए, अने त्यारबाद तेमना जीवन सबंधी केटलीक उपयोगी बाबतो विषे मनन करवानुं योग्य धारीए.

दरेक देशोमां अने दरेक युगोमां इतिहासनी पुनरावृत्ति थती रहे छे, ते इतिहासो उपरथी आपणे जोइ शकीए छीए अथवा अमुक प्रयोजन के हेतुओने लइने तेने तेज कार्यो पुनः पुनः थतां रहे छे. ए वात आर्य देशना इतिहासमां वारंवार जोवामां आवे छे संगीतना विषयमां पण तेमज बनतुं रह्युं छे. संगीतनां शास्त्रो संस्कृत भाषामां बनेलां होवाथी सामान्य जिज्ञासु लोकसमूहने ए शास्त्रनां प्रमेयो जाणवानी उत्कंठा थइ त्यारे तेमांना केटलाक बुद्धिमानोए ए गीर्वाण भाषामांनुं तमाम रहस्य प्राकृतमां आणवानो प्रयत्न कर्यो. संगीतना संस्कृत ग्रन्थोनो निष्कर्ष हिन्दी भाषामां खेंचीने

बनेला ग्रन्थो सुरतरंगिणी, राधागोविन्दसंगीतसार, संगीतदीपनी वगेरे अनेक छे. संस्कृतमांथी हिन्दी भाषामां ग्रन्थ करवानुं प्रयोजन शुं एने माटे सुरतरंगिणीकार एक दोहरामां जणावे छे के,

सुरवानीको बोध अति है वो कठिन सुजान,
यातें भाषा जगतमें सबको प्रिय सुखदान.

वेदांत विषयमां आवुंज उदाहरण बन्युं छे. प्रसिद्ध साधु निश्चलदासजीए तमाम संस्कृत वेदांत ग्रन्थोनो निष्कर्ष खेंची **विचार सागर** अने **वृत्तिप्रभाकर** ए बे कीमती ग्रन्थो बनावेला छे; के जेनुं अध्ययन आजे तमाम हिन्दी भाषा जाणवावाळा आखा हिन्दुस्थानमां करी रह्या छे. एज प्रमाणे ज्योतिष, छंद, वैद्यकादि विषयो उपर संस्कृत उपरथी थएला ग्रन्थो घणाए छे, परन्तु संगीत उपर **पारिजात** सिवाय कोइ-पण ग्रन्थ थएलो जोवामां आव्यो नथी. पारिजात ए संस्कृत ग्रन्थनुं भाषान्तर छे, अने ते सुरतना **यज्ञेश्वरशास्त्रीए** वडोदराना श्रीमंत सयाजीराव गायकवाड सरकारना आश्रयथी रचेलो प्रसिद्ध थयो छे. मूळे पारिजातना बेज अध्याय उपलब्ध थएला हता; अने तेमां स्वर तथा राग संबंधीनुंज विवेचन हतुं. परन्तु ताल, वाद्य, नृत्य, रसादिना विषयो संबंधे कशुं नहोतुं. ए बधा विषयो एटले के संगीतनां तमाम अंग प्रत्यंगोनुं यथावत् वर्णन जेमां आवेलुं होय एवो कोइ ग्रन्थ आपणी गुजराती भाषामां प्राचीन संस्कृत ग्रन्थोनी प्रणालिका प्रमाणे थएलो होय तो ते आपणा कविराजे बनावेलो आ एकज ग्रन्थ छे. एमां स्वर, ताल, राग, वाद्य, नृत्य रसादि विषयो यथावत् आवेला छे, हवे तेमांनां प्रमेयो केटले अंशे योग्य छे ते तपासवानुं नथी, परन्तु संस्कृत भाषामां आवेला तमाम प्रमेयो जे स्वरुपमां हता तेवा स्वरुपमां गुजराती भाषामां कविता रूपे उतारवानो प्रयत्न कविराजे करेलो छे. ते अस्थाने गणी शकाशे नहिज. कविनी प्रतिभा, विलक्षणता, रसिकता अने शैली तेमना आ सिवायना दरेक ग्रन्थोमां जे प्रकारे जोवामां आवेल छे तेज प्रमाणे आ ग्रन्थमां पण जोवामां आवे छे; जो के आ विषय कविनो पोतानो नहि छतां, ते विषय संस्कृतमांथी समजी, ते साथेना **राधागोविंद संगीतसारादि** हिन्दीग्रन्थो साथे राखी मेळवी, ते बधानो निष्कर्ष खेंची कहाडी दरेके दरेक विषयो पद्यबद्ध करी आखो ग्रन्थ रचवो ए घणो श्रम, समयनो सदुपयोग, गुर्जरभाषासाहित्यसेवा प्रत्ये प्रेम-भाव, संगीतना शास्त्रीयज्ञान प्रत्येनी अभिरुचि अने परम रसिकता सूचवे छे. श्रुति,

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्राम, संवाद, राग स्वरुप, ध्यान वगेरे अतिशय कठिन विषयोमां माथुं मारी, ते स-मजी लइ, गुजराती भाषामां साहित्य वृद्धि करवानी महत्वाकांक्षा राखी सतत प्रयत्ने समग्र ग्रन्थरचना करवामां कविनुं अंतःकरण कया प्रकारनुं हशे ते सहज समजी शकाय तेवुं छे अने गुजराती भाषामां आवा प्रकारनो ग्रन्थ केटलाए जमानाओ सुधी रचायो नहोतो ते रचायो छे, अने ए प्राचीन द्रष्टिथी जे प्रकारनो ग्रन्थ रचा-वानी आवश्यकता एक नमुनारुपे हती ते प्रकारनो ग्रन्थ आ रचायलो जोइ ए दि-शाथी संतोष मानवानो छे. संस्कृत भाषाना ग्रन्थोमां शुं तेम प्राकृत भाषाना ग्रन्थो-मांए शुं ? खरीरीते विचारीशुं तो निर्णायक शास्त्र तरीके आज सुधी कशुं थएलुं होय एवुं बन्युंज नथी. तमाम संस्कृत, प्राकृत अने वर्तमान समयमां बनेला बधाए ग्रन्थो न्यूनाधिक अंशे दोषथी भरपूर छे. वधु तो शुं, हमणा हमणा संगीतना इति-हासमां अने तेनी प्रक्रियाओमां पूर्णरीते कुशळ तरीके मनाता एवा मी. भातखंडे ए जे हिन्दुस्थानी संगीतपद्धति, लक्ष्य संगीत वगेरे जे थोडाक ग्रन्थो उरदु, गुजराती, मराठी अने संस्कृतमां रचेला छे तेपण अनंत दोषथी, असत् प्रक्रियाओथी भरपुर छे; तोपछी एक मात्र आपणा कविराजनेज जो कोइ ए विषयमां गुनेहगार बनावे तो तेमां बनावनारनुं अज्ञानज मात्र बहार आवी शके तेम छे. संस्कृत ग्रन्थकारो क्यां भूल्या एज जो अर्वाचीन पंडितमन्यो पकडीने, सुधारीने तेमनी भूलो बतावीने, जे सिद्धान्त पक्ष होय ते अमुक, एम ज्यां बतावी शके नहीं एवी ज्यां खरी वस्तु-स्थिति छे त्यां कविराजना प्रतिपादन करेला संगीत स्वरुप विषे कोइ दोष आपवा मागे तो ते पोतेज फसाइ पडे तेम छे. कविराजनी आ संगीतशास्त्ररुप कृतिनां संबंधमां आथी विशेष कशुं अमे कहेवा मागताज नथी. अने कोइपण रीते तेमनो आ प्रयत्न निरर्थक के निष्प्रयोजन रुप नथीज. प्राचीन अर्वाचीन काळना तमाम ग्रन्थो-मां संगीतना दरेक विषयो क्रम प्राप्त, क्रमे क्रमे के वास्तव रुपमां आवेला छे तेनुं आ एक संपूर्ण प्रदर्शन छे, एमज कहेवुं जोइए. जे जेवा रुपमां जेवुं जुनुं पुराणुं हतुं ते तेवा रुपमां पद्यबद्ध गुजरातीमां मूक्युं छे ; एमां कविए पोते अंगुलिनिर्देश करी गुर्जरवाचकोने एक नवीन दिशा के प्रदेशनुं भान कराव्युं छे. ए प्रदेश तरफ गमन थाय, अने प्रजानो वर्ग पोतानां शास्त्रो अजवाळी तेमां योग्य प्रगति करे ए भविष्य-नी वात छे; परन्तु ए भविष्य काले प्राप्त थवा माटे कविराजे संगीतना अनेक विषयो गुजरातीमां उतारी, ते गुजरातने बताववानी जे उत्कंठा बतावी छे ते, कवि-राजे पोताना माथे जे संगीत संबंधी रूण हतुं एम तेमणे पूर्वजन्मना कोइ उत्तम

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संस्कारानुसार मानी लीधुं हतुं, तेमांथी ते संपूर्ण अंशे मुक्त थया छे एम कहवाने कोइपण रीते संकोच थतो नथी; एटलुं सूचवी कविराजना जीवन संबंधे थोडुंक अवलोकन करी एवा पुरुषो गुजरातने केटला भूषणभूत छे ते तपासीए. प्रत्येक मनुष्यनुं स्थूल (शरीर) आंतर स्वरुप प्रमाणे घडाय छे ए विश्वमां सर्वत्र जोवामां आवे छे. प्रतिभा अने ज्ञान ए परब्रह्मनी ज्वलंत साक्षीओ छे एनी उज्वलता जेम विश्वने प्रकाशे छे, तेम ए अंशो जेनामां होय ते शरीर पण सामान्य तेम विशेष जनो उपर छाप पाडी शके छे. तेनी प्रभाथी आसपासनुं विश्व प्रभावान थाय छे. एज कारणथी कवि ज्यारे इ. स. १८८४ ना उन्हाळानी एक रमणीय संध्याना प्रकाशमां राजकोट गामनी अंदरनी एक नानी गलीमांथी असाधारण सौन्दर्यना एक तरुण ग्रहस्थ जेवा पसार थता अने तेनां बधां सुघटित अने उज्वल अंगो अने आंखमांनुं कोइ गयबी नूर निर्झरतुं जोतां हालना आपणा गुर्जर साक्षर श्रीयुत् मणिशंकर भट्ट, पोते आश्चर्यचकित थया हता. बेशक कविनी शारीर आकृति तेवीज असर करनारी छे. कविनो स्वभाव बहुज हसमुखो, आनंदी, खुल्लो अने अनिरुद्ध छे. तेओ कोइ संकुचित द्रष्टिबिन्दुना लब्ध प्रतिष्ठित गृहस्थने रुडुं मनाववानी खातर के पोते लब्ध प्रतिष्ठित बनवानी खातर अने असत् लोकेषणाने माटे, आसपासना जनोथी शरमाइ जइ, तेओने अनुकूल वर्ते एवा नथी. एज तेमना आत्मानी प्रतिभानी, कल्पनानी] अने पोताना काव्य बलनी स्वतंत्रता सूचवे छे. मनःपूत आचरण करवुं ए तेमनो स्वभाव छे. अने तेम आचरण करतां कवि उपर कहुं तेम पामर जनोनी लब्ध प्रतिष्ठाथी अंजाइ जाय तेवा नथी. तेमने समग्र गुजरात, कच्छ, काठिआवाड अने राजपूताना ओळखे छे. गुजरातना कवि जेम नर्मदाशंकर अने दलपतराम तेम काठिआवाडना कवि नथुराम ए सिद्धवत् थइ गयुं छे. तेमनां बनावेलां नाटकोमांना संगीतो आजे आखा देशमां घणा उत्साहथी घेर घेर गवाय छे. कुमुदचन्द्र, माधवकामकन्दला, हलामणजेठवो वगेरे प्रमुख नाटकोनां गायनो समग्र काठिआवाडमां घेर घेर गवाय छे, त्यांनां आबालवृद्ध कविने प्रेमनी नजरे एक महान प्रतिभावान पुरुष तरीके ओळखे छे. कविनुं विस्तृत जीवन जो के कोइ सारा साहित्य रसिक पुरुषने हाथे लखाय तो तेनी आजे समग्र गुजरातने जरुर छे. तोपण तेमना जीवन चारित्रना घणा प्रसंगो तेमणे रचेला नाटयशास्त्र, प्रताप प्रतिज्ञा आदि ग्रन्थोनी प्रस्तावनामां आवी गया छे. तेमणे आज सुधी २० संगीत नाटको बनाव्यां छे. १ शृंगारसरोज २ प्रतापप्रतिज्ञा. ३ श्रीकृष्णबाळलीला, ४ नाटय-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शास्त्र. ५ विवेकविजय. ६ काव्यसंग्रह. ७ काव्यशास्त्र एटला ग्रन्थो म्होटा पुस्तको रुपे लखी प्रसिद्ध कर्या छे. तेमज तत्त्वयशत्रिवेणिका जेवां राजप्रशस्तिनां म्होटां पुस्तको लख्यां छे. एम तेमणे आज सुधी जेटलुं लखेलुं छे ते जो समग्र आपणी स्हामे मुकीए तो आपणने खरेखर एमज थाय के आटलुं बधुं कार्य एक माणसथी शी रीते थइ शक्युं हशे ? परन्तु घणा वर्षोथी कवि सतत काव्यशास्त्रना विनोदमां मस्त रही आ स्थूल विश्वनी पेली पार सतत विहार करता रही तेमणे दीर्घ परिश्रमथी आ कार्यो करेलां छे एम ज्यारे तेमना सहवासीओ अनुभवी शके छे त्यारेज तेमणे रचेला प्रचंड ग्रन्थ समूहने जोइ, आश्चर्य पामी जइए.

आपणा गुजरातना साक्षरो पैकी नवलराम, नर्मदाशंकर, दलपतराम, मणिलाल, वगेरे गत तेम वर्तमान साक्षरोए जेटलुं गद्य लेखन कर्युं हशे तेटलुं अथवा तेथी पण विशेष गद्य अने पद्य ए बन्ने प्रकारनुं लेखन कविए करेलुं छे अने प्रमाणनी तुलना करतां उपरोक्त तमाम साक्षरोना करतां पण वधारे थइ शके तेम समग्र प्रजानी आंतर कृति, रीति, मति समजी जइ, तेमना अंतःकरणने, उज्वल कल्पनाना तरंग, अने प्रतिभाना ललित नर्तनथी गमता थइ पडवुं ए कंइ साधारण वात नथीज. एवा पुरुषो जे समाजमां थाय छे, ते समाजनुं नाम तारे छे. पुत्र जेम पोतानी पूर्व पेढीओ अने उत्तर पेढीओने तारे छे. तेम कविवरो समाज अने राष्ट्रने तारी तेनो समुद्धार करे छे. आखो भारत देश आजे व्यास, वाल्मिक, कालिदास, भवभूति जेवा विश्वमान्य अने विश्ववंद्य कविओनी प्रतिभाना उज्वल तेजथी आज सेंकडो वर्षथी प्रकाशे छे अने प्रकाशशे. कवि नथुराम पण पोतानी सत्कृतिथी आपणा देशमां तेमनी प्रतिभा, काव्यशक्ति अने ग्रन्थसमृद्धिना प्रमाणमां जमानाओ सुधी प्रकाशशे, अने कच्छ काठिआवाड तेमज गुजरातनां मुख उज्वल राखशे. जहां न पहोंचे रवि तहां पहोंचे कवि. ए कहेवतनो अर्थ सामान्य जनो जे करे छे तेवो नहि करतां जुदीज रीते करीए, रवि तो वस्तुनी स्थूल सपाटीने प्रकाशित करी शके छे, ते कंइ वस्तुनी अंदर उतरी पोतानुं तेज नाखी शकतो नथी, परन्तु कविओ तो ज्यां स्थूल रविनी प्रकाश करवानी शक्ति होती नथी, एवा मानवी अंतःकरणनी गूढ गुहाने पण प्रकाशित करवानी शक्ति धरावे छे, के ज्यां आ स्थूल रवि पहोची शकतो नथी, तेम कविओ मानव समाजना अंतःकरणोने प्रकाशित करी नव चेतन आपे छे. कविनां अमुक संगीतो काठिआवाडमां युवक युवतीओ गाइ पोताना मनने प्रकाशित आनंदित करे छे. कवि न्हानालाल एमना सबंधमां नाटय-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शास्त्रीनी प्रस्तावनामां लखे छे के तेमनी कवितामां चेतन छे, तेमनी कान्तिमां ओजस् छे, स्वभावे मळतावडां निडर बहादूर छे. तेमनी कवितामां मीठाश अने उजळामण उभयनो वास छे. कुमाशमां समाइ शके एटली कल्पनानी पण गति वेगवन्ती छे; तेमना हृदयमांनुं रुधिर यौवनभर अने उष्मावान छे." आ तेमनुं स्वभावचित्र आलेख्युं छे ते अक्षरेअक्षर सत्य छे. कविनी जन्मथी ते अत्यार सुधीनी जीवन गति टुंकामां जोइ जइशुं तो ते पण अति रसिक अने उदाहरणीय छे. कविनो जन्म संवत १९१८ ना फाल्गुन मासमां थयो हतो. एटले आजे एमनी उम्मर पंचावन वर्षनी थवा जाय छे. तेओ ज्यारथी न्हानां न्हानां काव्यो, नाटको, लेखो रूपी उपवनोमां विहार करी आखरे नाटयशास्त्र, काव्यशास्त्र संगीत शास्त्र अने काव्यशास्त्र जेवा विषयोना महान अरण्यमां अर्थात् वनमां प्रवेश्या त्यारथी ए वनवास लोक कल्याणना मुदित आशयोने तृप्त करनारो नीवडयो छे एम जणाय छे. हजी पण ए सत् प्रवृत्ति चालुज छे. एमनो अभ्यास बालपणमां घणो थएलो जणातो नथी. गुजरातीमां मात्र पांच धोरण सुधीज तेओ शीख्या हता. विशेष विद्याभ्यास करवाने माटे तेमने संसारनी उपाधिओ घणीज आवी हती. एक तो पांचमेज वर्षे पोताना पिताना मरणथी तेमने भिक्षावृत्तिनो धंधो स्वीकारवो पडयो हतो. अने ए स्थितिमां पण पोताना भावि कविता शक्तिना अंकुरो फूटवा मांडेला जणाय छे. तेमणे ते वखते "भिक्षा बाविशी" नामनुं न्हानकडुं काव्य रचेलुं ए पुत्रनां लक्षण पारणामांथी जणाया जेवुं थयुं!! आखरे पंदरमे वर्षे ए भिक्षावृत्तिनो त्याग करी, कंटाळी, कवि मांगरोळ पोताना मामाना पुत्र नर्बदाशंकर लाधाभाइने त्यां चाल्या गएला. आ समये कवि पोते काव्यशास्त्र अने तेनां अंगोना अध्ययन तेमज तेनां स्वरुपो सर्वथे अज्ञान हता छतां जोवानुं ए छे के तेमनी कविता बनाववानी प्रवृत्ति बंध थएली नहोती. पछी ज्यारे दैववशात् उक्त नर्मदाशंकरभाइनी भुजमां नीमणुक थइ ते साथे तेमनुं पण त्यां जवुं थतां त्यांनी काव्य पाठशाळामां तेमनुं काव्यशास्त्र, रसालंकारादि ग्रन्थोनुं अध्ययन थएलुं. त्यां तेमनामां नवजीवन रेडातां, कोइनी नोकरी करी पोतानुं जीवन वेची नाहि नाखवानी प्रतिज्ञा करी. प्रथम मोरबी तरफ गएला अने त्यांना साहित्य रसिक मंडळ तरफथी तेमनो योग्य सत्कार थएलो. आथी तेमना श्रमना फळनी योग्य कदर थतां कवि आगळ वधता गया. अने इश्वरेच्छाथी पछी एवो योग आव्यो के, तेओ ध्रांगधराना राजसाहेब श्रीमान मानसिंहजी साहेब बहादुर के जेओ साहित्य अने रसना भोगी हता, तेमने त्यां जइ पोतानी कवितानी सज्जड असर करी दीधी. तेथी राज-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साहेबे तेमनी उम्मरना प्रमाणमां काव्य करवानी शक्तिनी अपूर्वता जोइ, श्री काशी क्षेत्रमां जइ वृजभाषानुं ज्ञान प्राप्त करवानो तमाम खरच आप्यो. ते प्रमाणे कवि उत्तर हिन्दमां साहित्य, विज्ञान अने सरस्वतीना तेमज श्रीकृष्णनी पदरजथी पवित्र थएली रसिक भूमिमां गमन थतां त्यांना तमाम संस्कारो कविमां भराया. त्यां एक बे सारा साहित्य सेवको पासे निवास करी काव्यशास्त्रनां दरेक अंगो उपरना हिन्दीभाषाना ग्रन्थोनुं अवलोकन करी, तैयार थइ कवि पुनः काठिआवाडमां आवी जामनगरना महाराजा श्री जामश्री विभाजी पासे थोडो वखत रह्या; अने पछी क्रमे क्रमे दरेक राजा रजवाडाओमां घुम्या. परन्तु तेमनी जोइए तेवी कदर थइ नहीं. आथी कवि थोडाक निराश थएला खरा, परन्तु एवा पुरुषोनुं योग क्षेम वहन करवानी फिकर श्रीकृष्णने (परमात्माने) होय छेज ; तेमणे स्वतंत्र उद्योगनी शोध करतां करतां " वांकानेर विद्यावर्धक नाटक कंपनी " स्थापन करी, ते न्हाना पाया उपर पोतानां सगां संबंधीओने साथे लइ, तेमने नाटकनी योग्य तालीम आपी चालु करी. आथी तेमनामां जे झवेरात हतुं ते जनसमाज आगळ झळकी उठ्युं ; ने भावनगरना एक भायात स्वर्गस्थ लोर्ड हरिसिंहजी रुपसिंहजीनो समागम थतां तेमणे कविनी योग्य कदर करी, कविने कायमने माटे रु. २९) नो पगार अने ते उपरांत तमाम खाधा खरच आपी पोतानी पासेज राखी लीधा. आखी जींदगीमां कविने आ खरो आधार योग्य कदरथी पहेल वहेलो थयो. अने तेमना योग क्षेमनी फिकर श्री हरिए जातेज करी ! ! एकवार आधार मळ्यो के पुरुष पगभेर थाय छे ने भयाटवीनां दंड कारण्योमां स्व प्रयत्नथी आगळ वधे छे ; ने एवानेज श्री परमात्मा पोतानी विश्वरुप बादशाहीना तख्तनी पासेज राखे छे ; ने थयुं पण तेमज. तेमनी पोतानी मालेकीनी नाटक कंपनी एक तरफ चालुज हती. ते फरती फरती भावनगर आवी ; ने ते वखते त्यांनी गादी उपर महाराजाश्री तख्तसिंह विराजता हता. तेमनी द्रष्टि कंपनी उपर अने परंपराए पछी कवि उपर पडतां तेमणे कविने पोताना तख्तनी पासेज राखी लीधा. आथी कविए कंपनी, पोताना एक सगाने सोंपी दीधी ; अने पोते तेमांथी अलग थया. परमात्माना के साहित्यना भक्तो उपर उपराचापरी संकटो आववां एतो जाणे तेमना छठीना कायमनाज लेख समजवा ! ! ज्यां श्रीमान तख्तसिंहजी साथे समागम थतो गयो त्यां तेओ श्री पण स्वर्गे सिधाव्या. अने तेमना पुत्र अर्थात् हालना विद्यमान श्रीमान् महाराजा साहेबश्री भावसिंहजी साहेब बहादुरे तेमने प्रीतिपात्र गणी पासे राख्या. पछी पोरबंदरना स्व. महाराणाश्री भावसिंहजीए पोताना

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राज कवि तरीके कविने वर्षना छ मास सुधी पोताना समागममां रहेवानी शरते राख्या. ए पछी वांकानेरना विद्यमान महाराणाश्री सर अमरसिंहजीए पण पोतानी पासे राख्या के जे कविराज हजी सुधी तेमनी पासेज छे. तेमणे आपणा कवि पासेंथी "श्रीझालावंशवारिधि" नामनो साहित्यनो महान् ग्रन्थ रचाव्यो, के जेनी किंमत रु. १२) जेवडी थशे ! ? हाल बे चार वर्षथी लींबडीना नामदार ठाकोर साहेबश्री दोलतसिंहजीए योग्य कदर करी कविने वर्षासन करी आप्युं छे. आ संगीतशास्त्रनो ग्रन्थ तेमनीज प्रेरणाथी कविए रच्यो छे, अने तेनी छपामणीनो तमाम खर्च उक्त ठाकोर साहेब दोलतसिंहजीए आपी पोतानी खरी दोलत आखा गुजरात, काठीआवाड, कच्छ अने इतर प्रान्तनी वाचक प्रजानां आंतरमां वहेंची नांखी छे ? धन्य छे एवा नरेशोने ! राजाओना कीर्तिरथने कविओ पोतानी सुकल्पना अने प्रतिभारुप बे घोडीओ जोडी, जनसमाजनी सहृदयतारुप मार्ग उपर फेरवी तेमना यशने अमर करे छे, ते आ जीवन उपरथी समजी शकाय तेम छे ! ! आ प्रकारे कविनां जीवननी गतिनो प्रवाह छे. ए प्रवाह घणो घट्ट, गाढ, वेगवान अने पुरुषार्थ प्रबल अने पुनित छे.

कविराजने बे पुत्रीओ छे, तेमां एकनुं नाम **उमिया**, अने बीजीनुं नाम **कमळा** छे. एक पुत्र छे तेनुं नाम **उत्तमराम** छे. कविनी मातानुं नाम पण **आनंदीबाइ** छे. ए नाम पण यथार्थ छे—सार्थ छे.

आ रीते कविना चारित्र्यनी रुपरेखा टुंकामां आलेखतां अने आ विस्तृत प्रस्तावना समाप्त करतां अंते समस्त गुजरातना भूत अने वर्तमानकालीन कविओना हृदयमां रहेला दिव्य संगीतनी कदर गुजरातने कराववानुं हुं योग्य धारुं छुं. महाराष्ट्र मध्यहिन्द, राजपुताना, सिन्ध, ए बधा भागनी तुलनामां आपणो देश संगीतमां घणोज आगळ वधेलो छे, एम मारुं मानवुं छे. केमके आपणी भाषामां संगीतनी पद्य रचना जेटली अने जेवी थइ छे तेटली अने तेवी उक्त देशोमां तो शुं पण हिंदी जेवी विस्तृत भाषामां पण थइ नथी ; ए कथन जराक स्वभाषा प्रेमवशताने लीधे कोइने अस्थाने लागशे, परन्तु उंडो विचार करतां ते स्थानेज छे एम स्वीकारवुं पडशे×

× आ संबंधमां म्हें म्हारी गायनवादन पाठमाळामां (पुस्तक १. विभाग ३ पृष्ठ १९०–१९४) थोडुंक अवलोकन करेलुं छे तेमांथीज केटलाक उपयोगी फकरानी नोंध लेवामां आवी छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कविनी अंदर रहेला एक छुपा अंशनुं स्पष्टीकरण करवानी आवश्यक्ता धारुं छुं. ते अंश ए के, व्हेमणे आज सुधी जे अनेक संगीत नाटको रच्यां छे, तेमां व्हेमने हाथे अनेक राहोनां गीतो रचायां ए छे. ए रचनामां कविने संगीतना आत्मारुप विचित्र स्वर लहरीथी स्फुरता, अने रागतालथी सुघटित बंधनोथी उपजता आनंद-नो अद्वितीय लाभ थयो. अने तेनुं पिछाण तेमने बरावर थयुं. एथी तेमना अंतः-करणमां संगीतनी दरेक राहनो पोतानो अशब्द भाव कयों होय छे, ते ओळखी श-कवानी शक्ति सहजे प्राप्त थइ. आ दिव्यानुभवनो अंश आपणा गुजरातना क-विओमां, तेमना प्रमाणमां, नहि जेवोज छे. कोइ पण कवि थनार व्यक्तिए संगीतना आत्माने न ओळख्यो तो तेवी कविता एक प्रधान अंगथी रहित थशे ए स्पष्ठ जाणवुं. आ शक्ति कवि नर्मदमां हती अने कवि दलपतराममां व्हेमना करतां विशेष हती. जे काळमां नाटको अने संगीतोनो प्रचार वर्तमान जेटलो नहोतो तेवा समयमां कवि दल-पतरामे देशमां अस्तोव्यस्त गवाती अनेक देशीओने एकत्र करी, तेनी अंदर रहेली स्वर लहरीओथी उद्भूत थतां मृदु, सकोमळ भाव तपासी, ते भावमां शोभी शके तेवी शब्द रचनावाळी कविताओ रची घेर घेर गवाती करी छे. आ शक्ति गुजरातना एक परम प्रेम सुरक्त इश्वर भक्त स्वर्गवासी महात्मा भोळानाथ साराभाइमां विराजती हती. एवी शक्ति वर्तमान समयना युनीवर्सिटीमांथी उत्पन्न थता बेसुरा ग्रेज्युएटोमां जोवामां नथी आवती ए घणीज सखेदाश्चर्यनी वात छे. कवि न्हानालाल हमणां हमणां ए शक्ति समजता थया छे. श्रीयुत नरसिंहरावमां ए अंश छे, परन्तु व्हेमनी अत्यार सुधीनी र-चाएली कविताओनी राहो गणी गांठीज छे. श्रीयुत माणिशंकर भट संगीतना परम रसज्ञ अने अनुभवी छे, परन्तु तेओ उत्तम राहयुक्त कविताओ हजी सुधी जोइए तेटली आपी शक्या नथी. साहित्य अने संगीतना बन्ने अंशो जेना समरुप थइ गएला छे अने जेणे घणी संगीत राहो प्रसवी, आखा देशमां सर्वतोमुख करी दीधी छे एवो पुरुष गुजराती नाटक कंपनीनो **कवि मूळशंकर** ए एकज हाल आपणी स्हामे तरे छे. डाह्याभाइ धो-ळशाजी अने वावजी आशाराम ए बे व्यक्तिओ थोडुं घणुं करी स्वर्ग सिधावी गया. सा-हित्य अने संगीत ए बन्ने कलाने खीलवी, तेना हृदयने समजी, ते प्रमाणे असरकारक गीतोनी रचना करवी अने तेनी छाप उत्तम शब्द, स्वर, काल लहरीथी समग्र जन-समाज उपर सज्जड बेसारवी एमांज खरी कुशळता छे. ए कौशल्य नर्मद दलपतना सम-यथी ते अत्यार सुधीना समयना तमाम कविओना करतां, जुना समयमां थइ गएला न-रसिंह मेता, प्रेमानंद, मीरां, दयाराम भाइ ए वगेरे कवि वर्गमां स्वभावतः विशेष विराजतुं

P. P. Ac. Gunratnasuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हतुं. ए चार प्रमुख कविरत्नोए गुर्जर गिराने जेम दीपावी छे, तेम संगीत काव्योनो अपार प्रदेश पोतानी मधुर नाद लहरीओथी भरचक भरी नाखी, सहृदयतानी सबल शक्ति बहु जोरथी वहेवडावी छे. अर्वाचीन नाटको चालु थयां ते पुर्वे आपणा देशमां, दाक्षिणमां अने उत्तर हिन्दमां लोको प्रचलित संगीत जेटलुं जाणता, अने तेओ जेटला गीतो (राहो) उपर पोतानी मानसिक तृप्ति करी लइ विराम मेळवता, तेनी सरखामणीमां गुजराती भाषानुं पगलुं घणुं आगळ हतुं. ते उपरांत, हमणां ए त्रणे भाषा साहित्यमां जे साक्षरो पाश्चात्य वाङ्मय अने साहित्यना अभ्यासथी आ नवीन युगमां स्वभाषाद्वारा काव्य देवीनी सेवा बजावे छे, तेमां पण आगळ पगलुं गुजरातीनुं, मराठीनुं तेनी पाछळ अने हिन्दीनुं तेनी पण पाछळ छे. गुजरातीमां हरिलाल, मणिलाल, कलापी, नरसिंहराव, मणिशंकर, न्हानालाल, खबरदार वगेरे साक्षरोनी कविता संगीतनादी विशेष छे; तेमां शब्द संगीतनी साथे गानत्व विशेष छे; अने अत्यारे पण जोवाशे तो जणाइ आवशे के नाटक कंपनीओमां नवी नवी संगीत राहोनी योजना करनारा अने तेनी विविधताना कल्पको गुजराती बन्धुओ विशेष छे के तेवा मराठी ने हिन्दी हजी सुधी मारा जोवामां आव्या नथी.

आ रीते संगीत पद्य रचनामां आपणा कवि नथुराम हाल सबळानी मोखरे रही तेमनी साथे छे. तेमणे अत्यार सुधी सेंकडो राहोमां काव्यो कर्यां छे, अने ते करी नाटकना तखता उपर प्रत्यक्ष भजवी बतावती वखते, काव्यो जे जे जातनी राहोमां योजातां ते काव्यो, अने राहो ए बन्नेनो भाव एक रुप थइ गयो छे के नहीं तेनी परीक्षा तेमनुं हृदय घणी सारी रीते करी शके छे, आ शक्ति आपणा साक्षर कवि वर्गमां घणीज थोडी छे एम कहुं तो अयोग्य नथीज; छतां कदाच तेमनुं हृदय कान रसना प्रभावथी छे एम मानतुं होय तो उत्तमज छे. आ प्रस्तावना समाप्त करतां हवे एकज बाबत उपर गुर्जर साहित्य रसिकोनुं ध्यान खेंचवा मागुं छुं. ते बाबत आपणा गुर्जर संगीत काव्यो विशेनी छे. एनी खरी कदर आपणे न करीए तो आपणे माथे बेकदरनो दोष आवे तेम छे. माटे जतां जतां संक्षिप्तमां ए विषे थोडुंक अवलोकन करी लइ आपणी गुजराती भाषा संगीत काव्योना संबंधमां घणी मगरुर छे. मराठी अने हिन्दीमां जे लोक गीतो प्रचलित छे ते बन्ने साथे गुजराती गीतोनी सरखामणी करतां, गुर्जरीनादगीरा तेना स्वतः जनन शुद्ध, स्वतंत्र नादवहन, अनेक भावप्रर्शन अने मार्दवादि गुणोमां उच्च स्थान निर्विवादपणे भोगवे छे. मराठीमां गीतोनी अने तेना नाद प्रवाहनी जे अनेकविधता नानात्व छे अने हिन्दी जेवी वहोळी भाषामां जे अनेक कविओए स्वतः स्वाभाविक

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रीते स्वतंत्र गीतरचना करी छे, ने एम एकंदररीते ए बन्ने भाषामां जे नानात्व जोवामां आवे छे ते करतां गुजराती गीतमां नानात्वनुं अने ते साथे सौन्दर्यनुं अनंतपणु एटलुं बधुं प्रकाशी नीकळे छे के ते द्वारा जे जे भावोनुं प्रदर्शन करवा मागीए ते ते भावो ध्वनिपूर्ण रीते उद्दीत थइ शके छे. हिन्दी, मराठी अने गुजराती ए त्रणे भाषाना लोकगीतोनी जुदी जुदी राहो (देशीओ) तारवी कहाढतां जोवामां आवेल छे, गुजराती भाषामां राहोनी संख्या वणीज छे. गरबी अने स्त्रीगीतोना अमूल्य संग्रहथी अने ए एकज सविशेष गीत रचनाथी गुर्जरीगिरानी उच्चतानो सौभाग्यचन्द्र कदि पण लय थवानो नथीज. आ स्थळे एटलुं जणाववा जेवुं छे, ते ए के, आपणा प्राचीन कविओनी अनंत शब्दलहरीओ जे जुदी जुदी नादलहरीओ साथे भळी जइ, जे स्वतंत्र गीतरचना थइ गइ हशे ते नाद लहरीनां स्वर कालात्मक स्वरुपो (नोटेशन) आपणा जाणवामां होत तो, तेमांनी क्या प्रकारनी नाद लहरीए क्या प्रकारनी शक्ति धरावी समग्र जनमंडल उपर चोक्कस असर करी छे तेनुं चोक्कस अनुमान थइ शकत. ए बधां प्राचीन गीतो परंपराथी आपणा समाजमां अविच्छिन्न प्रणालिथी गवातां होत तो ते उपरथी उपरोक्त अनुमान करवानो एक मार्ग हतो; परन्तु एमांनां हजारो काव्योनी नाद लहरीओ पोतानुं अनुरणन करी अनंतमां मळी गइ छे; अने तेमांनां थोडांज काव्यो परंपराथी गवातां आव्यां छे. ए प्राचीन गीतकल्पक कविहृदयनी नादलहरीओ आजे जीवंत प्रवाहरुपे जनसमाजना हृदयमां वहन करती होत तो आपणने आजे ए विषे चोक्कस ज्ञान थइ शकत; परन्तु जे सेंकडो संगीतो जनसमाजमां परंपरारुपे गवातां बंध थई गयां छे, ने ए कारणथी तेना नाद प्रवाहो लुप्त थइ गया छे तेने माटे हाल आपणे आपणा प्रारब्ध उपर आधार राखी समाधान मानी लेवानुं छे, ए सिवाय बीजो कोइ उपायज नथी.

आपणा देशमां पद्य—कविता उपर संगीतनो संस्कार विशेष थतो गयो छे; परन्तु हिन्दीमां ए संस्कार एटलो वधो थयो छे के, तेनी अपेक्षाए मराठी अने गुजरातीमां ए संस्कार हमणा हमणा थवानी मात्र शरुआतज थइ छे एम कहीए तो खोटुं नहि गणाय. तेना वखतमां तानसेन, बेजु बहावरा वगेरे संगीतना आचार्यो थइ गया, तेमणे हिन्दी पद्यरचना उपर संगीतनो संस्कार कर्यो. तेमज ए संस्कार त्यारथी ते आज सुधी सतत थतो रह्यो छे, अने आपणा भरतखंडनुं शुद्ध संगीत केवळ हिन्दी, व्रज, उरदु वगेरे भाषामांज ज्यां त्यां गवाय छे. उरदु उपर नो एटलो

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बधो संस्कार थयो छे के, तेमांनी दरेक गजलो (फारसी पद्यरचना) गेय रुपमांज छे. तेमनामां पाठ्य के अर्धगेय लोकगीतरचना घणीज थोडी थएली छे. कोइपण भाषामां उत्पन्न थतां गीतोनुं स्वयंभुपणु शी रीते ठेरवी शकाय के ज्यारे ते भाषाना काव्य उपर शास्त्रीय संगीतनी असर बहुज थोडी थएली होय, तेम छतां उत्पन्न थतां लोकगीतो अतिशय संगीतनादी बनतां जाय. हिन्दमांनां लोकगीतो संगीत काव्योना अनुकरणरुपज छे; मराठीमां एवुं अनुकरण ओछुं छे; तेमज संगीतनादी प्रतिभा थोडी घणी विहार करे छे खरी, परन्तु ते सर्वमां संगीतनो संबंध के तेनो शास्त्राभ्यास आपणा गुजरात देशमां बहु नहीं छतां, ठेठ नरसिंह महेताना समयथी ते नर्मदाशंकर, दलपतराम वगेरेनी पूर्वना समय सुधी जे लोकगीतो रचातां गयां छे, अने तेणे गुर्जरी भाषा मातानुं अंतःकरण संगीतामृतथी भरपूर भरी मूक्युं छे ते तरफ जोतां गुर्जर गीत काव्यनुं स्वयं प्रभवत्व अने आद्यारंभत्वज सूचवे छे. गुजरात काठिआवाड अने कच्छ देशनी अंदर जे तमाम लोकगीतो गवाय छे तेनी राहो-चाल वगेरे एटली बधी अनेकविध छे के तेटली संख्या मराठी ने हिन्दीमां पण नथी; तेमज तेमनुं स्वयंभूत्व पण नथी. कहेवानी मतलब ए छे के, संगीतना गाढ परिचय विनाज, भिन्न भिन्न कविओना हृदयमां जे स्वतंत्र गीतरचना प्रभवे छे ते रचनाने स्वयंभु गणीए तो तेवी गीतरचना गुजराती भाषामां स्वभावसिद्ध थएली छे. हिन्दमां ज्यां ज्यां संगीत, संगीतने संगीतज घणा गाढ परिचयथी गवातुं आव्युं छे; ने ते उपरथीज "**जाके देखो हिन्दुस्थान घरघर ढोलकी घरघर तान**" आ कहेवत पडी छे. कबीर, नानक, चैतन्य, सुरदास वगेरे भक्त कविओ संगीत-मय वातावरणमां जन्म्या हता अने तेथीज तेमनी गीतरचना तेमनी पूर्वे थएली तैयार राहोमांज रचाइ हती; कंइ ए मूळ राहोना उत्पादक तरीके तेमने नहिज गणी शकाय. गुजराती भक्त जनोनी आथी उलट स्थिति छे तेओ संगीतमय वाता-वरणमां जन्म्या नहोता, तेम तेमना उपर संगीतनो संस्कार पण विशेष थयो हतो एम पण नथी. प्रेमानंद कवि संगीतनुं उंचुं शास्त्रीय ज्ञान धरावता हशे एम कदाच कही शकाय. ए बधा प्राचीन कविओमां मात्र दयारामभाइ संगीतना मर्मज्ञ अने गवैया तरीके हशे परन्तु तेमणे रचेली कविताओमांथी संगीतनी रागरागिणीओवाळी कविताओ बाद करतां बाकीनी तमाम गरबीओ अने पदोमां नाद प्रतिभानी स्वतं-त्रता घणी छे. प्रभातियांनी जुदी जुदी राहोना मूळ प्रेरक महेता नरसिंह, तेम बीजी अनेक हृदयद्रावक अने भेदक राहोनी उत्पादक तेमनी प्रतिभाज छे. मीरां-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बाइनां सकोमल मधुर नाद झरणोथी आपणी गुजराती स्रीयोनां हृदयो मधपुडानी पेठे रसभीनां थइ रह्यां छे. तेमज तेनां पद्यो आपणी स्रीयोना जीवनना एक भाग रुप थइ पडयां छे. प्रेमानंदना अनेक रागो अने रागमय छन्दो अने गीतमय पदोनी नाद लहरीओथी म्होटां म्होटां आख्यानोनां आंदोलनो गुर्जर हृदय उपर हजी सुधी पण स्पाइ रह्यां छे; [illegible] भक्तानी काफीनुं पान करीने कयो मनुष्य तेनी केफमांथी मुक्त थइ शके तेम छे? भोजा भगतना चाबकामांथी कयो प्राणी संसारनां पापो अने कठोर वर्तनमांथी बोध मेळवतो नथी! दयारामभाइनी ललित गरबीमय वाणीथी कयां प्रेमी स्री पुरुषोनां मन प्रणयशील बन्यां नथी? अनेक गुर्जर कविओना प्रयत्नथी जुदा जुदा समयमां आ प्रमाणे जे जे स्वतंत्र गीत रचना थती गइ छे ते संगीतशास्त्रना इतिहासमां घणी आवकारदायक गणी शकाशे. आ बधा कविओ संगीतशास्त्री नहोता; परन्तु तेमनां हृदय नादवीणारुप हतां, तेथी तेमनामां कवित्वनी प्रतिभा आवती तो तेना परावाणीना शब्दाघातथी ए वीणा गाजी उठी सुमधुर गीत लहरीनां रुपमां बहार नीकळती. आ वात खास अत्रे चर्चवानी मुख्य मतलब ए छे के, संगीत शास्त्रमां जे भैरव. मालकौस कामोद, बिहाग, काफी वगेरे असंख्य राग रागणीओ प्रचलित छे ते बधीनुं मूळ, जनसमाजना हृदयमां भरेला नादाब्धिमांना असंख्य तरंगोना अनेक सर्व सामान्य संवादित स्वर तरंगोमां रहेलुं छे. ए नादाब्धिमांना वारिनुं ज्ञानरविना किरणोथी बाष्पीभवन थइ तेनी सहृदयतारुप वादळी बनी, तेनुं सिंचन कविवाणी द्वारा जनसमाजनी अंतःकरण भूमिमां थवा मांडे छे, ने बधे रसवृष्टि थवाथी दया, कृपा, माया, अहिंसा वगेरे नीतिना सहृदय उच्च सद्‌गुणोथी रेलमछेल थइ रहे छे. अने ए गीतो द्वारा प्रभुस्तवन कर्याथी एकान्त, शान्त स्वच्छ अने गदगदित हृदयमां परप्रेमरुप स्वयंभु व्यापक एक रस एवा श्री परमात्मानो साक्षात्कार थतो रहे छे; ने आ दावाग्निसम संसारमां जीवो दरेक पळे बळतां छतां अखंड शान्तिनुं सुख मेळवे छे, ने ए हृदयोमांथी प्रेमाश्रुनुं सतत वहन थतां प्रत्यक्ष स्वर्गगा आ भूमि उपर उतरी पडी जीवोना पापोने धोइ नाखती होय तेवुं मान थाय छे.

अनिरुद्ध विश्वव्यापिनी ज्वलंत प्रतिभा[illegible] महान कविवरो अने संगीतज्ञो पोतानां विद्युतसमां काव्यो अने स्वरस्वरुपमां स्थिर करनारां संगीतो जे काळे प्रसवे छे ते काळ अलौकिक होय छे एमां शक नथीज. एवा पुरुषोनां वाद्यरुप अंतःकरणो अखंडआत्म परमात्मसत्तिथी सतत शब्द अने संगीतथी छेडायांज करे छे. एवा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पुरुषोनां मुखमांथी जे शब्द नीकळे छे ते ज काव्यरुपे होय छे, अने कंठमांथी जे ध्वनि लहरी नीकळे छे ते संगीतना रागरुपेज होय छे एमनी वाणीमां अने कंठमांथी जे शब्दप्रवाह अने स्वरप्रवाह वहे छे ते प्रवाहनी पाछळ पाछळ वृत्त, गीत, ताल, स्वर, भाव ए बधां हाथ जोडतां जोडतां चालतां आवे छे. प्रसन्न प्रतिभानी प्रेरणाथी प्रेरायेला कविओ अने संगीतज्ञोए सदा आलाप्याज करवुं. तेमना आलापमां विघ्न आवे तेम कदि करवुं नहि. तेमना आलापमांनुं हृदय, रस अने माधुर्य सधायां छे के नहि तेनुं अवलोकन पछीथी बीजाओए करवानुं होय छे. ते विषेनी तेओ पोते कदि पण दरकार राखताज नथी एवा पुरुषोनी कविता के गीत लहरिनी योग्यता तमारा अमारा जेवा क्षुद्र मानवोना ख्यालमां न आवे तो तेमां आपणो पोतानोज दोष समजवो ; अथवा आपणामांनी एटला उच्च प्रकारनी सहृदयता हजी जागृत थइ नथी, अगर तो आपणी रसिकता के रसज्ञता के रसज्ञतानो जोइए तेवो विकास थयो नथी ; अथवा आपणी प्रकृतिमां हजी काव्य के संगीतनो उदय थयो नथी, एमज कहेवुं जोइए. सामान्य ताल, स्वर, वृत्तादिना नियमो कंइ बधाए कविओ के गायको शीखेला होय छे एम पण नथी होतुं, अगर तो ते बधुं जाणवानी तेओ कदि दरकार पण करता नथी. तोपण तेमनी वाणीमां जे कुदरती ताल, गान, सुस्वरत्व अने पद्यबंधन समायलुं होय छे ते बीजाओथी सारा अभ्यासथी पण समजी शकातुं नथी. कोयल, मोर, बुलबुल, मेनां वगेरे पक्षीओना कंठमां मुळेज मधुरता छे ते प्रमाणे एवा प्रेममस्त कविओनी वाणी स्वभावतः ज काव्यगीतानुसारी होय छे. आंतरनी आत्मीय प्रवृत्तिथीज तेमने तमारा अमारा स्थूल शब्दोनी अंदरनी मधुरतानुं ज्ञान तमारा अमारा करतां विशेष होय छे. तेमनुं ज्ञान ते केवळ नैसर्गिक संगीतरुपेज होय छे अने तेथी करीने अमुक वृत्त के अमुक गान के रागनी तेमने अपेक्षा नहि होवा छतां पण तेमना शब्दनादनी दरकार राखनारां वृत्त-गीत (स्वर रचना) अने राग रागणीओ तेमनी पाछळ अनुसरतां साष्टांग प्रणिपात करतां चाल्यां आवे छे. ए उपरथीज कह्युं छे के **लौकिकानां हि साधुनामर्थं वागनुवर्तते । मुनीनां पुनराद्यानां वाचमर्थोनुधावति ॥** एटले के लौकिक साधु कविओ के गायकोनी वाणी, अर्थने अनुसरे छे अने मुनि आदि कविओ के गायकोनी वाणी गीति पाछळ भाव के अर्थ दोडे छे. महेता नरसिंह, बाइ मीरां, प्रेमानंद, दयाराम वगेरे ए एवाज उच्च कोटिमांना कविओ हता. तेओ पोते जे कवि गया ते संगितना आलापरुपेज कवि गया ; के जे तेमना आलापोवाळां

P. P. Ac. Gunratnasuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गीतो आजे पण गाइने हृदय पावन करीए छीए. आपणी गुजराती भाषामां गीत राग रचना जे थएली छे ते घणी खरी एवा उच्च कोटिना कविना स्वेच्छानुसार आलापनमांथीज थएली छे, अने तेटलाज माटे ते गीतो स्वयंभु, स्वतंत्र अने जनसमाजने विद्युतनी माफक विलक्षण रीते असर करनारां थइ शक्यां छे. जे भाषामां आवा कविओ जे युगमां थाय छे, ते युग ते भाषानो सुवर्ण युगज समजवो जोइए. आपणी गुजराती भाषा एवा नूतन कविवरोना गानालापनी अने नूतन भावि सुवर्ण युग प्राप्त थवानी राह जुए छे ! ! अने अमारी युंजान द्रष्टिमां ए युग पण समीप आवतो जणाय छे. परन्तु एवा सुवर्ण युगोनी मात्र आशाज राखी बेसवुं अने कार्य किंचित पण नहिं करवुं ते, एक विद्यार्थी प्रत्यक्ष अभ्यासनी क्रिया नहि करतां परीक्षाना समयनी केवळ मार्ग प्रतीक्षा करतो बेसी रहे तेना जेवुं छे. आपणा देशमां काव्य अने संगीतनो तात्विक अभ्यास वधवो जोइए ते माटे ते बन्नेनुं शिक्षण शाळाओमांज आपवानो योग्य प्रबंध देशना उद्धारकोए करवो जोइए तेमां एटली संतोषनी वात छे के काव्यनुं शिक्षणतो सर्वत्र थोडा घणा अंशमां अपाय छे, परन्तु ते साथे संगीतनुं शिक्षण पण अपाय तो ते जोइए छे. संगीतना उत्तम ग्रंथोनी घणीज खोट छे ते विद्यादेवीना मंदिर बहारनो आखो समाज स्वभाषामां रचायला उत्तम संगीत ग्रन्थो उपरथीज शिक्षण मेळवतो रहे छे. अने तेमना हाथमां आवा ग्रन्थो आवे तो उपरोक्त आशा सफल थवानो संभव घणोज नजदीक होइ शके ए स्पष्ट छे. ए द्रष्टिथी कविराजे आ ग्रन्थ रची आपणी उपर महान ऋणनो बोजो लाद्यो छे एम कह्या विना चालतुं नथी. परप्रेम स्वरुपपूर्ण रसरुप आ विश्वाधिष्ठान रुप सच्चिदानंद स्वरुप **नादब्रह्म** के जे सर्व एक रस होइ निरपेक्ष व्यापक छे. तेनी प्रतीति, मानसरोवरवत् संभृत हृदयनेज थाय छे. ने पछी तेमांथी प्रतिभायुक्त **नाद** तथा शब्द लहरीओ उद्भुत थइ **संगीत** अने **काव्य** ए बन्ने प्रसव पामे छे अने ए बन्नेना एक रुप समैक्यथी नाद ब्रह्मना अनंत आनंदनुं पळे पळे भान थतां आ दुनियामांना संतप्त अने दुःखी जीवो बिचारा तापत्रयथी विमुक्त थइ पुनित थाय छे. ए प्रकारे पोते पुनित थइ बीजाने पण तेनो लाभ आपी पुनित करवा माटे दरेक प्रेमी सज्जनोए यत्न करवानो लोकसंग्रह करवो जोइए अने स्वभाषा मातानी सेवा आपणा कवि **नथुरामनी** माफक दरेक रसिके यथावकाश करवी जोइए. माटे आ ग्रन्थना हे प्रिय वाचक ! जो त्हारे कोइ अवर्ण्य आनंद सागरमां निमज्जित थइ **नादब्रह्मयोग** साधवो होय तो तुं पोते अने आखा जन-

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

समाजने पण त्हारी साथे लइ तुं :—

काव्यज्ञान द्रुय तुंबॉनुं, अनहत स्वर रस बीन ;
प्रतिभा तंत्रॉ बजावॉ था, नादब्रह्मरसलीन.

एटलुं कही नाद ब्रह्म समाधि साधवा विषे म्हारी समस्त प्रिय गुजरातने भलामण करी विराम पामुं छुं. ॐ ॐ ॐ.

सच्चित आनंद नादब्रह्म विभु, वामें माया विवर्त रुप री ॥ स ॥
ईश अनीशज हृदयबिणासें. नाद शब्द, रस लहर रहे री ॥ रि ॥
संगीत, काव्य, कला रूप जग सब, आत्मनके चिद अंश सुहे री ॥ग॥
जो हैं सो है, नहिं सो नहिं है ; समझ न समझे, है जो हो री ॥ म ॥
जितना जैसा, उतना वैसा पूर्ण पूर्णमें विलस रहो री ॥ प ॥
नित्य नेति चित तम भा नय सब बोध शेषको दृशी स्वरूप री ॥ ॥ध॥
जगमें मनमें व्यापक ब्रह्मन, आत्मस्वरूप निहार लहो री ॥ नि ॥
विश्व बिवर्त गणेश प्रभूको, आपमें आप समाय रहो री ॥ स ॥

मुंबइ
सांता क्रुझ. वीलरवीला
ता. ६-११-१९१७
आश्विन वदी. ७ सं. १९७३

गणपतराव. गोपालराव
बरवे.

संगीतशास्त्री गणपतराव गोपाळराव बरवे कृत

विविधविषयक ग्रंथ.

नाम.	किंमत.
१ योगदिवाकर.	रु. ३
२ नादलहरी.	रु. १
३ श्रुतिस्वर सिद्धान्त.	रु. १
४ संगीतनी महत्ता.	रु. ०॥
५ गायनवादन पाठमाला	रु. ६
६ नवसंहिता. (सस्ता साहित्य माटे)	रु. १
७ ललितगीत विनोदिनी	रु. १
८ सुरतरंगिणी.	रु. १॥
९ गीतलहरी.	रु. १।
१० स्त्री गीतावली.	रु. ०॥

(थाय छे)

११ गायनशास्त्र प्रवेशिका.

१२ स्वर राग तरंगिणी.

१३ राग सिद्धान्त केसरी.

१४ हिंदुस्थानी संगीतनी सुधारणा अने उन्नतिनी विचारणा

१५ संगीतामृत.

१६ विज्ञान मकरंद.

१७ विश्व चमत्कार.

१८ श्री गीतायोग गान के श्रीगीता रहस्य रंजनी.

१९ जीव ब्रह्म मीमांसा.

(लखेलां तैयार छे.)

२० समाधि स्वरुप.

नाम.

२१ नैसर्गिक धर्मस्वरुप.

२२ अर्वाचीन सुधारणा अने अधोगति.

२३ गायनवादन पाठमाला पुस्तक २.

२४ ॐकार पट अथवा नादब्रह्म चक्र.

गुजराती पत्रद्वारा प्रकाशित.

२५ नजरे जोएलुं जापान.

२६ कलिकाल अने महाभारत.

२७ भारतवर्षिय संगीत शास्त्रना ग्रंथो.

२८ चीननो प्रवास.

गुजरात शाळापत्र द्वारा प्रकाशित.

२९ जगतनी भिन्न भिन्न भाषा.

३० रंग विषे पाठ.

३१ खरता तारा.

गुजरात वर्नाक्युलर सोसाइटी द्वारा प्रकाशित.

३२ संगीतना सप्तस्वर.

३३ हिंदनी खनिज संपत्ति.

३४ अनादिकाळथी चालती आवेली प्राणिज सृष्टि.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ॐ

गायन वादन कला अने शास्त्रनुं शरुआतना अभ्यासीओने शिक्षकनी सहायता विना साचुं शिक्षण आपी शके एवुं हिंदुस्थाननी कोइ पण भाषामां प्रथमथीज रचाएलुं पुस्तक.

किंमत रु. ६-०-० } **गायन वादन पाठमाला.** पोस्टेज रु. ०-८-०

मोटा कदनां ८०० पानां, ४०० गायनो नोटेशन साथे, ७६ कविओनां काव्यो, २०० राहो, १५० रागदारीनां गायनो, वाजींत्रोनी गाइडो, चित्रो अने ११ ग्रंथो एकज ग्रंथमां,

तुंबुरो, सितार, दिलरुवा, हारमोनियम, फिडल अने तबला ए छ वाजींत्रोनी गाइडो तेमज

नाद, स्वर, ताल, वादनकला, राग, छंद, वगेरे **शास्त्रो; यूरोपियन संगीतनी माहिती, नोटेशन** अने प्रत्यक्ष प्रयोगो उपरथी आ ग्रंथ रचवामां आवेलो छे.

समग्र ग्रंथ **शास्त्रविचार** (थीअरी), **अभ्यास** (प्रेकटीस) अने **संगीतो** (सोंग्स्) ए त्रण विभागमां वहेंची नाखी तेमां दरेक विषय सुबोध रीते समजावेलो छे,

संगीतोनो त्रीजो विभाग **छंदोगीत विनाद** नामे घणो उपयोगी होवाथी तेमां **१ अक्षर छंदगान, २ मात्रा जातिगान ३ पिंगल-गणेश, ४ गीत विनोद** (पोप्युलर सोंगस्), **५ ललितगीत विनोदिनी** (स्त्री विषयक संगीतो) अने **६ गुजराती वांचन माळामांनी कविताओनुं संगीतलेखन** ए छ ग्रंथो आवी गया छे अने जेमां लगभग ४०० संगीतो सरगम, ताल, मात्रा, वगेरे (नोटेशन) सहित आपेलां छे, हिंदुस्थानी कोइपण भाषामां संगीतना व्यवहार अभ्यास माटे आ एकज खरो फलग्रंथ छे

नीचेने शिरनामे लखी पुस्तक वी. पी. थी मंगावी ल्यो.

गणपतराव गोपाळराव बरवे.

(संगीतशास्त्री)

गायनशास्त्र शाळा—कालकादेवी, मुंबइ.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संगीतशास्त्र.

दोहा.

वाद्य, गीत ने नृत्यनुं, श्रेष्ठ नाम संगीत ;
अन्य एम पण उच्चरे, वाद्य. गीत. संगीत. १

वाद्य गीतनुं नृत्य छे, अधिक समीपी अत्र ;
तेथी त्रय मळतां बने, तुर्त भेद तूर्यत्र. २

कलित वाद्यने कंठथी, गायक मेळवी गाय ;
नाचे बांधी नूपुरो, ते तूर्यत्र गणाय. ३

गीत नृत्य ने वाद्य जो, होये ताल सहित
ताल मूल गीतादि त्रय, ग्रहे नाम संगीत. ४

वाद्य आदिनो नाद पर, अहनिश छे आधार,
ब्रह्मरूप गणीने भजे, जेने जगदाधार. ५

पुरुष पिंडथी उद्भवे, निर्मळ ए शुभ नाद,
पिंडोत्पत्ति प्रेमथी, उचरुं तजी उन्माद. ६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

पिंडोत्पत्ति.

रोळावृत्त.

प्रथम एक परब्रह्म, मळी माया ए संगे ;
उद्भव पाम्युं ॲथी, अमल आकाश उमंगे.
ए आकाशथी अनिल, अनिलथी अनल प्रमाणो ;
अनलथकी अम्बुनी, जबर उत्पत्ति जाणो. ७

अम्बुथकी उद्भवी, अतिशय विस्तृत अवनि ;
पंचभूतथी प्रगट, पंच तन्मात्राओ बॅनी ;
शब्दात्मक आकाश, पवन स्पर्शात्मक पेखो ;
रूपात्मक छे अनल, रसात्मक जळने लेखो. ८

गंधात्मक वसुमती, पंच भूते मन भाव्युं,
वंदन योग्य विराट पुरुषनुं तनु प्रगटाव्युं ;
निर्मळ एनुं नाम, अखिल ब्रह्मांड उचारे,
जेथी पाम्या जन्म, पूज्य ब्रह्माजी प्यारे. ९

थातां ईशनिदेश, वेद ब्रह्माए कीधा,
बाह वर्षने चौद, प्रजापति उत्पन्न कीधा ;
ब्रह्माथी वरपामी, प्रजापतिओए प्रीते,
उपजावी आ सृष्टि, नारी नर मळी शुभ रीते. १०

स्वेदज, अण्डज अने, वळी उद्भिज जरायु,
थया चतुर्विध देह, भुवन जे थकी भरायुं,
यूका आदि अमित, जीवने स्वेदज जाणो,
अण्डजमां उरगादि, पक्षीना देह प्रमाणो. ११

वृक्ष आदि उद्भिज, जरायु मानव जाति,
एमां आहतनाद तणी, उत्पत्ति थाती;
जीवात्मा जनतणा, व्योममांहि विचरे छे,
ए व्योमे स्थित सूर्य, वारि वादळे भरे छे: १२

जलजीवात्मा सहित, वारिधर वर्षाकाळे,
वरसी वसुधापरे, ताप त्रिभुवननो टाळे;
ए जळथी अन्नादि, वनस्पति निपजे व्हाले,
जमी अन्न नरनारी, महद आनंदथी म्हाले १३

थतां प्राप्त ऋतुकाळ, रमे नरनारी गेहे,
स्त्रीना रजथी मळे, वीर्य नरकेरुं नेहे;
रमणीने ए रीत, रमणथी गर्भ रहे छे,
एक मासना उदित, गर्भने कलल कहे छे. १४

द्वितीय मासमां गर्भ, थायछे सघन सदाये,
ते पछी तेनो पिंड, बनी एकत्र बँधाये;
गर्भाशयनी मांहि, प्रथम छोटो पछी म्होटो,
वृद्धि पामतो रहे, वीर्य केरो परपोटो. १५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

રમણીનું રજ અલ્પ, વીર્ય નરનું અતિ હોયે,
હર્ષ વધારણ પુત્ર તણી, ઉત્પત્તિ હોયે;
વીર્ય પુરુષનું અલ્પ, વામ રજ હોય વધારે;
શ્રેય કારિણી સુતા, પ્રગટ થાયે છે પ્યારે. ૧૬

નારીરજ નરવીર્ય, જણાયે સરખાં જ્યારે,
નિશ્ચય પ્રાદુર્ભાવ, થાય ષ્યંડલનો ત્યારે:
તૃતીય માસમાં ગર્ભ, ઉભયકર પદ શિર ધારે,
રે'છે અંગો અવર, એ સમે લઘુ આકારે. ૧૭

પુષ્ટ અંગ ગર્ભના, થાય છે ચતુર્થ માસે;
શૌચાદિક સદ્ગુણો, પુરુષના સદ્ય પ્રકાશે;
અથવા ગુણ ભય આદિ, સુતાના ગર્ભે હોયે;
નારી નરના મિશ્ર ગુણો, ષ્યંડલમાં હોયે. ૧૮

એજ માસમાં ગર્ભ, કરે ઇચ્છા ભોજનની;
વિવિધ ખાદ્યમાં વળે, વૃત્તિ માતાના મનની;
ધરે માંસ મજ્જાદિ, પંચમે માસે અંગ:
છઠ્ઠે મહિને અસ્થિ, રોમ, નખ, નસ, બલ, રંગ, ૧૯

સર્વાંગે સંપૂર્ણ, સાતમે માસ સુહાવે;
પૂર્વ જન્મનાં કર્મ, યાદ એ સમયે આવે:
ગર્ભાશયથી બહાર, નીકળવા સ્પૃહા કરે છે;
વારવાર એ કાજ, ઈશનું ધ્યાન ધરે છે. ૨૦

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अष्टम मासे त्वचा, ओज, सह स्मृति पण आवे ;
जे जन्मे तो ओजहीन, ए स्वर्ग सिधावे ;
निश्चय नवमे मास, बाल जे जन्म लहे छे,
जीवे ए चिरकाल, शरीरे सुखी रहे छे. २१

तेना तनमां प्राण, शक्ति, इन्द्रिय, बल, आवे ;
क्रमे ज्ञान कर्मेन्द्रि, हृदयसह बुद्धि सुहावे ;
ते तनना पद तळे, चक्र छे **अनन्त** नामे ;
चारु **छाया** चक्र, एज स्थलमां स्थिति पामे. २२

दक्षिण चरणे **वात**, नामनुं चक्र विराजे ,
अन्य वळी **आधार**, चक्र छे आनंद काजे ;
अधोद्वारने शिश्नुमध्य छे स्थान एहनुं ;
चार पत्रथी लसे, ज्योतिमयरूप जेहनुं. २३

प्रीते " परमानन्द ", प्रथम पत्रमां प्रकाशे ;
द्वितीय पत्रमां दाडी, भव्य " सहजानन्द " भासे ;
वसीओ " वीरानन्द " तृतीय दलमां तेजस्वी ;
चोथे " योगानन्द ", अहर्निश रहे यशस्वी. २४

ए आधारनी हेठ, ब्रह्मकुंडलिनी रहे छे
ब्रह्मरन्ध्रमां चढावतां, ए अमृत दे छे;
षट्दल **स्वाधिष्टान**, चक्र छे उपस्थ मूले,
प्रथम दले "नम्रता", हर्ष हिंडोळे झूले. २५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.
Jin Gun Aaradhak Trust

द्वितीय दले "क्रूरता", मचेली छे छलवलमां,
"गर्व नाशनो वास" सदा छे तृतीय दलमां :
"मूर्छा" चोथे पत्र, पंचमे स्थिति "अवतारनी",
"अविश्वास" षष्ठमे, शक्ति ए चक्रे मारनी. २६

दश दलवाळुं चक्र, एक मणिपूरक नामे,
निर्मळ नाभिमांहि, होय उद्भवेल हामे;
तेने पहेले दले, वसे छे "निद्रा" देवी,
द्वितीय दलने रहे, सर्वदा "तृष्णा" सेवी. २७

"ईर्षा" त्रीजे दले, "चुगली" चोथा दल मांहि,
"लज्जा" पंचम दले, "भये" स्थिति छट्ठे चाही;
"दया" सप्तमे दले, अष्टम "मोह" उचारुं,
रहे "कुटिलता" रोज, पेखी नवमुं दल प्यारुं. २८

दशम दले "दारुण्य", कोडथी वास करे छे,
मणिपूरकमां सदा, सूर्य निजधाम धरे छे;
एथी उपर हृदयमांहि, छे चक्र अनाहत,
तेनां द्वादश दलो, अहर्निश जणाय अक्षत. २९

"ममता" पहेले पत्र, द्वितीयपर 'छल'नो दावो,
तृतीय दले 'संदेह', 'पत्र चोथे 'पस्तावो';
पंचम दले प्रकाश, पामती आशा पेखो,
षष्टम दलमां स्थान, सदा 'चिन्ता'नुं लेखो. ३०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सप्तममां 'स्मरनाश' अष्टमे दल छे 'समता',
नवम दले 'पाखंड', दशमदलमां 'विह्वलता';
एकादशमे दले रहे छे 'विवेक' राजा,
द्वादशमे दल 'अहंकार' छे पूरो पाजा. ३१

शिवना सुंदर स्थानरूप ए चक्र अनाहत,
गणाय छे गुणवान तणा समुदाये सम्मत ;
चारु विशुद्धि चक्र, कंठमां वास करे छे
पावन षोडशपत्र, श्रुतिथी सदा धरे छे. ३२

प्रथम दले " ॐकार ", रात्रिदिन राजी रहे छे ;
' गानग्राम ' नुं स्थान, द्वितीय दलमांहि ग्रहे छे ;
त्रीजे ' हुंफट् मंत्र ', तेम ' वौषट् ' चोथे दल ;
' वषट् ' पांचमे पत्र, ' स्वधा ' नुं दल छठुं स्थल. ३३

' स्वाहा ' सप्तम दले, उचारे मुख अनेरुं ;
' नमो मंत्र ' अष्टमे, नवम दल ' अमृत ' केरुं ;
दशम दले छे ' षड्ज ' ' रिषभ ' दल एकादशमे ;
गुणशाळी ' गान्धार ' वसे छे दल द्वादशमे. ३४

दाडी तेरमे दले, रहे छे मनहर ' मध्यम ';
वास करे चौदमा, पत्रमांहि स्वर पंचम ';
पंचदशम दल धाम, नित्य ' धैवत ' नुं धारो ;
निर्मळ नाद ' निषाद ' पत्र षोडशमे प्यारो. ३५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सरस्वतीनुं स्थान, विमळ छे चक्र **विशुद्धि** ;
वंदन करवा योग्य, वधारे बळने बुद्धि ;
कंठ उपरे कलित, चक्र छे **ललना** नामे
द्वादश तेनां दलो, प्रीतथी विकास पामे. ३६

प्रथम दले 'मद' वसे, द्वितीयमां 'मान' विराजे ;
त्रीजा दलमां 'स्नेह' भव्य छबिधरीने भ्राजे ;
चतुर्थ दलमां 'शोक' 'खेद' नुं स्थल पंचम दल ;
छठ्ठा दलमां 'लोभ' सातमे 'आर्जवनुं स्थल. ३७

'संभ्रम' दल अष्टमे, नवम दल 'क्षोभ' नुं छाजे ;
'श्रद्धा' दशमे दले, व्हालथी नित्य विराजे ;
एकादशमे दले, सदा संतोष रहे छे,
आधिपत्य 'अपराध' बारमा दलनुं ले छे. ३८

लोल नामनुं चक्र, पडयुं जिह्वामां प्यारे ;
एनुं वळी उपनाम, अवर, **जलचक्र** उचारे ;
तेनां छे त्रय पत्र, मध्यमां रहे 'ह्रस्वता' ;
उपरि दले 'सूक्ष्मता', दक्षिणे वसी 'दीर्घता'. ३९

खानपाननो स्वाद, सदा जलचक्र ग्रहे छे,
ते पर तालुमांहि, चक्र **वरुणाख्य** रहे छे ;
तेनी बे पांखडी, एक ऊपर एक नीचे,
मनोहारी त्रयमार्ग, पडया ए द्वयदल वच्चे. ४०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ऊपरना मार्गमां, 'शरीरनो निरोध' ह्होये,
'प्राण वायुनो रोध', अघोपथ अंदर होये;
मध्य मार्गमां 'शब्द तणी उत्पत्ति' सुंदर,
'लं, कं, खं,' बीजना अक्षरो त्रिपथनी अंदर. ४१

ए ऊपर नासिका, कलित मुखमंडन का'वे,
दक्षिण छिद्रे सुगन्ध, नामनुं चक्र सुहावे ;
वाम रन्ध्रमां वळी, चक्र दुर्गन्धनुं देखो,
उभय रन्ध्रना गुणो, लाभ करनारा लेखो. ४२

वाम कर्णमां विदित, चक्र निश्रव्य वसे छे,
दाक्षिण कर्णे श्रव्य, नामनुं चक्र लसे छे;
वाम नयनमां रूप, नामनुं चक्र रहे छे,
दाक्षिण द्रगमां 'ज्योति, चक्र विश्रान्ति लहे छे. ४३

ए पर 'प्रज्ञा, चक्र, भ्रकुटि मध्ये भवहारी,
तेणे त्रय दल वडे, विविध ख्याति विस्तारी;
प्रथम दले गुण 'सत्व', सर्वथी उत्तम सोहे,
द्वितीय दले रहेनार, 'रजोगुण' जनमन मोहे. ४४

करे 'तमोगुण' वास, सदा दल त्रतीय विशाले,
मुददायक मन 'चक्र, करेछे वास कपाले;
तेना षट दल सरस, प्रथम दलमांहि 'स्वप्न' छे,
द्वितीय हले 'श्रृंगार, आदि रसनुं सेवन' छे. ४५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'सुगन्ध केरुं ज्ञान', तृतीय दलमांहि देख्युं,
चतुर्थ दलमां 'ज्ञानरूपतुं' ऋषिए लेख्युं;
पंचम दलमां सदा, 'ज्ञानशीतोष्णतणुं' छे,
षष्ठम दलमां 'ज्ञान शब्दनुं' घटित घणुं छे. ४६

चन्द्र नामनुं चक्र, विमळ ए उपर विराजे,
शशी कळा सम सोळ, पत्रथी सुखमय छाजे ;
प्रथम दले छे ' कृपा ' द्वितीयमां स्थान ' क्षमा ' तणुं,
करे विनोदे वास, तृतीय दलमांहि 'शुद्ध पणुं.' ४७

चतुर्थ दलमां सदा, रुपाळुं ' धैर्य ' रहे छे,
पंचम दलमां सुभग, स्थान ' वैराग्य ' लहे छे ;
' निश्चय ' छठ्ठे दले, सप्तमे ' हर्ष ' तणुं स्थल :
' हसवुं ' दल अष्टमे, रम्य ' रोमांच ' नवम दल. ४८

दशम दले छे ' ध्यान ' ' स्थैर्य ' दल एकादशमे,
मुद भरनार ' महत्व, ' रहे छे दल द्वादशमे ;
' उद्यम ' करे निवास, तेरमा दलमां तेते,
' निर्मळता ' चौदमे, कही छे सघळा संते. ४९

' पंचदशम दलमांहि, स्थान ' औदार्य ' तुं सारुं,
पडयुं ' चित्तैक्य ' ने, पत्र षोडशमुं प्यारुं ;
भ्रमर नामनी गुफा, ब्रह्मरंध्रमांहि भ्राजे,
ए पर दीपक चक्र, सप्त दल धारी छाजे. ५०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ए साते दलमांहि, सॅत मात्रा 'यं, आदि,
रं, लं, वं, शं, अने करे षं, सं, आवादी ;
उक्त चक्रमां वसे, 'अहं सः, अथवा सोऽहम्.
जे छे अजपा जाप, शक्ति वळी प्राणनी उतम. ५१

एनुं नामज हंस, एज परमात्मा जाणो,
एने अनुभव शक्ति, प्रीतथी सदा प्रमाणो ;
विसर्गने स्वर युक्त, चक्र ए शुभग गणाये
एमां अनहद नाद तणी, उत्पत्ति थाये. ५२

एज चक्रमां वास, शारदातणो सुहावे,
उदासीनता अने समाधिनुं स्थान कहावे ;
तूर्यावस्था साथ, त्यहां रस करुण रहे छे,
क्रिया शक्तिनुं स्थान, कोविदो त्यांज कहे छे. ५३

निराकार सच्चिदानंद, वळी त्यांज वसे छे,
समान नामे समीरतणी, त्यां लहरी लसे छे ;
समान वायु सदा, मध्य गतिथी विचरे छे,
उक्त कमळथी योग, सुषुम्णा सद्य करे छे. ५४

उतम सुख अनुभवे, जीव ए स्थळमां जामी,
पंचभूत पण त्यहां, रह्या छे आश्रय पामी ;
तेज तणो समुदाय, ठीक रे'छे ए ठामे,
वळी वसे त्यां गंग, 'ब्रह्मअवतरणी' नामे. ५५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ब्रह्म नामनुं चक्र, एक दलवाळुं उत्तम,
एज स्थले छे त्यहां वसे 'ॐकार' अनुपम;
मनहर माया चक्र, पडयुं छे एना पासे,
श्याम वर्णने धरी, प्रीतथी सदा प्रकाशे. ६६

तेनां पत्र सहस्त्र, स्थानें ज्यां 'बिन्दु' लहेछे,
एज चक्रमां 'ब्रह्मरन्ध्र', रमणीय रहे छे;
आलय अमीनुं उक्त, चक्र सहु हानि हरे छे
सुधा वृष्टिथी सर्व, शरीरने पुष्ट करे छे. ६७

प्रकाश नामे पुनित, चक्र ए स्थलमां छाजे
एनां पत्र अनेक, रंगबेरंगी राजे ;
आखिल दलोमां समूह, 'बिन्दु'नो सदैव भासे;
अहंकारनो रंग विश्वमां रक्त विकासे. ६८

हृदयान्तर्गत चक्र, अनाहतनुं दल पहेलुं,
अष्टम, एकादशम, छेक अथवा दल छेलुं;
ज्यारे भमतो जीव, उक्त दल अंदर जाये,
गीत आदिनी सिद्धि, चतुर ए समये च्हाये. ६९

एज चक्रना चार, छ, दश, दलमांहि विचरतो,
जीव गीत आदिनी कदी इच्छा नथी करतो ;
आगळ करी विस्तार, वर्णवुं, समजण काजे,
कंठे स्थिति करनार, विशुद्धि चक्र विराजे. ६०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तेना अष्टम दलथी, पँदरमा दल लगी प्यारे,
गीतादिकनी सिद्धि, विचरतो जीव विचारे ;
ज्यारे ए चक्रना, सोळमा दलमां आवे,
त्यारे जरी जीवने, गीतनी रीत न भावे. ६१

एमज ललना तणा, दशम एकादश दलमां,
विचरण करतो जीव, गीत सिद्धि चहे पलमां ;
पहेला, चोथा, अने, पांचमा दलमां पेसी,
गीत सिद्धि गगने, जीव नांखे छे रेसी. ६२

ए त्रय चक्रो तणा, अन्य दलमां आवेलो,
अन्य चक्रना पत्र मांही, त्रुटिथी धायेलो ;
जीव गीत आदिमां, जरा पण सुख नहि पामे,
सत्य शोध करी कँहुं, नेह धारी नथुरामे. ६३

छन्द हरिगीत.

आधार चक्रथी उभय अंगुलि उपरे अभिराम छे,
वळि हेठ अंगुलि एक स्वाधिष्टानथी सुखधाम छे ;
अति सूक्ष्म अग्नि तणी शिखावर देह मध्य विराजती,
छे दीर्घ द्वय अंगुलि सदा, कुंदन समी छबि छाजती. ६४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुख मूळ जे छे स्वरनुं, तेनुं **ब्रह्मग्रन्थी** नाम छे,
जेनुं चतुर अंगुलि प्रमाण अनुप आटे याम छे ;
ए ग्रन्थिमां द्वादश दलनुं, नाभि कमल निर्मळ अति,
त्यां जीव भ्रमण कर्या करे छे, रात्रीने निशदिन रति. ६५

ग्रही पथसुषुम्णा नाडीनो फरी ब्रह्मरन्ध्र माहिं चढे,
वळि उतरे ए रीत अनहद मोदथी मनने मढे ;
जे रीतथी नट दोरपर, चढी उतरे छे चाहथी,
त्यम प्राण वायु समेत जीव, विचरे सुषुम्णा राहथी. ६६

वायु सुषुम्णा पास मूळाधारने मध्ये वळी;
नाडी अवर एवीज रहीं छे, ब्रह्मरन्ध्र महीं भळी ;
जीवन समग्र शरीरने देवानी, जेनी टेक छे,
पोषण करे अंगोनुं एवी, अन्य नाडी अनेक छे. ६७

तेमां चतुर्दश नाडीओ ऋषिमतथी मुख्य मनाय छे,
ते छे **सुषुम्णा** प्रथम पद, **ईडा** द्वितीय गणाय छे ;
त्यम **पिङ्गला** त्रीजी, **कुहू** चोथी **पयस्विनी**, पंचमी,
गान्धारी ने गणो छठी समजो **हस्तिजिव्हा** सप्तमी. ६८

वर **वारणा** छे अष्टमी, नवमीनुं नाम **यशस्विनी**,
विश्वोदरा दशमी अने अग्यारमी छे **शंखिनी**;
पूषा प्रमाणो बारमी, तेमज **सरस्वति** तेरमी,
चौदमी नाडी **अलम्बुशा** कोविद विशे छे नहि कमी. ६९

ए सर्व मांहे आदिनीत्रय, नाडी मुख्य गणाय छे,
ए त्रण महीं पण अग्र गण्य सदा सुषुम्णा थाय छे;
'विष्णु' सुषुम्णा नाडीना, वर देवता वखणाय छे,
वामे इडा स्थिति पिंगलानी दक्षिणे कहेवाय छे. ७०

सुदभर इडाना मध्यमां 'विधु' देव व्हाल धरी वसे,
वळि पिंगला वच्चे 'रवि'नो ललित वास सदा लसे;
ए उभय नाडी विषे करे, छे श्वास विचरण जे समे,
झडपी लिए छे काळ झट, असहाय जीवने ए समे. ७१

ज्यांसुधी सुषुम्णा मांहीं प्रीते, प्राण वायु पडयो रहे,
त्यां लगी जीवनुं नाम पण, कंगाल काल नहि लहे;
निज निज तणा स्थलमांहि नाडी, अवर व्यापी रहेल छे,
नथुराम नरतनुं मुक्ति साधन, शास्त्रमांहि कहेल छे. ७२

दोहा.

वहे पिंडमां व्हालथी, द्वयविधि विना विवाद;
एक अनाहत जाणीए, बीजो आहत नाद. ७३

सुणाय करतां बंध श्रुते, 'चिंचिणि, शब्द अनुप,
नाद अनाहद एह छे, जेनुं अनहद रूप. ७४

P. P. Ac. Gunratnasuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दया, सरलता, साधुता, जे निज चित्तमां व्हाय ;
एज **अनाहत** नादना, अधिकारी कहेवाय. ७५

लोक चित्त रंजन करे, सहज महीं समजाय ;
सहु जन **आहत** नादने, सेवे गणी सुखदाय. ७६

ताल काल स्वर श्रुति सहित, समजी सर्व स्वरूप ;
गातां फळ चारे मळे, नाद ब्रह्मनुं रूप. ७७

रोळा वृत.

स्पृहा शब्द करवानी, थतां जीवात्मा जननो ;
स्नेह धरीने सदा बने छे प्रेरक मननो ;
मन तनमां वसनार, वह्निने प्रेरे प्रीते
वह्नि बने छे वायु तणो प्रेरक ए रीते. ७८

ब्रह्म ग्रन्थि जे चक्र, **मूल आधार** गणाये;
ए पर फरतो अनिल, नाभिथी हृदये जाये—
त्यांथी कंठे स्वरेत, कंठथी शिरे समाये;
शिरथी आवी मुखे, प्रगट ध्वनि रुपे थाये. ७९

प्राणनुं नाम नकार, विश्व विख्यात वखाणो ;
दहननुं नाम दकार, प्रीतथी सदा प्रमाणो,
शब्द प्राण अग्निना, योगथी जन्म लहे छे,
ए कारण सहु कोइ, शब्दने नाद कहे छे. ८०

नादनां स्थान.

दोहा.

हृदय, कंठ, मस्तक कह्यां, नित्य नादनां स्थान;
मन्द्र, मध्य ने तार कहीं, गणावता गुणवान, ८१

श्रुति.

अंगुलि ताडन मालथी, वीणादिकनी मांहि,
शब्द थाय ते श्रुति कहे, सहु संगीत गुण ग्राही. ८२

बधी मळी बावीश ए, राजी रही रसाल;
एक लघु उच्चारनो, समय श्रुतिनो काल. ८३

त्रय प्रकारनी ते श्रुति, ग्राम ग्राम प्रतिं थाय;
सर्व मळी छासठ अने, गुणीओ गीते गाय. ८४

प्रथम श्रुति स्वर छे पछी, कहे गुणी सहु कोइ:
भिन्न भिन्न वर्णन करुं, शुभ संगीत मत जोइ. ८५

तीव्रा, कुमुद्वती कहीं, मन्दा महद वखाणी;
छन्दोवती, दयावती, रंजिनी रतिका जाणी. ८६

रौद्री, क्रुद्धा, वज्रिका, प्रसारिणीने प्रीति;
मार्जनी, क्षिति, रक्ता कही, रही संदीपिनी रीति. ८७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आलापिनी, मदन्ती ने, रोहिणी रम्या नाम;
उग्रा, क्षोभिणी ए पछी, नौतम श्रुति नथुराम. ८८

सुखकर ए श्रुतिओ तणी, जाति पंच प्रमाण ;
दीप्ता, करुणा, आयता, मृदी मध्या, जाण. ८९

तीव्रा, रौद्री, वज्रिका, उग्रा, दीप्ता नाम;
दयावती, आलापिनी, मदन्ती करुणा धाम. ९०

कुमुद्वती क्रुद्धा अने, प्रसारिणी गुण गेह;
संदीपिनी ने रोहिणी, जाति आयता एह. ९१

मन्दा, रतिका, प्रीति, क्षिति, मृाद्वि जातिमान;
छंदोवती ने रंजिनी, मार्जनी कही महान. ९२

रक्ता, रम्या, क्षोभिणी, जेनी मध्या जाति ;
जाति सहित बावीश श्रुति, स्वर कारण कहेवाती. ९३

जेम इक्षुरसमिष्टता, कथने कहीं न शकाय;
तेम जाति श्रुतिओतणी, वाणीथी न वदाय. ९४

हृदय कंठ मस्तक तणी, शरीर श्रुतिनां नाम;
कहे अन्य आचार्य मत, निरखीने नथुराम, ९५

नादान्ता ने निष्कला, गूढा, सकला रूप;
मधुरा, ललिता लेखीए, एकाक्षरा अनुप. ९६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भृंग जाति, रस गीतिका, प्रिय रञ्जिका प्रताप;
पूर्णा पछी प्रमाणीए, अलङ्कारिणी आप, ९७

वळी वैणिका वर्णवी, वालिता पण वखणाय ;
त्रिस्थाना, सुखरा पछी, सौम्या भव्य भणाय ९८

भाषाङ्गिका, सुवार्तिका, पछी व्यापिका प्रमाण ;
परमें प्रसन्ना, सुभगा, अहनिश उरमां आण. ९९

स्वर.

श्रुति पछी प्रगटे स्निग्ध जे, शुभ गंकारें स्वरूप ;
श्रोतृ चित्त रंजन करे, ए स्वर आप अनुप. १००

प्रथम षड्ज, बीजो रिषभ, त्रीजो छे गान्धार ;
मध्यम चोथो मानीए, पंचम पंचम धार. १०१

छठ्ठो धैवत स्वर कह्यो, सप्तम नाद निषाद ;
स. रि. ग. म. प. ध. नि सर्वनी, संज्ञा विना विवाद. १०२

छप्पय छंद.

चार श्रुतिनो षड्ज, रिषभ त्रय श्रुतिनो जाणो ;
द्वय श्रुतिनो गान्धार, चार मध्यम उर आणो.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चार श्रुतिनो चारु, प्रबळ पंचम स्वर पेखो ;
त्रयें श्रुतिनो तत्काल, श्रुतिथी धैवत लेखो.
द्वयें श्रुतिनो संदेहविण, स्वर निषाद सुखकार छे ;
नित नथुराम निहाळतां, जेमां संगीत सार छे. १०३

स्वर स्थान.

कंठ षड्जनुं स्थान, रिषभें स्थानक शिर सुंदर;
नासामां गान्धार, हृदय मध्यम सुद मंदिर;
पंचमें स्थानक नाभि, ललाटे धैवत राजे.
मध्य वसी ब्रह्मांड, भ्रान्ति विण निषादें भ्राजे:
ए साते स्वरना सुखद, नित्यें स्थान नथुराम छे;
शुभ संगीतना स्नेहीने, धीगुं आनंद धाम छे. १०४

दोहा.

गणाय ऊंचा उभयें स्वर, निषाद ने गान्धार ;
नीचः स्वरमां नेहथी, रिषभ धैवत धार. १०५

षड्ज, मध्यम, पंचम कह्या, त्रयें स्वर सदा समान ;
ऋषि मतंग मत मांहि छे, जेनां विविध विधान. १०६

षड्ज स्वर स्वरूप.

छंद मनहर.

सुंदर षडानन छे, रक्त वर्ण चार भुज;
द्वयकर वीणा, द्वयकरमां कमळ छे.
मोदप्रद मयूर सवारी नथुराम मारी ;
मोरनो मुकुट शीश अभिन्न अमळ छे.
देव कुळ उद्भव ब्रह्माणुं विप्र जाति वर,
जम्बुद्विप स्थान ऋषि देवता अनल छे.
अनुष्टुप छंद रसवार अद्भुत सेवे ;
आदिस्वर षड्ज श्रेयकारक नवल छे. १०७

रिषभ स्वरूप.

छंद मनहर.

उत्तम छे एक मुख चार करमांहि चारु,
युगल कमळ युग वीणाओ विशाळ छे.
नित्य नथुराम शोभे वाहन वृषभ तणुं,
ऋषि कु' जन्म क्षात्रि जाति अरि साळ छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शोभित छे श्वेत वर्ण, शाक द्वीप स्थान जेनुं,
वेधा ऋषि अग्निदेव जेनी दृढ ढाल छे.
गायत्री छन्द वीर अदभुत छे एक रस,
बीजो बळवान स्वर रिषभ रसाल छे. १०८

गान्धार स्वरूप.

छन्द मनहर.

आनन अनुप एक दिव्य भुज दंड चार,
वीणा घंटा कमळ फळेथी द्युतिदार छे.
देवकुले जन्म नथुराम वैश्य जातिवर,
कुश द्वीप स्थान सदा, मेंढानो सवार छे.
स्वर्ण वर्ण अंग रंग ओपे छे अपार जेनो,
चन्द्र ऋषि नित्य रस करुणथी प्यार छे.
देवता सरस्वती सदाये छन्द त्रिष्टुप् छे,
त्रीजो त्रय ताप हर सुखद गान्धार छे. १०९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मध्यम स्वरूप.

छन्द मनहर.

कुन्दना सरीखो रंग एक मुख चार भुज,
कमल कुलीश वीणा दिव्य वरदान छे.
क्रौंचनी सवारी सारी नित्य नथुराम प्यारी,
महद् महेश देव करुणा निधान छे:
क्रौंच द्वीप स्थानक छे वंदनीय विष्णु ऋषि,
हरदम जेनुं हास्य रसपर तान छे;
देवकुल छन्द बृहती ने विप्र जाति वर,
चित्तहर चोथो स्वर, मध्यम महान छे. ११०

पञ्चम स्वरूप.

छन्द घनाक्षरी.

एक मुख श्याम रंग विप्र जाति पंक्ति छंद,
पितृ कुल मांहि जन्म द्वीप शाल्मलीमां स्थान.
कोकिलनी स्वारी नेह धारी नथुराम कहे,
देवता छे राणी रमा नारद ऋषि महान.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षडभुज दंडमां अखंड रह्यां राजी सदा,
वीणा द्वय शंख पद्मवर ने अभय दान.
प्रतिदिन प्यारो सुखकारक श्रंगार रस,
पांचमो प्रसिद्ध स्वर पंचम प्रतापवान. १११

धैवत स्वरूप.

छन्द मनहर.

स्वारी अश्वनी अनुप एक आस्य पीतवर्ण,
पामी ऋषि कुळे जन्म विविध वधारी लाज.
कहे नथुराम रस भयानक ने विभत्स,
देव एकदन्त छन्द उष्णिक् अपूर्व आज.
वीणा ने कलश खट्वांग फळ खूबीदार,
चार भुजमांहि धर्या, चित्त हरवाने काज.
विश्वावसु ऋषि क्षात्रि जाति स्थान श्वेत द्वीप,
छठा स्वर वतनां सुंदर गणाय साज. ११२

निषाद स्वरूप.

छन्द मनहर.

त्रिशूल कमल फरशी अने बिजोरा युक्त,
चार भुज हस्ति सम वदने उमंग छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कहे नथुराम स्वारी कारिवरनी करे छे,
सुखप्रद जेने रस करुणनो संग छे;
असुर कुळे छे जन्म जातिए छे वैश्य वडो,
स्थान द्वीप पुष्कर कपूर जेवो रंग छे;
ऋषिवर तुम्बुरु ने छन्द जगती जणाय,
सातमो निषाद स्वर देवता पतंग छे. ११३

अन्यमतानुसार स्वरोत्पत्ति.

दोहा.

ईश्वर, सद्योजात ने, वामदेव विख्यात;
अघोर, तत्पुरुष अने, ईशान अति अवदात. ११४

पछी निरंगम पेखीए, पर शिवरूप सदाय;
एथी जन्म्या अनुक्रमे, सप्त स्वर सुखदाय. ११५

स्वर जन्मतिथि.

अमल अमावास्या अने, अनुपे त्रयोदशी एम;
पञ्चमी, अष्टमी, सप्तमी, तृतीया, नवमी तेम. ११६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षड्ज आदिस्वर सप्तनी, जन्मतिथि जयरूप ;
सुज्ञ जनो समजी लिए, अनुक्रमे अनुरूप. ११७

स्वर जन्म नक्षत्र.

आर्द्रा आदि स्वर तणुं, नवम जन्म नक्षत्र ;
पूर्वाषाढा द्वितीयनुं, प्रमाण नित्य पवित्र. ११८

स्वाति, विशाखा मूळ पछी, रेवती मघा महान;
यथाक्रमे स्वर अन्यनां, नक्षत्रो मन मान. ११९

स्वर कुलदेवी.

ब्राह्मी पछी माहेश्वरी, कौमारी सुकुमार ;
वैष्णवी, वाराही हरे, भक्ततणो भयभार. १२०

माहेन्द्री मुददायिनी, चामुण्डा चितवाय ;
अनुक्रमे स्वर सप्तनी, कुळदेवी कहेवाय. १२१

स्वर ऋषि.

आङ्गिरसने भृगु पछी, कश्यप अने वशिष्ठ ;
नारद अत्रि कपिल ऋषि, स्वर सप्तना वरिष्ठ. १२२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्वर गोत्र.

आग्निवेश्य, काश्यप अने, आंगिरस अभिराम ;
वशिष्ट, भारद्वाज छे, सेवकने सुखधाम. १२३

प्रीत धरी पौलस्त्यनां, मुझ रचे छे स्तोत्र ;
अनुक्रमे स्वर सप्तनां, गणी लिओ ए गोत्र. १२४.

स्वर ग्रह प्रमाण.

रोळावृत्त.

शशि ग्रह छे षड्जनो, रिषभनो बुध ग्रह वळीओ,
शुक्र सदा गांधारतणो, ग्रह मुदथी मळीयो ;
मध्यमनो ग्रह रवि, भोम पंचमनो भयहर,
धैवतनो ग्रह गुरु, निषादतणो शनि सुखकर. १२५

स्वर गुणागुण.

षड्ज "शीतरसयुक्त," रिषभछे "शुष्कशीतकर",
"शीतरसिक" गांधार, ऊष्ण मुंको मध्यमे स्वर ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पंचम मध्यम तुल्य, सदा धैवत "शीतोष्ण सम",
"सुक्रोशीत" निषाद, कहे सहु गुणीओने गम. १२६

स्वर ऋतुभेद.

छन्द छप्पय.

षड्ऋतुमां अनुकूल, षड्ज स्वर सदाय सुखकर,
वर वसन्त ऋतुमांहि श्रेष्ठ अनुकूल रिषभ स्वर;
ग्रीष्म मांहि अनुकूल, गणो गांधार सदाये,
मध्यम वर्षा मांहि, शरद पंचम सुखदाये;
धैवत ऋतु हेमंतमां, निशाद शिशिर सुहामणो,
नेह धरी नथुराम नित, स्वर ऋतुभेद गुणी गणो. १२७

स्वरानुमान.

छन्द मनहर.

मोरना अवाज सम षड्जने सदाय मानो,
रिषभ पपीहाना अवाज सम जाणवो;

अजना अवाज सम गणवो गँधार स्वर,
क्रौंचना अवाज सम मध्यम प्रमाणवो;
कोकिलाना नाद सम पंचम प्रसिद्ध स्वर,
अश्वना अवाज सम धैवत वखाणवो ;
गजना अवाज सम नीतम निषाद नाद,
नित्य नथुराम ए विचार उर आणवो. १२८

स्वर रस प्रमाण.

दोहा.

हास्य अने शृंगारना, कलित कार्यमां खास;
पंचम मध्यम योजतां, पूरण थाय प्रकाश. १२९

वीर, रौद्र, अद्भुत महीं, षड्ज रिषभ सुखरूप ;
वळी गान्धार निषाद गण, करुणा रसें अनुप. १३०

धार विभत्स भयानके, धैवत स्वरने धीर ;
अष्ट रसो स्वर सप्त छे, विचार करजे वीर. १३१

स्वर विकृत.

दोहा.

होय शुद्धताहीन स्वर, नित्य विकृत नथुराम ;
उभय प्रकार अशुद्धता, अन्तर, बाहिर नाम. १३२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उद्भव पामि हृदयथी, अन्तर संज्ञा एह;
बाह्यिर संज्ञा प्रगट थइ, वीणादिकथी भेह. १३३

विकृत स्वर संख्या.

दोहा.

द्रुत पहेलो अद्रुत द्वितीय, त्रीजो काकली जाण;
अतिकाकली चोथो गणो, पंचम मधुप प्रमाण. १३४

अतिमधुप छठ्ठो सुभग, सप्तम विकृत वखाण;
अतिविकृत अष्टम, नवम, अन्तर उरमां आण. १३५.

दशमो सान्तर, कवक छे, एकादशनुं नाम;
द्वादशमो अतिकवकने, नित्य गणो नथुराम. ३३६

विकृतस्वर विधान.

आदि श्रुति स्वर षड्जनी, रिषभ ग्रहे जे वार;
द्रुत विकृत थाये तहां, पूर्ण धरीने प्यार. १३७

द्वितीय श्रुति स्वर षड्जनी, रिषभ ग्रहे धरी राग;
अद्रुत थाये ए वडि, समजे गुणी बडभाग. १३८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रहण करे गांधारें स्वर, रिषभ तणी श्रुति एक;
विकृत काकली नामनुं, त्यां थाये धरी टेक. १३९

रिषभ तणी बीजी श्रुति, ग्रहण करे गान्धार;
अतिकाकली विकृतें त्यहां, सर्व कहो ग्रही सार. १४०

मध्यमें स्वर गांधारनी, ग्रहण करे श्रुति आदि;
मधुप नाम विकृतें त्यहां, गणता गुणी अनादि. १४१

बीजी श्रुति गान्धारनी, मुदथी मध्यम लेय;
अतिमधुप विकृत तणी, संज्ञा सहु जन देय. १४२

स्वर पंचमें प्रीतें ग्रहे, शशि श्रुति मध्यम केरी;
विकृत विकृत नामनुं, त्यो हर्षे गुणी हेरी. १४३

युग श्रुति मध्यमनी ग्रहे, पंचम धारी प्रेम;
अतिविकृत विकृत त्यहां, कहो विसारी व्हेम. १४४

धैवतें स्वर पंचम तणी, आदि श्रुति पर होय;
विकृत अन्तर नामनुं, कहे गुणी सहु कोय. १४५

द्वयें श्रुति पंचमनी ग्रहे, धैवत नेहनिकेत;
त्यां सान्तर विकृत कहो, हृदये धारी हेत. १४६

स्वर निषाद धैवततणी, आदि श्रुति पर जाय;
कनक नाम विकृतें त्यहां, कोड धरी कहेवाय. १४७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

द्वितीय श्रुति धैवत तणी, नेहे ग्रहे निषाद;
विकृत छे त्यां अतिकवक, वार्ता विना विवाद. १४८

संगीत पारिजातानुसार विकृत भेद.

रोळा वृत.

षड्ज शुद्ध स्वर सदा रिषभना भिन्न भेद छे,
संगीतपारिजात, मांहि वर्णन अछेद छे :
रिषभ 'दयावती' ग्रही, पूर्व संज्ञा ले धारी,
''रजनी'' श्रुतिए जइ, थाय कोमल सुखकारी. १४९

'रतिका' श्रुतिए जतां, रिषभ स्वर शुद्ध थाय छे,
'रौद्री' श्रुति धारतां, तीव्र संज्ञा धराय छे ;
उभय श्रुति गांधार, तणी ग्रही थाय तीव्रतर,
सर्व भेद गांधार, तणा कहुँ सुणो गुणीवर. १५०

'रतिका' ग्रही गान्धार, पूर्व संज्ञा ने पामे,
रहेता 'रौद्री' परे कलित कोमलता जामे ;
शुद्ध थाय गांधार, श्रुति 'क्रुद्धा' पर जाये,
वळी 'वज्रिका' ग्रही, तीव्र तुर्तज ते थाये. १५१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

श्रुति 'प्रसारिणी' ग्रही, तीव्रतरता स्वीकारतो,
प्हांची श्रुति 'प्रीति' ए, तीव्रतम नाम धारतो ;
अतितीव्रतम थाय, श्रुति 'संमार्जनी' धारी,
मध्यम स्वरना भेद, हवे वर्णवुं विचारी. १५२

थाये मध्यम पूर्व, " प्रसारिणी " श्रुतिए ठरतां,
" प्रीति " पर प्होंचतां, धारी लेतो कोमलता ;
' संमार्जनी ' संगथी, शुद्ध स्वर मध्यम थातो,
खास ' क्षिति ' श्रुतिग्रही, तीव्र कोडे कहेवातो. १५३

' रक्ता ' श्रुतिने लही, तीव्रतर थातो तेने,
' संदीपिनी ' श्रुतिसंग, तीव्रतम बनतो खंते ;
पंचम ' आलापिनी ' श्रुतिऊपर जइ ठेरे,
तव पंचमने शुद्ध, इपथी गुणीजन हेरे. १५४

प्रथम ' मदंती ' श्रुतिपरे, धैवत जव ठरतो,
प्रेमधारीने तुर्त, पूर्व संज्ञाने धरतो;
' रम्या ' श्रुतिपर रही, शुद्ध धैवत बनी जाये,
' उग्रा ' श्रुतिपर जतां, तीव्र तेतेथी थाये. १५५

' रम्या ' श्रुतिपर जतां, पूर्वपणुं निषाद पामे,
' उग्रा ' श्रुतिने ग्रही, शुद्ध संज्ञाथी जामे ;
' तीव्रा ' श्रुतिनो संग करीने तीव्र थायछे,
' कुमुद्वती ' पर जतां, तीव्रतर ते गणाय छे. १५६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'मंदा' श्रुतिपर रहीं, तीव्रतम संज्ञा लेछे,
ए विकृतस्वर भेद, गणी गुणी कांडे केछे ;
एक बीजानी श्रुति, ग्रहे जय सात शुद्धस्वर,
विधविध विकृतभेद, थाय नथुराम निरंतर. १५७

अनापेविलासानुसार विकृतभेद.

छन्द हरिगीत.

वर्णवुं भेद विशेष हुं वळी सूक्ष्म विकृत स्वरतणा,
व्हालें अनोपविलासमां वर्णन कर्या गुणीए घणा ;
रही 'रंजनी' श्रुति पर रिषभ मोदे मृदु संज्ञा धरे,
गांधार श्रुति 'रौद्री' ग्रहे तो तुर्त मृदु स्थाने ठरे. १५८

'रतिका' श्रुति गांधार ग्रहीं ने मन्द संज्ञा पामतो,
रही 'रंजनी' श्रुति ऊपरे अति मन्द स्थाने जामतो ;
'प्रीति' श्रुति पर प्होचतां मध्यम मृदुता धारतो,
प्होंची 'प्रसारिणी' पर मुदे अति मन्दता विस्तारतो. १५९

व्हाले ग्रहे श्रुति 'वज्रिका' तव मन्द मध्यम थाय छे,
कायम थतां 'क्रुद्धा' परे, शुद्ध 'ग' कलित कहेवाय छे ;
'रौद्री' श्रुति पर राजतां मन्द 'ग' बने मध्यम सदा,
'रतिका' श्रुति ग्रहीं राखीं शुद्ध रिषभ बने छे सर्वदा. १६०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'संदीपिनी' श्रुति पर रहीने दीप्तपणुँ पंचम लहे,
धैवत रहीने 'रोहिणी' पर तुर्त मृदु संज्ञा ग्रहे ;
धैवत बने छे मन्द संग'मदन्ती' श्रुतिनो राखतां
'आलापिनी' धॅ ग्रहे तदा गुणी शुद्ध पंचम दाखतां. १६१

'उग्रा' श्रुति आनंदथी ग्रही मन्द थाय निषादॅ स्वर,
'रम्या' श्रुति ग्रहीं शुद्धता ले नेह धारी निषाद वर ;
श्रुति 'रोहिणी' पर राजतां संज्ञा सबळ मधनि धरे,
अति मन्द धानि संज्ञा धरे जब श्रुति 'मदंती' परे ठरे. १६२

सुनिषाद ऊपरना सुनी, 'तीव्रा' श्रुति धारण करे,
तब तीक्ष्ण संज्ञाबान थइ हर कोइनां मनडां हरे ;
फरी तेज षड्ज तणी श्रुति बीजी 'कुमुद्वती' ने लही,
नेहे निषाद विराजतो झट तीक्ष्णतर संज्ञा ग्रही. १६३

वळी तेज षड्ज तणी श्रुति 'मन्दा' निषादॅ ग्रहे यदा,
महॉ मोदथी मन मग्न थईने तीक्ष्णतम बनतो तदा ;
'उग्रा' श्रुति धैवतॅ ग्रहे नेहे निषाद तणी बळे,
तब तुर्त धैवत स्वर सदाये तीक्ष्ण संज्ञामां भळे. १६४

वळी शुद्ध निध संज्ञा मळे जब 'क्षोभिणी' पर जाय छे,
'तीव्रा, श्रुति पर तुर्त जातां तीव्रनिध कहेवाय छे ;
धैवत 'कुमुद्वती' धारी ने अतितीक्ष्ण धर्म स्वीकारतो,
मध्यम 'क्षिति' श्रुति पर रही, द्रढ तीक्ष्ण पदवी धारतो. १६५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'रक्ता' श्रुति पर स्थिर थतां अति तीक्ष्णता तेने धरे,
' संदीपिनी ' संगे रही ने तीक्ष्णतम निजने करे ;
गांधार जइने ' वज्रिका ' पर तीक्ष्ण संज्ञामां जतो,
त्होची 'प्रसारिणी' उपर प्रीते तीक्ष्णतर तुर्तज थतो. १६६

गांधार थाये तीक्ष्णतम मळतां 'प्रीति' श्रुतिने मुदे,
'संमार्जनी' ग्रहीं शुद्ध मग थाये बनी राजी रुदे ;
'क्षिति' श्रुति परे बसी तीक्ष्ण नामनुँ मग महानँ स्वरुप ले,
'रक्ता' श्रुति ग्रहीं तीक्ष्णतम-मग राग धारी रूप ले. १६७

' रौद्री ' श्रुति ग्रहीं रिषभ तीक्ष्ण, विशुद्ध गरि ' क्रुद्धा ' ग्रही,
गांधार तीक्ष्ण बने रिषभ श्रुति ' वज्रिका' व्हाले लही ;
प्रेमे ' प्रसारिणी' पर रहेतां तीक्ष्णतर-गरि थाय छे,
'प्रीति' श्रुति ग्रही तीक्ष्णतम-गरि नित्य नाम धराय छे. १६८

' संमार्जनी' ग्रहीं स्नेह धारी शुद्ध-गरि समजाय छे,
' क्षिति श्रुति उभय पंचम तणी ग्रहीं तीक्ष्ण म. ग. र मनाय छे;
स्वरभेद सूक्षम स्थूॅल कहीं गुणी ज्ञान तुल्य गणावता,
नथुराम नेह थकी ग्रहे जे जेहने मन भावता. १६९

विकृत स्वर विषे विशेष समजुती

दोहा.

निज आगळनी एक श्रुति, जे स्वर ग्रहे सदाय;
विकृत स्वर वर्णन विषे, तेह तीव्र कहेवाय. १७०

उभय श्रुति आगळ तणी, ग्रही तीव्रतम होय;
त्रय श्रुति ग्रहतां तीव्रतम, कहे गुणी सहु कोय. १७१

जेमां आगळनी श्रुति चार विशेष समाय,
विकृत पामी तेह स्वर, अतितीव्रतम थाय. १७२

कोमल स्वर कहेवाय छे, करी एक श्रुति त्याग;
पूर्व बने तजी उभय श्रुति, उरमां धरी अनुराग. १७३

स्वर पाछळनी श्रुति ग्रही, कोमलादि कहेवाय;
आगळनी श्रुति धारतां, स्थिर तीव्रादिक थाय. १७४

अन्य स्वरनी श्रुति ग्रही, जे स्वर करे निवास;
ते स्वर 'साधारण' पदवी, पामे धरी हुलास. १७५

साधारण सु स्वर रिषभ, साधारण गांधार;
तीव्र थाय ए उभय स्वर, पूर्ण धरीने प्यार. १७६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्वर अन्तर गांधार पण, तुर्त तीव्रतर थाय;
थाय तीव्रतर तेज तो, मृदु मध्यम कहेवाय. १७७

साधारण मध्यम अने, अन्तर मध्यम बेय;
तीव्र अने तर तीव्रनी, शुभ संज्ञा ग्रही लेय. १७८

शुभ स्वर मध्यम तीव्रतम, पंचम मृदु मनाय;
धैवत साधारण सदा, गणतां तीव्र गणाय. १७९

साधारण, काकली अने, कैशिकक्रमानुसार;
तीव्र, तीव्रतर, तीव्रतम, संज्ञिक छे सुखकार. १८०

समान कल्प थवा थकी, मृदुपड्ज मुदधाम ;
निषाद थाये तीव्रतम, नेह सहित नथुराम. १८१

स्वर मित्र शत्रु भेद.

शुद्ध विकृत स्वर भेद मळीं, प्रथम वादी स्वर थाय;
संवादी, अनुवादीने, विवादी स्वर वखणाय. १८२

अमात्य संवादी अने, वादी नृपने स्थान;
अनुवादी सेवक सरस, विवादी शत्रु समान. १८३

राग अने रागिणीमहीं, मुख्य जेह स्वर होय;
वादी स्वर तेने कहे, कोड धरी सहु कोय. १८४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मददगार मुदथी बने, वादी स्वरने नित्य;
संवादी तेने कहो, पूर्ण धरीने प्रीत. १८५

जे स्वरना आगमनथी, रसप्रद राग प्रमाण;
सुधरे नाहि बगडे नाहि, ए अनुवादी जाण. १८६

राग रूपने फेरवे, जे स्वर करी प्रवेश;
तेह विवादी जाणवो, हानि करे हमेश. १८७

ग्राम विचार.

एक ठाम आनंदथी, वसे कुटुम्बी जेम;
स्नेहे स्वर श्रुति मूर्छना, वसे ग्राममां तेम. १८८

आदि षड्ज, मध्यय द्वितीय, तृतीय ग्राम गान्धार,
नंद्यावर्त, जीमूतने, सुभद्र अवर उचार. १८९

षड्ज अने मध्यमतणो, अवनिपर उपयोग;
तृतीय ग्राम गान्धारनो, इन्द्र करे उपभोग. १९०

षड्ज ग्रामना सहुस्वरो, निजनिज श्रुति रहे राखी;
षड्जग्राम कहेता गुणी, दिव्य नजरथी दाखी. १९१

मध्यमें स्वर मेरु बनी, मुख्य स्थाने स्होय;
पंचम पामे त्रय श्रुति, त्रय निषादनी जोय. १९२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षड्ज ग्रामना स्वर समा, अन्य स्वरो श्रुतिवान,
मध्यम ग्राम महान ए, नेह करो निदान. १९३

मेरु स्थाने म्हालतो, त्रय श्रुति ग्रही गान्धार,
त्रय श्रुतिना सहु अन्नर स्वर, निषादनी श्रुति चार. १९४

द्वय श्रुतिनो स्वर षड्ज बनी, दिव्य दिपावे देह,
गणो ग्राम गान्धार त्यां, नित्य गुणी धरो नेह. १९५

ग्राम देवता.

दोहा.

सावित्रीपति षड्जना, मापति मध्यम ग्राम,
गौरीपति गान्धारना, नित्य देव नयुराम. १९६

ग्रामोत्पत्ति.

षड्ज ग्राम भूलोकथी, **मध्यम** भुवः पुनित,
स्वर्लोकथी **गान्धारनी**, उत्पत्ति शुभ रीत. १९७

मूर्छना.

श्रोताओने सुखद अति, राग सिद्धिनो हेतु,
कहुं **मूर्छना** एहने, संगीतसागरसेतु. १९८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्रमथी साते स्वर तणो, आरोह सु अवरोह;
नाम **मूर्छना** एहनुं, महा उपावण मोह. १९९

एकवीश ए मूर्छना, ग्राम ग्राम प्रति सात,
व्हाल्ह थकी वर्णन करुं, अखिल नाम अवदात. २००

रोळावृत.

उत्तरमन्द्रा आदि, बीजी रंजनी गणी राखो,
त्रीजी **उत्तरायता**, चोथी **शुद्धषड्जा** दाखो;
पंचमी **मत्सरिकृता**, **अश्वक्रान्ता** शुभ षष्टमी,
सप्तमी **अभिरुद्गता**, आदि ग्रामे रही छे रमी. २०१

सौवीरी आदिमां, द्वितीय **हरिणाश्वा** गणीए,
तृतीय **कलोपनता**, चतुर्थी **शुद्धमध्या** भणीए;
पांचमी **मार्गी** महद, **पौरवी** छठ्ठी सारी,
सप्तमी छे **हृष्यका**, द्वितीय ग्रामे हितकारी. २०२

नन्दा आदि द्वितीय **विशाखा** प्रबल प्रमाणो,
सुमुखी तृतीय, चतुर्थ **विचित्रा** वळी वखाणो;
पंचमी **रोहिणी** छठ्ठी **सुखा**, **आलापिनी** सप्तमी,
तृतीय ग्राम गान्धार महीं रही गुणीओने गमी. २०३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सर्व मूर्छना तणी, चार जाति भाळी भली,
शुद्ध, काकली, अन्तर ते पछी अन्तरकाकली ;
मन्द्र, मध्य ने तार स्थानना योगथी थाये,
प्रगट मूर्छना रूप, करी आरंभ सदाये. २०४

षड्जग्राम-उत्तर मन्द्रा.

छंद छप्पय.

उत्तरमन्द्रा शरु थवानो शुद्ध स्वर पञ्चम,
शुद्ध धैवत छे द्वितीय, तृतीय शुद्ध निषाद नौतम ;
मध्यस्थानी सहु चतुर्थ स्वर वळी षड्ज शुद्ध छे,
रिषभ शुद्ध पांचमो, छठ्ठो गांधार विशुद्ध छे;
मध्यम तीव्र गणी पछी, तीर स्थानना चार स्वर,
सप्त मळी थइ मूर्छना, उत्तरमन्द्रा मोदघर. २०५

षड्जग्राम रंजनी.

छंद एकत्रीशा सवैया.

मध्यस्थानी पंचमनी पहेली श्रुतिनो मध्यम तीव्र ग्रहीं,
आरोहण करी तार स्थानना तीव्र मध्यमपर पहोंची सही;

अवरोहण करी आवी पाछी शरुआतना स्वर माथे,
रसिक मूर्छना रंजनी रुडी प्रगट थाय छे सुख साथे. २०६

षड्जग्राम-उत्तरायता.

मध्यस्थानी शुद्ध गान्धारथी शरु थई आरोह करे,
तारस्थानना शुद्ध गान्धार समीपे व्हालथरी विचरे ;
अवरोहण करी आवे पाछी असल स्थानमां रुडी रीत,
शुद्धषड्जा मूर्छना मानीए प्रतिदिन पूर्ण वधारी प्रीत. २०७

षड्जग्राम-मत्सरिकृता.

मध्यस्थानी प्रथम षड्जथी चडवा लागे चोंप करी,
तारस्थानना षड्ज आदिने पकडे क्रमथी कोड धरी ;
आनंदे पाछी उतरीने रागे निज स्थाने रमती,
मत्सरिकृता मूर्छना मोदथी नित गुणीमंडल ने गमती. २०८

षड्जग्राम-अश्वक्रान्ता.

मन्द्रस्थानी शुद्ध निषादथी शरु थइ चडती चटके,
मध्यस्थानी शुद्ध निषादे आनँद धारीने अटके;

अवरोहण करीं पाछीं त्यांथी अमल स्थान ऊपर ठरती,
अश्वक्रान्ता अनुप मूर्छना भूरि गुणीने आनंद भरती. २०९

षड्जग्राम–अभिरुद्गता.

मन्द्रस्थानी धैवत स्वरथी मध्यस्थानना धैवतने,
आरोहण करीं मळे उमंगे देखाडे निज दैवतने ;
अवरोहण करीं पाछी आवे शरुआतना स्वर माथे,
अभिरुद्गता मूर्छना कहोने गणावता गुणीजन गाथे २१०

मध्यमग्राम–सौवीरी.

छन्द छप्पय.

शुद्ध मध्यम स्वर प्रथम, द्वितीय पंचम कोमळ स्वर,
धैवत कोमळ तृतीय, वेद कोमळ निषाद वर:
शर कोमळ स्वर षड्ज, मध्यस्थानी सहु जणो,
कोमळ रिषभ गंधार, तार स्थानी उर आणो ;
ए रीते स्वर सात चडीं, गन्धारथीं उतराय छे,
शुभ **सौवीरी** मूर्छना, गुणीओ गाते गाय छे. २११

मध्यमग्राम-हरिणाश्वा.

छन्द एकत्रीशा सवैया.

मध्यस्थानी स्वर कोमल गांधार थकी शरु थाये छे,
तार स्थानना स्वर गांधार सुधी चोपे चडी जाये छे;
अवरोहण करी त्यांथी पाछी शरुआतनो स्वर झाले,
हरिणाश्वा मूर्छना मोदथी शुभ रीते गीते म्हाले. २१२

मध्यमग्राम-कलोपनता.

मध्य स्थानी कोमल रिषभथी उपर चाद्र ग्रभारी चडे,
तारस्थानना रिषभ उपरे ठाठ माठथी ठीक ठरे;
अवरोहण करनी फरी त्यांथी मध्यस्थानना रिषभ लगी,
कलित **कलोपनता** ए महद् मूर्छना प्रेम पगी. २१३

मध्यमग्राम—शुद्धमध्या.

मन्द्रस्थाननो षड्ज सुकोमल चडवानो चारु स्वर छे,
मध्यस्थानी षड्ज सुकोमल अटकवानुं उत्तम घर छे;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अवरोहण करी त्यांथी पाछी आवे निजना स्थान परे,
शुद्धमध्या मूर्छना एहने आनंदथी गुणीगण उच्चरे. २१४

मध्यमग्राम—मार्गी.

मन्द्रस्थानी निषाद कोमल पकडी परवरती प्रेमे,
मध्यस्थानी निषाद कोमल करती प्राप्त प्रबल नेमे;
अनुक्रमे उतरी फरी त्यांथी प्रथम निषाद परे ठरती,
महद मूर्छना मनहर मार्गी उद्भवीने आनंद भरती. २१५

मध्यमग्राम—पौरवी.

मन्द्रस्थानी कोमल धैवतथी आरोहण करी आनंदे;
मध्यस्थानी कोमल धैवत लगी सत्वर जाति स्वच्छन्दे;
अवरोहण करी आवे पाछी निज स्थानकपर नेह धरी,
प्रबल मूर्छना पौरवी नामे प्रसिद्ध संगीतमां प्रसरी २१६

मध्यमग्राम—हृष्यका.

मन्द्रस्थानी कोमल पंचम शरु थवानो स्वर सारो,
मध्यस्थानी कोमल पंचम चडी पहोंचवानो प्यारो;
अवरोहण करी असल स्थानमां विराम पामे व्हाल धरी,
कही मूर्छना हिते हृष्यका भुवने भव्य प्रताप भरी. २१७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गान्धारग्राम-नन्दा.

छन्द छप्पय.

अति कोमल गांधार, मध्य कोमल मध्यम भण,
पंचम अति कोमळो, अति कोमल धैवत गण;
अति कोमळो निषाद, षड्ज अति कोमल सारो,
मध्यस्थानी ए सर्व, श्रुतिथी उरमां धारो;
तारस्थाननो स्वर त्वरित, रिषभ अति कोमल लहो,
नन्दा नामनी मूर्छना, क्रोध धरी गुणीजन कहो. २१८

गान्धारग्राम-विशाला.

छन्द सवैया एकत्रीशा.

मध्यॅस्थानी अति कोमल रिषभथी शरु थइ सत्वर चाले,
तारस्थानी अति कोमल रिषभ ग्रहण करती वेगे व्हाले;
निज स्थानकमां तेह धरी फरी वळी आवीने करे विराम,
मंदेथी मूर्छना वखाणो, गुणीगण दई विशाला नाम. २१९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गान्धारग्राम--सुमुखी.

छन्द सवैया एकत्रीशा.

मन्द्रस्थानी षड्ज स्वरथकी अहिं थइ चालि चोंपे,
मध्य स्थानना अति कोमल स्वर षड्ज उपर आवी ओपे;
एज क्रमेथी उतरी नीचे निज स्थानकमां करे विहार,
मरम मूर्छना सुमुखी नामे प्रतिदिन पूर्ण वधारे प्यार. २२०

गान्धारग्राम--विचित्रा.

छन्द सवैया एकत्रीशा.

मन्द्रस्थानी निषाद स्वरथी चडवा लागे चाह धरी,
मध्यस्थानी निषाद स्वर पर पहोंचे भव्य प्रमोद भरी;
उतरती उत्तम रीते फरी निवास करता निज स्थाने,
मांगलिक मूर्छना विचित्रा मान सहित गुणीगण माने. २२१

गान्धारग्राम--रोहिणी.

छन्द सवैया एकत्रीशा.

मन्द्रस्थानी धैवत स्वरथी उपर चडे भरी खंत खरे,
मध्यस्थानी धैवत स्वरनो प्रेम वधारी स्पर्श करे;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उतरी आवे अभिनव गतिथी व्हाले निज स्थाने विरमे,
सर्व मान्य मूर्छना रोहिणी गुणीमंडलने नित्य गमे. २२२

गान्धार ग्राम-सुखा.

छन्द एकत्रीशा सवैया.

मन्द्रस्थानी पंचम स्वरथी शुभ आरोहण शरु करे,
मध्यस्थानी पंचम उपर यथाक्रमे जइ ठीक टरे;
मूळ स्थानना पंचम उपर, अवरोहण करी फरी आवे,
श्रेष्ठ नाम मूर्छना सुखानुं भक्त गुणीजनने भावे. २२३

गान्धार ग्राम-आलापिनी.

छन्द सवैया एकत्रीशा.

मन्द्रस्थानी मध्यम स्वरथी चाले उमँग भरी अंगे,
मध्यस्थानी मध्यम स्वने आरोहण करी आलिंगे;
उत्क्रमे अवरोहण करीने अतुल स्थानमां आवी वसे,
सुन्दर मूर्छना रुपाळी आलापिनी रहीं भरी रसे. २२४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मूर्छना देवता.

रोळावृत.

उत्तरमन्द्रा तणा, देवता यक्ष कहाए,
राक्षस रंजनी तणा, लक्ष्मां सदा लहीए;
उत्तरायता तणा, देवता ब्रह्मा भणीए,
शुद्धषड्जा मूर्छना, तणा पण विधि वर्णवीए. २२५

मत्सरिकृता महान, देव नटनागर नौत्तम,
अश्वक्रान्ता तणा, अश्विनी कुमार उत्तम;
अभिरुद्गता अनुप, देवता वरुण वखाणो,
षड्जग्रामनी सप्त, मूर्छना जुगते जाणो. २२६

सौवीरीना सबल देवता शंभु सुखकर,
हरिणाश्वाना इन्द्र देवता दारुण दुःखहर;
पवन देवता प्रबल, कलित कलोपनताना;
शुद्ध मध्याना महद देव गन्धर्वो मान्या. २२७

शुद्ध देवता सिद्ध मार्गीना महाँ मुदवर छे,
पौरवीना प्रतिपाल, देवता विरञ्चि वर छे ;
होय हृष्यका तणा देव रवि शंका तजजो,
मध्यम ग्रामनी सप्त मूर्छना सत्य समजजो. २२८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छन्द हरिगीत.

मनहर चतुर्दश मूर्छनाओ षड्ज मध्यम ग्रामनी,
छे शुद्ध, अन्तर, काकली ने तद्वयान्वित नामनी ;
ए चार जाति थकी चतुर्दश मूर्छना छप्पन गणी,
ए सर्व सप्त प्रकारथी त्रयशत परे बाणु बणी. २२९.

ए मूर्छनामां आदि स्वर तजी अन्यने उच्चारवो,
त्यांगल स्वरने तंतथी अंते यथाक्रम धारवो;
ए रीत साते स्वर तणी रमणीय युक्ति रचाय छे,
तव भेद त्रयशत बाणु तेना सर्वदा स्थिर थाय छे. २३०

दोहा.

शुद्ध मूर्छना सर्वथी, स्हेजे समजी शकाय;
उदाहरण दउं अन्यनां, जेथी भ्रान्ति जाय. २३१

उभय आदि श्रुति षड्जनी जेने ग्रहे निषाद;
काकली ए कहेवाय छे, विश्वे विना विवाद. २३२

मध्यमनी द्वय आदि श्रुति, ग्रहे शुद्ध गान्धार ;
अन्तर संज्ञा एहने, प्राप्त थाय धरी प्यार. २३३

अन्तरकाकली युक्त ज्यां, मूर्छा नेहनिकेत ;
एने संज्ञा आपवी, त्वरित तद्वयोपेत. २३४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शारीरवीणाना ग्रामोनी मूर्छना.

दोहा.

वपुवीणाना ग्रामनी, मूर्छा अति अभिराम,
नारदमतने अनुसरी, नाम दिए नयुराम. २३५

उत्तरमन्द्रा अभिनवी, अभिरुद्गता अनुप;
अेम अश्वक्रान्ता अने मौवीरी सुखरूप. २३६

होय हृष्यका अे पछी, उत्तरायता आप;
रंजनीँ आप्यायिनीँ अने, विश्वहृता वर माप. २३७

चन्द्रा, हेमकपर्दिनी, मैत्री छे सुखमाल;
चन्द्रावतीँ पाछळ पिभा, नन्दा करे निहाल. २३८

वात विशालानी वडी, सुमुखी, विचित्रा श्रेष्ठ;
रेवतीने सुषा हरे आलापा उर कष्ट. २३९

तान.

मनोहारिणी मूर्छना, व्होरी ले विस्तार;
तेनी संज्ञा तान छे, प्रगटे अमित प्रकार. २४०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मुख्य भेद एमां उभय, गणे सर्व गुणवान;
शुद्ध कूट संज्ञा धरे, तेने तान महान. २४१

सात स्वरोनी मूर्छना, ओळखाय छे अद्य;
स्वर घटावतां ताननी, संज्ञा पामे सद्य. २४२

शुद्ध तान षाडव बने, शशि स्वर करतां दूर;
युग स्वर तजतां थाय छे, ओडव तान जरुर. २४३

शुद्ध मूर्छनाथी बने, मध्यतानना भेद;
षाडव ओडव द्वय मळी, अंक अष्ट पर वेद. २४४

रोळाव्रत.

षाडव ताननोॅ कहुं, प्रथम संख्या सुखकारी,
गुणीॅजन समजे सदा, व्हाल परिपूर्ण वधारी;
षड्ज ग्रामनी सप्त, मूर्छना मांहे क्रमथी,
षड्ज रिषभ पंचम निषाद स्वर तजतां श्रमथी. २४५

उपजे अठ्यावीश, तान षाडव सुखदाता,
जेने गुणीॅजन गाय, सदा संगीॅतमदमाता ;
मध्यम ग्रामनीॅ सप्त मूर्छनामांथी ज्यारे,
क्रम सह षड्ज रिषभ गांधार तजाये प्यारे. २४६

एकवीश उद्भवे, तान तत्र पूरण प्रीते,
चालिश पर नव थाय, उभय ग्रामनां सु रीते ;
उपजे ओडव तान, उभय ग्रामे मुद धारी,
वर्णन व्हालें करुं, विविध रीते विस्तारी. २४७

षड्ज ग्रामनी सप्त, मूर्छनामांहिं मानो,
स, प. ग. नि रि प, त्यागतां थाय एकवीश तानो ;
मध्यम ग्रामनी सप्त, मूर्छनाथी वर क्रम वश,
रि, ध, ग. नि करतां दूर, उद्भवें तान चतुर्दश. २४८

त्रिय ओगणपच्चाश, परें पांत्रीश धराये,
षाडव ओडव शुद्ध तान चोराशी थाये ;
कहुं यथाक्रम नाम, सर्वनां न्यारां न्यारां,
षाडव ओडव तान, सदा समजाये सारां. २४९

आदि **अग्निष्टोम,** द्वितीय **अत्यग्निष्टोम** वर,
वाजपेय छे तृतीय **षोडशी** चतुर्थ मुदवर ;
पुण्डरीक पांचमे, षष्ठमे **अश्वमेध** भण,
राजसूय सप्तमे, षड्ज स्वर हीन तान गण. २५०

आदि **स्विष्टकृत, बहु सवर्ण** द्वय **गोसव** त्रीजे,
महाव्रत गणो चतुर्थ, **विश्वजित** पंचम लीजे ;
ब्रह्मयज्ञ षष्टमे, सप्तमे **प्राजापत्य,**
रिषभ हीन ए तान, सप्त गुणी गणजो नित्य. २५१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अश्वक्रान्त, रजक्रान्त, विष्णुक्रान्त ने वखाणो,
सूर्यक्रान्त, गजॅक्रान्त, सुबलभृत उरमां आणो;
नागयज्ञ सातमुं, सर्व गुणी जाहिर जाणो,
पंचम हीन पवित्र छ, स्वरनां तान प्रमाणो. २५२

चतुर्मास्य, संस्थाख्य, शत्रने अकथ भणीजे,
सौत्रामणि, चित्रा, उद्भिद् ए पछी गणीजे;
निषाद हीन नविन, सप्त तानो ए सारां,
षड्ज ग्रामनां सर्व, प्रबल गुणीओने प्यारां. २५३

मध्यम ग्रामनी मांहे, अन्य तानो जे आवे,
षाडव भेदे शुद्ध गुणीजन नाम गणावे;
सावित्री सुखरूप, अर्धसावित्री अभिनव,
भलुं सर्वतोभद्र, ए पछी पामे उद्भव. २५४

आदित्यायन अने, गवायन तान गणाये,
सर्वायनना पछी, क्रौडपायन कहेवाय;
सदा षड्ज स्वरहीन, सप्त तानो ए शोभे,
लक्षावधि गुणी तणां जेह पर चितडां लोभे. २५५

अग्निचित द्वादशाह पाछळ उपांश आपे,
सोमाद्धयना पछी, अश्वप्रतिग्रह पद रोपे;
बर्हि, अभ्युदय सप्त, रिषभ विण तान विराजे,
दिव्य सुखो देनार, गुणीनां मुखमां गाजे. २५६

शोभे छे सर्वस्व दक्षिणा आदि अनहद,
दीक्षा ने सोमाख्य, समीदाह्वय सुहर्षप्रद;
सुंदर स्वाहाकार, तननपात नाम तानो,
गोदोहन सप्तमुं, हीन गान्धारथी मानो. २५७

उभय ग्रामना हवे, तान ओडव उच्चारुं,
पांच स्वरोथी प्रबल, नक्की करशे दुःख न्यारुं,
ईडा पछी नरमेध, श्येन, वज्र ईव मानो,
कह्यां आङ्गिरा, कङ्क, षड्ज पंचम विण तानो. २५८

षड्ज ग्रामनां सप्त, तान ए रह्यां प्रकाशी,
ज्योतिष्टोम सुदर्श, नान्दी ने पौर्णमासी ;
हयप्रातिग्रह ने रात्रि, सप्तमुं सौरभ सुंदर,
निग स्वर हीन नकिन, तान ओडव मुद मंदिर. २५९

सौभाग्यकृत सबल, कारीरी शान्तिकृत गण,
पुष्टिकृत पछी वैनतेय ने भाव धकीभण ;
उच्चाटनने वशीकरण सर्वे छे सारां,
रिषभ पंचमे रहित, पूर्ण गुणीओने प्यारां. २६०

षड्ज ग्राममां तान, एकत्रीश ओडव ए छे,
जेने गाई जबर, गुणीजन ल्हावो ले छे;
त्रिलोकमोहन वीर पछी कँदर्पबलसातन,
शंखचूड, गजछाय, रही रौद्री मनरंजन. २६१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विष्णु विक्रम सप्त, रिषभ धैवत स्वर त्यागी,
ओडव तानो गाय, सदा गुणीओ अनुरागी;
भैरव, कामद उभय, आदिमां कोडे कहीए,
अवभृत, अष्टकपाल, लक्षमां ए पछी लहीए. २६२

सुखदाविक्रांत सबल, स्विष्टकृत पछी प्रमाणो,
वषट्कार वरदाई, मोक्षदा जाहिर जाणो;
स्वर निषाद गान्धार हीन ए मध्यम ग्रामे,
ओडवतानो कह्यां, नेह धारी नगरामे. २६३

कूटतान.

दोहा.

साते स्वर मूर्छा तणा, उलट पुलट थइ जाय;
तेह मूर्छना भेदथी, कूटतान कहेवाय. २६४

अगणित भेदो एहना, गंभीर गाननिधान;
तेथी त्यागी तेत कहुं, एक स्वरादि तान. २६५

रांळावृत्त.

शाशि स्वर आर्चिक नाम, जन्म 'ऋग्वेद'थी ले छे,
'यजुर्वेद'थी जन्म, नाम गाथिक स्वर ते छे;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्रय स्वर सामिक नाम, 'सामवेद' ज अभिनव छे,
नाम स्वरान्तर चतुः स्वर 'अथर्वणे' उद्भव छे. २६६

शर स्वर ओडव नाम, वेद द्वयथी जन्मे छे,
षट् स्वर षाडव तणुं वेद त्रय कारण के छे;
सात स्वरो संपूर्ण, तान नथुराम निहाळो,
ऋग यजु साम अथर्वणथी भले उद्भव भाळो. २६७

पुनरुक्तितान.

दोहा.

एकज स्वरनो थाय ज्यां, अधिक वखत उच्चार;
ए पुनरुक्तितान नित, प्रगटे अमित प्रकार. २६८

सूक्ष्म भेद ए सर्वना, करी प्रस्तार पमाय;
विषय वडो पुस्तक लघु, अहीं नहि उतराय. २६९

वर्णविचार.

दोहा.

गान महीं जे थाय छे, सुंदर स्वरविस्तार;
एने संज्ञा वर्णनी, आपे गुणी अपार. २७०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एक स्थाइ आरोहीद्वय, अवरोही त्रयमान;
चोथो संचारी कही, गुणवंता गुणवान. २७१

स्थाइ.

दोहा.

अटकी अटकी आनंदथी, उत्तम स्वर उच्चराय;
मोदभरण हानिहरण, स्थाई त्यां स्थिर थाय. २७२

आरोही.

दोहा.

क्रम आरोह थकी अमल, स्वर विस्तारकराय;
आरोही एनुं अवर, नौतम नाम धराय. २७३

---

१. स. स. स. । रि. रि. रि. । ग ग ग । म म म । प प प
ध. ध ध । नि. नि नि ।
अथवा स. रि. ग. म. प. ध नि. ॥

२. स. रि. ग. म. प. ध. नि.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अवरोही.

दोहा.

ग्रहण करे अवरोहक्रम, स्नेहे स्वर विस्तार ;
अवरोही एने कहे, पूर्ण वधारी प्यार. २७४

संचारी.

दोहा.

स्थाई, आरोही अने, अवरोही सुखखाण ;
वर मिश्रित विस्तारने, शुभ संचारी जाण. २७५

अलङ्कार.

दोहा.

स्थाई, आरोही अने, अवरोही संचारी;
अखिल स्थिर कलायुक्त जे, वर्णनरचना प्यारी. २७६

---

१. नि. ध. प. म. ग. रि. सा.

२. सा. सा. रि रि. गा गा. मा रि गा. नि धा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शोभावे नित गीतने, अलङ्कार ए जाण;
अडसठ भेदो एहना, प्रसिद्ध शास्त्रप्रमाण. २७७

स्थाइगत अलङ्कार.

दोहा.

एकज स्वर आव्या करे, जेने आदि अंत;
स्थाईगत एने कहे, मुदथी गुणी महंत. २७८

प्रसन्नादि आदि कह्यो, प्रसन्नान्त युग जाण;
तृतीय प्रसन्नाद्यन्त छे, समजी कहे सुजाण. २७९

चोथो प्रसन्नमध्य छे, शर क्रम रेचित सार;
षट् प्रस्तार सुहामणो, सप्त प्रसाद विचार. २८०

स्थाई गत ए सप्त छे, अलंकारना अंग;
कहुं लक्षणो क्रम सहित, उरमां धरी उमंग. २८१

अन्य मते ए सातना, निश्च कहे नथुराम;
भद्र, नन्द, चित, सोम ग्रीव, भाल, प्रकाशक नाम. २८२

---

१. स रि स । रि ग रि । ग म ग । म प म ।
प ध प । ध नि ध । नि स नि । स नि स ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मन्द्रादि स्वरविचार.

दोहा.

प्रथम मूर्छनानो स्वर, कल्पित मन्द्र कहवाय;
तेथी द्विगुणो तार स्वर, कल्पित नित्य लेवाय. २८३

पूर्व स्थानमां होय ते, मन्द्र प्रसन्न मनाय;
पेखाये पर स्थानमां, ते स्वर तार गणाय. २८४

पूर्व स्थानमांही रह्यो, मन्द्र मध्य स्वर धार;
पाम्यो जे पर स्थानने, तार तेज स्वर तार. २८५

पूर्व स्थानमां होय जे, 'मन्द्र' सदा सुखकार;
तो परस्थानी 'मध्य' स्वर, ते पण थाये तार. २८६

उभी लीटी जे परे, तार तेहनुं नाम;
मींडावाळो मन्द्र स्वर, नित्य गणो नथुराम. २८७

लीटी बिन्दु रहित स्वर, मध्य मनाये मित्र;
उचराये त्रय सप्तक जे, जाणो खूब पवित्र. २८८

भद्र—प्रसन्नादि.

दोहा.

जे स्वरथी आरंभ करी, पछीना स्वर पर जाय;
फरी पूर्व स्वर बोलतां, भव्य भद्र कहेवाय. २८९

नन्द—प्रसन्नान्त.

दोहा.

कलित पूर्वना क्रम सहित, बे बे स्वर बोलाय;
अलंकार आनंदमय, नन्द नामनो थाय. २९०

जित—प्रसन्नाद्यन्त.

चार कळा लघु काळ क्रम, स्वर प्रयोगमां थाय;
अलंकार जित एहने, गुणीओ गीते गाय. २९१

---

१. सं रि स । रिं ग रि । गं म ग । मं प म । पं ध प । धं नि ध । निं स नि । सं नि स ।

२. स स. रि रि. सं सं । रिं रि ग ग रिं रिं ।
ग ग म म गं गं. । म म प प मं मं. ।
प प ध ध पं पं । ध ध नि नि धं धं ।
नि नि स स निं निं । स स नि नि सं सं ॥

३. सं. ग. रि. सं । रिं म ग रिं. । गं प म गं ।
मं ध प मं । पं नि ध पं । धं स नि धं ।

सोम—प्रसन्नमध्य.

'जित' समान ज्यां उभय स्वर, आनंदे योजाय;
अष्ट कळा गुरु काळ क्रम, सरस सोम त्यां थाय. २९२

ग्रीव—क्रमरेचित,

दोहा.

वक्र उभय लघु वर्णनो, जे स्वर वदतां जाय;
ग्रीव नाम गुणीओ कहे, अलंकार छे त्यांय. २९३

भाल—प्रस्तार.

जेह स्वरो लघुकाळने, बेद्रुतथी बोलाय;
अलंकार भल भाल त्यां, जोतां तुर्त जणाय. २९४

---

१. स स. गं गं. रिं रिं स स । रि रि मं मं गं गं रि रि ।
ग ग पं पं मं मं ग ग । म म ध ध पं पं मं मं ।
प प नि नि धं धं पं पं । ध ध सं सं निं निं ध ध ॥

२. स ग रि ग म ग रि स । रि म ग म प म ग रि ।
ग प म प ध प म ग । म ध प ध नि ध प म ॥
प नि ध नि स नि ध प ॥

३. स ग रि म मं ग रि स । रि म ग प प म ग रि ॥
ग म म ध ध प म ग । म ध प नि नि ध प म ॥
प नि ध स स ध नि प ॥

प्रकाश-प्रसाद.

दोहा.

स्वरप्रयोग करॅा प्रीतथी, एक तालमां आण ;
अलंकार उत्तम त्यहां, प्रकाश नाम प्रमाण. २९५

आरोही अलङ्कार.

दोहा.

काळ कह्यो नहि होय ज्यां, स्वरथी जे समजाय ;
अलंकार आरॅाहीगत, छे द्वादश सुखदाय. २९६

वर विस्तीर्ण कह्यो प्रथम, युग निष्कर्ष अनुप ;
तृतीय बिन्दु चतुर्थ छे, अभ्युच्छ्रय सुखरूप. २९७

---

१. स स रि रि ग ग म ग रिगरिस ।
रि रि ग ग म म प म ग म ग रि ।
ग ग म म प प ध प म प म ग ।
म म प प ध ध नि ध प ध प म ।
पप धध नि नि स नि ध नि ध प ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हसित पछी प्रेङ्खित गणो, सप्तम शुभ आक्षिप्त;
सन्धिप्रच्छादन पछी, उत्तम छे उद्गीत. २९८

उद्वाहित दश देखीए, त्रिवर्ण दशपर एक;
पृथग्वेणि दशपर युगल, समजो सहित विवेक. २९९

विस्तीर्ण.

दोहा.

प्रथम मूर्छनाना स्वरों, क्रमे करीने ज्यांय,
थाय अटकी आरोहण, ए विस्तीर्ण वदाय. ३००

निष्कर्ष.

दोहा.

ह्रस्व स्वरोमां अन्य स्वर, तज्यों विना धर्या तंत;
बोली बे बे वार गण, शुभ निष्कर्ष महंत. ३०१

१. सा री गा मा पा धा नी सा ॥
२. स. स. रि. रि. ग. ग. म. म. प प ध ध नि नि स स।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गात्रवर्ण.

त्रय वा चार वखत जहां, स्वर उच्चार कराय;
नित्य भेद तिरकर्षनो, गात्रवर्ण स्थिर थाय. ३०२

बिन्दु.

प्रथम दीर्घ स्वर त्रय वखत, द्वितीय ह्रस्व ऐकवार;
त्रय पर अरधा बिन्दुथी, म्हाले बिन्दु विचार. ३०३

अभ्युच्छ्रय.

एक एक अंदर तजी, आदरीयें आरोह;
अभ्युच्छ्रय एने कहे, महद उपात्रण मोह. ३०४

---

२. स स स । रि. रि. रि. । ग. ग. ग. । म म म ।
प प प । ध ध ध । नि नि नि । स स स ।
स. स. स. स. । रि. रि. रि. रि. रि. । ग. ग. ग. ग । म म म म ।
प प प प । ध ध ध ध नि नि नि नि स. स स. स ।
३. सा सा सा रि । री. री. री. ग । गा. गा गा. म । मा मा मा प ।
पा पा पा ध । धा धा धा नि । नी नी नी स ।
४. स. ग. । रि म । ग प । म ध । प नि । ध स ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हसित.

अकेक अधिका श्रुतिथी, बोलेला स्वर खास;
चढते क्रम आवे ज्यहां, त्यहां हसितनो वास. ३०५

प्रेङ्खित.

दोहा.

उचरो आगळना स्वरो, पूर्व पूर्व स्वर संग;
आन्दोलनमय युग युगे, आवे स्वरो अभंग. ३०६

चढता क्रममां चारुए, प्रेङ्खित पूर्ण गणाय;
स रि रिग गम मप पध धनि, निस भावेथी भणाय. ३०७

---

१. स। सरि। सरिग। सरिगम। सरिगमप। सरिगमपध।
स. रि. ग म. प ध नि। स रि ग. म प ध नि स।
स। रि रि। ग ग ग। म म म म। प प प प प।
ध ध ध ध ध ध। नि नि नि नि नि नि नि
स स स स स स स स।

२. गामा मापा पाधा धानी नीसा।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आक्षिप्त.

दोहा.

अकेको स्वरमध्यनो, तंते त्याग कराय;
उभय स्वरो आरोहथी, त्रेवार बोलाय. ३०८

त्यागेला स्वर प्रथम सँग, आगळ एवी रीत;
अकेक तजी बे बे उच्चर, उत्तम ए आक्षिप्त. ३०९

सन्धिप्रच्छादन.

दोहा.

प्रथम उभय स्वर ह्रस्व करीँ, तृतीय दीर्घ उच्चार;
सन्धिप्रच्छादन सुभग, अलंकार उरधार. ३१०

---

१. ससगम रिरिमम गगपप ममधध ।
पपनिनि धधसस ॥

२. सरिगा रिगमा गमपा मपधा पधनी धनिसा ॥

उद्गीत.

दोहा.

आदिस्वर युगवार वदो, द्वितीय बोल शशिवार;
अखिल स्थले उद्गीतमां, त्रीजो दीर्घ उचार. ३११

उद्ग्राहित.

दोहा.

चार चार स्वरआदि वद, बीजे स्वर बेवार;
त्रीजो तेम चतुर्थ स्वर, एकवार उच्चार. ३१२

स स स स रि रि गम स्वरथी, रिरिरिरि गगमप जाग;
गगगग मम पध पूर्ण करी, उद्ग्राहित उर आण. ३१३

---

१. ससरिगा रिरिगमा गगमपा ममपधा
पपधनी धधनिसा ॥

२. सससस रिरिगम रिरिरिरिगगमप ।
गगगग मम पध मममम मप धनि ।
पपपपधधनिस ।

त्रिवर्ण.

दोहा.

अकेक आदि द्वितीयनी, तृतीयनी आवृत्ति त्रण;
अलंकार उत्तम तहां, तुर्तज थाय त्रिवर्ण. २१४

पृथग्त्रेणि.

दोहा.

क्रमसह त्रये स्वरनी करो, आवृत्तिओ त्रयवार;
पृथग्त्रेणि सुप्रसिद्ध त्यां, पूर्ण वधारे प्यार. २१५

---

१. सारि गगग । रिगममम । गमपपप । मपधधध ।
पधनिनिनि । धनिससस ।

२. ससस रिरिरि गगग । रिरिरि गगग ममम ।
गगग ममम पपप । ममम पपप धधध ।
पपप धधध निनिनि । ध ध ध नि नि नि ससस ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अवरोही अलङ्कार.

दोहा.

अलंकार आरोहॅानो, जत्र अवरोह कराय ;
एज नामथी अखिल त्यां, अलंकार ऑळखाय. ३१६

अवरोही-विस्तीर्ण.

सा नी धा पा मा धरी, गा री सा स्वर गाय;
अवरोही विस्तीर्ण ए, अलंकार उचराय. ३१७

अवरोही-निष्कर्ष.

स स नि नि नि ध ध प प म म ग गं, रि रि स सं स्वरो सवाय;
अवरोही निष्कर्षतो, नित्य भेद निरखाय. ३१८

अवरोही-गात्रवर्ण.

स स स नि नि ध ध धं प प प, म म म ग ग गं द्रग दाखॅा;
गात्रवर्ण अवरोहॅा गण, रि रि रि स स स स्वर राखॅा. ३१९

स स स स नि नि नि नि ध ध ध धं, प प प प म म म म धार;
ग ग ग ग रि रि रि रि स स स सं, आखिल स्थळे उच्चार. ३२०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अवरोही-विन्दु.

सा सा सा नी नी नीॅ धॅ, धा धा धा प धराय;
अवरोही विन्दु क्रमे, सदा षड्जने स्हाय. ३२१

अवरोही-अभ्युच्छ्रय.

स ध नि प ध म प ग म रि स गॅ, स्वर समूह ज्यां छेज;
अवरोही अभ्युच्छ्रयॅ, अलंकार छे एज. ३२२

अवरोही-हसित.

स स नि स नि ध स नि ध प अने, स नि नि धध ध द्वय रीत;
अलंकार अवरोॅहीए, हसितं प्रमाण सप्रीत. ३२३

अवरोही-प्रेङ्खित.

सॉ नीनीॅ धॉ धॉ पॉ पॉ मॉ मॉ गॉ गॉ री, रॅ सॉ स्वर रसमय होय;
अलंकार अवरोॅही ए, प्रेङ्खित कॅहे सहु कोय. ३२४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अवरोही-आक्षिप्त.

स स ध ध नि नि प प ध ध म मं, प प ग ग म म रि रि धार;
ग ग स स शुभ आक्षिप्तने, अवरोही गण यार. ३२५

अवरोही-सन्धिप्रच्छादन.

स नि धा नि ध पा स्वर क्रमे, तेते साध तमाम;
सन्धिप्रच्छादन सुभग, अवरोहीमां आम. ३२६

अवरोही-उद्गीत.

स स नि धॉ नि नि ध पॉ ध ध प मा, पं प म गॉ म म ग री रीत;
ग ग रि सॉ धरीँ धारण करो, अवरोही उद्गीत. ३२७

अवरोही-उद्वाहित.

स स स स नि नि ध प शोभता, नि नि नि नि ध ध प म नित्यँ;
अवरोहीक्रम अखिल ग्रह, ए छे उद्वाहित. ३२८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अवरोही—त्रिवर्ण.

स नि ध ध ध नि ध प प प पछी, ध प म म म स्वर धार;
पूर्ण करी अवरोह क्रम, त्रिवर्ग तुर्त विचार. ३२९

अवरोही—पृथग्वेणि.

स स स नि नि नि नि ध ध ध स्वर धरी, क्रमसह पूर्ण कराय;
अवरोहीमां ए रीते, पृथग्वेणि वखणाय. ३३०

संचारी—अलङ्कार.

दोहा.

सहु स्थानमां संचरे, तेथी नाम सँचारी;
भिन्न भिन्न करी वर्णवुं, लक्षण लक्ष्य विचारी. ३३१

रोळावृत्त.

आदिनुं अभिधान, जरुर मन्द्रादि जाणो,
मन्द्रमध्यने द्वितीय, प्रीतथी सदा प्रमाणो;
तृतीय अलंकृतितणुं, नाम मन्द्रान्त मनोहर,
चतुर्थने प्रस्तार, वखाणे सदा विबुधवर. ३३२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पंचम नाम प्रसाद, छठो व्यावृत्त विराजे,
सप्तम सुखनो सिन्धु, चलित छविवंतो छाजे ;
अष्टमनुं अभिधान, पुनित परिवर्त प्रमाणो,
नवम नाम आक्षेप, बिन्दु दशमो उर आणो. ३३३

उद्वाहित ए पछी, ऊर्मि, सम, प्रेङ्ख उचारो,
निष्कूजितने श्येन, क्रमे क्रम ध्याने धारो ;
उद्घाटित पछी उचित, अलंकृति रंजित राजे,
सन्निवर्त सुखदाइ, पछी प्रवृत्त विराजे. ३३४

विमळ अलंकृति वेणु, ललित स्वर पछी लेखाये,
हर्षप्रद हुंकार गर्वथी गुणीजन गाये ;
ह्लादमान पछी सर्व, गाय अवलोकित गीते,
संचारी छे सरस, अलंकारो ए रीते. ३३५

मन्द्रादि.

दोहा.

काळ उभय गुरु वर्णनो, वदतां स्वरो दिताय;
महद गुणीजनने मते, मन्द्रादि स्थिर थाय. ३३६

---

१. सं रिं गं मं ग रि स स रि ग रि स रि ग म ।
रिं गं मं पं प म ग रि रि ग म ग रि ग म प ।
गं मं पं धं ध प म ग ग म प म ग म प ध ।
मं पं धं निं नि ध प म म प ध प म प ध नि ।
पं धं निं सं स नि ध प प ध नि ध प ध नि स ।

त्रय स्थानकनो ते छतां, मन्द्रआदिग्रहीं आप;
मन्द्रादि पद धारीने, हरतो तनना ताप. १३७

मन्द्रमध्य.

दोहा.

जहां जगण काळे करी, स्वरसमुदाय वदाय;
मन्द्रमध्य त्यां मानवो, अलंकार सुखदाय. १३८

षोडश मात्रा काळनी, संज्ञा ' जगण 'विचार;
प्रथम चार पछी आठने, ए पछी चार उचार. १३९

मन्द्रान्त.

नगण काळ निर्माणथी, वदाय स्वरसमुदाय;
मन्द्र ए मन्द्रान्त छे, शुभ लक्षण समजाय. १४०

१. स ग रि ग मं गं रिं गं रिं गं रिं सं स रि ग म ।
रि म ग म पं मं गं मं गं मं गं रिं रि ग म प ।
ग प म प धं पं मं पं मं पं मं गं ग म प ध ।
म ध प ध निं धं पं धं पं धं पं मं म प ध नि
प नि ध नि सं निं धं निं धं निं धं पं प ध नि स ॥

२. स स रि रि ग ग म ग रिं गं रिं सं ।
रि रि ग ग म म प म गं मं गं रिं ।
ग ग म म प प ध प मं पं मं गं ।
म म प प ध ध नि ध पं धं पं मं ।
प प ध ध नि नि म नि धं निं धं पं ॥

त्रय लघु केरा काळनुं, नित्य 'नगण' छे नाम;
द्वादश मात्रा दीपती, निरखी ल्यो नथुराम. ३४१

प्रस्तार.

वच्चेना द्वय द्वय स्वरो, त्याग करी दे तुर्त;
तजेलथी आरंभ कर, फरी राखी शुभ सुर्त. ३४२

एज रीत अवरोहमां, आगळ कर उच्चार;
स म रि प ग ध म नि प स स्वरे, प्रगट थाय प्रस्तार. ३४३

प्रसाद.

आदि द्वय त्रय वार वदी, तृतीय द्वितीय ले स्थान;
प्रीते प्रसाद नामनो, महद अलंकृति मान. ३४४

व्यावृत्त.

स ग रि म स रि ग म स्वर जहां, हवे क्रम सह होय;
अलंकार व्यावृत्त त्यां, कहे गुणी सहु कोय. ३४५

१. स म । रि प । ग ध । म नि । प स ।
२. सारि सारि सारि गारि रिग रिग रिग म ग ।
ग म ग म ग म प म । म प म प म प ध प ।
प ध प ध प ध नि ध । धनि धनि धनि सनि ॥
३. स ग रि म स रि ग म । रि म ग प रि ग म प । ग प म ध
ग म प ध । म ध प नि म प ध नि । प नि ध स प ध नि स ॥

चलित.

स ग रि म म रि ग स स रि ग म, क्रम सह ए स्वर ज्यांय ;
चलित नामनो चारु अति, अलंकार छे त्यांय. ३४६

परिवर्त.

प्रथम तृतीय बोल्या पछी, वेद द्वितीय स्वर बोल ;
यति ताले परिवर्त छे, खाचित हृदयने खोल. ३४७

आक्षेप.

क्रम सह त्रय त्रय स्वर मळे, त्यां आक्षेप उचार ;
सरिग, रिगम, गमप मपध, पधनि धनिस नितधार. ३४८

---

१. सगरिममरिगससरिगम। रिमगपपगमरिरिगम प।
गपमधधमपगगमपध।मधप निनिपधममपधनि
प नि ध स स ध नि प प ध नि स।
२. स ग म रि। रि म प ग। ग प ध म। म ध नि प। प नि-
स ध। ध स रि स।
३. स रि ग। रि ग म। ग म प। म प ध। प ध नि। ध नि स।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बिन्दु.

होय दीर्घ स्वर आदिनो, ते आवे त्रय वार ;
ए आगळनो स्वर लघु, प्रथम तृतीय गुरु धार. ३४९.

समजनार संगीतना, हृदये धारि हाम ;
उत्तम बिन्दु अलंकृति, नाम दिये नथुराम. ३५०

उद्वाहित.

स रि ग रि रि ग म ग ग म प मँ, म प ध प प ध नि ध जाण;
धनि सनि स्वर संपूर्ण करी, उद्वाहित उर आण. ३५१

ऊर्मि.

चोथो स्वर पहेला पछी, तुर्त वदो त्रण वार ;
फरी पहेलो चोथो वदो, ए ऊर्मि उर धार. ३५२

---

१. सा सा सा रि सा गा । री री री ग री मा ।
गा गा गा म गा पा । मा मा मा प मा धा ।
पा पा पा ध पा नी । धा धा धा नि धा सा ॥
२. स. रि. ग. रि । रि. ग. म. ग । ग. म. प म ।
म. प. ध. प । प. ध. नि. ध. । ध. नि स नि ॥
३. स म म म स म । रि प प प रि प । ग ध ध ध ग ध ।
स नि नि नि म नि । प स स स प स ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सम.

स रि ग म क्रम आरोह करीं, फरी अवरोह कराय ;
पाछुं आरोहण थतां, सुंदर सम समजाय. ३५३

प्रेङ्ख.

तजी उभय स्वर मध्यना, विगतेथी क्रम वार ;
एक एक स्वरनो करो, उभय वखत उच्चार. ३५४

तजेल स्वरथी ते रीते, करीं आरंभ कलित ;
अकेक स्वर तजी अनुक्रमे, पाठ करो धरी प्रीत. ३५५

स स म म रि रि प प ग ग ध धं, म म नि नि प प स स थाय;
अलंकार शुभ ए समय, मतिथी प्रेङ्ख मनाय. ३५६

---

१. स. रि. ग म म ग रि स स रि ग म ।
रि ग म प प म ग रि रि ग म प ।
ग म प ध ध प म ग ग म प ध ।
प ध नि स स नि ध प प ध नि स ॥

२. स स म म । रि रि प प । ग ग ध ध । म म नि नि ।
प प स स ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

निष्कूजित.

प्रथम चतुर्थ उचार सँग, उभय वार धरीं प्यार ;
फरी वद क्रम सह आदिथी, विधविध करी विचार. ३६७

ए रीते अङ्कक तज, स म स म स रि ग म रीत ;
रि प रि प रि ग म प निरखोले, नहे निष्कूजित. ३६८

श्येन.

पँहलो स्वर क्रमथी ज्यहां, सहु स्वर सँग बोलाय ;
आगलना पण ए रीते, आनंदे उचराय. ३६९

१. स म स म स रि ग म। रि प रि प रि ग म प।
ग ध ग ध ग म प ध। म नि म नि म प ध नि।
प स प स प ध नि स॥

२. स रि स ग स म स प स ध स नि स म।
रि ग रि म रि प रि ध रि नि रि स।
ग म ग प ग ध ग नि ग स।
म प म ध म नि म स।
प ध प नि प स।
ध नि ध स।
नि स।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स रि स ग स म स प स ध स नि, स स धरो ग्रहचित्त चेन;
रि ग रि म रि प रि ध रि नि रि सं, अलंकार छे श्येन. ३६०

क्रम.

स रि रि ग ग म. रि ग ग म म पं, ग म म प प ध गुणगेह ;
म प प ध ध नि प ध ध नि नि सं, अलंकार क्रम एह. ३६१

उद्घाटित.[2]

स ग स ग स रि ग म स्वर जहां, क्रम सह द्रष्टे देख ;
आन्दोलनथी अभिनवो, उद्घाटित अवरेख. ३६२

रंजित.[3]

स ग रि ग स रि ग म क्रम सहित, मनने आपे मोज ;
करुणा ताळे अति कलित, रंजित राजे रोज. ३६३

---

१. स रि रि ग ग म । रि ग ग म म प । ग म म प प ध ।
म प प ध ध नि । प ध ध नि नि स ।

२. स ग स ग स रि ग म । रि म रि म रि ग म प ।
ग प ग प ग म प ध । म ध म ध म प ध नि ।
प नि प नि प ध नि स ॥

३. स ग रि ग स रि ग म । रि म ग म रि ग म प ।
ग प म प ग म प ध । म ध प ध म प ध नि ।
प नि ध नि प ध नि स ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सन्निवृत्त.

स रि ग रि ग म ए स्वर पछी, ग रि स रि ग म स्वर ज्यांय ;
सन्निवृत्त शोभासदन, अलंकार छे त्यांय. ३६४

प्रवृत्तक.

सन्निवृतना स्वर जहां, बेवडाय बळ धारी ;
पुनित प्रवृत्तक त्यां बने, अलंकार सुखकारी. ३६५

वेणु.

स म ग म स रि ग म स्वर पछी, रि प म प रि ग म प देख;
वारिट वेणु अलंकृति, ए स्थलमां अवरेख. ३६६

---

१. स रि ग रि ग म ग रि स रि ग म ।
रि ग म ग म प म ग रि ग म प ।
म प ध प ध नि ध प म प ध नि
प ध नि ध नि स नि ध प ध नि स ।
२. स म ग म स रि ग म । रि प म प रि ग म प ।
ग ध प ध ग म प ध । म नि ध नि म प ध नि ॥
प स नि स प ध नि स ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ललित स्वर.

प्रथम चतुर्थ अने तृतीय, द्वय द्वय वार देखाय ;
रि स स रि ग रि स रि ग म पछी, ललितस्वर लेखाय. ३६७

हुंकृति.

वच्चे 'संवादी' स्वरो, ज्यां आवे बे वार ;
अमित हर्षप्रद हुंकृति, अलंकार उर धार. ३६८

ह्लादमान.

स म ग रि रि प म ग ग ध म प, म नि ध प प स नि ध ज्यांय ;
अलंकार त्यां अभिनवो, ह्लादमान लेखाय. ३६९

---

१. स स म म ग ग रि स स रि ग रि स रि ग म ।
रि रि प प म म ग रि रि ग म ग रि ग म प ।
ग ग ध ध प प म ग ग म प म ग म प ध ।
म म नि नि ध ध प म म प ध प म प ध नि
प प स स नि नि ध प प ध नि ध प ध नि स ॥
२. स स प प । रि रि ध ध । ग ग नि नि । म म स स ।
३. स म ग रि । रि प म ग । ग ध म प । म नि ध प ।
प स नि ध ।

अवलोकित.

पहेलो चोथो वार त्रय, द्वितीय पंच त्रय वार;
संपूरण साधन करी, अवलोकित उच्चार. ३७०

अलङ्कार सप्तक.

रोळावृत.

इन्द्रनील ने महावज्र निर्दोष विचारो,
सॉर, कोकिल सुखकार श्रुतिथी उरमां धारो;
आवर्तक ने सदानन्द, सहु गुणीगण गाता,
तालयुक्त गीतोपयोगी, साते सुखदाता. ३७१

इन्द्रनील.

दोहा.

स रि ग म ग रि स रि ग रि पछी, स रि ग म क्रमथी सुधार;
इन्द्रनील आनंदमय, द्रढ ध्रुव ताले धार. ३७२

---

१. स स स म म म । रि रि रि प प प । ग ग ग ध ध ध ।
मम म निनिनि । पपप ससस ।

२. सरि गम गरि सरि गरि सरि गम।
रिग मप मग रिग मग रिग मप ।
गम पध पम गम पम गम पध ।
मप धनि धप मप धप मप धनि ।
पध निस निध पध निध पध निस ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

महावज्र,

स रि ग रि स रि स रि ग म क्रमथी, मनहर मोदनिधान;
मंठ तालथी अति महद, महवज्र शुभ मान. ३७३

निर्दोष.

स रि स रि ग म रि ग रि ग म प, साध राखी संभाळ;
रूपक ताले राजतो, नित निर्दोष निहाळ. ३७४

सीर.

स रि स रि ग स रि ग मं स्वरो, साध क्रमे धरी धीर;
झंप तालथी झळकतो, अलंकार छे सीर. ३७५

---

१. सरि गरि सरि सरि गम । रिग मग रिग रिग मप ।
गम पम गम गम पध । मप धप मप मप धनि ।
पध निध पध पध निस ।

२. सरि सरि गम । रिग रिग मप । गम गम पध ।
मप मप धनि । पध पध निस ॥

३. सरि सरिग सरि गम । रिग रिगम रिगमप ।
गम गमप गमपध । मप मपध मपधनि । पध पधनि पधनिस ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कोकिल.

स रि ग पछी स रि ग म धरो, क्रम सह सजो काल;
कोकिल कलित अलंकृति, त्रिपुट ताल सुखमाल. ३७६

आवर्त.

स रि ग रि स रि स रि स रि ग म, ए क्रम सह स्वर आण;
अड्ड तालथी अति सरस, प्रिय आवर्त प्रमाण. ३७७

सदानन्द.

सारि गम रिग मप गम पध, मप धनि पध निस धार;
लघुकाळ लावण्यमय, सदानन्द सुखकार. ३७८

---

१. सरिग सरिगम । रिगम रिगमप ।
गमप गमपध । मपध मपधनि ।
पधनि पधनिस ।
२. सरि गरि सरि सरि सरि गम ।
रिग मग रिग रिग रिग मप ।
गम पम गम गम गम पध ।
मप धप मप मप मप धनि ।
पध निध पध पध पध निस ॥
३ सरिगम । रिगमप । गम पध । मप धनि । पधनिस ।

अलङ्कार पञ्चक.

आदि चक्राकार छे, जवने शङ्ख जरूर;
पद्माकार पछी प्रगट, वारिद आणो उर. ३७९

चक्राकार.

चार 'रिषभ' पछी 'षड्ज' शशि, पछी त्रय 'रिषभ' उचार;
अखिल ए क्रमे उचरतां, चारु चक्राकार. ३८०

जव.

यथाक्रमे आनंदथी, सहु स्वर वद सुखखाण;
अकेक अंते त्यागतां, अलंकार जव जाण. ३८१

---

१. रिरि रिरि सरि रिरि । गग गग रिग गग ।
मम मम गम मम । पप पप मप पप ।
धध धध पध धध । निनिनि धनि निनि ।
सस सस निस सस ॥

२. सरि गम पध निस निध पम गरिस ।
सरि गम पधनि धप मग रिस ।
सरि गम पध पम गरि स ।
सरि गम पम गरि स ।
सरि गम गरि स ।
सरि गरि स ।
सरि स ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शङ्ख.

दीर्घ करी स्वर अंतनो, उभय वार उच्चार ;
ए आदिना उभय स्वर, पछी वदो शङ्ख विचार. ३८२

पद्माकार.

सरि पछी त्रय स उचारजे, रि शशि उभय 'गान्धार' ;
ए क्रमथी स्वर साधतां, प्रगटे पद्माकार. ३८३

वारिद.

आदि स्वर शशी वार वदो, सप्तम वद त्रय वार;
ए क्रम अंत लगी ग्रही, वर वारिद उर धार. ३८४

---

१. सासा निध। नीनी धप। धाधा पम।
पापा मग। मामा गरि। गागा रिस।
२. सरि ससस रिगग। रिग रिरिरि गमम
गम गग गम पग। मप मम मपधध।
पध पपप धनिनि। धनि धधध निसस॥
३. सनिनिनि। सधधध। सपपप। सममम।
सगगग। सरिरिरि। ससस॥

मेल.

क्रम सह मनहर मूर्छना, शुद्ध कूट सहु तान;
स्वररचना चड उतरनी, मेल पहने मान. ३८५

प्रगटे शुद्ध स्वरो थकी, “ शुद्धमेळ ” सुखदाय;
विकृत स्वरथी थाय ते, “विकृत मेळ” वदाय. ३८६

शुद्ध मेल.

शुद्ध मेलना भेद त्रय, मुनि, षड्, शर स्वर आग;
संम्पूरण, षाडव अने, ओडव जुगते जाण. ३८७

शुद्ध संपूर्ण मेल.

मेल शुद्ध संपूर्णनो, उत्तम एकज भेद;
सारिगमपधनिस क्रम सहित, आवे स्वरो अछेद. ३८८

शुद्ध षाडव मेल.

भेद शुद्ध षाडव तणा, व्हाले शास्त्र विचार;
धृतिथी चित्ते धारतां, आनँद मळे अपार. ३८९

सगमपधनि सरिमपधनि, सरि गमधनि उर धार;
सरिगमधनि सरिगमपनि, सरि गमपध सुखकार. ३९०

शुद्ध ओडव मेल.

अनुप शुद्ध ओडव तणा, भेद पंच दश भाइ;
अपूर्व ले आनंद नित, गुणीओ गीते गाइ. ३९१

रोळावृत्त.

समपधनि छे आदि, द्वितीय सरिपधनि सुंदर,
सरिगधनि त्रय, वेद सरिगमनि छे मुद मंदिर;
सरिगपनि गण पंच, सगपधनि षड् सुखदायक;
सगमधनि छे सप्त, सगमपनि वसु दुःखसायक ३९२

सगमपध छे सुनव नित्य, सरिमधनि ने दश देखो,
एकादश सरिमपनि, सरिमपध द्वादश लेखो;
दश पर त्रय सरिगपनि, सरिगपध चारु चतुर्दश,
नित्य गणो नथुराम, सरिगमध प्रबल पंचदश. ३९३

विकृत मेल.

दोहा.

विकृतना पण शुद्ध सम, प्रीते भेद प्रमाण;
संपूरण षाडव अने, ओडव उरमां आण. ३९४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विकृत संपूर्ण मेल.

स्वर विकृत संपूर्णनो, एक भेद अवरेख;
सरि गम पधनि स्वर महीं, रिषभ सुकोमळ लेख. ३९५

विकृत षाडव मेल.

विकृत षाडव मेळना, पांच भेद सुखमूल;
विकृत भेद जणाववा, रिषभ राखीए दूर. ३९६

सरि सरि मप धनि मानीए, सरि सरि गप धनि जोय;
सरि सरि गम धनि धारीने, सरि सरि गम पनि होय ३९७

सरि सरि गप धनि पांचमो, नित्य भेद निरखाय;
जेना सुश्रवण मात्रथी, आनँद उर न समाय ३९८

विकृत ओडव मेल.

स्वर रचना सरि सरि पधनि, सरि सरि गधनि गणाय;
सरि सरि गमनि सदा सुखद, सरि सरि गमप धराय ३९९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सारि सारि पधनि पछी सरस, सारि सारि मपनि मनाय;
मनहर सारि सारि मपध छे, सारि सारि गपनि गवाय. ४००

सारि सारि गपध सुधारी धर, सारि सारि गमध विचार;
विक्रत ओडव मेळना, दश भेदो दिल धार. ४०१

सम्पूर्ण तीव्र गान्धार विक्रत मेल.

संपूरणनो सर्वदा, ए भेद उरधार;
सारि गम पधनि साची छे, तुर्त तीव्र गान्धार. ४०२

षाडव तीव्र गान्धार विक्रत मेल.

विक्रत तीव्र गांधारना, मेळ मांहि क्रमवार;
एक एक तजीने करो, पंच भेद धरी प्यार. ४०३

सग मप धनि, सारि गप धनि, सारि गम धनि सुखकार;
सारि गम पनि सारि गम पधे, न तज षड्ज गान्धार. ४०४

ओडव तीव्र गान्धार विक्रत मेल.

विक्रत तीव्र गांधारनो, ओडव मेल अनुप;
उभय उभय तजी षड्ज विण, षड् भेदो सुखरूप. ४०५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सरि गधनि. सरिगमनि स्वर, सरि गमप पछीँ प्रसिद्ध;
सरि गपनि, सरि गपध धरी, सरि गमध सुकर सिद्ध. ४०६

छन्द सवैया एकत्रीशा.

विक्रत तीव्रतर मध्यम स्वरमां, भूमि शोभे संपूरण भेद,
षड्ज विना शशि शशि स्वर तजतां, षाडवना शर भेद अखेद ;
एज रीतथी युग युग तजतां, ओडव दश विधिथी देखाय,
द्रढ कोमल धैवत स्वर केरो, संपूरण शशि भेद भणाय. ४०७

षड्ज विना तजी एक एक स्वर, पांच भेद षाडवना पेख,
षड्ज विना द्वय द्वय तजी दाडी, ओडवना दश भेदो देख ;
तीव्र निषादमहीं पण तेमज, संपूरण शशि भेद भळाय,
एक एक तजी षड्ज विना स्वर, शर भेदो षाडवना थाय. ४०८

दश भेदो ओडवना दाखो, षड्ज विना युग युग त्यागी,
एकज स्वर विक्रतनी संख्या, उरमां धरजो अनुरागी ;
द्वय विक्रतने पांच शुद्ध स्वर, विविध भेद एना वखणाय,
भाव धरी अस्तित्व भोगवे, सघळे षड्ज स्वर सुखदाय. ४०९

ज्यां कोमल स्वर रिषभ सर्वदा, होयँ पूर्व संज्ञक गांधार,
एक प्रकार तणो विक्रत स्वर मेळ वदे पंडित धरी प्यार;
उक्त मेळमां षड्ज विना करी एक एक स्वर क्रमथी दूर,
वेद भेदँ षाडवना समजो, भाविक संगीतना भरपूर. ४१०

एज मेळमां ज्यारे क्रमथी, बब्बे स्वरनो त्याग कराय,
त्यारे ओडवना षड् भेदो, अति आनंद थकी उचराय;
वरे रिषभ स्वर कोमलताने, तीव्रपणुं गांधार धरे,
ए विकृत स्वर मेळतणुं, संपूर्ण नाम सहुको उचरे. ४११

षड्ज विना स्वर एक एकनो करीए तेमां क्रमथी त्याग,
वेद भेद षाडवना त्यारे, उपजी फेलावे अनुराग;
एज रीतथी अलग कराये, बब्बे स्वर ज्यारे बडभाग,
त्यारे षट् भेदो धरी स्नेहे, ओडव दे आनंद अथाग. ४१२

रिषभ तीव्रतर तेम तीव्र गांधार जणाये जे स्थाने,
सुज्ञजनो संपूर्ण नामनो, तेने मेल त्वरित माने;
तजीए तेमां एक एक स्वर, षड्ज विना क्रमथी ज्यारे,
चार भेद षाडवना चोखा, तेथी निकळे त्यारे. ४१३

एज रीतथी बब्बे स्वरने, क्रमथी ज्यारे दूर कराय,
षड् भेदो ओडवना त्यारे, ठठ माठथी जाहिर थाय;
ज्यां गान्धार अने मध्यम स्वर, जोडे सुणतां तीव्र जणाय,
त्यहां भेद संपूर्ण नामनो, गायकथी निःशंक गणाय. ४१४

एक एक स्वर क्रमे शोमतां, वेद भेद षाडवना थाय,
षड्ज विना स्वर बब्बे तजतां, ओडवना षट् भेद लेखाय;
ज्यां गांधार तीव्रतम मध्यम त्वरित तीव्रतर रूप धरे,
ए विकृत स्वर मेलतणो, संज्ञा संपूर्ण सहु उचरे. ४१५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एक एक पछी उभय उभय स्वर, षड्ज विना तेतेथी तजो,
वेद अने षट् भेद यथाक्रम, षाडव ओडवना समजो ;
होय तीव्रतर मध्यम तेमज धैवत कोमलता धारे,
एनी संज्ञा सुज्ञजनो संपूर्ण पुकारे छे प्यारे. ४१६

एक एक स्वर तजी यथाक्रम, गणो भेद षाडवना चार,
बब्बे स्वर तजतां थाये छे ओडवना षट् भेद उदार ;
धैवत स्वर कोमलता धारे, निरखाये ज्यां तीव्र निषाद,
सुज्ञजनो संपूर्ण कहे ए विकृत स्वरने विना विवाद. ४१७

एमां पण षाडव ओडवना, भेद पूर्व पेठे भाखी,
सुधा तुल्य संगीत तणो रस, चाह धरी लेजो चाखी ;
मध्यम तेमज निषाद ए स्वर, युगल तीव्रतर ज्यहां जणाय,
सुखदायक संपूर्ण नामनो, ए विकृत स्वर मेळ गणाय. ४१८

एक एक स्वर तजतां क्रमथी, भेद थाय षाडवना वेद,
कर्ये अलग युग युग स्वर थाये, भव्य पांच ओडवना भेद;
त्रय विकृतने चार शुद्ध स्वरमेळ हवे कहुं छुं हर्षे,
समजनार संगीततणा सहु, अहनिश ओपो उत्कर्षे. ४१९

कोमल रिषभ तीव्रतर ज्यां, गांधार अने मध्यम होये,
ए विकृत स्वरमेळ सराहे, कहीं संपूरण सहु कोये ;
एक एक स्वर क्रमथी तजतां, षाडवना त्रय भेदो थाय,
सप्त भेद ओडवना ज्यारे, उभय उभय स्वर अलग कराय. ४२०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तीव्र, तीव्रतर, कोमल क्रमथी, त्रीजो चोथो छट्ठो ल्होय,
ए विकृत स्वर मेळनों संज्ञा, हर्षप्रद संपूर्णज होय ;
षड्ज विना स्वर एक एक पछीं बब्बे स्वर क्रमयुक्त तजाय,
त्यारे चार अने षट् भेदो, षाडव ओडवना समजाय. ४२१.

ज्यां गांधार अने मध्यम स्वर, सदा तीव्रतर संभळाये,
धारे धैवत कोमलता त्यां, प्रकार संपूरण थाये ;
तेमांथी अक्केक पछी स्वर, उभय उभय जो तजता जाय,
षाडवने ओडवना त्यारे, त्रण त्रण जाहिर भेद जणाय. ४२२

होय तीव्रतर मध्यम धैवत कोमल पूर्व निषाद वळी,
ए विकृत स्वरमेळनों संज्ञा सुन्नमुखे संपूर्ण पडी ;
एक एकने उभय उभय स्वर तणो पूर्ववत् करतां त्याग,
षाडवने ओडवना त्रण त्रण भेदो लेखी लियो बडभाग. ४२३

मध्यम धैवत उभय तीव्रतर, ज्यांहां तीव्र स्वर होय निषाद,
संज्ञा दे संपूर्ण एहने, विबुधो सर्वे विना विवाद ;
षड्ज स्वरने कायम राखी, एक एक स्वर करतां दूर,
वेद भेद षाडवना सुखकर, नित्य वधारे गीतनुं नूर. ४२४

एज रीतथी उभय उभय स्वर, ज्यारे क्रमथी दूर कराय,
त्यारे ओडवना षट् भेदो, हेत धरीने हाजर थाय ;
कोमल पूर्व रिषभ स्वर तेमज ज्यहां तीव्रतर मध्यम होय,
धैवत धारे कोमलता तेनी संज्ञा संपूरण ल्होय. ४२५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पूर्वे प्रमाणे स्वरो त्यागतां, थाय भेद षाडवना वेद,
पांच भेद ओडवना प्रीते खरे हृदयनो टाळे खेद ;
रिषभ तीव्रतर होय ज्यहां, गांधार तीव्रतम गुणकारी,
धैवत कोमल ए स्वर मेळे, संज्ञा संपूरण धारी. ४२६

एक एक पछी बब्बे स्वरनी संगतिने करतां न्यारी,
चार चार षाडव ओडवना, भेद बने छे भयहारी ;
विकृत वेद अने शुद्ध त्रय, स्वरनो वर्णवीए विस्तार,
ज्यहां तीव्र गांधार तीव्रतम मध्यम होय सदा सुखकार. ४२७

धैवत तेमज निषाद धारे, रूप तीव्रतर जे टाणे,
त्यारे शुद्ध जनो संपूरण संज्ञक भेद सदा जाणे ;
षड्ज विना स्वर एक एकनो, क्रमथी सत्वर त्याग करो,
वेद भेद षाडवना विबुधो, आनंद धारीने उचरो. ४२८

उभय उभय स्वर तणो तेनथी, पूर्वे प्रमाणे करतां त्याग,
ओडवना षट् भेद उदभवी, दिलना दूर करे छे दाग;
तृतीय स्वर ज्यां अतितीव्रतम, होय तीव्रतर मध्यम तेम,
कोमल धैवत पछी पद धारे, पूर्वे निषाद धरीने नेम. ४२९

ए विकृत स्वरमेळनी संज्ञा, कोविद सहु संपूर्ण कहे,
पूर्वे प्रमाणे स्वर तजतां, षाडव ओडव द्वय भेद लहे;
ज्यहां रिषभ स्वर कोमल तेमज होय पूर्वे संज्ञक गांधार,
मध्यम स्वर ज्यां होय तीव्रतर, धैवत कोमल श्रवणे धार. ४३०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्यहां भेद संपूर्ण नामनो, कोविद लोकोथी कहेवाय,
क्रमपूर्वक स्वर अकेक तजतां, एक भेद षाडवनो थाय ;
कोमल द्वितीय तृतीय तीव्रतम, अति तीव्रतर स्वर गांधार,
मध्यम तीव्र अने धैवत स्वर होय तीव्रतर ज्यां सुखकार. ४३१

तीव्र निषाद मळे ते साथे, तव थाये संपूरण भेद,
षाडवनो पूर्वोक्त रीतथी, थाये छे शशिभेद अखेद ;
संगीत शास्त्र समुद्र समुं छे, पार कोण एनो पामे,
बहु श्रम करीने बिन्दु मात्र आ नकी संग्रह्युं नथुरामे. ४३२

गमक.

दोहा.

कूर्म-पीठ सम स्वर जहां, विविधी वक्र कराय ;
महद गुणी मुदथी सदा, गमक कहीने गाय. ४३३

च्यवित पछी कम्पित कह्यो, प्रत्याहत सॅ प्रमाण;
दिव्य द्विराहत देखीए, स्फुरित उरे नित आण. ४३४

शान्त अने घर्षण सुभग, अवघर्षण ले मान;
वळी विकर्षण वर्णव्यो, पछी पुनःस्वस्थान. ४३५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एम अग्रस्त्रस्थान छे, निम्न नित्य निरखाय,
सद्य सूदालुं मेळवी; भेद त्रयोदश थाय. ४३६

।

एकज आस्फालन थकी, जे स्वर उत्पन्न थाय;
च्यवित कही चतुरो सहु. अहनिश चित्ते च्हाय. ४३७

कम्पित.

द्वय आघाते द्वय स्वरो, शशि स्थाने प्रगटाय;
गुणीजनना मतथी गमक, शुभ कम्पित कहेवाय. ४३८

प्रत्याहत.

एकज आघाते जहां, द्वय स्वर उद्भव होय;
प्रत्याहत त्यां पेखीए, कहे गुणी सहु कोय. ४३९

द्विराहत.

द्वय ताडनथी एक स्वर, एक स्थान पर थाय;
गमक द्विराहत नामनो, प्रीतेथी परखाय. ४४०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्फुरित.

बहु आघाते बे स्वरो, उपजे ज्यॉं आनंद;
स्फुरित नाम एने दिए, सर्व गुणी सुखकंद. ४४१

शान्त.

आस्फालन पछीं एज स्थल, अवर अनाहत होय,
शान्त नाम तेने दिए, गमक गुणी जन जोय. ४४२

घर्षण,

ताडन एकज स्थाननुं, व्याप्त करे स्वर अष्ट ;
घर्षण नामे गमक त्यां, प्रगट थाय विण कष्ट. ४४३

अवघर्षण.

समजनार संगात तणा, सहु कोविद कहीं देय ;
अवघर्षण पछी ए रीते, जुगते जाणी लेय. ४४४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विकर्षण.

खेंचे जे स्वर अन्यने, निज स्थानकपर नित्य ;
गमक **विकर्षण** वर्णव्यो, पूर्ण धरीने प्रीत. ४४५

पुनःस्वस्थान.

आगळना स्वर पर जई, पाछो आवे जेह ;
प्रबल **पुनःस्वस्थान** शुभ, गमक कहे गुणी एह. ४४६

अग्रस्वस्थान.

पाछळना स्वर पर जई, सद्य ग्रहे स्वस्थान ;
एज **अग्रस्वस्थान** छे, जाणे सर्व जहान. ४४७

निम्न.

जेना उद्देशे करी, अहनिश आरंभाय ;
कलित क्रिया आवातनी, सदा स्पष्ट संभळाय. ४४८

एम थतां स्वर अन्य ज्यां, दुर्बळ थनी दबाय ;
गुणीना गणमां गमक ए, कलित **निम्न** कहेवाय ४४९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुढालु.

उपर मुजब स्वर उभयमां, जे व्यापेल जणाय ;
महा पुरुषना मत थकी, गमक सुढालु गणाय. ४९०

गान गतिभेद.

दोहा.

कांडारणा प्रथम कही, खुल्लगति पछी नाम ;
फुलगति ए पाछळें, नित्य कही नथुराम. ४९१

कांडरणा लक्षण.

दोहा.

तार स्थानमां वेगद्रुत, त्वरित गमक ग्रहीं गाय ;
कांडारणा गति तहां, राग महीं स्थिर थाय. ४९२

खुल्लगति-लक्षण.

दोहा.

मंद्र स्थानमां मोदथी, थाय गमक विस्तार ;
खुल्लगति त्यां खंतथी, गान महीं गुणी धार. ४९३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

फुल्लगति-लक्षण.

दोहा.

मन्द्र तार द्वय स्थानमां, गमक तान गुणी लेय ;
गुणीगण तेने गानमां, फुल्लगति कही देय. ४५४

वीणाविचार-स्वरस्थान.

छन्द हरिगीत.

स्वर हेतु वीणाने सहु प्रत्यक्ष निरखे प्रीतथी,
स्वरज्ञान माटे स्थानमां, लक्षण कहुं शुभ रीतथी;
वीणा तणा जे जे विभाग विषे ध्वनि वरताय छे,
ते मध्यने तारक महीं स्थिति "षड्ज" स्वरनी थाय छे. ४५५

द्वय षड्ज केरो मध्य भाग जरुर "मध्यम" जाणशो,
वीणा तृतीय भागे त्वरित "पंचम" हमेश प्रमाणवो;
स्वर षड्ज पंचम मध्यमां गणवी स्थिति "गांधार"नी,
पछी षड्ज पंचम पूर्व भागे "रिषभ" नी रचना बनी. ४५६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्वर षड्ज पंचम मध्यमां "धैवत" धृतिथी धारवो,
एमां तजी द्वय अंश व्हाल धरी "निषाद" विचारवो;
आरंभी षड्जथी रिषभलगी त्रयभागवाळा अंतरे,
मेरुथी तजी द्वय भाग पछी "कोमल रिषभ" करवो खरे. ४५७

स्थिति मेरु धैवत मध्य भागे "तीव्र गांधारे" करी,
त्रय भाग ए गांधार षड्जनी मध्यना प्यारे धरी;
भावेथी प्रथम त्रिभाग तेनो तुरतमांज तजी दीओ,
पछी "तीव्रतम मध्यम" तणी स्थिति मध्यमां समजी लिओ. ४५८

पंचम तथा उत्तर षडजनी मध्यना त्रय भाग कर,
प्रिय पूर्व भागनी मध्यमां "धैवत सुकोमल" नित्य धर;
ए रीत धैवत षड्ज वच्चे भाग त्रय करी धृति थकी,
द्वय भाग तजीने निकटमांज "निषाद तीव्र" वसे नकी. ४५९

जे शुद्ध 'रिषभ' जणाय ते 'गांधार पूर्व' गणी लिओ,
रि तीव्रतरने तुरतमां 'गांधार शुद्ध' कही दिओ;
जे 'शुद्ध मध्यम' होय ते गांधार जाणो 'तीव्रतम,'
जे 'शुद्ध धैवत' तेज 'पूर्वनिषाद' ए छे कल्पित क्रम. ४६०

जे होय 'शुद्ध निषाद' एज गणाय 'धैवत तीव्रतर,'
ए रीत सघळा यन्त्रमां स्थिति भोगवे छे सप्त स्वर;
जेने नथी स्वरबोध तेने काज आ मारग कह्यो,
वीणाविचार विनोदथी सुखरूप गणीने संग्रह्यो. ४६१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्वरजाति.

दोहा

आदि ग्रह पछी अंश छे, तार, मन्द्र ने न्यास ;
उरमां धर अपन्यास वर, सु सन्यास, विन्यास. ४६२

बहुत्व ने अल्पत्व छे, अन्तरमार्ग पुनित ;
निय भेद नथुराम ए, एकादश धर चित्त. ४६३

ग्रह.

रोळावृत्त.

गीत आदिमां होय, जेह स्वर स्थित सुखकारी,
थाय गीत आरंभ, जेह स्वरथी मुद धारी ;
गुणीजिए ग्रह नाम, एह स्वरने आनंदे,
सप्त स्वरोमां थाय, सप्त भेदो स्वछन्दे. ४६४

अंश.

जे स्वर गायन मांहि, लोक मनरंजन करतो,
संवादी अनुवादी स्वरो पोषी दुःख हरतो :

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गानप्रयोगनीं मांहि, जे आवे बहु वारे,
तार मन्द्र स्वर तणी, जेह रचना विस्तारे. ४६५

जे स्वर रहीने मुख्य, भूप सम सहुने भावे,
अन्य स्वरोने संचारी, अनुवादी बनावे ;
ग्रह, सन्यास, विन्यास, न्यास, अपन्यास अनुपम,
स्हाय करे जेहनी, अंश स्वर ए छे उत्तम. ४६६

तार.

छन्द सवैया एकत्रीशा.

मध्यम ग्राम तणा सप्तकमां, व्हालें जे स्वर अंश वदाय,
एथी चार स्वरो चढी उंचे, स्नेहे कर आरोह सदाय;
मध्यम ग्राम तणा मेरुथी, चढावता उंचे स्वर चार,
एज ग्रामना पंचम सुधी, सदा पहोंचवुं धारी प्यार. ४६७

मध्यम ग्राम तणा मध्यमथी, मध्यम ग्रामी निषाद परे,
चडवुं चोंप धरीनें चातुर, खंत वधारी हृदय खरे;
अन्य अंश मांहि पण एमज, अंश ऊपरनो स्वर सुखकार,
वसुधामां विख्यात बनेला, सहु गुणीओ कहे तेने तार. ४६८

मन्द्र.

मध्यम ग्रामे अंश स्वरेथी, नीच जव अवरोह कराय,
मध्यम ग्रामी षड्जथी षड्ज ग्राम तणा षड्जे उतराय;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मध्यम ग्रामी मध्यमथी स ग्रामे मध्यमे उतरी जवाय,
गणो मन्द्र जव अन्य अंशमां अवरोहण ए रीते थाय. ४६९

न्यास.

सोरठा.

समाप्त थाये गीत,जे स्वरमां ते न्यास छे;
पूर्ण धरीने प्रीत, समग्र गुणीओ समजता. ४७०

अपन्यास.

दोहा.

सदा जेह स्वर गीतना, प्रथम षडजमां खास;
आस्थाई अंते रहे, गणो एह अपन्यास. ४७१

सन्यास.

सोरठा.

जेह गीतना आदि, षड्ज तणी आस्थाइमां;
थाय न कदी विवादी, अंश बनी उभो रहे. ४७२

रहाय करे सुखराश, अहर्निश अपन्यासनी;
शुभ स्वर ए सन्यास, भला गुणीने भावतो. ४७३

विन्यास.

विवादी होय न खास, अंश तणो आस्थाइमां ;
षड्ज अंतमां वास, वरीष्ट स्वर विन्यास ए. ४७४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बहुत्व.

जे स्वरनो धरी प्यार, जाहिर गीत जमाववा ;
अधिक थाय उच्चार, बहुत्व एने बोलवो. ४७५

एक कहो अभ्यास, अवर अलङ्घन जाणीए;
पंडित करे प्रकाश, बहुत्वना बे भेद ए ४७६

अल्पत्व.

मुदथी गायनमांय, स्वरना अर्ध उच्चारथी;
जे लघुता देखाय, एह भेद अल्पत्व छे. ४७७

अन्तर मार्ग.

छंद सवैया एकत्रीशा.

जे स्वर न्यास अने अपन्यास वळी सन्यास विन्यास तणा,
स्थान तजीने मध्य मध्यमां, वास करे छे मात्र गण्या;
अंश अने ग्रह स्वरथी स्नेहे नित्य मळेला छे नथुराम,
विचित्रता गाननी बतावे, अन्तरमार्ग एहनुं नाम. ४७८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गीत-दोहा.

गणो भेद द्वय गीतना, यंत्र, गात्र अभिराम;
यंत्र वेणु वीणादिथी, गात्र मुखज सुखधाम. ४७९

गात्र.

गात्र गीतना भेदद्वय, नैतम एक निबंध;
उत्तम गुणीओ उच्चरे, अवर नाम अनिबंध. ४८०

निबंध.

ताल मान रस युक्त स्वर, छन्द गमकने धातु;
वर्ण नियमवाळुं सदा, गीत निबंध गणातुँ. ४८१

अनिबन्ध.

अक्षरानियम विना अखिल, दे आनँद आलाप ;
एह गीत अनिबन्ध छे, तुर्त हरे तनताप. ४८२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गीतजाति.

सोरठा.

शुद्ध, विकृति नाम, उभय जाति छे गीतनी ;
नेह धरी नथुराम, एना भेदो उच्चरे. ४८३

शुद्ध जाति.

न्यास अने अपन्यास, ग्रह वा अंश स्वर मही ;
शुद्ध जातिनो वास, नित्य तार स्वर न्यास विण. ४८४

शुद्ध जातिभेद.

शुभ षाडजी अनुप, उरमां धरवी आर्षभी ;
गान्धारी रस रूप, मानो पछीथी मध्यमा. ४८५

पंचमी पंचम जाण, धृतिथी धारो धैवता ;
नैषादी उर आण, शुद्ध जाति ए सत छे. ४८६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षाडव–षाडजी.

छन्द सवैया एकत्रीशा.

रिषभ निषाद विनाना सघळा, अन्य स्वरो अंश स्वर होय,
न्यास अने अपन्यास स्वरो, गांधार तथा पंचम ल्यो जोय ;
प्रथम तृतीय वा प्रथम शास्त्र स्वर, एनुं संग उच्चारण थाय,
विण निषाद ए षाडव जाणो, स्नेह धरी षाडजी सदाय. ४८७

सम्पूर्ण–षाडजी.

नित्य निरखीए निषादकाकली, अंश स्वर गणीए गांधार,
स्वर गांधार तणो गुणीने मत, अधिक वार आवे उच्चार;
उत्तरायतार्मा ए होये, अने षड्ज स्वर होये न्यास,
ग्रह पण षड्ज जणाये ज्यां, त्यां संपूरण-षाडजीनो वास. ४८८

रोळावृत.

शुद्ध "चंचत्पुट" ताल, कलासह चित्त हरनारो,
द्वादश मात्रा तणो, प्रयोग कराये प्यारो;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्ध विरह शृंगार, रसोमां गुणीओ गाये,
सुखद षाडजी सदा, कलित जगमां कहेवाये. ४८९

आर्षभी.

छन्द सवैया एकत्रीशा.

रिषभ अने धैवत निषाद ज्यां, अंश बने आनंद धरी,
अगणित सुख ल्यो षड्ज अने धैवत स्वरने संगे उचरी ;
पंचम अथवा षड्ज तज्याथी, षाडव भेद सदा थाये,
षड्ज अने पंचम परहरतां, निश्चे ओडव निरखाये. ४९०

शुद्ध मूर्छना न्यास रिषभ स्वर अंश ग्रहा अपन्यास बणे,
अष्ट कला ने चोसठ मात्रा, गुणी चंचत्पुट ताल गणे ;
वीर रौद्र अद्भुत रस मांहि, गाइ चतुर मुदकोट चणे,
देशी आदि राग उपजण, मार्गे आर्षभी सर्व भणे. ४९१

गान्धारी.

रिषभ अने धैवत विण सहु स्वर, अंश बनी ने ओपी रह्या,
ज्यां अपन्यास षड्ज पंचम छे, क्यांइ रिषभ गांधार कह्या ;
धैवतथी अवरोह रिषभ लगी, एमज सहु स्वरमां जाणो,
न्यास तृतीय स्वर रिषभ तज्याथी षाडव शुभ उरमां आणो. ४९२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रिषभ अने धैवत तजी ओडव, उत्तरायतां छे अहनिश,
सोळ कळा चंचत्पुट ताले, मात्रा शाशि शत अठयावीश;
वेलावली देशी आदिक, रागिणीनो उद्भव थाये छे,
गान्धारी जाति ए गुणीजन, करुणा रसमां गाये छे. ४९३

मध्यमा.

छन्द सवैया एकत्रीशा.

अंश रिषभ गांधार अने मध्यम पंचम धैवत जोवे,
एज बने अपन्यास वळी, स्वर आदि चतुर्थ अधिक होये ;
अल्प सदा गांधार तजे तो, षाडव संज्ञा जामे छे,
तजी गांधार निषाद उभय स्वर, ओडव पदवी पामे छे. ४९४

रिषभादिक मूर्छना म्हालती, चारु चंचत्पुट छे ताल,
अष्ट कला अहनिश रहीं ओपी, मात्रा चोसठ वळी विशाल ;
न्यास होय मध्यम स्वर निश्चे, जेनी अंदर जोर धरी,
उद्भवती अंधवली आदि, महद मध्यमा मोद भरी. ४९५

पञ्चमी.

रिषभ अने पंचम अंश स्वर, अल्प षड्ज मध्यम गांधार,
होवे ज्यां अपन्यास रिपभ पंचम निषाद धरी पूरण प्यार ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कांइक स्वर गांधार तज्याथी, षाडव थाये सुखकारी,
तजी निषाद गांधार स्वराथी, ओडव संज्ञा ले धारी. ४२६

स्वर निषाद गांधार रिषभ धैवत मळेल होये ज्यारे,
रिषभादिक मूर्छना सहित स्नेहे संपूर्ण बने त्यारे;
अष्ट कला, चोसठ मात्रा, चंचत्पुट ताल सदा शोभे,
जाति **पञ्चमी** प्रेमे गाता, लाखो गुणीनां मन लोभे. ४२७

धैवता.

धैवत रिषभ अंश स्वर ज्यां छे, नहि आरोह मांही शशि पंच,
नित अपन्यास रिषभ धैवतने, पंचम स्वर तजी रहे प्रपंच;
न्यास सदा स्वर धैवत होये, षाडव क्यांइक रिषभ तजाय,
षड्ज पँचम तजी क्यांइक ओडव, क्यांइक उभय मळ्या निरखाय. ४२८

रिषभादिक मूर्छना मानी, चंचत्पुट प्रिय ताल गणाय,
बार कला मात्रा छे छन्नु, हिन्दोलादिक पेदा थाय;
रस बिभत्स भयानक मांहे, गुणीओ निशदिन गाये छे,
श्रुतिथी समजी लिओ **धैवता**, कलित जाति कहेवाये छे. ४२९

नैषादी.

ज्यांहां रिषभ गांधार निषाद बनी रहे अंश उमंग धरी,
ज्यहां षड्ज मध्यम पंचम धैवत स्वर अधिक रह्या विचरी ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अंश स्वर अपन्यास बने, वळी निषाद न्यास सदा निरखो,
गान्धारादिक गणो मूर्छना, तालसु चंचत्पुट परखो. ५००

सोळ कळा शोभी रही जेमां मात्रा शत पर अड्यात्रीश,
देशी वेलावली आदिकनो, उद्भव करनारी अहर्निश ;
करुणा अने भयानक रसमां, कोडे गुणीओ गान करे,
ए नथुराम अखिल स्थल मांहि नित नैषादी नाम धरे. ५०१

विकृत-जाति.

रोळावृत.

शुद्ध जातिओ सात, श्रेय कारिणी सदाये,
स्वर ग्रह अंशादिना, विकारथी विकृत थाये ;
एकादश एहना, भेद सहु कोइ भणे छे,
कलित षड्ज कैशिकी गुणीजन प्रथम गणे छे. ५०२

शुभ षड्जोदीच्यवा, प्रीतथी द्वितीय प्रमाणो,
सुभग षड्जमध्यमा, जातिने त्रीजी जाणो ;
गान्धारोदीच्यवा चोथी धारो सहु चित्ते,
धरे रक्त गान्धारी, पांचमा पदने प्रीते. ५०३

मध्यम उदीच्यवा, पछी गान्धार पञ्चमी,
आन्ध्री छे अष्टमी, नन्दयन्ती छे नवमी;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दशमी कार्मारवी, कैशिकी एकादशमी,
जाहिर विकृत जाति, कोइ करी शके नहि कर्मा. ५०४

छन्द सवैया एकत्रीशा.

षाडजी ने गांधारी जातिना मेळथी षड्जकैशिकी थाय,
षाडजी ने मध्यमा मेळथी षड्ज मध्यमा बने सदाय ;
गांधारी पंचमी मळ्ये गान्धारपञ्चमी जाति गणाय,
गांधारीनी संग आर्षभी, मळतां आन्ध्री जाति मनाय. ५०५

षाडजीने गांधारी संग ज्य शुद्ध धैवता जाति मळे,
शुभ षड्जोदीच्यवा थाय तव, समजे सुजनो बुद्धिबळे;
नैषादी पंचमी आर्षभी, जे स्थळ निरखाये एकत्र,
जाहिर कार्मारवी जातिने तुर्त गणी लेजो सहु तत्र. ५०६

गाँधार पंचमी अने आर्षभी जाति मळे संगे ज्यारे,
नन्दयन्ती नामनी विकृत जातिने जाणी लेवी त्यारे;
गांधारी, धैवता, षाडजी संग मध्यमा मेळ करे,
गान्धारोदीच्यवा नाम ए समये विकृत जाति धरे, ५०७

गांधारी, धैवता, पंचमी अने मध्यमा होये संग,
मधुर जाति मध्यमोदीच्यवा उरमां अरपे अधिक उमंग;
गान्धारी, नैषादी, पंचमी संग मध्यमा ज्य सोहे,
त्यारे विकृत जाति रक्तगान्धारी मन सहुनां मोहे. ५०८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पाडजी, गान्धारीने मध्यमा, पंचमी, नैषादी ए पंच,
शुद्ध जातिना मेळथी प्रसरे, विकृत कैशिकी तणो प्रपंच;
सप्त शुद्ध, एकादश विकृत, ए मळी थाये जाति अढार,
षड्ज ग्रामनी सप्त अने एकादश मध्यम ग्रामनी धार. ९०९

षाड्जी, आर्षभी अने धैवता, नैषादी सुखदायक शुद्ध,
वळी षड्जोदीच्यवा, षड्ज कैशिकी, षड्ज मध्यमा विरुद्ध;
सप्त जाति ए षड्ज ग्रामनी, गुणीना मतथी नित्य गणाय,
शुद्ध अने विकृत जातिनुं, ज्यां सांकर्य प्रसिद्ध जणाय. ९१०

गांधारी, मध्यमा, पंचमी, आन्ध्रीने कैशिकी अरेख,
गांधारोदीच्यवा, रक्तगांधारी लाभ करनारी लेख;
नंदयंती, मध्यमोदीच्यवा, कार्मारवीने उरमां आण,
मध्यमग्रामनी जाति अहीं गांधार पंचमी नित्य प्रमाण. ९११

षड्जकैशिकी.

छन्द हरिगीत.

जेमां षडज, गांधार, पंचम, अंश बनी आभा लहे,
वळी रिषभ, पंचम तेम मध्यम स्वल्पता स्नेहे ग्रहे;
क्यांई वधारे क्यांइ अल्प निषाद पंचम निरखीये,
ग न्यासने अपन्यास षड्ज, निषाद, पंचम परखीए. ९१२

शुभ ताल चंचत्पुट अने षोडश कळाथी छाजती,
शत उपर अठ्यावीश मात्रा, धारी रस भर राजती ;
शृंगार हास्य अने करुणमां, जेनुं गान कराय छे,
ए षड्ज कैशिकी जाति विकृत विश्वमां वखणाय छे. ५१३

जे जातिमां गांधार पंचमनो जनम कोविद कवे,
जेमांहि अधिक उमंगथी हिन्दोल देशी उद्भवे,
उत्पन्न देलवली विगेरे राग जेमां थाय छे,
ए षड्जकैशिकी जाति विकृत विश्वमां वखणाय छे. ५१४

षड्जोदीच्यवा.

छन्द हरिगीत.

मेरु अने मध्यम निषाद तथैव धैवत जे स्थळे,
स्वर अंश होये तेम ज्यां अन्योन्य स्वर बीजा मळे ;
बाहुल्य जेमां मन्द्र गांधारे ग्रहेलुं होय छे,
ए रीत तार तथा रिषभ स्वर षड्ज जेमां होय छे. ५१५

गतां रिषभ रमणीय षाडव रूप ज्यां विलसी रहे,
करतां रिषभ धैवत अलग उत्पत्ति झट ओडव लहे ;
ज्यां न्यास बनी मध्यम निरंतर गर्वथी शोभा ग्रहे,
जेमांही अपन्यासनी उपाधि षड्ज ने धैवत वहे. ५१६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गांधार आदिक मूर्छना रूपे विराजे जे महीं,
त्यम ताल चंचत्पुट अने द्वादश कला जेमां कही ;
शृंगार हास्य महीं गवाये, छन्नु मात्रा छाजती,
ए जाति षड्जोदीच्यवा विकृत हमेश विराजती. ५१७

षड्जमध्यमा,

छन्द हरिगीत.

साते स्वरो बनी अंश, होय मळेल एक बीजा थकी,
ज्यां होय अल्प निषाद, ए नि विना बने षाडव नकी ;
नि ग ने अलग करवाथी, ओडव एज वखते उद्भवे,
ज्यां मध्यमादिक मूर्छना रूपे श्रवण अमृत स्त्रवे. ५१८

ज्यां न्यास बनीने षड्ज, मध्यम सर्वदा शोभा ग्रहे,
साते स्वरो अपन्यासनी पदवी विनोद धरी वहे ;
ज्यां छन्नु मात्रा, ताल चंचत्पुट, कला द्वादश रहे,
सहु षड्ज पूर्वक मध्यमा ए जाति विकृतने कहे. ५१९

गान्धारोदीच्यवा.

छन्द हरिगीत.

ज्यां षड्ज, मध्यम अंश होये, स्वल्प **रि ग प ध नि** सदा,
करतां रिषभने दूर थाये रूप षाडवनुं सदा;

निधपग निहाळो अल्प, कोमल रिषभ धैवत होय ज्यां,
स्वर धैवतादिक मूर्छना रूपे सदाये रहोय ज्यां. ९२०

निरखाय मध्यम न्यासने अपन्यास मेरु धैवत,
त्यम ताल चंचत्पुट अने द्वादश कला पूरव मत;
मात्रानी संख्या एकसो अष्ट त्रिंशनी अंकाय छे,
गान्धार पूर्व उदीच्यवा ए जाति विकृत थाय छे. ९२१

रक्तगांधारी.

छन्द हरिगीत.

जे जातिमां स. ग. म. प. नि ए स्वर पंच अंश बनी रहे,
स्वर षड्जने गांधार जेमां कलित कोमलता ग्रहे ;
तजतां रिषभने रुप षाडवनुं उपावे सुख घणुं,
विण रिषभ धैवत रुप थाये तुरतमां ओडव तणुं. ९२२

साते स्वरो जेमांहि, अधिक निषाद धैवत होय छे,
जेमां स्वरो रिषभादि सुंदर मूर्छना बनी रहोय छे;
ज्यां न्यास बनी गांधार निशदिन भव्य सुखनिधिने भरे,
स्वर मधुर मध्यम ज्यांहि अपन्यासनी उपाधिने धरे. ९२३

प्रिय ताल चंचत्पुट, उदय षोडश कलाथी पामती,
मात्रा मनोहर एकसो अठयावीसे अभिरामती;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शृंगार रस मांहे गवाती, हानिने हरदम हणे,
ए जाति विकृतने गुणीजन रक्तगान्धारी गणे. ६२४

कैशिकी.

छंद–हरिगीत.

स्वर अंश होय निषाद धैवत, त्रय सुकोमल स्वर लसे,
ते समय पंचम न्यास बनीने विबुधनी मतिमां वसे;
गांधार होये न्यास जव, तव अंश निध श्रुति उभयना,
आनंद ले अवरेखीने शोखीन संगीत उदयना. ६२५

वळी अन्य मुनिना मत प्रमाणे न्यास म नि ग म जाणवा,
प्रीतेथी नित्य निषाद धैवतने स्वरांश प्रमाणवा;
षाडव बने सुखदाई ज्यारे रिषभ दूर कराय छे,
उत्पत्ति ओडवनी रिषभ धैवत तज्याथी थाय छे. ६२६

स्वर सप्तना संचरण समये रिषभ थोडा होय छे,
ज्यां अधिकता धरीने सदैव निषाद पंचम स्होय छे;
अंश स्वरो अन्योन्य ज्यां मळता रहे प्रमुदित मने,
गांधार आदि स्वरोनी जेमां मूर्छना मधुरी बने. ६२७

गांधार पंचम न्यास, षट् स्वर रिषभ विण अपन्यास हो,
ज्यां ताल चंचत्पुट तथा द्वादश कलानो वास हो;

જે સુભગ ષાડવ જાતિના રસમાં સદૈવ ગવાય છે,
એ છન્નુ માત્રા વાળી વિકૃત કૈશિકી કહેવાય છે. ૬૨૮

મધ્યમોદીચ્યવા.

છંદ—હરિગીત.

જ્યાં હોય પંચમ અંશ, સ્વર સાતે જણાયે જે વિષે,
રિ ગ પ ધ નિ જેમાં રંચ પ્રતિદિન ગ્રહિએ થોડા દિસે;
હોયે રિષભ ધૈવત સુકોમલ, ન્યાસ મધ્યમ નિરખીએ;
જ્યાં ષડ્જ ધૈવત પ્રીતથી અપન્યાસ રૂપે પરખીએ. ૬૨૯

સ્વર મધ્યમાદિક મૂર્છના બની સુજ્ઞજનનાં મનહરે,
જ્યાં તાલ ચંચત્પુટ અને સૌન્દર્ય સોળ કળા ધરે;
શત ઉપર અઠયાવીશ માત્રા સ્નેહથી સમજી લિઓ,
મધ્યમ પછી ઉદીચ્યવા ત્યાં નામ આનંદે દિઓ. ૬૩૧

કામારવી.

સ્વર અંશ હોય નિષાદ, ધૈવત, રિષભ, પંચમ જે મહીં,
ગાંધાર, મધ્યમ, ષડ્જ જેમાં મનહરે બહુતા ગ્રહી;
વૈચિત્ર્ય રાગ વિષે જણાય, ગણાય અતિ ગાંધાર જ્યાં,
હોયે મળેલા સ્વર પરસ્પર અંશ ધારી પ્યાર જ્યાં. ૬૩૧

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वळी न्यास पंचम स्वर प्रमोदे गाढ शोभाने ग्रहे,
अंश स्वरो अपन्यासनी संज्ञा सदा स्नेहे लहे;
पूर्वोक्त ताल कला अने मात्राथी दिल जाये द्रवी,
ज्यां धैवतादिक मूर्छना, कहेवाय ए कार्मारवी. ९३२

गान्धार पञ्चमी.

ज जातिमां स्वर अंश पंचम राति वधारे अति रुदे,
गांधार, रिषभ, निषाद, धैवत मिलित होय जहां मुदे;
गांधार जेमां न्यास पदने भोगवे बहु भावथी,
पदवी पुनित अपन्यासनी ले रिषभ पंचम ल्हावथी. ९३३

ज्यां मूर्छना गांधार आदिनी गर्वथी गुणीजन गणे,
पूर्वोक्त ताल अने कळा जेमां भला गायक भणे ;
वळी मेळ मात्रानो जणाये पूर्ववत् मुदखाण जो,
गान्धारपञ्चमी नामनी ए जाति विकृत जाणजो. ९३४

आन्ध्री.

स्वर अंश रिषभ, निषादने गांधार, पंचम जे महीं,
नि. ध. रि. ग परस्परमां मळीने शोभता होवे सही ;
गीतनी समाप्ति लगी मळेला होय अंश क्रमे करी,
आरंभी न्यासथी अंश लगी उचराय स्वर उलट धरी. ९३५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गांधार न्यास गणाय, अंश स्वर बन्ने अपन्यास ज्यां,
स्वर मध्यमादिनी मूर्छना ए प्राप्त थाय हुलास ज्यां ;
पूर्वोक्त ताल कला अने मात्राथी मुद आपी रही,
ए आन्ध्री नामनी जाति विकृत विश्वमां व्यापी रही. ५३६

नन्दयन्ती.

स्वर अंश तेमज ग्रह तणी धारण करे पंचम प्रभा,
जे जातिमां साते स्वरोनी मळे सदा सुखदा सभा ;
ज्यां मन्द्र, मेरु बना जगाये, षड्ज विण षाडव बणे,
गांधार स्वर ज्यां न्यास पद धरी निशि दिवस हानि हणे. ५३७

मध्यम अने पंचम ग्रहे संज्ञा सुभग अपन्यासनी,
प्रिय पंचमादिनी मूर्छना करनार वृद्धि विलासनी ;
मात्रा कळाने ताल जेमां पूर्व पेठे जाणीए,
नथुराम एवुं नाम प्रीते नन्दयन्ती प्रमाणीए. ५३८

कपालगीतोत्पत्ति.

दोहा.

भरतादिक ने शिखवन्या, वर संगीत विधान,
त्रिपुरारि तांडव करी, गावा लाग्या गान. ५३९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सवैयाएकत्रीशा.

षाड्ज्यांदिथी शुद्ध जाति, स्वरनो उत्तम करीयो आलाप,
शीश रहेल शशि तव स्त्रीयो, अमृत आनंद धरी अमाप ;
मालामांहि रहेल कपालो, अमृत स्पर्शे सर्जीव थयां,
कालित गान करीयुं एणे ए कपालगीतो कहेवाया. ९४०

षाडजी कपाल गीत लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

जेमां ग्रह स्वर अंश स्वरने, स्वर अपन्यास षड्ज स्वर होय,
गणवो ज्यां गांधार न्यास स्वर, द्वादश कला कहे सहु कोय ;
धैवत रिषभ निषाद सुपंचम, सहु स्थलमांहि स्वल्प सही,
अति उच्चार मध्यम गंधारनो, षाडजी कपाल गीत मही. ९४१

आर्षभी कपाल गीत लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

अंश अने अपन्यास रिषभ स्वर, मध्यम न्यास अचल आणो,
निषाद धैवत स्वल्प समजवा, स्वल्प स्वरे षाडव जाणो ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अष्ट कला आनंद उपावे, नष्ट कष्ट गातां थाये,
आर्षभी कपाल गीत अनुपम, कलित जगतमां कहेवाये. ५४२

गान्धारी कपाल गीत लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

मध्यम स्वरग्रह अंश न्यास, अपन्यास रुप रहे विस्तारी,
षड्ज रिषभ गांधार अल्प, रहे धैवत अधिकपणुं धारी ;
रिषभ अने पंचमने त्यागी, रसिक बनावो ओडव रीत,
अष्टक राग्नि अंदर, गण गान्धारी कपाल गीत. ५४३

मध्यमा कपाल गीत लक्षण

अंश न्यास अपन्यास अने ग्रह, मध्यम स्वर द्रष्टे देखाय,
निषाद पंचम रिषभ अने, गान्धार स्वल्प जेमां लेखाय ;
नित्य कला नशु ।। रहे नर, अभिनव चाह वधारे चित,
साम गान स्वरवुं फलदाता, मान मध्यमा कपाल गीत. ५४४

पंचमी कपालगीत-लक्षण.

सवैया.

उत्तम अंशन्यास ग्रह शोभे, रिषभ रुपाळो रस भरनार,
स्वल्प निषाद षड्ज ने धैवत, मध्यम तेमज छे गान्धार ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अहनिश ठाठ भरेली उत्तम, अष्ट कला जहां स्पष्ट जणाय,
किलविषहरण भरण भूति ए, पंचमी कपाल गीत गणाय. ५४५

धैवती कपालगीत-लक्षण.

सवैया.

रिषभ अने गान्धार अल्प जहां, एज उभय होये अपन्यास,
मध्यम अधिक अंस स्वर मध्यम, धैवत स्वर ले ग्रहने न्यास ;
थाये रिषभ जहांथी षाडव, अष्ट कला स्नेहेथी सजो,
धैवती कपाल गीत गाइने, भाव धरी भवनाथ भजो. ५४६

नैषादी कपाल गीत-लक्षण.

सवैया.

षड्ज अंश ग्रह न्यास अने, अपन्यास स्थानके अवरेखाय,
रिषभ अने गांधार अल्प जहां, दाडी द्रष्टिथी देखाय :
निषाद धैवत पंचम अधिका, अष्ट कला आनंद आपे,
नित्य नैषादी कपाल गीते, कठण पाप गुणीयो कापे. ५४७

कंबल गीतोत्पत्ति.

सवैया.

कंबल अने अश्वतर नागे, अभिलाषा उरमां धरी,
श्रुति भूषणने माट त्रिकाल, त्वरित शी रीते त्रिपुरारि ;

प्रसन्न करवा परमेश्वरने, करी गाने स्तुति रुडी रीत,
अखिल जगतमां एह गाननुं, कल्पित नाम छे कंबल गीत. ५४८

कंबल गीत–लक्षण.

सवैया.

ज्यां अन्यास अंस ग्रह पंचम, जेमां रिषभ अधिक होये,
षड्ज न्यास मध्यम गँधारने, स्वल्प कहे छे सहु कोये;
पंचमी जातिथी प्रगटाये, न्यूनाधिक स्वर क्रम करतां,
अमित भेदथी अवनितलमां, कंबल गीत हृदय हरतां. ५४९

सामान्यगीति–लक्षण.

दोहा.

चार वर्ण त्रयलय सहित, सालंकृत सुखधाम;
ए गायनरचनातणुं, दे गीति गुणी नाम. ५५०

गीति–भेद.

दोहा.

प्रथम मागधी मानीने, अर्धमागधी जाण;
सुखकर छे संभाविता, पृथुला पछी प्रमाण. ५५१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मागधी-लक्षण.

रोळावृत्त.

ध्हाल धरी व्यवहार कलात्रयनो ज्यां थाये,
प्रथम कला गुणी सर्व, विलंबित लयथी गाये ;
गायेलो आदिनो शब्द, बीजानी साथे,
द्वितीय कलामां गाय, गुणी मध्यमलय माथे. ९९२

प्रथम द्वितीय कलमांहि, गवाएला शब्दो ग्रहीं,
तृतीय कलामां तृतीय शब्द, गाये द्रुतलय लहीं ;
सर्व कला ए रीत, गाय गुणी जाति स्वरोमयीं,
ए गीतिनुं नाम, कहे गुणी महद मागधी. ९९३

अर्धमागधी-लक्षण.

रोलावृत.

तृतीय कलानुं माप, मागधी तुल्य गणाये,
आदि कलानो शब्द, विलंबित लये गवाये ;
अर्ध शब्द आदिनो, शब्द बीजाथी जोडी,
द्वितीय कला मध्यम लयमां गाओ भय छोडी. ९९४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

द्वितीय कले गाएला, शब्दना अर्ध भागमां,
अवर शब्द मेळवो, रसिक रंगाइ रागमां ;
तृतीय कळामां गाओ, राखी द्रुत लयनी अवधि,
ए गीतिने गणो अखिल गुणी अर्धमागधी. ५५५

संभाविता-लक्षण.

रोलावृत्त.

जेह गीतिमां होय, जेटला कळ केरा स्वर,
क्वचित शब्द स्वर होय, रहेला एनी अंदर ;
कोइ कोइ स्वर विना, होय अक्षर उच्चारो,
संभाविता सदैव, नाम एनुं दृढ धारो. ५५६

पृथुला-लक्षण.

रोलावृत्त.

जे गीतिनो शब्द मांहीं गुरु अक्षर ओपे,
क्वचित् गुरुने स्थान, उभय लघुने आरोपे ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एमज शुद्ध अशुद्ध, कलानुं गान थाय ज्यां,
पृथुला भेद प्रसिद्ध, प्यारथी प्रगट थाय त्यां. ९८७

मद्रकादिगीत-लक्षण.

दोहा.

मनहर मद्रक प्रथम छे, पछी अपरान्तक पेख;
उर धारी उल्लोप्य ने, ललित प्रकर्या लेख. ९९८

वेणुक अने रविंद्र गणो, कोतर छंदक धार ;
उतम छे आतारिता, वर्धमानक विचार. ९९९

प्रवल पछी छे पाणिका, रसिक ऋचा धर चित्त ;
शुभ गाथा. सामानि छे, चारु चतुर्दश गीत. ९६०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ताल.

सवैया एकत्रीशा.

तल धातुने प्रतिष्ठार्थमां, लगावीअें घञ प्रत्यय ज्यांय,
गीत वाद्य नृत्यथी भरेलो, ताल शब्द त्यां सिद्ध कराय ;
लघु. द्रुत. गुरु. प्लुत अक्षरथी शुभ परिमित थयली क्रिया देखाय,
तेथी परिमित थअेल प्रीतें, काल ताल नाम लेखाय. १

गीत वाद्य नृत्यना प्रबल परिमाण तणो रचनारो होय,
तोज तेह कालने ताल कहीं, ग्रहण करे गुणीयो सहु कोय ;
उभय प्रकार तणो ए ओपे, मार्ग अने देशी ने नाम,
संगीतना शोखीने सुखप्रद, नित्य बने छे जे नथुराम. २

तालप्राण—नाम.

छप्पय छंद.

प्रथम प्राण छे काल, द्वितीय वर प्राण मार्ग भग,
तृतीय प्रण छे क्रिया, सुप्राण चतुर्थ अंग गग ;
पंचम ग्रह छे प्राण, प्राण षष्टम जाति वर,
सप्तम प्राण सु कला, प्राण अष्टम लय चित धर ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नवम प्राण यति नित्य छे, दशम प्राण प्रस्तार प्रिय,
ए दश प्राणो तालना, हर्ष थकी गुणी धार हिय. २

काल प्राण.

दोहा.

सुची अग्रथी कमलदल, वींतें वीतता काल;
क्षण कह्यो तेने वर्णवे, बहु गुणी बुद्धि विशाल. ४

अष्ट क्षणेथी एक लव, वसु लव काष्टा थाय;
काष्टा अष्ट तणो समय, नित्य निमेष गणाय. ५

उत्तम अष्ट निमेषनी, कला एक कहेवाय;
उभय कलना कालथी, भावे त्रुटी भणाय. ६

जाहिर युग त्रुटीनो समय, कहे अणु सहु कोय;
द्वय अणु काले एक द्रुत, द्वय द्रुतथी लघु होय. ७

युग लघुथी गुरु एक छे, त्रय लघु प्लुत परमाण;
दश प्लुतथी पल एक छे, अहनिश उरमां आण. ८

संगीत पारिजातानुसार काल विचार.

दोहा.

मात्रा चार तणो समय, लघुकाळ लेखाय;
एक कही ध्वनि एक करो, द्वित्रय वेद विहाय. ९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मात्रा अष्ट तणो समय, शुभ गुरुकाळ गणाय;
एक परें ध्वनि एक करीं, तुर्तज अष्ट तजाय. १०

द्वय मात्रा द्रुतनी गणो हृदयें धारी हेत;
अन्य काळनो एह सम, समजी ल्यो संकेत. ११

अन्य मतानुसार काल विचार.

दोहरा.

मात्रा एक निमेषनो, वाळ कहे गुणी कोय;
एह कला, काष्टा तणो, अहीं उपयोग न होय. १२

चार निमेषनो गीतमां, काल कला कहेवाय;
लघु, गुरु, प्लुत ए क्रम वडे, शोभी रहे सदाय. १३

पांच लघु अक्षर तणो, जे उच्चारण काल;
एक लघु एने गणो, दश लघु गुरु विशाल. १४

लघु अक्षर प्रिय पंचदश, उच्चारीने आा;
करो कल्पना प्लुत तणी, महद तालनुं मा.प. १५

मार्ग प्राण.

दोहरा.

वेद भेद छे मार्गना, आदि ध्रुव ने चित्र;
वार्तिक, दक्षिण ए पछी, मानी ल्यो मम मित्र. १६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मार्ग-कला.

एक मात्रिकानी कला, ध्रुव मारगमां धार ;
द्वय मात्रा केरी कला चित्र मार्ग मोझार. १७

चार मात्रिकानी कला, वार्तिक मार्गे जोर ;
अष्ट मात्रिकानी कला, दक्षिण मार्गे होर. १८

अन्यमतानुसार-मार्ग.

दोहरा.

दक्षिण. वार्तिक. चित्रने, ध्रुव चतुर्थ कहे कोय ;
पछी चित्रतर. चित्रतम अंत चित्रतम होय. १९

दक्षिण मार्ग-कला.

दोहरा.

ध्रुविका. सर्पिणी शोभती, कृष्णा. पद्मिनी पेख ;
विसर्जिता गणी त्हांथी, वर विक्षिप्ता लेख. २०

प्रचल पताका पञ्चौ करे, पतिता अमृत वृष्ट ;
दक्षिण मार्गे दिव्यए, अचल कलाओ अष्ट. २१.

वार्तिक मार्ग-कला.

दोहरा.

आदि ध्रुविका. सर्पिणी, तृतीय पताका धार ;
पतिता सह कहीए कला, वार्तिक मार्गे चार. २२

चित्र, ध्रुव मार्ग-कला.

चित्र मार्गनां द्वय कला, ध्रुविका पतिता नाम;
ध्रुव मार्गे ध्रुविका कला, नित्य एक नहुरान. २३

चित्रतर चित्रतम मार्ग-कला.

चित्रतरें अर्ध कला, शशि द्रुत तणुं प्रमाण;
पा कल चित्रतमें कही, अणु प्रमाण उर आण. २४

अन्य मतानुसार.

अर्ध अणु कल दक्षिणे, चतुर्थ भाग प्रमाण;
वार्तिक मार्गे तुर्य कला, अर्ध अहिर्थ जाण. २५

चित्र मार्गमां कल त्रुटॉ, प्रिय प्रमाण त्रुटॉ अर्ध;
चित्रतरे घर्षण कळा, ओळख अणु त्रुट्यार्ध. २६

चित्रतमें अनुघर्षण, वर्णगार्ध कहीं गाय;
अति चित्रतमें स्वर कला, अणु वर्णगार्ध थाय. २७

क्रिया प्राण.

दोहरा.

कह्या क्रियाना भेद द्वय, प्रथम निःशब्दा नाम ;
द्वितीय सशब्दा सुखदगण नेह सहित नगुणाम. २८

ताल क्रिया निःशब्दनुं, वेद भेदयुत भाव ;
गीत वाद्यां नृत्यनुं, तत्व तात संभाळ. २९

निःशब्दा—कलानाम.

आदिमां आवाप छे, पछीं निष्क्राम निहाळ ;
वर विक्षेप विचारीने, मध्य प्रवेशक भाळ. ३०

सशब्दा—कलानाम.

सशब्दना भेदो सरस, ध्रुव. शंपा ने ताल ;
संनिपात स्नेहे गणी, मुद उदात्तिमां म्हाल. ३१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पात-कलाना नामथी, वर चाले व्यवहार ;
ए सहु समज स शब्दनो, कला निःशब्द धार. ३२

आवाप लक्षण.

दोहरा.

स्वस्त उर्ध्व तल हस्तनी, अंगुलीओने आप;
खंत धरीने खेंचीए, एह भेद आवाप. ३३

निष्क्राम लक्षण.

हस्त उर्ध्व तलनी सरव, अंगुलीओ सुखधाम;
धारी प्रीत प्रसारवी, नौतम ए निष्क्राम. ३४

विक्षेप लक्षण.

राखेलो जमणी तरफ, सरलांगुलीथी शुद्ध;
हस्त उर्ध्व तल फेंकवो, ए विक्षेप विशुद्ध. ३५

प्रवेशक—लक्षण.

राखेलो "विक्षेप" वत, हस्त अधस्तल केरी ;
अंगुली आकुंचन करी, लियो प्रवेशक हेरी. ३६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ध्रुव-शम्पा-लक्षण.

चपटीना ध्वनि पूर्वके, हस्तपात ध्रुव नाम ;
दक्षिण भुजनो पात ते, छे शम्पा सुखधाम. ३७

ताल. सान्निपात-लक्षण.

दोहा.

वाम भुजाना पातने, त्वरित उँचारो ताल ;
उभय हस्तनो पात ते, सन्निपात सुखमाल. ३८

अंग—प्राण.

दोहा

अणु. द्रुत तृतीय विरामद्रुत, लघु. विरामलघु नाम ;
गुरु. प्लुत सह छे अंगना, निज भेद नधुराम. ३९

अणु-लक्षण.

दोहा.

अर्ध चंद्र सम चिन्ह छे, चचकारे तिय नाम ;
पा मात्रा उत्पत्ति पवन, चंद्र देव सुखधाम. ४०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तेतर सम उच्चार छे अति सूक्ष्म छे घात ;
ए अणुना आकारनी, ल्यो विचारी गुणी वात. ४१

द्रुत—लक्षण.

दोहा.

शुन्य चिन्ह मात्रा अरध, चमत्कार ते थाय ;
जळ ही उद्भव देवगिर, गुणीओ गीतें गाय. ४२

चकली सम उच्चार छे, घात सूक्ष्म सुखरुप ;
द्रुतनुं लक्षण दाखजो, आनँद धरी अनुप. ४३

विराम द्रुत-लक्षण.

शुन्य उपरे स्नेहथी, चडे मात्रा सुखधाम;
एह चिन्ह आरेखजे, नेह धरी नभुराम. ४४

तिते शब्द चक्रामां, त्रय मात्रा सुखरुप;
उद्भव मरुत वरुणथी, देव कुमार अनुप. ४५

वक्र समान उच्चारने, दोढ सूक्ष्म छे घात;
वर विरामद्रुतनुं स्वरुप, तुर्त निहाळो तात. ४६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लघु--लक्षण.

ललित चिन्ह लीटी कहो, चचकोरे थेइ थाय;
उत्पत्ति अग्नि थकी, शशि मात्रा गुणी गाय. ४७

द्विय मात्रा देवता, नीलकंठ सम बोल;
पूर्ण घात लघुनो परखो, त्वरित करो गुणी तोल. ४८

विराम लघु—लक्षण.

ललित लं.टी.नी उपरे, मात्र मनोहर लेख ;
एह चिह्न आनंदमय, प्रेम थकी पेख. ४९

चारु दिशे चचकारमां नित्य स्थेइ नाम ;
सत्रा मात्रिका अनल जल, उत्तम उद्भव ठाम. ५०

देव गुरु छे देवता, कोकिल सम उचार ;
दोढ पूर्ण शुभ घात छे, ए विराम लघु यार. ५१

गुरु—लक्षण.

वक्र चिन्ह " S " समान छे, थे ईतितत नाम ;
उत्पत्ति आकाशथी, द्वय मात्रा नभुराम. ५२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छे शिव पार्वती देवता, वायस बोल विचार ;
द्वय पूरण कहीं घातने, गुरु स्वरुप उर धार. ५३

प्लुत—लक्षण.

वक्र चिन्ह पर मात्र छे, त्रय मात्रानुं प्रमाण ;
थे इति त त त थे ई थें ई, च्चकारे उर आण. ५४

हरिहर ब्रह्मा देवता, अवनि उद्भव स्थान ;
कुक्कुट सम उच्चारथी, अरो मेरु मन. ५५

छे त्रय पूरण घात शुभ, लक्ष रागीने लेख ;
प्रा: वखाण प्लुत तणुं, ए स्वरुप अवरेख. ५६

अणु—नाम.

अणु अंकुशने धनुष छे, करज अर्धद्रुत नाम; ५७
अर्धचंद्र, अणुद्रुत अने, अर्ध बिन्दु नपुराम.

द्रुत नाम.

व्यंजन द्रुतने शुन्य गण, अर्धमात्रि ने कूप;
सुद्दत उतर स्व-अकाश छे, वलय बिन्दु सुखरुप. ५८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विरामद्रुत-नाम.

द्रुत नामोना अंतमां, विराम पद वपराय;
विरामद्रुत दविराम कही, सर्व गुणीजन गाय. ५९

लघु नाम.

लघु मेरु व्यापक सरल, ल शर दंड कहेवाय;
ए नामो आनंदथी, विश्व विषे वपराय. ६०

विराम लघु नाम.

अखिल नाम लघु अंतमां, वरविराम पद धार;
विरामलघु. ल-विराम सह, नौतम नाम विचार. ६१

गुरु—नाम.

दीर्घ. वक्र. गुरु. पूज्य छे, द्विमात्री. केयूर ;
मातटंक ने गोपकल, कंकण. हार. नूपुर. ६२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्लुत—नाम.

शृंगी. सामज. दिप्त छे, त्रिमात्रिक. प्लुत. अंग ;
ग्रामोद्भव. तारस्थ कही, उरमां धरो उमंग. ६३

ग्रह—प्राण.

ताल तणा आरंभने, ग्रह कहे गुणी सहु कोय ;
सम. अतीत, सु अनागत. वेद विषम सह होय. ६४

सम—लक्षण.

जहां तालने गीतनो, एक संग आरंभ ;
सम वा समपाणि कहो, ए ग्रहने तजी दंभ. ६५

अतीत—लक्षण.

प्रथम गीत आरंभ करी, पछी ताल देवाय ;
अतीत वा अवपाणि ए, गुणीमां नित्य गणाय. ६६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अनागत—लक्षण.

आदि ताल आरंभ करी, पाछळ गीत गवाय ;
एह अनागत नाम वा, उपरिपाणि कहेवाय. ६७

विषम—लक्षण.

प्रथम गीतके ताल हो, एमां नहीं अटकाव ;
वर्णन विपम तणुं करो, भलो वधारी भाव. ६८

जाति—प्राण.

छंद-रोला.

ताल तणा रूपने, जबर गुणीयो कहे जाति,
चार प्रथम चतुरस्र, त्र्यस्र ने खंड गगाती ;
मिश्र अने संकीर्ण, पांच भेदो भयहारी,
समजी संगीत सार, वात उर लीयो विचारी. ६९

छप्पय—छंद.

चितहर वर्णो चार, भव्य चतुरस्र भणीए :
त्र्यस्र तणा त्रय वर्ण, गुणीना मतथी गणीए,

पांच वर्णनो खंड, सातनो मिश्र मनोहर;
छे नवनो संकीर्ण, महद गुणीयो ने मुदवंर;
जेम जातिना वर्ण छे, तेमज मात्रा जाणीए,
क्रमथी द्विगुण सदा गणी, नित्य अंतरमां आणीये. ७०

दोहा.

छे ब्राह्मण चतुरस्त्र, त्र्यस्त्रने क्षत्री जाणो ;
खास वैश्य छे खंड, मिश्रने शुद्र वखाणो. ७१

संकीरण संकीर्ण तालना वर्ण विचारो;
प्रिय प्रयोग अनुसार, धरी श्रुति उरमां धारो. ७२

कला प्राण—कला नाम.

दोहरा.

ध्रुविका. सर्पिणी शोभती, कृष्णा. पद्मिनी धार ;
विसर्जिता वर लेखीए, विक्षिप्ता सु विचार. ७३

प्रबल पताका ते पछी, पतिता गणो प्रसिद्ध ;
कर्यां कलाना नाम ए, सहु गुणीओए सिद्ध. ७४

कला—लक्षण.

शब्द सहित ध्रुविका गणो, डावे जमणे ठाम ;
खेंचाये ते खास छे, सर्पिणी. कृष्णा नाम. ७५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जाने नीचे व्हार ते, पद्मिनी. विसर्जिता सु ;
खेंचवे पोता तरफ, वेगे विक्षिप्ता सु. ७६

ऊर्ध्व गति करनारने, ज्वर पताका जाण ;
करपातनथी थाय ते, पतिता सत्य प्रमाण. ७७

लघु मात्रा मांहे सदा, द्रढ करी ध्रुविका जाण ;
गुरु मात्रामां गर्व तजी, ध्रुविका. पतिता आण. ७८

क्रिया प्रयोग स शब्दमां, लघु मात्रामां होय ;
ध्रुविका. कृष्णा. सर्पिणी, कहे गुणी सहु कोय. ७९

लय--प्राण.

दोहरा.

ताल क्रिया उपरांत जे, वर आवे विश्राम ; ८०
लय कही तेने वर्णवे, नित्य गुणी नथुराम.

लय-भेद.

दोहरा.

आदि द्रुत. मध्यम द्वितीय, तृतीय विलंबित नाम ;
ललित भेद लयना कह्या, सहु जनने सुखधाम. ८१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मध्यम. द्रुत लयथी द्विगुण, ले विश्रान्ति काल ;
एथी द्विगुणा कालनी, भव्य विलंबित भाळ. ८२

मार्ग प्रतिलय भेद.

छंद–रोला.

दक्षिण मार्गनी मांहि, चारु चिरभाव गणाये,
चित्र मार्गमां क्षिप्रभाव, भावथी भणाये ;
वार्तिक मार्गे मध्यभाव, मुददायक देखो,
मार्ग भेदथी अनंत, भेदो लयना लेखो. ८३

यति प्राण.

दोहरा.

लयना प्रवृत्तिनियमने, गणे यति गुणवान ;
समा. अने स्रोतोगता, पछी गोपुच्छा मान. ८४

पिपीलिका प्रीते कही, महद मृदंगा नाम ;
उर धर अति आनंदथी, नौतम यति नथुराम. ८५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

समा--लक्षण.

दोहरा.

आदि मध्यने अंतमां, एकज लय ज्यां होय ;
समा यति सुंदर अति, कहे तहां सहु कोय. ८६

प्रथम स्रोतोगता--लक्षण.

दोहरा.

सुचिर. मध्य. द्रुत लय जहां, आदि मध्यने अंत ;
सक्रम होय त्यां प्रथम छे, स्रोतोगता महंत. ८७

द्वितीय स्रोतोगता--लक्षण.

दोहा.

जहां आदिथी अंत लगी, सु चिर. मध्य लय होय ;
द्वितीय तहां स्रोतोगता, कहे गुणी सहु कोय. ८८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तृतीय स्रोतोगता--लक्षण.

दोहा.

शरुआतथी अंत लगी, मध्य तथा द्रुत ज्यांय ;
तृतीय प्रकार तणी तहां, स्रोतोगता सुहाय. ८९

प्रथम गोपुच्छा-लक्षण.

दोहा.

आदि मध्यने अंतमां, द्रुत. मध्य. चिर लय जाण ;
गोपुच्छानो त्यां प्रथम, भव्य भेद उर आण. ९०

द्वितीय गोपुच्छा लक्षण.

आदिथी ते अंत लगी, सु द्रुत. मध्य लय लेख ;
गोपुच्छानो त्यां तुरत, द्वितीय भेद तुं देख. ९१

तृतीय गोपुच्छा--लक्षण.

आदि अंत ज्यां होय लय, मध्य. विलंबित नाम.
गोपुच्छानो त्यां तृतीय, नित्य भेद नथुराम. ९२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पिपीलिका लक्षण.

छंद-रोला.

आदि मध्य अंतमां, सु चिर. द्रुत. चिर लय होवे,
पिपीलिकानो प्रथम भेद, त्यां कहे सहु कोये ;
आदि मध्य अंतमां मॅध्य. द्रुत. मध्यम लय छे,
पिपीलिकानो द्वितीय भेद, त्यां आनंदमय छे. ९३

आदि मध्यने अंत, सु चिर. मॅध्य. चिर लय जाणो ;
पिपीलिकानो तृतीय भेद त्यां उरमां आणो.

मृदंगा-लक्षण.

आदि मध्य अंतमां, सु द्रुत. चिर. द्रुत लय राखो ;
प्रथम मृदंगा भेद, दिव्य द्रष्टिथी दाखो. ९४

आदि मध्य अंतमां, सु द्रुत. मॅध्य. द्रुत लय शोभे ,
द्वितीय मृदंगा भेद, जोइने दिलडुं लोभे;
आदि मध्य अंतमां, सु द्रुत मध्य द्रुत लय चारु,
तृतीय मृदंगा भेद, करे दिलनुं दुःख न्यारुं. ९५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पंच भेद यति तणा, धृतिथी उरमां धारी ;
लायक गायक भूल, क्षमा करजो सहु मारी.

प्रस्तार प्राण.

दोहरा.

अणु द्रुत आदिकने जहां, पूर्ण बधारी प्यार ;
लखीए पंक्ति रीतथी, पेखो ए प्रस्तार. ९६

संख्या. नष्ट. उदिष्ट ने, मेरु आदि सहु अंग ;
अन्य स्थळे अवरेखजो, उरमां धरी उमंग. ९७

षट्पितापुत्र-लक्षण.

आदिं प्लुत पछीं एक लघु, गुरु द्वय पछीं लघु धार ;
ए पाछळ प्लुत एक छे, गुणी गण मात्रा बार. ९८

अघोर मुख स्मरदहननुं उद्भव स्थान पवित्र;
क्षत्रि जाति रँग श्याम छे, पेख षट्पितापुत्र. ९९

संपक्वेष्टाक-लक्षण.

प्लुत आदि पछीं त्रय गुरु, अंत एक प्लुत राख;
हर इशान मुखथी थयो. द्वादश मात्रा दाख. १००

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जाणो जाति क्षत्रिनी, ललित रंग छे लाल;
ए संपकेष्टाक छे, मार्ग ताल सुखमाळ. १०१

उद्घट-लक्षण.

त्रय गुरु षड मात्रा सुखद, क्षत्रि जाति बहु रंग;
हर तत्पुरुष मुखे थयो, उद्घट धरी उमंग. १०२

मार्गपंचताल भेद.

प्रथम यथाक्षर एककल, द्वितीय द्विकल कहेवाय;
तृतीय चतुष्कल भेद त्रय, ए पांचेना थाय. १०३

मार्गप्रतिमार्गतालविधि.

शुद्ध स्वरुपे तालने, ध्रुव मारग मां धार;
धर द्विगुणी मात्रा करी, चित्रमार्ग मोझार. १०४

चाहे करजे चोगुणी, वार्तिक मार्गे वीर;
अष्ट गुणी दाक्षिण पथे, समजी ले धरी धीर. १०५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चंचत्पुट त्रय भेद-लक्षण.

थाय यथाक्षर एककल, आठ कलानो यार;
सोळ कळा केरो द्विकल, द्रढ चंचत्पुट धार. १०६

कलित कला बत्रीशनो, चारु चतुष्कल थाय;
एक गुणी द्विगुणी अने, चोगुणी कला कराय. १०७

अन्य तालनो आ रीते, समजी ल्यो संकेत;
भेद पंचदश पंचना, प्रगटे नेहनिकेत. १०८

देशी ताल-लक्षण.

अणु द्रुत आदिक अंगथी, ध्रुव मार्गे धरी ध्यान ;
गण्या ताल जे गायके, ए देशी अभिधान. १०९

देशी ताल—मात्रा प्रमाण.

लघुनी एक द्वय गुरु तणी, त्रय प्लुतनी उर आण ;
अर्ध कला द्रुतनी अचल, देशी तालमां जाण. ११०

देशी ताल ग्रहतां अने, तंते तजती वार ;
द्रुत. गुरु. प्लुतनो त्याग करी, मुख्य लघुने धार. १११

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देशी तालमां द्रुत तणे, स्थानक लघुने राख ;
संगीत वपुमां प्राणसम, दिव्य तालने दाख. ११२

परिवर्तन—लक्षण.

चतुर्थांश चितचाहथी, अथवा अष्टम अंश ;
मार्ग तालनो मोदथी, ग्रहण करी गुणीहंस. ११३

दुःखहर देशी तालमां, प्रगटो वारंवार ;
परिवर्तन पेखो तहां, आनंदेथी यार. ११४

मान-लक्षण.

ताल तणा विश्रामनी, काल क्रियानुं नाम;
मान कही गुणी मानता, नेह सहित नथुराम. ११५

चित्र ताल—लक्षण.

चार अणुं द्रुत विण नहि, अन्य अंग आभास;
चित्र ताल चोतालनो, प्रेमे करे प्रकाश. ११६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एकतालि ताल-लक्षण.

अचल चार द्रुत चार छे, एक तालि उर धार ;
अवर नाम छे एहनुं, कंदुकार्य सुखकार. १.१७

चित्त हर ज्यां चोताल छे, खास विदारण खेद ;
कंदुकार्य नो कलित ए, भाळो बीजो भेद. १.१८

देखो षट्दविराम ज्यां, षट् ताळो सुखरुप,
कंदुकार्यनो त्यां कहो, तृतीय भेद गुणीभूप. ११९

आदि ताल लक्षण.[२]

आादि तालमां सात लघु, सुखद ताल छे सात ;
रास ताल छे एहनुं, अवर नाम अवदात. १२०

लघुशेखर ताल लक्षण.[३]

ललित अष्ट लविराम छे, अंदर ताळो अष्ट ;
लघुशेखर ए लेखीए, नित्य करे दुःख नष्ट. १२१

---

१. ० ० ० ०

२. | | | | | | |

३. ̀| ̀| ̀| ̀| ̀| ̀| ̀| ̀|

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

करुणाताल लक्षण.

अष्ट गुरुथी उद्भवे, अष्ट तालनुं अंग ;
कहो करुणाताल ए, उरमां धरी उमंग. १२२

सन्निपात लक्षण.

प्रगट थाय षट् प्लुत थकी, षट् तालनुं शरीर ;
सन्निपात या पिंडमठ, धार नाम धरी धीर. १२३

सर्व ताल-लक्षण.

अणुथी प्लुत लगीं अंग सहु, क्रम सह करे प्रकाश,
सर्वताल त्यां शोभतो, सप्त ताल सुखराश. १२४

पंचम.

एक अणु द्रुत द्वय जहां, तेज भर्या त्रय ताल;
पंचम ताल प्रसिद्ध ए, बोले बुद्धि विशाल. १२५

---

१. ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
२. ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀
३ ◡ o ò । ̀। ऽ ऽ̀
४ ◡ o o

द्वितीय ताल–लक्षण.

लर्खो प्रमाण द्वय द्रुत तणुं, चित्ते गुणीजन ल्हाय;
द्वितीय ताल द्वय तालथी, शोभा धरे सदाय. १२६

आदि[2] ताल–लक्षण.

जहां द्वय द्रुत लघु एक छे, त्रय तालो ते मांहि;
आदि ताल आनँदभरण, रहो गुणी चित्त चाही. १२७

चतुर्थ[3] ताल–लक्षण.

अणु उभय द्रुत एकथी, वर गुणीमां वदराय ;
चारुं ताल चतुर्थ छे, त्रय तालो देवाय. १२८

सप्तम[4] ताल–लक्षण.

एक अणु दविराम द्वय, छे त्रय ताल अनुप ;
सप्तम ताल सुहामणो, रस भरनारुं रूप. १२९

---

१. ० ०
२. ० ० ।
३. ◡ ◡ ०
४. ◡ ०̀ ०̀

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अष्टम ताल-लक्षण.

देख एक दविराम ज्यां, एक अणु लघु एक ;
ए अष्टम त्रय तालमय, समजो सहु सविवेक. १३०

निःशंकलीला ताल-लक्षण.

प्लुत द्वय. द्वय गुरु. एक लघु, पंच ताल सप्रमाण ;
निःशंकलीला ताल ए, अहनिश उरमां आण. १३१

चंद्रकला ताल-लक्षण.

त्रय गुरु. त्रय प्लुत एक लघु, सप्त ताल सुख देण ;
चंद्रकला चारु निरख, नित्य दिव्य करी नेण. १३२

---

१. ०ॅ ॅ ।
२. ऽ̀ ऽ̀ ऽ ऽ ।
३. ऽ ऽ ऽ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ब्रह्म ताल लक्षण.

लघु. द्रुत. लघु. द्वय द्रुत, लघु, त्रय द्रुत पछी लघु धार ;
दश तालोथी दीपतो, ब्रह्मताल तुं भाळ. १३३

इंडावान ताल-लक्षण.

द्रुत लघु द्वय द्रुत अंत लघु, पंच तालने पेख ;
इडावान आनंदथी, ललित लक्षणे लेख. १३४

चतुस्ताल लक्षण.

त्रय द्रुत अंते एक लघु, चारु ताल छे चार ;
चतुस्ताल चित्ते धरो, हरदम दुःख हरनार. १३५

कुंभक ताल—लक्षण.

छप्पय छंद.

प्रगट पंच द्रुत आदि, एक अणु आनंदे धर ,
देख एक दविराम, एक लघु ए पाछळ भर ;

---

१. | ० | ० ० | ० ० ० |
२. ० | ० ० |
३. ० ० ० |
४. ० ० ० ० ०˘ ό | ०˘ ό | ० ו

दाखल कर द्रुत एक, एक अणु द्रुत विराम शशि,
एक लघु द्रुत एक, एक लविराम रहे वसी ;
चारु चतुर्दश तालथी, रसिक उरे भरतो रति,
नित्य कहे नथुराम ए, कुंभक ताल कलित अति. १३६

लक्ष्मी ताल-लक्षण.

आदिमां द्रुत उभय, एक लघु युग अणु द्रुत वर,
शशि द्रुत शशि दविराम, एक द्रुत एक लघु कर.
द्वय द्रुत पछी दविराम, एक द्रुत एक रुपाळो,
द्रुत विराम शशि धरी, एक लघु द्वय द्रुत भाळो.
ललित एक लविराम छे, अष्टादश तालो अचल,
लक्ष्मी ताल लक्ष्मीभरण, उर नथुराम धरो अदल. १३७

कुंडनाची ताल-लक्षण.

दोहरा.

द्रुत लघु पछी लविराम छे, द्रुत लघु पछी लविराम;
लघु द्रुत लघु लविराम द्रुत, लघु विराम सुखधाम. १३८

---

१. ००।ᵕ ०००।००ॆ० ०ॆ०।००ॆ।
२. ०।ॆ।०।ॆ।।०।ॆ।०ॆ।

द्वादश तालो दीपता, सुभग वधारण स्नेह;
ताल कुंडनाची कह्यो, गुणीयोने मुदगेह. १३९

अर्जुनताल लक्षण.

द्रुत लघु द्रुत लघु वाद्धि द्रुत, लघु द्रुत पछी ल विराम;
ए अर्जुन दश ताल दइ, नित्य कहो नथुराम. १४०

कुल ताल–लक्षण.

द्रुत. लघु. द्रुत. लघु. द्रुत. लघु, त्रय द्रुत लघु, द्रुत चार;
शशि लघु तालों पंच दश, ए कुल ताल विचार. १४१

रञ्जा ताल लक्षण.

आदिमां लघु एक छे, पछी एक दविराम ;
उभय ताल आनंदप्रद, नित्य रञ्जा नथुराम. १४२

१. ० । ० । ० ० ० । ० ˋ
२. ० । ० । ० । ० ० ० । ० ० ० ० ।
३. । ०̀

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सन्निताल-लक्षण.

त्रय द्रुत शशि लघु द्रुत युगल, द्वय लघु दुःखहरनार ;
सन्निताल शोभाववा, अष्ट ताल उर धार. १४३

सिंहविक्रम ताल-लक्षण.

त्रय गुरु. लघु. प्लुत. लघु. गुरु, अंते प्लुतने आण ;
सिंहविक्रम सुताल ए, प्रिय वसुताल प्रमाण. १४४

महा सन्निपात ताल—लक्षण.

त्रय द्रुत द्वय लघु. द्रुत लघु, द्रुत. लघु द्रुत लघु वेद ;
चौद ताल महा सन्निमां, खचित विदारे खेद. १४५

---

१. ० ० ० । ० ० । ।
२. ऽ ऽ ऽ । ऽ̇ । ऽ ऽ̇
३. ० ० ० । । ० । ० । ० । । । ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रह[1] ताल—लक्षण.

आदि गुरु पछीं उभय प्लुत, ओपे शशि गुरु अंत ;
वेद ताल ग्रह तालमां, मानो गुणी महंत. १४६

सम[2] ताल—लक्षण.

द्वय गुरु पछीं लघु एक छे, त्रय तालो सुखकंद;
समजो ए सम तालने, उरमां धरों आनंद. १४७

संचय[3] ताल—लक्षण.

शशि द्रुत लघु त्रय राखीने, चारु दीयो चोताल ;
संचय ताल सुहामणो, खास करो गुणी ख्याल. १४८

---

१. ऽ ऽ̀ ऽ̀ ऽ
२. ऽ ऽ ।
३. ० । । ।

सिंहनन्दन ताल लक्षण.

युग गुरु लघु. प्लुत, लघु. गुरु, द्वय द्रुत द्वय गुरु होय ;
लघु. प्लुत. लघु. प्लुत, गुरु. लघु, कहें लघु पछीं सहु कोय. १४९

अंते चार अशब्द लघु, ताल बीश पर एक ;
सिंहनन्दन सहृदयने, अरपे विभव अनेक. १५०

अष्टतालिका ताल—लक्षण.

अणु. द्रुत. पछीं द्विराम. लघु, लघु विराम. गुरु आण ;
प्लुत. लघु. अंतिम ताल वसु, अष्ट तालिका जाण. १५१

पृथ्वीकुंडली ताल—लक्षण.

द्वय गुरु लघु प्लुत. त्रय गुरु, लघु. प्लुत. लघु. गुरु. राख ;
प्लुत. गुरु. युग लघु. वेद लघु. भला चार द्रुत भाख. १५२

---

१. S S I S̀ I S ० ० S S I S̀ I S̀ S I I — I I — T ⊥
२. ᵕ ० ὀ I. ί S S̀ I
३. S S I S̀ S S S I S̀ I S S̀ S I I I I I I ० ० ० ० I I
S S I S̀ I S I S̀ S̀ I I I I S — I I — T ⊥

द्वय लघु. द्वय गुरु. लघु. प्लुतं, लघु. गुरु. लघु प्लुत बेय ;
चार लघु. गुरु चार लघु, अशब्द अंते देय. १९३

त्रेतालिश तालो त्वरित, आनंद धारी आप ;
पृथ्वीकुंडली तालनुं, महद गुणी ले माप. १९४

[1]लघुपृथ्वीकुंडली ताल—लक्षण.

त्रय गुरु. त्रय लघु. गुरु गणो, द्वय लघु. गुरु लघु होय ;
गुरु. लघु युग. त्रय गुरु. पछी, द्वय लघु त्रय गुरु जोय. १९५

लाव लघु. गुरु चार. लघु, गुरु. लघु त्रय गुरु धार ;
लघु. गुरु पांच. प्रमाण सह, उरमां नित्य उतार. १९६

ओगणचाळीश ओपता, ताल हृदय हरनार ;
लघु पृथ्वी कुंडली समज, विध विध करी विचार. १९७

[2]पातालकुंडली ताल-लक्षण.

छंद हरिगीत.

लघु. प्लुत. गुरु. लघु. प्लुत गुरु, लघु. गुरु. पछी प्लुत लघु गणो,
द्वय प्लुत. गुरु त्रय. प्लुत. गुरु त्रय, प्लुत. लघु. गुरु. लघु भणो;

---

१. S S S | | | S | | S | S | | S S S | | S S S | S S S
S | S | S S S | S S S S S

२. | S̀ S | S̀ S | S S̀ | S̀ S̀ S S S S̀ S S S S̀ | S |
S̀ S | | S S S | S̀ ० ० | — | | — T ⊥

प्लुत. गुरु, लघु द्वय. त्रय गुरु लघु. प्लुत. उभय द्रुत लघु चहो,
लघु चार अंत अशब्द छे, पाताल कुंडली ए कहो. १५८

दोहरा.

ओगण चालीश तालथी, शोभीतो सुखधाम ;
पॉताल कुंडली पेखजो, नेह सहित नथुराम. १५९

इन्द्रलोककुंडली ताल–लक्षण.

दोहरा.

द्वय लघु. गुरु. लघु प्लुत पछी, त्रय गुरु. लघु प्लुत यार ;
लघु. गुरु. प्लुत. त्रय गुरु गणी, त्रय प्लुत लघु उर धार. १६०

द्वय प्लुत. द्वय गुरु. लघु करी, द्वय गुरु द्वय लघु देख ;
प्लुत. गुरु द्वय. लघु प्लुत लखी, लघु गुरु. त्रय लघु लेख. १६१

गुरु. लघु वेद. अशब्द धर, ताल वेद पर वेद ;
इन्द्रलोककुंडली तणो, भव्य विलोको भेद. १६२

---

१. | | ऽ | ऽ̀ ऽ ऽ ऽ | ऽ̀ | ऽ ऽ̀ ऽ ऽ ऽ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ | ऽ̀ ऽ̀ ऽ ऽ
| ऽ ऽ | | ऽ̀ ऽ ऽ | ऽ̀ | ऽ | | | ऽ (| | | |)

ब्रह्मांड कुंडली ताल–लक्षण.

अणु. द्वय द्रुत. दविराम त्रय, चारु लघुं धर चार ;
लघु विराम षड. अष्ठ गुरु, द्वादश प्लुत. दिल धार. १६३

छत्रीश तालो शोभता, रस भरनारा रोज ;
सु **ब्रह्मांड कुंडली** कहो, मनमां आणी मोज. १६४

अहिमेषकुंडली ताल–लक्षण.

छंद हरिगीत.

द्रुत एक पछी गुरु एक छे, द्रुत एक लखी गुरु एक धर,
द्रुत एक आनंदे दइ, गुरु एक अति कोडथी कर ;
द्रुत एक शशि गुरु अंतमां, शुभ ताल वसु उर आणजे,
अहिमेष कुंडली तालनुं, अभिधान जाहिर जाणजे १६५

---

१. ◡ ० ० ०̀ ०̀ ०̀ | | | | |̀ |̀ |̀ |̀ |̀ |̀ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
ऽ ऽ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀ ऽ̀

२. ० ऽ ० ऽ ० ऽ ० ऽ

अहिगति ताल लक्षण.

दोहरा.

द्वय लघु. शशि प्लुत. शशि गुरू, शशि लविराम विचार ;
शशि लघु. शशि द्रुत अहिगति. सप्त ताल सुखकार. १६६

हेमांचल ताल–लक्षण.

द्रुत दविराम. धरी करो, द्रुत पाछळ दविराम ;
अंत चार द्रुत ताल वसु, नित्य हेमाचल नाम. १६७

विष्णु ताल–लक्षण.

त्रय लघु. गुरु. त्रय लघु. गुरु, लघु गुरु द्वय द्रढ धार ;
त्रय लघु. द्वय गुरु. लघु गुरु, लघु गुरु शर. सुखकार. १६८

---

१. । । ऽ ऽ । । ०
२. ० ० ० ० ० ० ० ०
३. । । । ऽ । । । ऽ । ऽ ऽ । । । ऽ ऽ । ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ

चोवीश तालो चोंपथी, आनंद धारी आप ;
विष्णु तालनुं व्हालथी, महद गुणी ग्रह माप. १६९

पक्षिराज ताल-लक्षण.

द्रुत. लघु. द्रुत. लघु. द्रुत. लघु, द्रुत लघु लक्षे राख ;
पक्षिराजमां ताल वसु, नेह धरीने नाख. १७०

गारु गीत ताल-लक्षण.

त्रय द्रुत. शशी दविराम धर, गारु गीतमां मित्र ;
वेद ताल दे खेद तजी, समजी भेद पवित्र. १७१

झोंबड ताल-लक्षण.

द्वय लघु. शशी दविराम शुभ, झोंबड ताले जोय ;
वन्हि ताल दे व्हालथी, कहे गुणी सहु कोय. १७२

---

१. ०।०।०।०।

२. ० ० ० ऽ

३. ।।ऽ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नीलझोंबडी ताल–लक्षण.

गुरु शशि. लघु द्वय. लेखजे, पूर्ण वधारी प्रीत ;
लोक तालथी शोक हर, नील झोंबडी नित्य. १७३

चक्र ताल–लक्षण.[2]

प्रथम चार द्रुत शशि लघु. त्रय द्रुत शशि लघु धार ;
द्वय द्रुत. लघु शशि राखज, आनंदथी यार. १७४

शशी द्रुत. शशि लघु अंतमां, पूर्ण मार ए प्यारुँ ;
ताल चतुर्दश चित्त धर, चक्र तालमां चारु. १७५

त्रिकुंडव ताल—लक्षण.

आदिमां द्रुत चार छे, देख पछी दविराम ;
त्रय द्रुत धरी दविराम धर, द्वय द्रुत पछी दविराम. १७६

---

१. ऽ । ।
२. ० ० ० ० । ० ० ० । ० ० । ० ।
३. ० ० ० ० ०̀ ० ० ० ० ० ० ०̀ ० ०̀

अंते द्रुत. दविराम दइ, ताल चतुर्दश नाख ;
ताल त्रिकुंडवने त्वरित, राग धरी उर राख. १७७

स्वर्ण मेरु ताल—लक्षण.

लघु. गुरु. त्रय द्रुत. लघु गुरु, त्रय द्रुत लघु. गुरु होय ;
त्रय द्रुत. लघु. द्वय द्रुत. लघुं, प्लुत. गुरु. द्वय द्रुत जोय. १७८

लघु. प्लुतं. गुरु. त्रय द्रुत पछी, दे दविराम विचारी ;
द्वय द्रुत धरी दविराम धर, द्रुत. लघु. युग गुरु. धारी. १७९

साडत्रीश तालो सरस, अंदर होय अनुप ;
निरख निश्च नथुराम ए, स्वर्ण मेरु सुरूप. १८०

शंख ताल—लक्षण.

द्रुत. लविराम. त्रिद्रुत गुरु, द्वय लघु. द्रुत लघु धार ;
दश तालोथी दीपतो, शंख ताल सुखकार. १८१

---

१. I S o o o I S o o o I S o o o I o o I S̀ S
o o I S̀ S o o o ò o o ò o I I S

२. o ì ● o o S ◡ ◡ o I

द्वितीय शंख ताल—लक्षण.

द्वय द्रुत. पछी दाविराम दे, गुरु प्लुत. गुरु. ल. विराम ;
लघु. द. विराम. सु द्रुत. अणु, निश्च अंत नथुराम. १८२

एकादश तालो अचल, धृति धरी उरमां धार ;
द्वितीय शंखने स्नेहथी, अंतरमांहि उतार. १८३

संयोग ताल—लक्षण.

प्लुत. गुरु. पछी लविराम लखो, दे लघु. पर दाविराम ;
द्रुत. युग अणु. द्रुत आगळ, दाखल कर दाविराम. १८४

लघु. लविराम. गुरु गणी, अंते प्लुतनो योग ;
चौद तालथी चळकतो, सुखद ताल संयोग, १८५

त्रिवर्तक ताल—लक्षण.

द्वय लघु. द्वय द्रुत. द्वय लघु. ललित क्रमेथी लेख ;
षड् तालथी शोभतो, त्वरित त्रिवर्तक देख. १८६

---

१. o o ò S S̀ S |̀ | ò o ◡
२. S̀ S |̀ | ò o ◡ ◡ o ò | S S̀
३. | | o o | |

नारायण ताल—लक्षण.

द्वय द्रुत. लघु. गुरु लघु गुरु. क्रम सह धरी सुख माण ;
षड तालो दइ स्नेहथी, नित्य नारायण जाण. १८७

द्वितीय विष्णु ताल—लक्षण.

शशि गुरु. लघु युग. प्लुत शशि, स्नेह धरी संभाळ ;
वेद तालना भेदथी, द्वितीय विष्णु गण ताळ. १८८

गद्य ताल—लक्षण.

युग लघु. प्लुत शशि प्यारथी, गणे सहु गुणवान ;
गद्य ताल त्रय तालमय, मोद धरीने मान. १८९

नर्तन ताल—लक्षण.

शशि द्रुत. शशि लघु. द्रुत शशि, शशि लविराम विचार ;
नर्तक ताल निभावता, चतुर ताल दे चार. १९०

---

१. ० ० । ऽ । ऽ
२. ऽ । । ऽ̀
३. । । ऽ̀
४. ० । ० ।̀

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दर्पण ताल—लक्षण.[1]

द्वय द्रुत. शशि गुरु शोभता, दर्पण ताले देख ;
त्रिविधि ताप हरनार त्रय, ललित ताल तुं लेख. १९१

मन्मथताल लक्षण.[2]

शशि लघु. द्वय द्रुत शशि लघुं, युग गुरु. अंदर धार ;
सुखप्रद षड् तालो भयों, मन्मथताल विचार. १९२

रति ताल लक्षण.[3]

द्वय लघु. द्वय गुरु धारजो, चोखा चारज ताल ;
रसिक गणो रति ताल ए, धारी व्हाल विशाल. १९३

सिंह ताल लक्षण.[4]

एक लघु. आगळ धरी, त्रय द्रुत. अंते आण ;
सिंहताल सुखमाल ए, चार ताल ज्यां जाण. १९४

वीरविक्रम ताल लक्षण.[5]

शशि लघु. द्वय द्रुत. शशि गुरू, शोभा धरे सदाय ;
वीरविक्रम विचारजे, वेद ताल वपराय. १९५

रंगताल लक्षण.[6]

आदि चार द्रुत ओपता, अंते गुरु अनुप ;
पंचताल परखी जुओ, रंग तालनुं रूप. १९६

---

१. ००ऽ २. ।००।ऽऽ ३. ।।ऽऽ
४. ।००० ५. ।००ऽ ६. ००००ऽ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[1]श्रीरंगताल लक्षण.

द्वय लघु. शशि गुरु. शशि लघु. प्लुत शशी ज्यां पेखाय ;
सुभग ताल श्रीरंगमां, शर ताले सुख थाय. १९७

[2]प्रत्यंगताल लक्षण.

त्रय गुरु. द्वय लघु राखजे, उरमां धरी उमंग ;
शर तालेथी शोभतो, परख ताल प्रत्यंग. १९८

[3]चतुरस्रताल लक्षण.

शशी गुरु. शशि लघु. प्लुत शशी, जोतां निरखो ज्यांय ;
चारु ताल चतुरस्र ए, त्रय तालो तेमांय. १९९

[4]त्रिभिन्नताल लक्षण.

पेखो लघु. गुरु. प्लुत जहां, छे त्रिभिन्न शुभ त्यांय ;
वन्हि तालथी विश्वमां, विधाविध जे वखणाय. २००

[5]हंसनुताल लक्षण.

शशि लघु शशि प्लुत. द्रुत द्वय, पाछळ प्लुत छे सिद्ध ;
हर्षभरण ए हंसनुं, पंच ताल सु प्रसिद्ध. २०१

[6]तुरंगलीलाताल लक्षण.

शशी द्रुत. शशी दविराम धरी, द्वय द्रुत. आण अभेद ;
गण तुरंग लीला त्वरित, दर तालो दइ वेद. २०२

---

१. ।।ऽ।ऽ̆ २. ऽऽऽ।। ३. ऽ।ऽ̆ ४. ।ऽऽ̆
५. ।ऽ̆००ऽ̆ ६. ०ॅ००

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शरभलीला ताल लक्षण.

द्वय लघु. पछीं द्रुत चार दे, द्वय लघु धर तजीं कष्ट ;
सुभग शरभलीला समज, आपी तालो अष्ट. २०३

कंदर्प ताल लक्षण.

द्वय द्रुत. शशि लघु. युग गुरु, आनंदेथी अर्प ;
सुखप्रद शर तालो दई, कहे ताल कंदर्प. २०४

वर्णभिन्न ताल लक्षण.

द्वय द्रुत. शशी लघु, शशि गुरू, वर्णभिन्नमां भाळ ;
वेद तालना भेदने, स्नेह धरी संभाळ. २०५

कोकिलाप्रिय ताल-लक्षण.

शशि प्लुत. शशि लघु. प्लुत शशिं, वह्नि ताल विख्यात ;
एह कोकिलाप्रिय अनुप, भावे समजो भ्रात. २०६

द्वितीय निःशंकलीला ताल-लक्षण.

युग प्लुत. युग गुरु अचल छे, वेद ताल वखणाय ;
ए निःशंकलीला द्वितीय, गुणीने मतें गणाय. २०७

जयताल-लक्षण.

लघु. गुरु. युग लघु. द्रुत युगल, शशि प्लुत. शोभे उपाय ;
जाणो ए जयताल छे, सत ताल सुखदाय. २०८

१. ।।००००।। २. ००।ऽऽ ३. ००।ऽ
४. ऽ।ऽ ५. ऽऽऽऽ ६. ।ऽ।।००ऽ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पूयताल-लक्षण.

गुरु प्लुत. द्वय द्रुत. गुरु. लघु, अंते प्लुतने आण ;
सप्त ताल शोभे सदा, पूयताल ए जाण. २०९

द्वितीय रतिताल-लक्षण.

एक लघु. गुरु त्रय गणो, दई ताल वर वेद ;
द्वितीय एह रतिताल छे, खचित हरे उरखेद. २१०

विष्णुमत रतिताल-लक्षण.

प्रथम चार द्रुत. शशि लघु, द्वय द्रुत. शशि गुरु सिद्ध ;
विष्णुमत रतिताल ए, अष्ट ताल सु प्रसिद्ध. २११

चच्चरी ताल-लक्षण.

द्वय द्रुत. शशि दविराम छे, भव्य त्रिताल भणाय ;
चारु चच्चरी ताल ए, गुणीगणमांहि गणाय. २१२

कंकाल ताल-लक्षण.

शशि लघु. द्वय गुरु. शशि लघु, भलो विचारो भेद ;
काळित ताल कंकाल ए, वर तालो ज्यां वेद. २१३

मल्ल ताल-लक्षण.

चार लघु पछी द्रुत शशि, दुःखहर् शशि दविराम ;
मल्लतालमां ताल षट, नित्य गणो नथुराम. २१४

---

१. ऽऽ̍००ऽ।ऽ̍ २. ।ऽऽऽ ३. ००००।००ऽ
४. ००ॅ ५. ।ऽऽ। ६. ॥।।०ॅ

रंगाभरण ताल-लक्षण.

द्रुय गुरु. द्रुय लघु. प्लुत शशि, स्नेहे दे शर ताल ;
गौरवयुत गुणीये गण्यो, रंगाभरण विशाल. २१५

जयमंगल ताल-लक्षण.

प्रथम वान्हि लघु पेखीने, अंत धरो द्रुत एक ;
जयमंगल मांही जुओ, वेद ताल सविवेक. २१६

विजयानंद ताल-लक्षण.

द्रुय लघु. त्रय गुरु. राचता, द्रढ शर तालो धार ;
विजयानंद विवेकथी, उरमां नित्य उतार. २१७

राजविद्याधर ताल-लक्षण.

शशि लघु. शशि द्रुत सुखभरण, शशी दविराम सुहाय ;
रसिक राजविद्याधरे. त्रय तालो तेमांय. २१८

अभंग ताल-लक्षण.

आदिमां लघु एक गण, आणी एक प्लुत अंत ;
ए अभंगमां ताल युग, समजे सहु गुणवंत. २१९

रायवंक ताल-लक्षण.

शशि गुरु. शशि लघु. शशि गुरू. युग द्रुत अंते होय ;
रायवंक राखो रुदे, पंच तालमां प्राय. २२०

---

१. ऽऽ।।ऽ २. ।।।० ३. ।।ऽऽऽ ४. ।०ॅ
५. ।ऽ ६. ऽ।ऽ००

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रतापशेखर ताल-लक्षण.

प्लुत. द्रुत. पछी दविराम धरो, प्रतापशेखर पेख ;
ए अंदर आनंदथी, ललित ताल त्रय लेख. २२१

वसंत ताल-लक्षण.

वान्हि लघु प्रगटी प्रथम, आणो त्रय गुरु अंत ;
षट तालोथी शोभतो, विभवी ताल वसंत. २२२

गजझंपक ताल-लक्षण.

गुरु. द्वय द्रुत. दविराम लखी, धारण करजे धीर ;
गजझंपक ए गण गुणी, वेद तालमय वीर. २२३

चतुर्मुख ताल लक्षण.

शशि लघु. शशी गुरु. शशि लघुं. शशि प्लुत. अंत विशाल ;
चारु चतुर्मुख ताल दे, वेद ताल धरों व्हाल. २२४

मदनताल-लक्षण.

द्वय द्रुत. शशी गुरु शोभता, मदनताल मोझार ;
वान्हि ताल व्हाले दई, धर आनंद अपार. २२५

रमण ताल-लक्षण.

शशि गुरु. शशि द्रुत. शशि लघुं, रमणतालमां राख ;
अग्नि ताल आनंदप्रद, सहु गुणी पुरे साख. २२६

---

१. ऽ ० ॆ २. ।।ऽऽऽ ३. ऽ०० ॆ
४. ।ऽ।ऽ ५. ००ऽ ६. ऽ०।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

[1]तार ताल-लक्षण.

शशि द्रुत. शशि दविराम पछी, युग लघु दे आनंद ;
वेद तालना भेद सह, तार ताल सुखकंद. २२७

[2]पार्वतीलोचन ताल-लक्षण.

त्रय गुरु. पछी लविराम. प्लुत, द्वय गुरु द्वय द्रुत ज्यांहीं;
ताल अखंडित खंड छे, पार्वतीलोचन मांही. २२८

[3]मृगांक ताल-लक्षण.

शशि दविराम. सुद्रुत शशि, अंते शशी लघु अंक ;
वान्हि ताल दइ व्हालथी, मानो ताल मृगांक. २२९

[4]राजमार्तंड ताल-लक्षण.

शशि गुरु. शशि लघु. द्रुत शशि, अग्नि ताल अखंड ;
सहु गुणीओ स्नेहे कहे, रसिक राज मार्तंड. २३०

[5]कलाध्वनि ताल—लक्षण.

द्वय लघु. शशि गुरु. सुखद धर, शशी लघु. शशि प्लुत अंत ;
कहेजो ताल कलाध्वनि, शर तालो शोभंत. २३१

[6]सरस्वतिकंठाभरण ताल—लक्षण.

द्वय गुरु. द्वय लघु. द्रुत युगल, षट ताले सुख थाय ;
सरस्वतिकंठाभरण. कलित ताल कहेवाय. २३२

---

१. ० ०̀ । । २. ऽ ऽ ऽ ।̀ ऽ̀ ऽ ऽ ० ० ३. ०̀ ० ।
४. ऽ । ० ५. । । ऽ । ऽ̀ ६. ऽ ऽ । । ० ०

द्वंद्व ताल—लक्षण.

द्वय लघु. द्वय गुरु. द्वय लघुं, शशि प्लुत सुंदर ज्यांय ;
सप्त ताल शान्तिभरण, द्वंद्व ताल छे त्यांय. २३३

चित्रपुटताल–लक्षण.

द्वय लघु. द्वय द्रुत. शशि लघुं, शशि प्लुत. राखो संग ;
चारु चित्रपुट ताल षट, गण गुणी धरी उमंग. २३४

गौरीताल–लक्षण.

प्रमाण पंच लघुं तणुं. अवर न एके अंग ;
गौरीताल गणो गुणी, शर तालो दइ संग. २३५

सारसताल–लक्षण.

त्रय द्रुत. आदिमां अचल, द्वय लघु अंते होय ;
प्रगट पंच तालो प्रबल, कहे सारस सहु कोय. २३६

स्कंदताल–लक्षण.

गुरु. लघु. गुरु. द्वय द्रुत. लखी, द्वय गुरु अंते आप ;
सप्त तालथी शोभतुं, स्कंदतालनुं माप. २३७

उत्सवताल–लक्षण.

प्रथम शशि लघु शोभतो, युग प्लुत अंत त्रिलोक ;
उर धर उत्सवताल ए, लेखी तालो लोक. २३८

१. ।।ऽऽ।।ऽे २. ।।००।ऽे ३. ।।।।।
४. ०००।। ५. ऽ।ऽ००ऽऽ ६. ।ऽेऽे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भग्नताल-लक्षण.

चार द्रुतो चाहे धरो, युग लघु. पछी लविराम ;
भग्नताल भयहरण ए, सप्त ताल सुखधाम. २३९

विलोकितताल-लक्षण.

शशि गुरु. द्वय द्रुत. प्लुत शशि, मनहर मुदनी माल ;
चार ताल दइ चित्त धर, त्वरित विलोकितताल. २४०

पद्मताल-लक्षण.

दोहा.

युग लघु. शशि गुरु. शशि लघु, पद्मताल पिछाण ;
वेद तालना भेदने, जाहिर जुगते जाण. २४१

रंगप्रदीपताल लक्षण.

दोहा.

द्वय गुरु. शशि लघु. शशि गुरु. शशि प्लुत. धार समीप ;
पंच ताल दइ प्रगट गण, रसप्रद रंगप्रदीप. २४२

सुदर्शनताल लक्षण.

दोहा.

सत्वर षट द्रुत आदि धरी, अंते धर गुरु एक ;
तालसुदर्शन ताल मुनि, समजो सहित विवेक. २४३

१. ० ० ० ० । । ऽ २. ऽ ० ० ऽ ३. । । ऽ ।
४. ऽ ऽ । ऽ ऽ ५. ० ० ० ० ० ० ऽ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुदेवत्सताल लक्षण.

दोहा

શશિ દ્રુત. શશિ દવિરામ છે, અંત અગ્નિ લઘુ લેખ ;
સુદેવત્સ શાન્તિભરણ, પંચ તાલ દઇ પેખ. ૨૪૪

राजताल लक्षण.

दोहा.

લઘુ. પ્લુત. દ્વય દ્રુત. ગુરુ લઘુ, લલિત અંત પ્લુત લેખ ;
રાજતાલ મુનિ તાલ દઇ, આનંદે અવરેખ. ૨૪૫

तृतीय रतिताल लक्षण.

दोहा.

શશિ દ્રુત. દ્વય લઘુ. દ્રુત ત્રયે, શશિ લઘુ શોભાવાન ;
ત્વરિત તૃતીય રતિતાલમાં, મુનિ તાલોને માન. ૨૪૬

त्रिवर्तताल लक्षण.

दोहा.

યુગ અણુ. શશિ દ્વિરામ ધરી, કર ત્રય તાલ પ્રકાશ ;
તાલત્રિવર્ત કહો તમે, હૃદયે ધરી હુલ્લાસ. ૨૪૭

---

૧. o ò I I I   ૨. I Ś o o S I Ś
૩. o I I o o o I   ૪. ◡ ◡ ò

अभंगताल लक्षण.

दोहा.

द्वय द्रुत. लघु. लविराम लखो, धर लघु धरी उमंग ;
पंच ताल दइ पेखने, उत्तम ताल अभंग. २४८

झंपकताल लक्षण.

दोहा.

लखी एक लविराम तुं, उभय लघु धर अंत ;
अग्नि ताल दइ धर उरे, झंपकताल महंत. २४९

कमलाताल लक्षण.

दोहा.

गुरु. लघु द्रुत दविराम दे, लघु. गुरु. अंत अमूल्य ;
कमलाताल कहो गुणी, षट तालो सम तुल्य. २५०

उत्साहताल लक्षण.

दोहा.

शशि प्लुत. शशि गुरु. शशि लघु. रस भरनारो राह ;
अग्नि ताल ओपे अचल, एज तालउत्साह. २५१

व्रजमंगलताल लक्षण.

दोहा.

लेख प्रथम लविराम. द्रुत, लघु विराम द्रुत. धर ;
युग लघु. षट तालो सुभग, ए व्रजमंगल धार. २५२

१. ० ० । ॆ । २. ॊ । । ३. ऽ । ० ॆ । ऽ ४. ऽे ऽ ।
५. ॊ ० ॊ ० । ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विक्रमताल लक्षण.

दोहा.

द्रुत. दाविराम. लघु. लखी, लघु विराम. लघु. धार ;
प्रगट पंच तालो दई, विक्रमताल विचार. २५३

मधुरताल लक्षण.

दोहा.

त्रय दाविराम पछी तुरत, द्वय द्रुत. शशि लघु. राख ;
दर्शन ताल दइ करि, नित्य मधुर मधु चाख ; २५४

निर्मलताल लक्षण.

दोहा.

द्वय लघु. द्वय द्रुत. प्रथम धरी, द्वय लविराम विलोक ;
शशि लघु. तालो सप्त छे, नित्य निर्मल मन रोक. २५५

भीम ताल लक्षण.

दोहा.

द्वय द्रुत. शशि लविराम. पछी, शशि लव. शशि लविराम ;
द्वय लघु. मुनि तालो महद, निरख भीम नथुराम. २५६

---

१. ० ०̀ | |̀ | २. ०̀ ०̀ ०̀ ० ० |
३. | | ० ० |̀ |̀ | ४. ० ० |̀ | |̀ | |

कामोदताल लक्षण.

दोहा.

लघु¹ आदि लविराम, लघु, द्वय द्रुत. शशि लविराम ;
द्वय लघु. ताले सप्त शुभ, कहे कामोद मुदाम. २८७

चंद्रशेखरताल लक्षण.

दोहा.

द्रुत. लघु. पछी लविराम द्रुत; लघु विराम. लघु त्रेय ;
चारु चंद्रशेखर महीं, दिव्य ताल मुनि देय. २८८

ऊर्माण ताल लक्षण.

दोहा.

द्वय लघु. द्रुत. लविराम. द्रुत, लघु विराम. लघु आण ;
सप्त तालथी शोभतो, अनुप ताल ऊर्माण. २८९

कुंतल ताल लक्षण.

दोहा.

लघु. द्रुत पछी लविराम छे, द्रुत लविराम विशाल ;
द्वय लघु. ताले सप्त दइ, कहेजे कुंतल ताल. २९०

क्रीडा ताल लक्षण.

दोहा.

द्रुत. दविराम. पछी लघु. द्वय दविराम धराय ;
शशि लघु. षट ताले सहित, क्रीडा ताल गणाय. २९१

---

१. ˋ। । ० ० ˋ। । । २. ० । ˋ। ० ˋ। । ।
३. । । ० ˋ। ० ˋ। । ४. । ० ˋ। ० ˋ। । । ५. ० ˋ० । ˋ० ˋ० ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तिलक ताल लक्षण.

दोहा.

द्रुय लघु. द्रुत. दाविराम धरी. द्रुय लघु अंते आण ;
षट तालो सौंदर्यमय, प्यांर तिलक पिछाण. २६२

विजय ताल लक्षण.

दोहा.

द्रुत. लघु. द्रुत. लघु देखीने. द्रुत विराम दिल धार ;
अंत उभय लघु. ताल मुनि, म्हाळे विजय विचार. २६३

वज्रताल लक्षण.

दोहा.

द्रुत द्रुय. त्रय दाविराम छे, वज्र तालमां वीर ;
पंच ताल प्रीतिभरण, नित्य ताल धरो धीर. २६४

द्वितीय विजय ताल लक्षण.

दोहा.

द्रुय लघु. शशी गुरु. द्रुय लघु, शर तालो सुखदाय ;
संगीतज्ञातामां सरस, द्वितीयविजय वखणाय. २६५

---

४. । । ० ०̆ । ।   ५. ० । ० । ०̆ । ।
१. ० ० ०̆ ०̆ ०̆   २. । । ऽ । ।

प्रथम ताल लक्षण.

दोहा.

शशि गुरु. शशि द्रुत. प्लुत शशि, जाहिर शोभे ज्यांय ;
अग्नि ताल ओपे जहां, त्वरित प्रथम कहे त्यांय. २६६

चक्र ताल लक्षण.

दोहा.

प्रथम लघु त्रय लेखजे, शशि गुरु शोभावंत ;
वेद तालना भेदथी, मानो चक्र महंत. २६७

धनजय ताल लक्षण.

दोहा.

शशि द्रुत. शशि लघु. शशि गुरु, शशि प्लुत राजे रोज ;
चार ताल सु धनंजय, कहे लाग्री मन मोज. २६८

विराम ताल लक्षण.

दोहा.

द्रुत. दाविराम. लघु. द्रुत. लघु. अंते लविराम ;
सत्वर षट ताले दई, व्हालें कहे विराम. २६९

सालग ताल लक्षण.

दोहा.

शशि द्रुत. लघु शशि वन्हि द्रुत, लख शशि लघु बडभाग ;
षट ताले सालग समज, उरमां धरी अनुराग. २७०

१. ऽ ० ऽे २. ।।।ऽ ३. ०।ऽऽे
४. ० ०े।०।०।े ५. ०।०००।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सारस ताल लक्षण.

दोहा.

द्वय द्रुत. द्वय गुरु. वेद लघु. वसु तालो वखणाय ;
सारस ताल सुहामणो, गुणीमां नित्य गणाय. २७१

कील ताल लक्षण.

दोहा.

द्रुत. लघु. द्वय द्रुत. द्वय लघु, षट तालो सुखदाय ;
जनमनरंजन स्हेज ए, कीलताल कहेवाय. २७२

पंडिताल लक्षण.

दोहा.

एकज प्लुत. विण अवर नहीं, षट अंगोनो संग ;
पंडितालमां ताल शशि, समजो सहित उमंग. २७३

रवि ताल लक्षण.

दोहा.

द्वय गुरु. शशी लघु. द्वय गुरु. चार लघु चित्त धार ;
नव तालोना नियमथी, वर रविताल विचार. २७४

---

१. ० ० ऽ ऽ | | | | २. ० | ० ० | | ३. ऽ
४. ऽ ऽ | ऽ ऽ | | | |

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विचार ताल लक्षण.

दोहा.

त्रय लघु. द्रुत अंते अचल, दाखिल कर दविराम ;
धर विचारमां ताल शर, नेह सहित नथुराम. २७५

श्रीमंठ ताल लक्षण.

दोहा.

युग लघु. पछीं छे चार द्रुत, द्वय गुरु अंते आण ;
सुभग ताल श्रीमंठमां, वर वसु ताल वखाण. २७६

रंगमंठ ताल लक्षण.

दोहा.

गुरु. द्वय द्रुत. गुरु. युगल द्रुत, अंते लघु अनुप ;
सप्त तालथीं सुख करे, रंगमंठ रसरुप. २७७

पणमंठ ताल लक्षण.

दोहा.

द्वय गुरु. द्वय लघु. धारीने, लख अशब्द लघु चार ;
शुभ पणमंठ विराजतो, अष्ट तालथी यार. २७८

जयप्रियताल-लक्षण.

दोहा.

शशि लघु. शशि गुरु. शशि लघु. अग्नि ताल दइ आण ;
गुणीं करवा जय गीतमां, जाहिर जयप्रिय जाण. २७९

---

१. ।।।०ꣳ २. ।।००००SS
३. S००S००। ४. SS।।(।।।।) ५. ।S।

गीर्वाणताल लक्षण.

दोहा.

लघु. गुरु. लघु. प्लुत. गुरु. लखी, वर शर ताल वखाण ;
सुखदायक संगीतमां, गुणी गणजे गीर्वाण. २८०

कमलताल–लक्षण.

दोहा.

शशि लघु. द्वय द्रुत. द्वय लघु, द्वय द्रुत. त्रय लघु. होय ;
दश तालोथी दीपतो, कमल कहे सहु कोय. २८१

द्वितीयचित्रताल लक्षण.

दोहा.

द्वय द्रुत, शशि प्लुत. द्रुत शशि, लख क्रम सह धरी धीर ;
चार ताल दे चित्रमां, अहनिश बनी अधीर. २८२

तारप्रतिताल–लक्षण.

दोहा.

द्वय द्रुत. द्वय लघु. दीपता, भव्य मोद भरनार ;
गणो तारप्रतिताल ए, चारु ताल दइ चार. २८३

विशालताल लक्षण.

दोहा.

द्वय द्रुत' शशि लघु. उभय द्रुत, उभय लघु अवरेख ;
वर विशालमां ताल मुनि, लक्षे धारी लेख. २८४

---

१. । ऽ । ऽ̆ ऽ २. । ० ० ।। ० ० ।।।
३. ० ० ऽ̆ ० ४. ० ० ।। ५. ० ० । ० ० ।।

[1]कल्याणताल लक्षण.

दोहा.

शशि गुरु. युग लघु राखीने, लख अशब्द लघु वेद ;
कहीं मुनि ताल कल्याणमां, भलो समजजे भेद. २८५

[2]वल्लभताल लक्षण.

दोहा.

शशि गुरु. शशि लघु. शशि गुरु. वल्लभमां वपराय ;
अग्निताल आप्या थकी, सहु गुणीने सुख थाय. २८६

[3]वर्णताल लक्षण.

दोहा.

द्वय लघु. द्वय द्रुत. शशि लघु. द्वय द्रुत लखीं सुख माण ;
सप्त तालथी सुह्रद गुणीं, प्रीतें वर्ण प्रमाण. २८७

[4]पूनर्भूताल लक्षण.

दोहा.

द्वय लघु. शशि गुरु. लखीं प्रथम, धर लघु वेद अशब्द ;
ताल पूनर्भू पेख ए, सप्त तालने शब्द. २८८

[5]मुद्रितताल लक्षण.

दोहा.

शशि गुरु. द्वय लघु. शशि गुरू, धर अशब्द लघु वेद ;
अष्ट तालथी ओपतो, भलो सुमुद्रित भेद. २८९

---

१. ऽ।।(।।।।) २. ऽ।ऽ ३. ।।००।००
४. ।।ऽ(।।।।) ५. ऽ।।ऽ(।।।।)

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

करालताल लक्षण.

दोहा.

शशि लघु. युग गुरु. युग लघु, शशि गुरु. अंते होय ;
षड तालोथी शोभतो, कहे कराल सहु कोय. २९०

द्वितीय श्रीरंगताल लक्षण.

दोहा.

द्वय लघु. शशि गुरु. शशि लघु, शशि प्लुत. शशि लघु संग ;
षड तालो शोभाभरण, रसिक ताल श्रीरंग. २९१

गंभीरताल लक्षण.

दोहा.

शशि गुरु. आदि शोभतो, शशि प्लुत अंते राख ;
गुणी ताल गंभीर ए, द्वय तालोथी दाख. २९२

भिन्नताल लक्षण.

दोहा.

त्रय द्रुत. लघु. द्रुत. लघु द्रुत, द्वय लघु. तालो भक्ति ;
भिन्न तालना भेदनी, जाणो जाहिर जुक्ति. २९३

कलींगताल लक्षण.

दोहा.

प्रथम धरी शशि द्रुत सुभग, द्वय लघु अंते देख ;
कोडे ताल कलींगमां, ललित ताल त्रय लेख. २९४

---

१. ।ऽऽ।।ऽ २. ।।ऽ।ऽ। ३. ऽऽ
४. ०००।०।०।। ५. ०।।

पंचघाततालं लक्षण.

दोहा.

द्वय लघु. द्वय द्रुत. शशि लघुं, प्रसिद्ध तालो पंच ;
पंचघात ए ताल छे, पेखो लागी प्रपंच. २९१

प्रेमताल लक्षण.

दोहा.

आदि द्रुत. लघु. द्रुत लखी, जाहिर लघु. द्रुत जाण ;
प्रेम ताल प्रीतिभरण, शर तालो सुखखाण. २९६

सत्यताल लक्षण.

दोहा.

शशि लघु. शशि द्रुत. शशि लघु. शशि द्रुत. शशि लघु अंत ;
पंच तालमय पिंडथी, मानो सत्य महंत. २९७

प्रियताल लक्षण.

दोहा.

आदि शशि लघु शोभतो, शशि द्रुत. शशि लघु. शुद्ध ;
अग्नि ताल आनँदभरण, ए प्रिय तालविशुद्ध. २९८

वारिमंठताल लक्षण.

दोहा

लघु. गुरु. लघु. गुरु. लघु गुरु, षड तालो सुखदाय ;
व्हालभरण ए विश्वमां, वारिमंठ वखणाय. २९९

१. ।।००। २. ०।०।० ३. ।०।०।
४. ।०। ५. ।ऽ।ऽ।ऽ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संकीर्णताल लक्षण.

दोहा.

लघु द्रुत द्वय. लघु द्रुत उभय, लघु. द्रुत. लघु. द्रुत. दाख ;
लघु. द्रुत युग. लघु. द्रुत युगल, लघु. द्रुत. लघु. लखी राख.
द्वय द्रुत धरीने अंतमां, लख अशब्द लघु चार ;
प्रगट ताल पच्चीश दइ, धर संकीर्ण विचार. ३००

रुपकताल-लक्षण.

दोहा.

शशि द्रुत आदि शोभतो, शशि लघु अंते आण ;
उभय ताल आनंदमय, जाहिर रूपक जाण. ३०१

द्वितीय झंपकताल-लक्षण.

दोहा.

द्रुत. दविराम. पछी लघु, अग्नि ताल अवरेख ;
ताल द्वितीय झंपक तुरत, ललित काळथी लेख. ३०२

त्रिपुटताल-लक्षण.

दोहा.

सुखप्रद शशि दविराम छे, द्वय द्रुत अंते धार ;
त्रिपुट ताल त्रय तालथी, धारी व्हाल विचार. ३०३

---

१. । ० ० । ० ० । ० । ० । ० ० । ० ० । ० । ० ० (। । । ।)
२. ० । ३. ० ० । ४. ० ० ०

अष्टतालीताल लक्षण.

दोहा.

शशि लघु प्रथम सुहामणो, द्वय द्रुत, शशि लघु अंत;
अष्टतालीमां उर धरो, चार ताल धरी खंत. २०४

एकतालीताल-लक्षण.

दोहा.

अवरेखो लघु एक विण, जहां पड अंग अभाव;
एकतालीमां ताल शशि, भणो वधारी भाव. २०५

मादिरिफ्फताल-लक्षण-

दोहा.

त्रय गुरु. त्रय लघु. शशि गुरू, त्रय लघु. द्वय गुरु. धार;
द्वय लघु. द्वय गुरु. शशि लघु, गुरु शशि. लघु शशि यार.
गुरु शशि. लघु शशि. द्वय गुरू, शशि लघु अंत पवित्र;
चारु चोवीश ताल दइ, मादिरिफ्फ गण मित्र. २०६

नादिरिफ्फताल-लक्षण.

दोहा.

त्रय लघु. पछी गुरु चार छे, त्रय लघु. द्वय गुरु. देख;
द्वय लघु. द्वय गुरु. लघु. गुरू, लघु. गुरु. लघुने लेख.
उभय गुरु. लघु अंत लखी, बेगे पाम विराम;
चित्तहर चोवीश तालमय, नादिरिफ्फ नथुराम. २०७

---

१. ।०० । २. । ३. ऽऽऽ।।।ऽ।।।ऽऽ।।ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽ।ऽऽ।
४. ।।।ऽऽऽऽ।।।ऽऽ।।ऽऽ।ऽ।ऽ।ऽऽ।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भादिरिप्फताल-लक्षण.

दोहा.

गुरु. लघु द्वय. त्रय गुरु. लखो, चार लघु. गुरु देय ;
द्वय लघु. द्वय गुरु, लघु गुरु. लघु गुरु लघु. लखी लेय.
एना पछी गुरु उभय शुभ, छे लघु राशि सुखदाई ;
चोवीश तालो चित्त धरी, भादिरिप्फ कहे भाइ. ३०८

यादिरिप्फताल-लक्षण.

दोहा.

लघु. गुरु शार. त्रय लघु. गुरू, चार लघु गुरु अक्ष ;
लघु. गुरु. लघु. गुरु. लघु लखो, द्वय गुरु. लघु गण दक्ष.
चोवीश तालो चित्त धरो, पूर्ण उच्चारण प्रीत ;
सुखप्रद सहु गुणोने बने, यादिरिप्फनी रीत. ३०९

सादिरिप्फताल-लक्षण.

दोहा.

युग लघु. श्रुति गुरु. त्रय लघु, गुरु. लघु त्रय. तुं जाण ;
त्रय गुरु. लघु गुरु. लघु. गुरु, लघु. द्वय गुरु. लघु आण.
तंत तजी तालो दीयो, चोवीश समजी चित्त ;
सादिरिप्फ सुखकर गणे, समजनार संगीत. ३१०

---

१. S I I S S S I I I I S S I I S S I S I S I S S I
२. I S S S S S I I I S I I I I S S I S I S I S S I
३. I I S S S S I I I S I I I S S S I S I S I S S I

रादिरिप्फताल-लक्षण.

दोहा.

गुरु. लघु. श्रुति गुरु. त्रय लघु, गुरु. लघु त्रय, धर ध्यान ;
द्वय गुरु, द्वय लघु. गुरु. लघु, गुरु. लघु. युग गुरु मान. ३११
अंत लघु. आनंदप्रद, चोवीश तालो चारु ;
रोज करे छे रसिकनुं, रादिरिप्फ दुख न्यारुं. ३१२

जादिरिप्फताल-लक्षण.

दोहा.

लघु. गुरु. लघु. गुरु त्रय पछी, त्रय लघु. गुरु. लखीयाळ. ;
त्रय लघु. द्वय गुरु. द्वय लघु. द्वय गुरु. लघु. भल भाळ. ३१३

दोहा.

त्रय गुरु. लघु. ते पाछळे, चोवीश ताल प्रमाण ;
आनंददायक ताल ए, जादिरिप्फ तुं जाण, ३१४

तादिरिप्फताल-लक्षण.

दोहा.

द्वय गुरु. लघु. त्रय गुरु. ललित, त्रय लघु. गुरु. चित्त धार ;
त्रय लघु. द्वय गुरु. द्वय लघु, द्वय गुरु. लघु. गुरु यार.
लघु. गुरु. लघु छे अंतमां, चित्तधर चोवीश ताल ;
तादिरिप्फ ए ताल छे, विचार गुणी धरी व्हाल. ३१५

---

१. S I S S S S I I I S I I I S S I I S I S I S S I
२. I S I S S S I I I S I I I S S I I S S I S S S I
३. S S I S S S I I I S I I I S S I I S S I S I S I

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दंतिताल-लक्षण.

दोहा.

त्रय लघु. त्रय द्रुत. त्रय गुरू, त्रय प्लुत. लघु. द्रुत आण;
गुरु. प्लुत. लघु. लख दंतिमां, ताल सप्त दश जाण. ३१६

[2]महाव्याघ्रताल लक्षण.

दोहा.

द्वय प्लुत. द्वय गुरु. द्वय लघु. गुरु प्लुत. लघु लखी राख;
महाव्याघ्रमां ताल नव, दिव्य द्रष्टिथी दाख. ३१७

[3]सूर्यताल-लक्षण.

दोहा.

युग अणु. द्रुत अणु. आदि धर, द्रुत विराम अणु लेख;
लघु अणु. पछी लविराम अणु, गुरु अणु. प्लुत लघु पेख. ३१८
गुरु. प्लुत. अंते आणी कर, षोडश तालथी स्नेह;
सूर्यताल बनतो सदा, सहु गुणीने सुखगेह, ३१९

चंद्रताल लक्षण.

दोहरा.

द्रुत. अणु. द्रुत. द्रविराम, द्रुत, लघु. द्रुत. पछी लविराम;
द्रुत. गुरु. द्रुत. प्लुत. चंद्रमां, बार ताल नथुराम. ३२०

---

१. | | | o o o S S S S̀ S̀ S̀ | o S S̀ |
२. S̀ S̀ S S | | S S̀ |
३. ˘ ˘ o ˘ ò ˘ | ˘ ì ˘ S ˘ S̀ | S S̀
४. ò ˘ o ò o | o ì o S o S̀

मंगलताल लक्षण.

दोहा.

દ્રુત વિરામ. અણુ. આદિ છે, દ્રુત વિરામ. દ્રુત દાખ ;
દ્રુત વિરામ. લઘુ. લેખોને, દ્રુત વિરામ. ભલ ભાખ. ૩૨૧

લઘુ વિરામ. દવિરામ ગુરુ, દ્રુત વિરામ પ્લુત. માન ;
દ્વાદશ તાલો દુઃખહરણ, મંગલ તાલ મહાન. ૩૨૨

बुधताल लक्षण.

दोहा.

લઘુ. અણુ. લઘુ. દ્રુત. લઘુ લખી, દ્રુત વિરામ લઘુ લેખ ;
લઘુ વિરામ. લઘુ ગુરુ ધરી, લઘુ પ્લુત અંતે દેય. ૩૨૩

બુદ્ધિપ્રદ બુધતાલના, વિબુધો કરે વખાણ ;
દાખો દ્વાદશ તાલનું, ધારી પ્રીત પ્રમાણ. ૩૨૪

बृहस्पतिताल लक्षण.

दोहा.

લઘુ વિરામ. અણુ આદિ ધરી, લઘુ વિરામ. દ્રુત પેખ ;
લઘુ વિરામ. દવિરામ. પછી, લઘુ વિરામ. લઘુ લેખ. ૩૨૫

લઘુ વિરામ. ગુરુ, લખો કરી, લઘુ વિરામ પ્લુત. ધાર ;
ભાવે બૃહસ્પતિતાલમાં, બુધ દે તાલો બાર. ૩૨૬

---

૧. ○̀ ◡̀ ○̀ ० ○̀ । ○̀ ।̀ ○̀ ऽ ○̀ ऽ̀
૨. । ◡̀ । ० । ○̀ । ।̀ । ऽ । ऽ̀
૩. ।̀ ◡̀ ।̀ ० ।̀ ○̀ ।̀ । ।̀ ऽ ।̀ ऽ

शुक्रताल लक्षण.

दोहा.

गुरु. अणु. गुरु. द्रुत. गुरु लखी, द्रुत विराम गुरु होय ;
लघु. गुरु पछी लविराम. छे, गुरु प्लुत कहे सहु कोय. ३२७

सर्व प्रकारे शोभतो, शुक्रताल सुखरूप ;
आनंदे आपे गुणी, द्वादश ताल अनुप. ३२८

शनिश्चरताल लक्षण.

दोहा.

प्लुत अणु. प्लुत द्रुत प्लुत पछी, द्रुत विराम. प्लुत. मान ;
लघु. प्लुत. पछी लविराम, धरी, प्लुत. गुरु. पेख महान. ३२९

दे छे द्वादश ताल शुभ, रसिक गुणीजन रोज ;
सुभग **शनिश्चर** ताल ए, महद वधारण मोज. ३३०

राहुताल लक्षण.

दोहा.

प्लुत. अणु. गुरु. अणु. आगळे, लघु विराम. अणु. लेख ,
लघु अणु. पछी दाविराम दे, अणु. द्रुत. अणु. अवरेख. ३३१

राहुताल रसप्रद अति. उरे भरे आनंद ;
द्वादश तालो दे गुणी, सहु स्थलमां सुखकंद. ३३२

---

१. ऽ ˘ ऽ ० ऽ ०̀ ऽ । ऽ ।̀ ऽ ऽ̀
२. ऽ̀ ˘ ऽ̀ ० ऽ̀ ०̀ ऽ̀ । ऽ̀ ।̀ ऽ̀ ऽ
३. ऽ̀ ˘ ऽ ˘ ।̀ ˘ । ˘ ०̀ ˘ ० ˘

केतुताल लक्षण.

दोहा.

प्लुत. द्रुत. गुरु. द्रुत. प्रथम धर, लघु विराम. द्रुत. राख ;
लघु. द्रुत. पछी दविराम छे, द्रुत अणु. भावे भाख. ३३३

एकादश तालो अचल, अहनिश उरमां आण ;
सहु गुणीने उर सुखभरण, केतुताल तुं जाण. ३३४

तृतीयविजयताल णक्षल.

दोहा.

गुरु. लघु. पछीं प्लुत पांच छे, त्रय द्रुत. अंते ज्यांय ;
दश तालोथी दीपतो, तृतीयविजय छे त्यांय. ३३५

कामधेनुताल लक्षण.

दोहा.

अवर अंग विण ओपता, चारु प्लुत ज्यां चार ;
वेद ताल छे खेदहर, कामधेनु मोझार. ३३६

पुष्पबाणताल लक्षण.

दोहा.

चार द्रुतो. लघु चार लखीं, द्वय गुरु. द्वय प्लुत. धार ;
चार गुरु. प्लुत चार पछीं, द्वय लघु. द्वय द्रुत यार. ३३७

---

१. ऽ० ऽ० ।० । ० ० ०

२. ऽ । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ० ० ०   ३. ऽ ऽ ऽ ऽ

४. ० ० ० ० । । । । ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ । । ० ०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्रय तापोहर ताल ज्यां, जाहिर चोवीश जाण ;
प्रेमभरण हानिहरण, पुष्पत्राण सुखखाण. ३३८

प्रतापशेखरताल लक्षण.

दोहा.

शशि प्लुत. द्वय द्रुत दीपता, दे अंते दविराम ;
प्रतापशेखर तालमां, श्रुति तालो सुखधाम. ३३९

द्वितीयसमताल लक्षण.

युग प्लुत. शशि लघु. युगल द्रुत, युग लघु. द्वय द्रुत लेख ;
शशि दविरामथी द्वितीयसम, प्रिय दश तालो पेख. ३४०

रंगद्योतताल लक्षण.

दोहा.

त्रय गुरु. शशि लघु. प्लुत शशि, अहनिश आवे अंत ;
प्रगट पंच तालो भर्यो, रंगद्योत रसवंत. ३४१

१. ऽ ० ० ॆ २. ऽ ऽ । ० ० । । ० ० ॆ ३. ऽ ऽ ऽ । ऽ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संगीत पारिजातानुसार राग लक्षण.

सोरठा.

स्वररचना सुखधाम, रंजन करे त्रिलोकी जे ;
नित्य एह नथुराम, राग नाम रागे धरे. १

मतंगाचार्यमतानुसार राग लक्षण.

सोरठा.

निज सहु भेदे नित्य, स्वर ध्वनि युक्त सदा करे ;
चोंपे रंजन चित्त, रस भरनारो राग ए. २

सोमनाथाचार्यमतानुसार गीतिभेद.

दोहा.

ताल अने स्वर संग, मळे ध्वनि सुप्रसिद्ध ज्यां ;
शोभितो सर्वांग, रसिक उद्‌भवे राग त्यां. ३

संगीत रत्नाकरानुसार गीतिभेद.

दोहा.

शुद्धा. भिन्ना. गौडी अने, वळी वेसरा नाम ;
समजी ल्यो साधारणी, नित्य भेद नथुराम. ४

शुद्धा-लक्षण.

दोहा.

सीधा स्वर सहु रागना, आनंदे उच्चराय ;
वधघट विण मनहरण स्वर, जुक्तिबंध रहे ज्यांय. ५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्वल्प कंप शोभा अति, कलित कर्णप्रिय होय;
शुद्धा गीति स्नेहथी, कहे गुणी सहु कोय. ६

भिन्ना--लक्षण.

दोहा.

ह्रस्वोच्चारण स्वरतणुं, करे विषम स्वर गाइ;
मधुर कंप मनने हरे, ए भिन्ना गण भाइ. ७

गौडी-लक्षण.

सम स्वर उच्चारण सरल, मंद्र, मध्यने तार;
ए त्रय स्थाने कंप अति, स्थिति अखंड सुखकार. ८
सदैव श्रुतिने शांतिप्रद, चतुरो चित्ते च्हाय;
परिचित जनपद गौडमां, गुणीओ गौडी गाय. ९

गौडी-ओहाटी-लक्षण.

मृदु उच्चारण स्वर तणुं, क्रम सह त्वरित कराय;
द्रुत. द्रुततर स्वर वेग युत, आवे वारंवार. १०

स्वर हकार ओंकारना, अति वेगे उचराय;
गानासनमहीं गुणी कहें, व्यति लागेल जणाय. ११

अति गंभीर अवाजने, कंप मनोहर होय;
ए गौडी ओहाटी कहीं, गाय गुणी सहु कोय. १२

वेसरा-लक्षण.

दोहा.

द्रुत. स्वर वेगे रागना, बधा जहां बोलाय;
चतुर्वर्णयुत चारु अति, वर वेसरा वदाय. १३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साधारणी लक्षण.

दोहा.

चारे चित्तहर गीतिना, आवे लक्षण ज्यांय ;
अभिनव शोभा उद्भवे, साधारणी गणाय. १४

सोरठा.

ए गीति अनुरूप, राग नाम रागें धरे;
शोभे पंच स्वरूप, अखिल रागना अवनिमां. १५

दोहा.

शुद्धादिक स्वर गीतियो, कलित नित्य कहेवाय ;
ताल गीतियो गानमां, मागध्यादि मनाय. १६
दुर्गाचार्य तणे मतें, शुद्धादिक षड थाय ;
वेद भरत-याष्टिक वहनि, शार्दुल शशि ग्रहीं गाय. १७

भावभट्टमतानुसार रागभेद.

रोळावृत.

छे आदि संपूर्ण, पछी षाडव सुखदाता,
ओडव एना पछी, गणे संगीतगुणज्ञाता ;
पूरणओडव अने, भेद पूरणषाडव भण,
ओडवपूरण कही, गुणी षाडवपूरण गण. १८

षाडवओडव सुखद, सदा संगीते शोभे,
ओडवषाडव थकी, लक्ष गुणीनां मन लोभे ;
भावभट्ट आचार्य, तणो मत उत्तम ए छे,
महद गुणी मोदथी, सार सहु समजी ले छे. १९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सारंगदेवमतानुसार राग-भेद.

छंद-रोला.

ग्राम राग. उपराग राग भाषा भावें भण,
वळी विभाषा राग, राग अन्तरभाषा गण ;
गणी राग रागांग, राग भाषांग कलित कर,
राग क्रियांग. उपांग राग, गुणी उर अंदर धर. २०

ग्राम राग-लक्षण.

सोरठा.

उद्भव पाम्यो होय, षड्ज सुमध्यम ग्रामथी ;
सबंध जाम्यो होय, अष्टादश जाति थकी. २१

होये न्यारो नित्य, भाषा आदि रागथी ;
चाह वधारी चित्त, ग्राम राग गुणीओ कहे. २२

उपराग लक्षण.

सोरठा.

जातिथी लइ भाग, अवर रीतिए उद्भव्यो ;
ए उत्तम उपराग, ग्राम समीपी सर्वदा. २३

भाषा राग लक्षण.

दोहा.

ग्राम राग आलापनो, रच्यो प्रकार शुभ रीत ;
भयहर भाषा रागने, गाय गुणी धरी प्रीत. २४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विभाषा राग लक्षण.

दोहा.

भाषा राग लागो अखिल, आरंभी आलाप ;
गाय विभाषा रागने, गुणी प्रजाळवा पाप. २५

अन्तर भाषाराग लक्षण.

दोहा.

राग विभाषानो करी, आलाप सुचित्त चोर ;
अन्तर भाषा रागने, गाय गुणी शिरमोर. २६

रागांग राग लक्षण.

ग्राम रागनी छांय ग्रही, एथी रहे असंग ;
मुनि मतंग ए रागने, कहे राग रागांग. २७

भाषांग राग लक्षण.

दोहा.

छांया भाषा रागनी, ग्रहण करी रहे दूर ;
भलो राग भाषांग ए, भल भावे भरपूर. २८

क्रियांगराग लक्षण.

दोहा.

जे सुणतां प्रगटे उरे, वेगे विविद विकार ;
कहे छे राग क्रियांग ए, वर गुणी करी विचार. २९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उपांगराग लक्षण.

दोहा.

छांया शुभ उपरागनी, ग्रही सदाय गवाय ;
अहनिश राग उपांग ए, चतुरो चित्तमां च्हाय. ३०

नवराग भेद संख्या.

दोहा.

त्रीश भेद छे ग्रामना, नव उपराग निहाळ ;
वीश भेद भाषातणा, वीश विभाषा भाळ. ३१

अन्तर भाषाना गणो, चार भेद धरी चाह ;
आठ भेद रागांगना, गणावता गुणीनाह. ३२

एकादश भाषांगना, क्रियांगना छे त्रार ;
आनंदभरण उपांगना, श्रुतिथी त्रय उर धार. ३३

शत उपर छे सप्त दश, भव्य भेद सुखकार ;
ए सहु मार्गी मानवा, वर मुनि तणे विचार. ३४

शुद्धादिकपंचगीति राग भेद.

सोरठा.

शुद्धाना छे शुद्ध. भिन्न राग भिन्नातणा ;
गोंडी गौड विशुद्ध, वेसर गातां वेसरा. ३५

साधाराणिथी साफ, साधारण रागो सरस ;
उरमां धारो आप, राग नाम रागी सहु. ३६

दोहा.

सप्त राग शुद्धातणा, भिन्ना पंच प्रमाण ;
त्रय रागो गौडीतणा, अंतरमां गुणी आण. ३७

अष्ट वेसराना अचल, साधारणिना सप्त ;
ए रागो त्रीशे सुणी, सदा करो श्रुति तृप्त. ३८

शुद्धराग नाम.

दोहा.

षड्ज ग्राममां षड्जने, कैशिक, मध्यम जाण ;
शुद्ध साधारित शुद्धना, वेद भेद उर आण. ३९

पंचम. मध्यम. षाडवं. शुद्ध. कैशिक सुखरूप ;
मध्यम ग्रामे राग त्रय, अहनिश शुद्ध अनुप. ४०

भिन्न राग नाम.

दोहा.

काशक. मध्यम कलित छे, भिन्न षड्ज पछी भाळ ;
षड्ज ग्राममां भिन्न द्वय, स्नेह धरी संभाळ, ४१

तान आदि कैशिक पछी, पंचम भिन्न प्रमाण ;
मध्यम ग्रामे भिन्न त्रय, अहनिश उरमां आण. ४२

गौडराग–नाम.

दोहा.

षड्ज ग्राममां गौडने, मध्यम कैशिक होय ;
कैशिक गौड सु मध्यमें, कहे गौड सहु कोय. ४३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वेसर राग नाम.

षड्ज ग्राममां टक्कने, वेसर षाडव धार;
सुखद गणी सौवीर कर, त्रय वेसरथी प्यार. ४४

मध्यम ग्रामे बोट शुभ, मालव कौशिक मान;
मालव पंचम महद त्रय, वेसर तणा विधान. ४५

उभय ग्राममां उभय गण, वेसर राग अमोल;
कैशिक टक्क अने द्वितीय, हृदयहारी हिन्दोल. ४६

साधारणराग नाम.

दोहा.

षड्ज ग्राममां शोभता, त्रय साधारण सार;
सुंदर शक भस्माण पँच, रसिक रूप साधार. ४७

मध्यम ग्रामे मानजो, गुणी पंचम गांधार;
कैशिक षड्ज सुहामणो, पेखो धारी प्यार. ४८

उभय ग्राममां ककुभ छे, साधारण ए सात;
आनंदे अवलोकीए, अनुप त्रिश अवदात. ४९

उभय ग्रामनी जातिथी, प्रेम सहित प्रगटाय;
एथी आ रागो अखिल, ग्राम राग कहेवाय. ५०

याष्टिकमतानुसारमुख्य उपराग भेद.

दोहा.

अष्टादश षड्जादिथी, ललितोद्भव लेखाय;
होय समीपी ग्रामनो, ए उपराग गणाय. ५१

शोभे आदि शकतिलक, 'सु' टक्क सैंधव दाख;
प्रबळ कोकिला पंचमे, रेवगुप्त उर राख. ५२

भलो भावनापंचम, पंचम पाडव सिद्ध;
निरख नागगान्धारने, पंचम नाग प्रसिद्ध. ५३

याष्टिकमतानुसारगौण उपराग भेद.

दोहा.

सुखद प्रथम श्रीराग छे, नट बंगाल महान;
बंगाली ने भास छे, मध्यम पाडव मान. ५४

रक्तहंस पछी रसिक ले, कोलहहास सु रूप;
प्रसव अने भैरव ध्वनि, मेघ राग सुद रूप. ५५

सोम राग कामोदने, कामोदी दृढ धार;
उर अभ्र पंचम अने, फरी कंदर्प उतार. ५६

दुःखहर छे देशाख्य वर, कैशिक ककुभ कलित;
नट नारायण लक्षमां, ले उपराग ललित. ५७

भाषा राग भेद

दोहा.

सहु पहेलां सौवीर छे, ककुभ टक्क दिल धार;
पंचम भिन्नपंचम अने, टक्क कैशिक गण यार. ५८

हितमंदिर हिंदोल पछी, बोट सु मालव लेख;
कैशिक गँधार पंचमे, भिन्न षड्ज द्रग देख. ५९

वेसर पाडव समजी गुणी, मालव पंचम गाय;
पंचम पाडव पंचदश, भाषा राग भणाय. ६०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दोहा.

ग्राम राग षड उद्भवे, भाषा राग तमाम ;
मुनि **मतंग** मतमां प्रगट, निल्य एह नथुराम. ६१.

ग्राम राग द्वादश मळी, प्रगटे भाषा राग ;
नेह सहित नथुराम ए, कहे **कश्यप** बडभाग. ६२

प्रगटे भाषा रागने, ग्राम राग मळी चार ;
शार्दुल ए साबित करे, पूर्ण वधारी प्यार. ६३

अन्य सकल आचार्यमतानुसार. भिन्न भिन्न रागोना भिन्न भिन्न भाषा. विभाषा अन्तर भाषा राग.

दोहा.

सुभग राग सौवीरना, चार चार धरी चाह ;
भाषा राग भणे सदा, नेह भर्या मुनिनाह. ६४.

यथाक्रमे एनां अमल, उल्लेखुं अभिधान ;
वेग मध्यमा विहित छे, प्रथम प्रमोदनिधान. ६५

सरस द्वितीय **साधारिता, गांधारी** गुणरूप ;
चतुर सहित **सौवीर** ए, भणी गया मुनिभूप. ६६

ककुभ रागना पण कहुं, स्नेह धरी षट नाम ;
भाषा रागे भणी गया, संगीत मतना श्याम. ६७

पछी **रंगती** पेखीए, खचित **मधुरी** मुदखाण ;
शकमिश्रा छठ्ठी कही, हरे निरंतर हाण. ६८

ककुभ रागना त्रय कह्या, विमल विभाषा राग ;
भोगवर्धनी भण प्रथम, ललित जोइने लाग. ६९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ए पछी गण आभिरिका, विबुधो करे वखाण ;
मोद वधारण मधुकरी, जाहिर त्रीजे जाण. ७०

एज रागनो एक छे, अंतरभाषाराग ;
संज्ञा शालिवाहनि, दूर करे दिलदाग. ७१

त्रवणा रागना तेजभर, भाषा रागें भेद ;
एकवीश आचार्य सहु, उचरे नित्य अखेद. ७२

रोळावृत.

टॅक्क त्रवणा छे प्रथम, द्वितीय वैरंजी देखो,
मध्यमग्रामा मुदे, ते पछी तृतीय लेखो.;
देहा दुःखहरनार, पंचम मालववेसरी,
छे छठे छेवाटी, सैन्धवी सप्तम सुखसर. ७३

अष्टम कोलाहला, भावथी सर्व भणे छे,
प्रिय पंचमलक्षिता, पछी गुणी लोक गणे छे;
सौराष्ट्री. पंचमी. वेगरंजी पछी व्हाले,
गणजे नित गांधारपंचमी राग रसाले. ७४

मंगलकर मालवी, तानवलिता पाछळ,
ललिताने लेखजो, बुद्धिनुं अजमावी बळ;
रसमय रविचन्द्रिका, ते पछी ताना कहीए,
व्हालथी वाहेरिका, तुरत गणतीमां ग्रहीए. ७५

निर्मळ दोह्या नाम, वीशमे विनोदभर छे,
एकवीशमे स्थले, वेसरीसंज्ञा वर छे ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एज रागना चार, विभाषा राग विचारो,
आदिमांहि **देवारवर्धिनी** हृदये धारो. ७६

आन्ध्री छे ए पछी, **गुर्जरी** जाहिर गणीए,
त्यारबाद **भावनी**, भाव धारीने भणीए ;
छे दश भाषाराग राग **पंचमना** रसप्रद,
प्रथम **कैशिकी** पछी, **त्रावणी** दे मुद अनहद. ७७

तांबोद्भवा तृतीय, **आभीरी** ए पछी उत्तम,
पंचम स्थाने पुनित, **गुर्जरी** दूर करे गम ;
षष्टमनुं **सैन्धवी**, नाम सहु कोइ कहे छे,
दाक्षिणात्या स्थान, सदा सप्तमे ग्रहे छे. ७८

आन्ध्री छे अष्टमे, नवम **मांगली** सुनिर्मळ,
दशम **भावनी** दिव्य, लहे स्थिति गायकने गल ;
उभय विभाषाराग, राग **पंचमना** राजे,
भस्मानी भयहर, **अँधालिका** नेह निवाजे. ७९

हरिगीत.

वळी चार भाषाराग **पंचमना** कहे मुनि मानिता ;
ए **शुद्धधैवतभूषिता** ने **भिन्नधैवतभूषिता**,
वाराटी वरदायक **विशाला** श्रवणने सुखधाम छे,
एना विभाषा राग केरुं, **कैशिकी** शुभ नाम छे. ८०

छे उभय भाषा राग शक विण **टक्ककैशिक** रागना,
ले मोद **मालवी**, **भिन्नवलिता** सुणी श्रवण बडभागना ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एनो विभाषा राग एकज, द्राविडी दुःखहरण छे,
सुणवा निरंतर सुज्ञना आतुर अतिशय श्रवण छे. ८१

मुद बाग भाषा राग, नव हिन्दोलना हेते गणो,
अभिधान वेसरी, चूतमंजरी भाव धारीने भणो ;
सुखदाइ ते पछी षड्ज मध्यम, मधुरी मुदभर मानजो,
पछी भिन्नपौराली भणी, गौडी सुणी सुखने सजो. ८२

छे विदित मालववेसरी गायक तणा समुदायमां,
दे छे दवाग्नी अन्यने छेवाटी निजनी छांयमां ;
प्रिय पिंजरीनुं नाम ते पछी, गाय आचार्यावली,
ऋषि कहे भाषाराग बोट तणो मनोहर मांगली, ८३

दोहा.

मालवकौशिक रागना, भाषाराग अनुप ;
नाम त्रयोदश तेहना, सांभळजो सुखरूप. ८४

बंगाली ने मांगली, हर्षपुरी दे हर्ष ;
मालववेसरी, खंजिनी, अतिशय ले उत्कर्ष. ८५

गुर्जरी ने गौडी तणुं, गुणथी मेळवो ज्ञान ;
पौराली शुद्धा पछी, मालवरूपा मान. ८६

अर्धवेसरी, सैन्धवी, भलुं करावे भान ;
आभीरीनुं ए पछी, अचल गणो अभिधान.

सवैया-एकत्रीशा.

मालवकौशिक राग तणा, ऋषियो द्वय कहे विभाषा राग,
कांबोजी, देवारवर्धिनी जाणो, बुद्धिवडे बडभाग ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छे एकज गांधार पंचमे भाषा राग भणाएलो,
गांधारी अभिधान धारीने विनोद आपेछे व्हेलो. ८७

भिन्नषड्जना भेद सप्त दश भाषा रागे सर्व भणे,
आदि मांहि गांधारवल्ली पछी कच्छेली ने स्वरवल्ली गणे ;
निषादिनी त्रवणा. सु मध्यमा, शुद्धा सुज्ञ लही समजो,
दाक्षिणात्या, पुलंदिका पछी, भणो तुंबुरा गर्व तजो. ८८

सुखद षड्ज भाषा. कालिंदी. ललिता ते पाछळ लेखो,
क्रमथी श्रीकंठिका, बँगाली, गान्धारी. सैन्धवी देखो ;
चार विभाषा राग चारु ए, भिन्नषड्जना रसवाळा,
पौराली पछी बने मालवी, कालिंदी मुदनी माळा. ८९

दोष हरे देवारवर्धिनी, जो गायक श्रद्धाथी गाय,
वेसरषाडव राग तणा, द्वय भुवने भाषा राग भणाय ;
बाह्य तेमज बाह्यषाडवा निर्मळ उभय तणां छे नाम,
गातां गायकनां मंडलने, आपे आनंद आठे याम. ९०

उभय विभाषा राग एहना, सुखद पार्वती. श्रीकंठी,
जेनुं श्रवण सदा करवाथी, व्याधि सकल जाये वंठी ;
मालव पंचम राग तणा त्रय, भाषा राग गणो भावे,
वेगवती पछी भव्य भाविनी, विभाविनी मुद वरसावे. ९१

तानोद्भवा सु तान रागनो, भाषा राग तमाम कहे ;
पोता शुभ पंचम षाडवना भाषा रागे गादी ग्रहे ,
रेवगुप्ति रागमां थाय, भाषा रागनी गणना भारी,
विदित विभाषा राग पल्लवी, रेवगुप्तिनो भयहारी. ९२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रेवगुप्तिना राजे छे त्रय, अंतर भाषा राग अनुप,
भव्य भासवलिता, किरणावली, शंकावलिता श्रेय स्वरूप;
पल्लवी आदि चार राग ए, स्वतंत्र उपज्या छे आपे;
अन्य कोइ आचार्य वळी ए रीते निजमतने स्थापे. ९३

राग विभाषा अंतर भाषा रेवगुप्तिना जे जे छे,
तेमां ए चारेनी गणना सदैव लुप्तपणुं ले छे;
भाषा तेम विभाषा साथे, अंतर भाषा राग मळे,
बने एक शत' वीश बराबर बोले सारँग देव बळें. ९४

वेद भेद भाषारागोना मुनि मतंग प्रगटे धरी प्यार,
प्रथम मुख्य भाषा ने लेखो, स्वरभाषा पछी सुखनो सार;
दिव्य देशभाषा पछी आवे, गणतीमां उपभाषा राग,
लक्षण एनां लखी बतावुं अंतरमां धारी अनुराग. ९५

षड्जादिक स्वर साथे जेमां, आवे नहि गौडादिक देश,
भाषा राग. मुख्य ए भणवो, विनोद आपे नित्य विशेष;
षड्जादिक स्वर एक एकना उभयतणां आवे अभिधान,
आवेला स्वर अधिक प्रकाशे, ए स्वरभाषा राग महान. ९६

जे गातां आवे गुणवंता गौडादिक देशोनुं नाम,
देशरीतिअनुसार गवाये, राग देश भाषा नथुराम;
उपर कहेला त्रयथी न्यारो, अथवा मिश्र त्रयेथी होय,
ए उपभाषा राग रसीलो, स्नेहे गुणी गाये सहु कोय. ९७

दोहा.

मुनि मतंग मतमां कह्या, मुख्यादिक जे नाम;
अवर नाम एनां कहे, नित्य याष्टिक नथुराम. ९८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रथम मूलभाषा पछी, संकीरण सुखधाम ;
दुःखहर भाषादेश छे छाया भाषानाम. ९९

भाषा रागो वीशमां, मुख्य छे भाषा राग ;
अन्य चतुर्दश देशना, राग सुणो वड भाग. १००

होय राग स्वर नामथी, ते स्वर भाषा राग ;
देश नामना देश कहो, उरमां धरी अनुराग. १०१

देश अने स्वर नाम विण, होये रागो जेह ;
ए उपभाषा राग छे, गुणीओने सुखगेह. १०२

शुद्धा. आभीरी अने, रंगती रसनो बाग ;
मालव वेसरी त्रय सहित, मुख्य छ भाषा राग. १०३

सोरठा.

एक नामना राग, अधिक नजरथी न्याळतां ;
करी शंकानो त्याग, नित्य रूप न्यारां गणो . १०४

प्राचीन रागांग राग नाम.

रोळावृत.

प्रथम शंकराभरण, पछी घंटारव गणीए,
हंसक. दीपक. रीति. लाटि. भावेथी भणीए ;
पूर्णाटिका प्रसिद्ध, पल्लवी महद मोदवर,
नष्ट कष्ट करनार, अष्ट रागांग राग वर. १०५

प्राचीन भाषांग राग नाम.

गंभीरी, वेहारी, खशिक, उत्पली अनुपम,
गोल्ली. नादांतरी हरे, निलोत्पली उरभ्रम ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तरंगिणी· गांधार गति, वैरंज्या. छाया,
एकादश भाषांग राग पूर्वे कहेवाया. १०६

प्राचीन क्रियांग राग.

स्वभावक्री, भावक्री, शिवक्री. मरुकक्री छे,
त्रिनेत्रक्री कुमुदक्री, अनुक्री ओजक्री छे;
इन्द्रक्री. नागक्री· धन्यक्री. विपायक्री वर,
द्वादश रागक्रियांग, धृतिथी धर उर अंदर. १०७

प्राचीन उपांग राग नाम.

दोहा.

प्रिय पहेलो पूर्णाट छे, देख पछी देवाल;
गुरुंजिका सह राग त्रय, नित्य उपांग निहाल. १०८

अर्वाचीन रागांग राग नाम.

दोहा.

मध्यमादि· मालश्री छे, तोडीने बंगाल;
भैरव. वराटि· गुर्जरी, गौड वसंत निहाल. १०९

कोलाहल, धन्याश्री पछी, देशी ने देशाख;
अर्वाचीन रागांगना, राग त्रयोदश दाख. ११०

अर्वाचीन भाषांग राग नाम.

दोहरा.

भूपाली. आशावरी, वेलावली वर नाम;
छे आडीकामोदिका· नागध्वनि नथुराम. १११

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रथम मंजरीना पछी, शोभे शुद्ध वराटि ;
वंगालीनी पाछळे, नौत्तम नटकर्णाटि. ११२

अर्वाचीन भाषांगना, निरखो ए नव राग ;
गाये जेने गर्व तजी, बहु गुणीओ वड भाग. ११३

अर्वाचीन क्रियांग राग नाम.

रामकली. ने गौडकली. देवकली दुःखहारी ;
ए त्रय राग क्रियांगने त्यो अर्वाचीन धारी. ११४

अर्वाचीन उपांगराग नाम.

दोहा.

कौंतलि द्राविडी. सैन्धवी. स्थिर गण स्थानवराटि ;
हृतस्वरवराटि हृदय धरी, पेख प्रतापवराटि. ११५

छेडे छांया तोडीने, गणजे मालव गौड ;
गुणी महाराष्ट्री गुर्जरी, कथजे धारी कोड. ११६

शुभ सौराष्ट्री गुर्जरी, दक्षिण गुर्जरी देख ;
स्तंभतीर्थिका, मुंछिका. द्राविडी गुर्जरी लेख. ११७

छे छांया. वेलावली, भैरवी ने मल्हारी ;
प्रतापवेलावली पछी, ले छांयानोट धारी. ११८

कहे कामोदसिंहली, रामकृति मल्हार ;
गौड अने वल्लातिका, वर कर्णाट विचार. ११९

तुरष्कतोडी पछी धरो, उर द्राविड अहर्निश ;
अर्वाचीन उपांग ए, रागो सत्यावीश. १२०

संगीत पारिजातानुसार सामान्य राग नाम.

रोलावृत्त.

सैंधव. मेघ. मल्हार. ललित निलांबरी लहीए,
षाडव. ओडव. पूर्ण. त्रिविध धन्याश्री कहीए;
मालश्री ने रक्तहंस. गौरी. मल्हारी,
पंचम. प्रसभ. वसंत, दिव्य देशाख्य मुखारी. १२१

वसंत. भैरव. कोल्लहास. भैरव. भूपाली,
भैरवी. नारायणी विभास. अने वंगाली;
देशकारी, कान्हडी, मध्यमादि ल्यो मानी,
छांयातोडी, मेघनाद, हे तोडी हानि. १२२

वराटि. शुद्ध वराटि, मार्गतोडी मनहरणी,
घंटा.तोडी. वराटि, महद गुणीने मुदभरणी;
नाग वराटी, प्रताप वराटी. शोक वराटी,
प्रिय पुन्नाग वराटी, कहो कल्याण वराटी. १२३

खंभावति, कल्याण अने आभीर अभिनव,
रामकली. सारंग. गुणकरी बृहत हुमालव;
ककुभ. शंकराभरण, गोपीकाबोधी गणीए,
वेलावली. केदारी. भली कांबोधी भणीए. १२४

दीपक ने वडहंस, प्रबल पटमंजरी ललिता,
रेवगुप्त. गुर्जरी. गौड, बहुली सुखसरिता;
दक्षिण गुर्जरी, रीति गौड, केदार गौड कहे,
सारंग गौड हिंदोल, लक्ष कर्णाट गौड लहे. १२५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छे नारायणगौड, मार्ग हिंदोल, नाट वर,
मनहर मालव गौड, टक्क देसी दिलमां धर ;
छांयानाट, कामोदनाट, आभीरनाट छे,
सालगनाट, केदारनाट, कल्याणनाट छे. १२६

नट नारायण. नाट पछी पूर्याने पहाडी,
सावेरी. सारंग. पूर्वी, श्रीराग. वराडी ;
नाद रामक्री. गौण. विहंगड. सालंग. सामत,
मंगल. कौशिक. हंस. कहो कोकिल मुनिने मत. १२७

सौदामिनी. कुरंग. देवगान्धार देखजे,
देवगिरी ने वैजयंती, त्रिवणा हुं लेखजे ;
कंकण. कुडाइ. कुमुद. कल्पतरु. जयश्री. अर्जुन,
ऐरावत. रत्नावली. मारु. सुरालय धर मन. १२८

सोरठ. मानवी. मंजुघोष. शिव वल्लभ सुंदर,
आनँद. भैरव. राजधानि, ने चारु चक्रधर ;
रामराज. शर्वरी, शंकरानंद. मनोहर,
सुखद सिंहरव. सहित, जाति सामान्य राग वर. १२९

संगीत रत्नाकरानुसार नाटसंख्या.

छंद छप्पय.

नौतम कान्हडनाट, हर्षप्रद हीरनाट गण,
हमीरनाट. कामोदनाट, उर भाव भरी भण ;
शुद्धनाट ने नाट, वळी सारंगनाट वर,
मेघनाट. केदारनाटनो, थाय मनोहर ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संगीत रत्नाकर महीं, सारंगदेवे सुखकरण,
ए नव नाट गणावीया, हरदम गुणीना दुःखहरण. १३०

अनुपविलासानुसार नाटसंख्या.

छंद छप्पय.

शुद्धनाट. सालंगनाट, केदारनाट छे,
हमीरनाट. सारंगनाट. कर्णाटनाट छे ;
छांयानाट. कदंबनाट, कामोदनाट छे,
आभीरनाट, वरालीनाट, सु विभासनाट छे.
वर्णपूर्ण द्वय नाट पछी, पूर्या. कॅल्याण नाट छे,
अनुपविलासमहीं अचल, शुभ ए षोडश नाट छे. १३१

याष्टिकमतानुसार कान्हडासंख्या.

छंद छप्पय.

दरबारी. नायकी. गौड. वागेसरी छे वर,
पूरीया. मुद्रिक अने, शहानो अंतरमां धर ;
गारा. काफी अने हुसेनी. सोरठ सुंदर,
खंभायती कर्णाट, अडाणो छे मुद मंदिर ;
याष्टिक मुनिये अति श्रमे, मथी संगीत सिन्धु घणा,
चौद रत्न सम चितहरण, कह्या चतुर्दश कान्हडा. १३२

अनुष्टुप चक्रवर्तीमतानुसार भैरव संख्या.

दोहा.

प्रथम शुद्ध गान्धार ग्रह, [illegible]ण सुखरूप ;
पछी अन्तर गान्धार ग्रह, संपूरण गुणीभूप. १३३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

साधारण. गान्धार ग्रह. संपूरण उर धार;
वसंत. आनँद नंद कही, ग्रहण करो गान्धार. १३४

सुखदायक स्वर्णांक छे पंचम परम प्रसिद्ध;
चक्रवर्ती चाहे करे, ए नव भैरव सिद्ध. १३५

साधारण भैरव भेद.

दोहा.

संपूरण. भैरव अने पाडव भैरव भाळ;
ओडव भैरव भेद त्रय, राग धरी उर राख. १३६

भिन्नराग-लक्षण.

दोहा.

शरुआत सुखदायिनी, विकृत स्वरथी होय;
भिन्न राग ते भाखवो, कहे गुणी सहु कोय. १३७

भिन्नराग-भेद.

दोहा.

शुद्ध भिन्न, स्वर भिन्न छे, जातिभिन्न. श्रुतिभिन्न;
भिन्न रागना भेद ए, निरखो चार नवीन. १३८

स्वरभिन्न-लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

खंत धरी निजनी जातिनो, ग्रहण करो वादीस्वर खास,
तुरत त्यागवो संवादी, वा संवादीनो करवो न्यास;
विवादी. अनुवादी आनंदे, ग्रही हृदये पामो हुल्लास,
ए स्वरभिन्नरागनुं लक्षण, प्रेमे गुणीजन करो प्रकाश. १३९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जातिभिन्न-लक्षण.

निज जातिनो अंश स्वर ज्यां, ग्रहण स्वल्प वा अधिक कराय,
अधिकपणाथी ए अंश स्वर. स्थाइ बनी ए ग्रह स्वर थाय;
बाकीना स्वर सूक्ष्म रहे, अथवा अतिसूक्ष्मपणुं धोर,
जाति भिन्नराग ए जाणवो, नित्य नथुराम परम प्यार. १४०

शुद्धभिन्न-लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

अन्य रागना मंद मध्यने, तार स्थानना स्वर छोडी,
अन्य रागनो स्वर समूह, जे राग महीं आवे दोडी;
एक छतां ए स्वर समूह स्थाननो भेद भावे भाळो,
शुद्धभिन्न ए राग रसीलो, नित्य नथुराम गुणी न्याळो. १४१

१. आ राग अथवा जातिथी भिन्न स्वर जाणवो. जेम शुद्ध षाडव रागथी भिन्न षड्ज राग अने भिन्न पंचम रागनो स्वरसमूह जुदो छे.

२. क्यांइक रागथी पण जाति भिन्न थाय छे. जेम शुद्ध कैशिक मध्यम रागना अने भिन्न कैशिक रागना अंश-स्वर ग्रह स्वर एकज छे. तोपण पोतानी जाति आदि वर्ण सूक्ष्म, अति सूक्ष्म स्वरप्रयोगभेदथी ए बन्ने राग जाति भिन्न थाय छे.

३. जेम शुद्धकैशिक अने भिन्नकैशिक रागनो स्वर समूह एकज छे छतां शुद्ध कैशिक रागमां स्वर समूह मंद्रस्थाननो लेवाय छे. माटे शुद्ध कैशिक अने भिन्न कैशिक बन्ने शुद्ध भिन्न जाणवा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

श्रुतिभिन्न-लक्षण.

दोहा.

चार श्रुतिकेरो सु स्वर, विकृत बनी जे वार,
द्वय श्रुतिनो आश्री रहे, ए श्रुतिभिन्न विचार. १४२

भिन्न षड्ज राग लक्षण-स्वरूप ध्यान.

सवैया एकत्रीशा.

षड्जोदिच्यवती जातिथी, उत्तम उत्पत्ति अवरेख,
रिषभ अने पंचम तजी तेते, धैवत अंश ग्रह स्वर लेख ;
अहनिश न्यास रहे आदि स्वर, वर्ण संचारी सुंदर होय,
उत्तरायता महद् मूर्छना, प्रकाश कारण कहे सहु कोय १४३

प्रसन्नांत प्रिय अलंकारथी, ओपे जेनुं अंग अपार,
अंतर काकली निषाद तेमज, आश्री वसे अन्तर गांधार,
ब्रह्मादेव ऋतुहेमंते दिनने आदि प्रहर गवाय,
भर्यो विभत्स भयानक रसथी अखिल गुणीने अवरेखाय. १४४

प्रबल मोदप्रद पीतवर्ण छे, विध विध वीर रसेथी मस्त,
समरे शत्रुना शिर कापे, शस्त्र चमकतुं धारी हस्त ;

---

१. जेम भिन्न तान रागमां निषाद काकली बनी षड्जनी पहेली बे श्रुति ले छे जेथी चार श्रुतिनो षड्ज बे श्रुतिनो रहेछे अने गान्धार स्वर भिन्नतान राग बे श्रुतिनोज रहेछे. तेथी भिन्नतान राग श्रुतिभिन्न समजवो. तेमज काकली निषाद अने अंतर गांधार भिन्न षड्ज रागमां होवाथी ते पण श्रुति भिन्न जाणवो.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चक्रवर्तीना राजतिलकमां छे श्रेयस्कर जेनुं गान,
भिन्नषड्ज ए राग रुपाळो, देछे गुणीओने सुखदान. १४५

संगीत रत्नाकरानुसार रागलक्षण.

शुद्ध. साधारित-लक्षण.

दोहरा.

षड्ज मध्यमा जातिथी, उद्भव आनँद रूप ;
तार स्थाननो षड्ज स्वर, छे ग्रह अंश अनुंप. १४६
अल्प जहां निग जाणीए मध्यम न्यास महान् ;
पूर्ण अने षड्जादिनी, महद मूर्छना वान्. १४७
वळी अवरोही वर्णनो, अलंकार अवरेख ;
प्रसन्नांत प्रीति भर्यो, ललित जेहमां लेख. १४८
वीर रौद्र अद्भुत रसो, रवि दैवत देखाय ;
दिनना आदि प्रहरमां, गान जेहनुं थाय. १४९
गर्भसंधिमां जेहनो, वर थाये विनियोग ;
समज शुद्ध साधारितं, रोज हरे सहु रोग. १५०

रागालाप-लक्षण.

छंद झुलणा.

अंश ग्रह न्यास अपन्यास आनंदमय,
शोभता सु स्वर समुदाय मांही ;

---

१. आ प्रमाणे बार विकृत, बावीश विकृत अने बेतालीश विकृत स्वरना रागो जुदाजुदा थायछे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तारस्थानावधि मंद्र स्थानावधि,
स्वरनुं अल्पत्व अधिकत्व त्यांही ;
सुभग षाडवपणुं एम ओडवपणुं,
रसिक जेमांही रागोनुं रहे छे ;
सद्य ए स्वरतणां सुखद समुदायने ;
राग आलाप कोडे कहे छे. १५१

रूपक-लक्षण.

दोहरा.

रागालाप समान छे, रूपक लक्षण वेश,
प्रथक गीत खंडो करी, गवाय एज विशेष. १५२

आक्षिप्तिका-लक्षण.

दोहरा.

चारु मार्ग चित्रादि जहां, चंचत्पुटादि ताल,
स्वरपदनी रचना सहित, आक्षिप्तिका रसाल. १५३

षड्ज ग्रामराग-लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

षड्जमध्यमा जाति छे उद्भव जेनो परम प्रकाश,
तार स्थाननो षड्ज अंश ग्रह मध्यम न्यास षड्ज अपन्यास ;
अवरोही वर्णना अनुपम, प्रसन्नांत भूषणमय भाळे,
षड्ज मूर्छना निषाद काकली, वळी अंदर अंतरगांधार. १५४
वीर रौद्र अद्भुत रस केरो सुखदायक जेमां संयोग,
प्रति मुख संधिमहीं प्रीतिथी, व्हाले कराएलो विनियोग ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गुरु दैवत वर्षा ऋतुमांही, दिनने पहेले प्रहर गवाय,
षड्ज ग्राम ए राग रसीलो, संपूरण जाति सुखदाय. १५५

शुद्धकैशिकराग-लक्षण.

दोहरा.

कार्मारविने कैशिकी, जाति जन्मद जाण ;
तार स्थानमो षड्ज स्वर, प्रिय ग्रह अंश प्रमाण. १५६

पंचम न्यास प्रसिद्ध छे, काकली निषाद संग ;
प्रसन्नांत अवरोही सह, अलंकारमय अंग: १५७

षड्जादि मूर्छा सुखद, जाति पूर्ण सु प्रसिद्ध ;
वीररौद्र अद्भुत रसो, शिशिर ऋतु छे सिद्ध. १५८

निर्वहणे विनियोग छे, दैवत भौम सु मान ;
दिनना प्रथम प्रहरमहीं, शुद्ध कैशिकनुं ज्ञान. १५९

भिन्न कैशिक मध्यम राग लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

जन्म षड्ज मध्यमा जातिथी, षड्ज स्वर, ग्रह अंश सदाय,
मध्यम अथवा मंद्र षड्ज स्वर, नित्यें नौतम न्यास गणाय ;
सप्त स्वरो आवे छे अंदर, षड्ज मूर्छना विना विवाद,
अलंकार संचारि वर्णनो, प्रसन्नादि काकली निषाद. १६०

दैवत सोम दयालु दाखो, सर्व ऋतुमां सुख करनार,
अद्भुत रौद्र अने आठ रस, दान वीर दाढी दातार ;
दिनना प्रथम प्रहरमां जेनुं, गुणीओ नित्य करे छे गान,
राग भिन्न कैशिक मध्यम ए, महद मोद मंगलमय मान. १६१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भिन्नतान राग लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

महद् मध्यमा पंचमी जाति, उत्तम जेनुं उद्भव स्थान,
पेखो पंचम अंश अने ग्रह, रिषभ अल्प वा वर्जित मान ;
मध्यम अल्प न्यास अवरेखो, नौतम काकली निषाद होय,
प्रसन्नादि संचारी वर्णनो, अलंकार कहे छे सहु कोय. १६२

अहनिश जे मांहि ओपे छे, अंतिम मूर्छा धरी आनंद,
सदाय शिव करनारा सुंदर, शिव दैवत शोभे सुखकंद ;
दिनना प्रथम प्रहरमां जेनुं, थाये करुणा रसमां गान,
भिन्नतान ए राग समजवो, जेनुं जगमां महात्म्य महान. १६३

भिन्नकैशिक राग लक्षण.

सवैया एकत्रीशा'

कैशिकि तेमज कार्मारवियी, उदभव जेनो आनंदरूप,
जेमां षड्ज अंश ग्रह ओपे, तेमज छे अपन्यास अनूप ;
पूर्ण जाति पेखो प्रीतिथी, नौतम काकली निषाद होय,
मंद्र स्वरोनुं अधिक आगमन, जाहिर जेनी अंदर जोय. १६४

वर्ण सुभग संचारी शोभे, प्रसन्नादि भूषण भ्राजे,
षड्ज मूर्छना सुख करनारी, रसिक जेह अंदर राजे ;
शिव दैवत ऋतु शिशिर सुखद छे महद भिन्न कैशिक ए मान,
दानवीर रस अद्भुत रौद्रे, जेनुं गुणीओ करता गान. १६५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गौडकैशिकमध्यम राग लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

षड्ज मध्यमाथी जन्मेलो, सुभग अंश ग्रह षड्ज सदाय,
गौतम मध्यम न्यास निरंतर जाति पूर्ण व्हालथी वदाय ;
जेमां काकली निषाद जाहिर, प्रसन्न मध्यालंकृति लेख,
अचल वर्ण आरोही ओपे, दिव्य मूर्छना षड्जनी देख. १६६

दैवतचंद्र सदा दुःख हरता, भरता अहनिश हर्ष अपार,
दिवस मध्यना द्वय प्रहरोमां, प्रगट गाय गुणीओ धरी प्यार ;
वीर भयानक रसमां भावे, प्रयोगायलो जुगतें जाणी,
राग गौड कैशिक मध्यमए, नित्य निःशंक वदे छे वाणी. १६७

गौडपंचम राग लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

धैवती षड्ज मध्यमामांथी, उद्भव पाम्यो अवरेखाय,
धैवत अंश न्यास मध्यम स्वर, पंचम स्वरथी रहित सदाय ;
निषाद काकली तेमज अंदर, ओपे छे अंतरगांधार,
द्रढ रही छे धैवतनी मूर्छा, लख प्रसन्न मध्यालंकार. १६८

उतम छे आरोही वर्णो, सौरी स्मर दैवत देखाय,
ग्रीष्म ऋतु दिन मध्य प्रहर द्वय, ललित गान वेळा देखाय ;
गवाय उद्भट नृत्य समदनं गणो गौड पंचम सुखमूल,
विप्रलंभ रस बिभत्स तेमज, भयानके भारे अनुकूल. १६९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गौडकौशिकराग लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

कौशिकी तेमज षड्ज मध्यमा, पेखो उद्भव स्थान प्रकार,
सुभग षड्ज स्वर अंश अने ग्रह काकली निषाद पंचम न्यास ;
मनहरनार षड्जनी मूर्छा, संपूरण जाति सुखरूप,
शुभ शंकर दैवत देखाये, छे आरोही वर्ण अनूप. १७०

सदाय छे सानुकूल जेने, शिशिर ऋतु शान्ति भरनार ;
वीर रौद्र अद्भुत रस अंदर, महद जनोनां मन हरनार ;
दिनना द्वितीय प्रहरमां दाडी गाड मुदेथी थाये गान,
गणो गौडकौशिक ए गुणी जन, गान करीथी रसनुं दान १७१.

वेसरषाडव राग लक्षण.

दोहरा.

षड्ज मध्यमा जाति छे, जेनुं जन्मद स्थान ;
अंश न्यास ग्रह एकलो, शुभ मध्यम स्वर मान. १७२

छे अंतर गांधारने, निषाद काकली नित्य ;
प्रसन्नादि आरोहीनो, अलंकार धर चित्त. १७३

मनहर मध्यम मूर्छना, जाति पूरण जाण ;
समय दिवस अंतिम प्रहर, रवि दैवत उर आण. १७४

शान्त हास्य शृंगार रस. मेळवी मध्यम मान ;
वेसरषाडव रागनुं गुणीओ करता गान. १७५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बोट्ट राग लक्षण.

दोहरा.

षड्ज मध्यमा पंचमी, जाति जन्म देनार ;
मध्यम न्यास मनाय छे, षड्ज अंश ग्रह धार. १७६

निषाद काकली स्वर कलित, ललित अल्प गांधार ;
पंचमनी मूर्छा वरण, वर आरोही विचार. १७७

प्रसन्नान्त भूषण प्रगट, सदा सकल स्वरवास ;
दैवत भव्य भवानीपति, रस शृंगारने हास्य. १७८

दिनना अंतिम प्रहरनो, समय बोट्ट सुखधाम ;
व्हाल धरी विनियोग कर, उत्सवमां अभिराम. १७९

मालवपंचम राग लक्षण.

दोहरा.

जाति मध्यमा पंचमी, पेख प्रगट करनार ;
अंश न्यास ग्रह पंचमे, आण अल्प गान्धार. १८०

मान मूर्छना हृष्यका, कर काकली निषाद ;
आण वर्ण आरोही सहु, विगते तजी विवाद. १८१

प्रसन्नान्त भूषण थकी, कर भूषित सहु अंग ;
केतु दैवत देखीले, उरमां धरी उमंग. १८२

हास्य अने श्रृंगारनी, वर वृद्धि करनार ;
दिनना अंतिम यामनो, समज समय सुखकार. १८३

कंचुकी प्रवेशमां प्रगट, विप्रलंभमां गान ;
मालवपंचम राग ए, मोद धरी गुणी मान. १८४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रुपसाधार राग लक्षण.

दोहरा.

षड्जमध्यमा सहित शुभ, निषादिनी उर आण ;
उद्भव करनारी अचल, उभय जातिओ जाण. १८५

समज षड्जने अंश ग्रह, निरखी मध्यम न्यास ;
निषाद काकली वर्ण वर, छे अवरोही खास. १८६

वळी षड्जादि मूर्छना, जाति पूर्ण जरुर ;
प्रसन्न मध्यालंकृति, भर भावे भरपूर. १८७

वीर रौद्र अद्भुत अने, करुणामां योजाय ;
राग रुपसाधार गुणी, रवि प्रीत्यर्थे गाय. १८८

शकराग लक्षण.

दोहरा.

षाडजी धैवती जातिथी, उद्भव विना विवाद ;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, कर काकली निषाद. १८९

द्रढ अंतर गांधार वरीं, आण वर्ण आरोहीं ;
प्रसन्न मध्यालंकृति, निरख सदा मन मोहीं. १९०

दैवत रुद्र रहेल छे, निर्वहणे विनियोग ;
वीर रौद्रने हास्यनो, शकरागे संयोग. १९१

भस्माणपंचम राग लक्षण.

सवैया एकत्रीशा.

शुद्ध मध्यमा जाति जन्मप्रद, षड्ज अंश ग्रह न्यास सदाय,
कलित काकली निषाद कहीए, मध्यम पण नित्य न्यास वदाय ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पूर्ण जाति गान्धार अल्प छे, वर षड्जादि मूर्च्छावान,
आरोही वर्णो अतिओपे, प्रसन्न मध्यालंकृति मान. १९२

वीर रौद्र अद्भुत रस अंदर, आनंदे अहनिश योजाय,
सर्व काळमां शिव करनारा, शिव दैवत व्हालथी वदाय ;
पदभ्रष्ट ने वळी वनभ्रान्ते करेल वर गुणीए विनियोग,
भव्य राग भस्माण पंचम, गर्व तजी गाये गुणी लोक. १९३

नर्तराग लक्षण.

दोहरा.

महद मध्यमा पंचमी, जन्मद जाति जाण ;
स्वर पंचम ग्रह अंश छे, मध्यम न्यास वखाण. १९४

निषादकाकली निरखवो, आण अल्प गांधार ;
पंचम आदिक मूर्छना, रसो हास्य शृंगार. १९५

उद्भट चारी कमंडले, प्रयोगाय धरी प्रीत ;
प्रसन्न मध्यालंकृति, निरखो जेमां नित्य. १९६

संचारी वर्णो सुखद, मुदें नर्तमां मेल ;
दुर्गा शक्ति धैवती, अत्तर जनक मानेल. १९७

षडजकैशिक राग लक्षण.

दोहरा.

कैशिकी जातिथी जनम रि. स. ग्रह अंश सदाय ;
अल्प रिषभने न्यास नि. ग. वर्णारोही वदाय. १९८

ग. स सुमंद्र स्थानावधि, शंभु दैवत सिद्ध ;
प्रसन्नाद्यलंकार प्रिय, पेखो परम प्रसिद्ध. १९९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षड्जादि मूर्छा सुखद, अद्भुत रौद्र सुवीर ;
गाओ षड्जकैशिक सदा, ए रसथी धरी धीर. २००

मध्यमग्राम राग लक्षण.

दोहरा.

गान्धारीने मध्यमा, पंचमी जन्मद आण ;
मन्द्र स्थानना षड्ज स्वर, जहां अंश ग्रह आण. २०१

नौतम निषाद काकली, मनहर मध्यम न्यास ;
शुभ सौवीरी मूर्छना, नित्यें करे निवास. २०२

अवरोही वर्णोतणो, सुखद जहां संयोग ;
मुखसंधिमां जेहनो, थाये वर विनियोग. २०३

रहे हास्य श्रृंगार रस, ग्रीष्म आदि दिन याम ;
ध्रुव प्रीत्यर्थे गाय गुणी, राग सु मध्यम ग्राम. २०४

मध्यमादि रागणी लक्षण.

दोहरा.

राग सु मध्यम ग्रामथी, मध्यमादि प्रगटाय ;
जेमां ग्रह ने अंश स्वर, मध्यम सदा मनाय. २०५

मालव कैशिक राग लक्षण.

दोहरा.

जन्म कैशिकी जातिथी, षड्ज अंश ग्रह न्यास ;
आवे धैवत अल्प ज्यां, षड्ज मूर्छना खास. २०६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वर आरोही वर्ग छे, द्रढ नि काकली धार ;
वीर रौद्र अद्भुत रसो, विप्रलंभ श्रंगार. २०७

प्रसन्नमध्यालंकृति, शिशिर अंतदिन याम ;
मालवकौशिक गायं गुणी, नेह सहित नथुराम. २०८

मालवश्री रागिणी लक्षण.

दोहरा.

मालवकौशिकथी जनम, मालवश्रीनो थाय ;
अंश न्यास स समान स्वर, मंद्र तार स सदाय. २०९

षाडव राग लक्षण.

दोहरा.

जन्मद विकृत मध्यमा, न्यास अंश म मनाय ;
तारस्थानी मध्यम ग्रह, ग प दुर्बल देखाय. २१०

काकली नि अंतर ग छे, मध्यम मूर्छा देख ;
अवरोही संचारीना, अलंकार अवरेख. २११

पूर्व रंगमां प्रथम जे, प्रयोजाय धरी प्यार ;
हास्य अने श्रंगार रस, दैवत शुक्र विचार. २१२

आनंदे आदि प्रहर, समय गानेनो सिद्ध ;
सुंदर षाडव राग ए, पृथ्वीमांहि प्रसिद्ध. २१३

टोडी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

षाडवथी उद्भव सुखद, म ग्रह अंश ने न्यास ;
षड्ज तार स्थानावधि, कंपित पंचम खास. २१४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग गण मंद्र स्थानावधि, इतर स्वरो सामान्य ;
मानो टोडी रागिणी, महद गुणीने मान्य. २१५

बंगाल राग लक्षण.

दोहरा.

जन्मद षाडव अंश ग्रह, न्यास म नित्य निहाल ;
प्रहर्षमां गा प्रेमथी, बळ धारी बंगाल. २१६

भिन्न षड्ज राग लक्षण.

दोहरा.

जाति षड्जोदिच्यवती, जाहिर जन्मद जाण ;
ध ग्रह अंश रिप वर्ज्य छे, न्यास म उरमां आण. २१७
संचारी वर्णो सुखद, प्रसन्नान्तमय पेख ;
उत्तरायता मूर्छना, ब्रह्मा दैवत देख. २१८
काकली नि अंतर ग गण, हितकर ऋतु हिमंत ;
सार्वभौमने उत्सवे, प्रयोजाय धरी खंत. २१९
रस बिभत्स भयानके, प्रथम प्रहरमां गान ;
भिन्नषड्ज गाओ गुणी, मुद धरी उरे महान. २२०

भैरव राग लक्षण.

दोहरा.

भिन्नषड्जथी भाळीए उद्भव आनंद रूप ;
मध्यम न्यास मनाय छे, धैवत अंश अनुप. २२१
रि प वर्जित छे सम स्वरो, दे भैरव सुखदान ;
ईश प्रार्थनामां सदा, गुणीयो करता गान. २२२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भिन्नपंचम राग लक्षण.

छंद–रोला.

जन्म मध्यमा अने, पंचमी जातिथी जाणो,
धैवत ग्रहने अंश, न्यास पंचम उर आणो;
पौरवी मूर्छा महद्, काकली निषाद शोभे,
क्यांइक शुद्ध निषाद, आदि प्रहरे दिल लोभे. २२३

वळी संचारी वर्ण, अलंकृति प्रसन्नाद्य छे,
शौरी दैवत शुद्ध, ग्रीष्म ऋतु विण विवाद छे;
सूत्रधारना प्रवेशमां, गाये गुणी मस्त,
भिन्नपंचमे रसो, भयानक अने बिभत्स. २२४

वराटी रागिणी-लक्षण.

छंद हरिगीत.

आनंदी उद्भव स्थान जेनुं भिन्न पंचम भाळजे,
शुभ अंश धैवत न्यास ग्रह, स्वर षड्ज निसे न्याळजे;
छे मंद्रस्थानी षड्ज, तार स्थानी धैवत ले गणी,
श्रृंगार रस बीजा स्वरो सम, ए वराटी रागिणी. २२५

पंचमषाडव राग लक्षण.

दोहरा.

धैवती आर्षभी जातिथी, वर उद्भव वखणाय;
राखे मध्यम ग्रामथी, जेह संबंध सदाय. २२६

रिषभ न्यास ग्रह अंश छे, क्यांइक मध्यम न्यास;
कलित कलोपनता कही, मूर्छा जेमां खास. २२७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

काकली निषाद निरखजे, शिव दैवत सुखवंत ;
अलंकार आनंदमय, पेख प्रसन्नाचंत. २२८

वीर रौद्र अद्भुत रसो, नेह भर्या निरखाय ;
नारी हास्यमां नित्य गुणी, पंचमपाडव गाय. २२९

गुर्जरी रागिणी.

दोहरा.

पंचम षाडवथी प्रगटी, रिषभ अंश ग्रह वेश ;
खास न्यास स्वर मध्यम, धैवत रिषभ विशेष. २३०

रिषभ तार स्थानी अने, मध्यम मध्यम स्थानी ;
रस शृंगार ताडित गमक, गुणीअे गुर्जरी मानी. २३१

टक्कराग लक्षण.

दोहरा.

षड्ज मध्यमा धैवती, जाति जन्मद जाण ;
अंश न्यास ग्रह षड्ज छे, पंचम अल्पज आण. २३२

निषाद काकली भूषणे, प्रसन्नान्त शुभ पेख ;
स्वर अंतर गान्धार ग्रही, प्रथम मूर्छना लेख. २३३

सुंदर संचारी वरण, दाखो दैवत रुद्र ;
वर्षा ऋतुमां व्हालथी, सुखनो छले समुद्र. २३४

वीर रौद्र अद्भुत अने, युद्ध वीर रस मान ;
दिनना अंतिम प्रहरमां, टक्क रागनुं गान. २३५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गौड राग लक्षण.

दोहरा.

गौड टक्कनुं अंग छे, रिषभ न्यास ग्रह अंश ;
गाओ पंचम त्यागीने, गौड राग गुणीहंस. २३६

कोलाहल राग लक्षण.

दोहरा.

टक्क रागनुं अंग छे, टक्क समान स्वरूप ;
सर्व तार स्वर लावी गा, कोलाहल गुणी भूप. २३७

हिंदोल राग लक्षण.

दोहरा.

नैषादीने मध्यमा, पंचमी ने गान्धारी ;
षाडजी जातिथी जनम, सर्व कहे सुखकारी. २३८

रि ध वर्जित ग्रह न्यासने, अंश षड्ज अवरेख ;
आरोही वर्णो अचळ, काकली निषाद लेख. २३९

शुद्ध मध्यमा मूर्छना, प्रसन्नाद्य सु प्रसिद्ध ;
दैवत मकरध्वज महद, वर वसंत ऋतु सिद्ध. २४०

वीर रौद्र अद्भुत रसो, प्रिय हिंदोल पिछान ;
स्नेह धरी संभोगमां, गुणीओ करता गान... २४१

वसंतरागिणी लक्षण.

दोहरा.

लक्षण सहु हिंदोलसम, जाति पूर्ण रसवंत ;
कोइ देशीहिंदोल कहे, व्हाले गाय वसंत. २४२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्धकैशिक राग लक्षण.

दोहरा.

षड्ज मध्यमा कौशिकी, दिव्य जन्म देनार ;
तार स्थानना षड्ज स्वर, वर ग्रह अंश विचार. २४३
अल्प ग निषाद काकली, रिप विण मध्यम न्यास ;
अवरोही वर्णो अने, आदि मूर्छना खास. २४४
प्रसन्नान्त भूषण भर्यो, शशि दैवत सुखकार ;
वीर रौद्र अद्भुत रसो, पूर्ण वधारे प्यार. २४५
नित्य संधि निर्वहणमां, प्रथम प्रहरमां गान ;
शुद्धकैशिक ए समजजो, मुदथी गुणी महान. २४६

धन्नासी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

उद्भव शुद्ध कौशिक थकी, स ग्रह अंश रस वीर ;
न्यास म वर्ज्य रि अल्प ग धन्नासी गा धीर. २४७

रेवगुप्तराग लक्षण.

दोहरा.

षड्ज ग्रामने मध्यमा, आर्षभी उद्भव स्थान ;
रि ग्रह अंश म न्यास छे, सर्वो पाते दैवत मान. २४८
पेख प्रसन्नाद्यन्तथी, भावे भूषित अंग ;
वीर रौद्र अद्भुत रसो, स्नेहे करता संग. २४९
उद्भटचारीमंडळे, प्रयोजाय धरी प्रीत ;
आरोपे गुणी अन्तरे, रेवगुप्तनी रीत. २५०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देशीरागिणी लक्षण.

छंद–रोला.

रेवगुप्तथी जन्म, रिषभ ग्रह अंश न्यास छे,
मन्द्रस्थानीं गान्धार, रहित पंचमीं खास छे ;
मध्यम निषाद अधिक, करुण रसमां गवाय छे,
देशी रागिणी नाम, चतुर गुणीं चित्ते व्हाय छे. २९१

गान्धारपञ्चम राग लक्षण.

दोहरा.

गान्धारी जाति अने, गणो रक्त गांधारीं ;
जाणो जन्मद ए सदा, सुखद वर्ण संचारीं. २९२

ग ग्रह अंशने न्यास छे, नि काकलीं द्रग देख ;
हरिणाश्वा मूर्छना, राहुं दैवत लेख. २९३

प्रसन्नमध्यालंकृति, गांधार पञ्चम मान ;
विस्मय अद्भुत हास्यने, करुणा रसमां गान. २९४

देशाख्या रागिणी लक्षण.

दोहरा.

गाँधार पंचमथी प्रगटी, ग ग्रह अंश ने न्यास ;
नि स्वर मंद्र स्थानावधि, वर्ज्य रि स्फुरित खास. २९५

समान स्वर सहु इतर छे, चाहे धारो चित्त ;
देशाख्या गाओ गुणी, समजी शुभ संगीत. २९६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्रवणा रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाषा भिन्न षड्ज तणी, ध ग्रह अंश ने न्यास ;
रि प वर्जित स्वर ध. नि. स. नो, वहित गमकमां वास. २५७

तार स्थानी ग म स्वरो, मंद्र स्थानी ध विचार ;
गावा राखो त्रिजयमां, त्रवणाने तैयार. २५८

डोम्बकृति रागिणी लक्षण.

दोहरा.

त्रवणाथी प्रगटी तुरत, न्यास ध अंश स मान ;
रि प वर्जित छे दिवसमां, डोम्बकृतिनुं गान. २५९

कुकुभ राग लक्षण.

दोहरा.

पंचमी धैवती मध्यमा, उत्तम उद्भवस्थान ;
ध ग्रह अंश ने न्यास पं, धैवती मूर्छा मान. २६०

आरोही वर्णो अचल, यम दैवत अवरेख ;
प्रसन्न मध्यालंकृति, दिव्य द्रष्टिथी देख. २६१

शरद ऋतुमां स्नेहथी, करुणा रसमां गान ;
कुकुभ राग गा रागथी, त्वरित प्रसारी तान. २६२

रंगन्तिका रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाषा कुकुभ तणी भली, ध ग्रह अंशने न्यास ;
अधिक ध स्फुरित गमक भर्या, छे पंचम अपन्यास. २६३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्वरित तार स्थानावधि, मध्यम स्वरने मान ;
ए रगन्तिका रागिणी, कर समजी गुणी गान. २६४

आशावरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

जन्मद रसिक रगान्तिका, तार स्थानीं गांधार ;
मन्द्रस्थानीं मध्यम स्वरें, मॅ ग्रह अंश उर धार. २६५
न्यास ध पंचम वर्जित, षड्ज स्वल्प सखरूप ;
करुण रसें गाओ गुणी, आशावरी अनुंप. २६६

भोगवर्धनी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

कह्यो विभावा ककुभनी, अंदर ग. प अपन्यास ;
धॅ ग्रह अंश ने न्यास छे, रिषभ वर्ज्य कर खास. २६७
तार मन्द्र स्थानावधि, ग्रहण करो गान्धार ;
अधिक स्वरो ध. नि. ग. म. प छे, व्हालें करो विचार. २६८
नित्य नित्य वर वैराग्यमां, गुणीओ करता गान ;
भोगवर्धनी रागिणी, दे छे सुखनुं दान. २६९

वेलावली रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भोगवर्धनी जन्मप्रद, मन्द्रस्थानी गान्धार ;
धॅ ग्रह अंश ने न्यास छे, कंपित षड्ज उचार. २७०
तार स्थानीं धैवत धरो, समजो स्वरो समान ;
हरि दैवत वेलावली, विप्रलंभमां गान. २७१

प्रथम मंजरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

प ग्रह अंश ने न्यास छे, तार स्थानीं ध. रि धार ;
ग. म उत्कट अवरेंखजे, मंद्र स्थानीं गान्धार. २७२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उत्सवमां आनंदथी, हरदम गा धरी हाम ;
प्रथम मंजरी रागिणी, सहु गुणोंने सुखधाम. २७३

बंगाली रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाषा सु षड्जभिन्ननी, रि. म स्वर दीर्घ रहेल ;
धॅ ग्रह अंशने न्यास छे, ग. प अपन्यास कहेल. २७४
धॅ स्वर मंद्र स्थानावधि, उद्दीपने गवाय ;
ए रागिणी बडभागिणी, बंगाली कहेवाय. २७५

आडी कामोदिका रागिणी लक्षण.

दोहरा.

बंगालीथी उद्भवे, मध्यम मंद्र विचार ;
धॅ ग्रह अंशने न्यास छे, तार स्थानों गान्धार. २७६
स्वर समान समजो सदा, गुरु आज्ञामां गान ;
ए आडीकामोदिका, रसप्रद रागिणी मान. २७७

वेगरंजी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाळो भाषा टक्कनी, षड्ज अंश ग्रह न्यास ;
पंचम धैवत वर्ज्य छे, स. रि. ग. म. अधिक प्रकाश. २७८
निषाद मन्द्र सु मानमां वेगरंजीनुं गान ;
आर्ष मुनिमत उर धरी, गाओ गुणी महान. २७९

नागध्वनि रागिणी लक्षण.

दोहरा.

वेगरंजीथी विस्तरे, ध. प वर्जित रस वीर ;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, गा नागध्वनि धीर. २८०

सौवीर राग लक्षण.

दोहरा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षड्ज मध्यमाथी जनम, षड्ज मूर्छना लेख ;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, काकली निषाद देख. २८१
आरोही वर्णो अने, प्रसन्नाद्यलंकार ;
शिव दैवत पश्चिम प्रहर, गणो अल्प गांधार. २८२
तपस्वीओने गृहस्थना, प्रवेशमां गा धीर ;
वीर रौद्र अद्भुत अने, शान्त रसे सौवीर. २८३

सौवीरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

सौवीरनी भाषा भली, स ध रि घनो संवाद ;
अंश न्यास ग्रह षड्ज स्वर, समजो विना विवाद. २८४
मध्यम स्वर मानो बहुल, छे रागिणी सौवीरी ;
गुण परखी गाइ गुणी, आनंद लीओ अमीरी. २८५

वराटी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

साफ जन्म सौवीरीथी, ध. नि. स अधिक उर धार ;
न्यास अंश ग्रह षड्ज छे, ध. स स्वर तार विचार. २८६
सुखदायक रस शान्तमां, गुणीयो नित्यें गाय ;
वर वराटी ए रागिणी, चतुरकी पण कहेवाय. २८७

पिञ्जरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

छे भाषा हिंदोलनी, अंश ग न्यास स सिद्ध ;
निषाद वर्जित नित्य छे, पिञ्जरी पूर्ण प्रसिद्ध. २८८

नट्टा रागिणी लक्षण.

दोहरा.

पिंजरीथी प्रगटाय छे, न्यास ग्रहांश स धार ;
स्वर समान नट्टा महीं, मंद्र नि सु ग. प. ध तार. २८९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कर्णाट बंगाल राग लक्षण.

दोहरा.

अंग बेगरंजीतणुं, अंश ग न्यास स धार ;
छे कर्णाट बँगालमां, प वर्ज्य रस श्रंगार. २९०

रामक्रुति रागिणी लक्षण.

दोहरा.

षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, तार मंद्र प प्रमाण ;
रिषभ षड्जनी अधिकता, रामकृतिमां जाण. २९१

गौडक्रुति रागिणी लक्षण.

दोहरा.

म तार प मंद्र स्थानीं छे, षड्ज अंश ग्रह न्यास ;
रि ध वाजत म प अधिक छे, गौडक्रुतिमां खास. २९२

देवक्रुति रागणी लक्षण.

दोहरा.

स न्यास अंश ध ग्रह सदा, मध्यम अधिक मनाय ;
निषाद मंद्र स्थानतो, रि प स्वर वर्ज्य सदाय. २९३
स्वर समान रसवीरमां, गुणायो निर्से गाय ;
दिव्य सुखा देनार ए, देवक्रुति कहेवाय. २९४

वराटी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

वराटीना छ उपांगमां, स ग्रह अंश ने न्यास ;
मंद्र स कंपित नि अधिक, कौंतली वराटी खास. २९५

द्राविडी वराटी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वळी द्राविडी वरार्टीमां, स्फुरित रिषभ स्वर लेख ;
निषाद मंद्र स्थाननो, अधिक द्रष्टिथी देख. २९६

सैंधवी वराटी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

ग बहुल स ध कंपित स्वरो, रस श्रंगारे गाय ;
सैंधवी वरार्टीमां सदा, मध्यम मंद्र मनाय. २९७

अपस्थान वराटी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

मध्यम निषाद धवतं, मंद्रस्थानना मान ;
ए अपस्थान वरार्टीनी, प्रीतें करो पिछान. २९८

हत स्वर वराटी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

हत स्वर वराटी कंपितें, धैवत मंद्र निहाळ ;
हत पंचम गुणी गान कर, सदैव समजी काळ. २९९

प्रताप वराटी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

धैवत मंद्र धरी करी, स कंपित स्वर आण ;
प बहु प्रताप वरार्टीमां, जुगतिथी गुणी जाण. ३००

छायातोडी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

रिषभ अने पंचम रहित, तोडी केरुं नाम ;
छायातोडी सिद्ध छे, समजो गुणी तमाम. ३०१

तौरुष्कीतोडी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग अल्प रि नि बहु गमक दे, ताडित नामनी जोडी ;
तोडीनेज कहे सदा, गुणी तौरुष्की तोडी. ३०२

महाराष्ट्री गुर्जरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

पंचम वर्ज्य प्रसिद्ध छे, रिषभ न्यास ने अंश ;
निषाद मंद्र स्थानने, सदा ग्रहो गुणी हंस. ३०३
त्वरित ग्रही ताडित गमक, करो हर्षमां गान ;
ए महाराष्ट्री गुर्जरी, ग्रहण करो गुणवान. ३०४

सौराष्ट्री ज री रागिणी लक्षण.

दोहरा.

मात्र रिषभ कंपित करी, गुर्जरी केरुं नाम ;
दे सौराष्ट्री गुर्जरी, तेते गुणी तमाम. ३०५

दक्षिणा गुर्जरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

ताडित गमक गणाय छे, मध्यम कंपित मान ;
दिव्य दक्षिणा गुर्जरी, कर समजी गुणी गान. ३०६

द्राविड गुर्जरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

रिषभ मंद्रने तार छे, स्फुरित गमक सुखधाम ;
गवाय गाता हर्षमां, द्राविड गुर्जरी नाम. ३०७

मुंछी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

ध ग्रह अंशने न्यास छे, विप्रलंभ शृंगार ;
म वर्ज्य स. प आंदोलने, गा मुंछी धरी प्यार. ३०८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

खंभाइति रागिणी लक्षण.

दोहरा.

ध ग्रह अंशने न्यास छे, पंचम वर्जित पेख ;
मध्यम स्थानी निषादनुं. आंदोलन तुं देख. ३०९
गव.य रस श्रंगारमां, परम वधारी प्यार ;
ए खंभाइलि रागिणी, मुदप्रद मन हरनार. ३१०

छायावेलावली रागिणी लक्षण.

दोहरा.

कंपित मंद्र म अधिक छे, अवर वेलावली तुल्य ;
ए छायावेलावली, आनंद भरे अतुल्य. ३११

प्रतापवेलावली रागिणी लक्षण.

दोहरा.

छाया वेलावली महीं, आहत गमक प्रकाश ;
छे प्रताप वेलावली, रि प स्वर तजतां खास. ३१२

भैरवी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भैरवतणुं उपांग छे, ध ग्रह अंशने न्यास ;
तार मंद्र ग समान स्वर, भैरवी करो प्रकाश. ३१३

सिंहलीकामोद रागिणी लक्षण.

दोहरा.

छे उपांग कामोदनुं, लेख रूप कामोद ;
मात्र म मंद्र ध कंपित, ए सिंहलीकामोद. ३१४

छायानट्ट रागिणी लक्षण.

दोहरा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नौतम उपांग नट्टनुं, भिन्न न एथी भाळ ;
प मंद्र नि ग कंपित स्वरो, छायानट्ट निहाळ. ३१५

कोलाहला रागिणी लक्षण.

दोहरा.

मध्यम अधिक प वर्ज्य छे, मंद्र स्थानी स. ध राख ;
षड्ज अंश ग्रह ओपतो, गमक युक्त द्रग दाख. ३१६
भणाय भाषा टक्कनी, कल्ह महीं गुणी गाय ;
कलित एह कोलाहला, रागिणी रसिक सदाय. ३१७

रामकृति रागिणी लक्षण.

दोहरा.

कहे जननी कोलाहला, छे उपांग सु सं न्यास ;
मध्यम अंश प वर्जित, रामकृतिमां खास. ३१८

छेवाटी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

छे भाषा हिंदोलनी, ज्यां म. प स्वर अपन्यास ;
रिषभ वर्ज्य धैवत अधिक, मंद्र स. ग. प स्वर वास. ३१९
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, तार षड्ज गान्धार ;
स गमक उत्सव हास्यमां, छेवाटी गा यार. ३२०

वल्लाता रागिणी लक्षण.

दोहरा.

छे उपांग छेवाटीनुं, ध मंद्र स्थानी धार ;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, व्हालें वात विचार. ३२१
रोज रिषभ स्वर वर्ज्य छे, राखी रस श्रंगार ;
ए वल्लाता रागिणी, अंतर मांहि उतार. ३२२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्ध पंचम राग लक्षण.

दोहरा.

जाति मध्यमा पंचमी, जाणो जन्मद खास;
काकलीनिषाद नित्य छे, प स्वर अंश ग्रह न्यास. ३२३
अवरोहो अंतर ग ने, वर वर्णो संचारी;
रसिक हृष्यका मूर्छना, ल्यो दैवत स्मर धारी. ३२४
सदा संधि अवमर्षमां, वर विनियोग कराय;
सहु गुणीयो ऋतु ग्रीष्मते, पहेले प्रहरे गाय. ३२५
हास्य अने श्रृंगार रस, अहनिश छे अनुकूल;
शुद्धपंचम शुभ राग ए, महद हर्षनुं मूल. ३२६

दाक्षिणात्या रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाषा शुद्ध पंचम तणी, ध ग्रह अंश ने न्यास;
तार स्थानों स्वर नि. म. प. ध, राख रिषभ अपन्यास. ३२७
प्रेम थकी प्रिय स्मरणमां, तीव्र प्रसारी तान;
दिव्य दाक्षिणात्यातणुं, गुणीओ करता गान. ३२८

आंधाली रागिणी लक्षण.

दोहरा.

दिव्य दाक्षिणात्या तणी, मुदे विभाषा मान;
अंश न्यास ग्रह पंचम, अल्प नि स्वर धर ध्यान. ३२९
इतर स्वरोनी अधिकता, मंद्र स धैवत तार;
व. प स्वर ज्यां अपन्यास छे, सदा वर्ज्य गान्धार. ३३०
वियुक्त बंधनमां महद, गुणीने सुखे गवाय;
ए आंधाली रागिणी, सहु गुणी कहे सदाय. ३३१

मल्हारी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

उपांग आंधाली तणुं, सुखप्रद रस श्रंगार ;
प ग्रह अंशने न्यास छे, वळी वर्ज्य गान्धार. ३३२
म स्वर मंद्र स्थानावधि, अहनिश अवरेखाय ;
गुणी मल्हारी मोदथी, ताडित गमके गाय. ३३३

मल्हार राग लक्षण.

दोहरा.

उपांग आंधालीतणुं, स. प. स्वर वर्जित होय ;
ध ग्रह अंश, ने न्यास छे, कहे गुणी सहु कोय. ३३४
निरखो तार निषादने, मंद्र स्थानों गान्धार ;
गुणीगण मांहि गवाय छे, मनहर राग मल्हार. ३३५

कर्णाट गौड राग लक्षण.

दोहरा.

षड्ज न्यास ग्रह अंश धर, ठीक सजीने ठाठ ;
जगपतिमां जौव्र जोड गुणी, गाइ गौडकर्णाट. ३३६

देशवाल राग लक्षण.

दोहरा.

रिषभ अने पंचम नहीं, देशवालमां खास ;
आंदोलित कर षड्जने, हृदये धरी हुल्लास. ३३७

तुरुष्क गौड राग लक्षण.

दोहरा.

नि ग्रह अंशने न्यास छे, रि. प नहीं बहु गान्धार ;
मंद्रस्थानों ताडित गमक, तुरुष्क गौडे धार. ३३८

द्राविड गौड राग लक्षण.

दोहरा.

नि ग्रह अंशने न्यास छे, स. प स्वर स्फुरित सदाय ;
दुःखहर द्राविड गौड ए, राग रसिक कहेवाय. ३३९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

श्रीराग लक्षण.

दोहरा.

जन्मद जाति षाडजी, षड्ज ग्राम सुखरूप;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, मंद्र ग मध्य अनूप. ३४०
मॅध्यम तार स्थानावधि, अन्य स्वरो सु समान;
वीर रसे श्रीरागनुं, गुणीओ करता गान. ३४१

बंगाल राग लक्षण.

दोहरा.

षड्ज मध्यमा जातिथी, जन्म जेहनो जाण;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, षड्ज ग्राम सुखखाण. ३४२
मंद्र हीन वे मानजे, सर्व स्वरो समान;
बळश्री गा बंगाल गुणी, समजी विविध विधान. ३४३

द्वितीय बंगाल राग लक्षण.

दोहरा.

कैशिकी जातिथी जनम, मनहर मध्यम ग्राम;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, समान स्वर सुखधाम. ३४४
मध्य तार पंचम प्रबल, जुवो वधारी व्हाल;
गाढ हर्षथी गा गुणी, सदा द्वितीय बंगाल. ३४५

मध्यमषाडव राग लक्षण.

दोहरा.

अंश रि. न्यास प अल्प प, अपन्यास ध छे ज्यांही;
वीर. रौद्र. अद्भुत रसो, मध्यमषाडव मांही. ३४६

शुद्ध भैरव राग लक्षण.

दोहरा.

ध ग्रह अंश ने न्यास छे, समान स्वर सुखदाय;
मंद्र तार स. ग समजीने, शुद्ध भैरव गुणी गाय. ३४७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मेघ राग लक्षण.

दोहरा.

धैवतो जातिथी जनम, ध ग्रह अंश ने न्यास ;
षड्ज ग्रामनो शोभतो, खोळी जोतां खास. ३४८

षड्ज तार स्वर छे सदा, गण समान स्वर सर्व ;
मंद्र हीन छे मेघमां, गा गुणी गाळी गर्व. ३४९

सोम राग लक्षण.

दोहरा.

जन्मद जाति षाडजी, षड्ज ग्राम सुखधाम ;
षड्ज न्यास ग्रह अंश छे, नि ग उत्कट नथुराम. ३५०

तार मध्य स्थानकतणो, मध्यम महिमावान ;
व्हालें कर रस वीरमां, सदा सोमनुं गान. ३५१

कामोद राग लक्षण.

दोहरा.

षड्ज मध्यमा जातिथी, नित्य उद्भव अवरेख ;
षड्ज ग्राम शोभाभरण, तार षड्ज ग्रह लेख. ३५२

धैवत अंश स न्यास छे, मंद्र तार गान्धार ;
स्वर समान कामोदमां, पेख वधारी प्यार. ३५३

द्वितीय कामोद राग लक्षण.

दोहरा.

षाडजी जातिथी जनम, षड्ज ग्रामनो शुद्ध ;
षड्ज अंश ग्रह न्यास बनो, विलसे जहां विशुद्ध. ३५४

जो समान स्वर इतर सहु, मनमां धारी मोद ;
लसे मंद्र गान्धारथी, सदा द्वितीय कामोद. ३५५

आम्र पंचम राग लक्षण.

दोहरा.

जाति मध्यमा आर्षभी, उद्भव आखिल प्रकार ;
न्यास अंश ग्रह जेहमां, गणो सदा गान्धार. ३५६
तारस्थानी नि ग नित्य छे, मंद्रहीन निरखाय ;
गुणी आग्र पंचम सदा, अद्भुत हास्यें गाय. ३५७

कैशिकी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाषा पंचमनी भली, कोइ कहे भाषांग ;
म. प अपन्यास थकी सदा, आपे शोभा अंग. ३५८
न्यास अंश ग्रह पंचमें, राख रिषभ स्वर तार ;
षड्ज मंद्र स्थानावधि, उरमां नित्य उतार. ३५९
मध्यम पंचम स्वर महद, एह मही अपन्यास ;
इर्षामां विनियोग कर, खंत धरीने खास. ३६०
स. ग. म तार स्थानावधि, गण उत्सवमां गान ;
रसप्रद रागिणी कैशिकी, मोद धरी दे मान. ३६१

प्रथम सौराष्ट्री रागिणी लक्षण.

दोहरा.

सौराष्ट्री भाषा भली, पंचमथी प्रगटाय ;
अंश न्यास ग्रह पंचमें, रागे रिषभ तजाय. ३६२
म स्वर मंद्र स्थानावधि, तार स. ग. ध स्वर थाय ;
स. म. स्वर बहु गमको सहित, सर्व भावमां गाय. ३६३

द्वितीय सौराष्ट्री रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाषा टक्कतणी भणो, पंचम वर्ज्य कराय ;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, मध्यम मंद्र सदाय. ३६४
तार स्थानना स्वर अधिक, करुणा रसमां गाय ;
द्वितीय सौराष्ट्री मही, नि स्वर अधिक गणाय. ३६५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ललिता रागिणी लक्षण.

दोहरा.

टॅक भाषा सदृश समज, षड्ज अंश ग्रह न्यास ;
आवे उत्कट ललित स्वर, रि. प वर्जित छे खास. ३६६
षड्ज मंद्र ग. ध तार छे, व्हालभरण रस वीर ;
उत्सवमां आनंदथी, गा ललिता धरी धीर. ३६७

द्वितीय ललिता रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाषा भिन्न षड्जतणी, ग्रहांश न्यास ध जाण ;
तार मंद्र स्थानक तणा, ललित रि. ग. म स्वर आण. ३६८
प्रयोग करवो प्रीतथी, ललित स्नेहमां रोज ;
द्वितीय ललिता रागिणी. अधिक विधारण ओज. ३६९

प्रथम सैन्धवी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाषा टक्कनी भव्य छे, षड्ज अंश ग्रह न्यास ;
रिषभ अने पंचम रहित, मंद्र षड्जनो वास. ३७०
गाढ गमक लंघित स्वरनी, तार षड्ज गान्धार ;
सर्व रसोमां सैन्धवी, गाय गुणी धरी प्यार. ३७१

द्वितीय सैन्धवी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

पंचममां रहे प्रीतथी, प ग्रह अंशने न्यास ;
तार प अधिक रिषभ रहे, रि. प अपन्यास प्रकाश. ३७२
वर पूर्वे विनियोग छे, स गमक स्वरथी रम्य ;
सुखकर द्रितीय सैन्धवी, सर्व गुणीने गम्य. ३७३

तृतीय सैन्धवी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मळेल मालव कैशिके, ग्रहांश न्यास स थाय ;
षड्ज मंद्र पंचम मृदु, नि. ग. म स्वरार्थो तजाय. ३७४
सहु भावोमां भावथी, गुणीयो नित्यें गाय ;
तृतीय सैन्धवी रागिणी, प्रेम सहित परखाय. ३७५

चतुर्थ सैन्धवी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाषा भिन्न षड्ज तणी, उर धरी जो अनुराग ;
धैवत ग्रहांश न्यास छे, रिषभ सु पंचम त्याग. ३७६
धैवत मंद्र समोद धरी, उद्दीपनमां गाय ;
गुणीगणने आनंदप्रद, चतुर्थ सैन्धवी थाय. ३७७

गौडी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भळी भाषा हिंदोलनी, धैवत रिषभ तजाय ;
पंचमनी गमको बहु, षड्ज मंद्र स्थिर थाय. ३७८
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, शोभायुक्त सदाय ;
प्रिय संभाषणमां गुणी, गौडी रागिणी गाय. ३७९

द्वितीय गौडी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

मालव कैशिकथी मळी, षड्ज मंद्र ने तार ;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, नि बहुल श्रुतिथी धार. ३८०
वीर वारण रणकमां, प्रयोजाय धरी प्रीत ;
द्वितीय गौडी गा गुणी, चाह वधारी चित्त. ३८१

त्रावणी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

पंचमनी भाषा प्रबल, वर स ग्रहांश वदाय ;
पंचम न्यास प्रकाश छे, स. रि. प. म अधिक सदाय. ३८२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

निषादने गान्धारनी, संगति थाये सिद्ध ;
तेज भरेली त्रावणी, पृथ्वीमांहि प्रसिद्ध. ३८३

द्वितीय त्रावणी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

धैवत ने गांधार स्वर, मानो मंद्र सदाय ;
मध्यम बहु नि. प वर्ज्य छे, ग्रहांश धैवत थाय. ३८४
अभाव छे स्वर तारनो, गा स्तुतिमां सत्संग ;
अन्य पंडितोने मतें, भण त्रावणी भाषांग. ३८५

हर्षपुरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

मालव कौशिक रागनी, भाषा भव्य भणाय ;
षड्ज अंश ग्रह न्यास छे, धैवत त्याग कराय. ३८६
मध्यम पंचम तार छे, षड्ज मंद्र सुखदाय ;
हर्षपुरी अति हर्षमां, गुणीगण नित्यें गाय. ३८७

भम्माणी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

पेख विभाषा पंचमनी, त्वरित रिषभ कर त्याग ;
न्यास ग्रहांश प धारजे, उरे धरी अनुराग. ३८८
तार स्वरो स. म. नि. प सहित, कर उत्सवमां गान ;
अति परिश्रम करतां थशे, भम्माणीनुं भान. ३८९

टक्क कौशिक राग लक्षण.

दोहरा.

धैवती तेमज मध्यमा, जाति जन्मद जाण ;
न्यास अंश ग्रह धैवत, काकली निषाद आण. ३९०
उत्तरायता मूर्छना, छे अंतर गान्धार ;
आरोही वर्णो अचल, प्रसन्नाद्यलंकार. ३९१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कंचुकी प्रवेशमां प्रथम, प्रयोजायले पेख ;
चतुर्थ प्रहर दिवस तणो, ललित समय तुं लेख. ३९२
रसो विभत्स भयानके, उद्भट नृत्ये नित्य ;
गा मन्मथ महाकाळने, रिझाववा धरी प्रीत. ३९३

मालवा राग लक्षण.

दोहरा.

भोपा टक्क कौशिक तणी, ध ग्रह अंश ने न्यास ;
राग मालवा मांहि स ध, ने रि प संगति खास. ३९४

द्राविडी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

मान मालवा रागनी, वीर विभाषा नित्य ;
स. ग नी तेमज स. ध तणी, संगति गणो स प्रीत. ३९५
ग्रहांश छे गान्धार स्वर, धैवत न्यास धराय ;
द्राविडी रागिणी रागथी, गुणीयो सौ गाय. ३९६

संगीत पारिजातानुसार राग लक्षण.

सोरठा.

जहां न्यास ने अंश, कहेवामां आवे नहीं ;
तहां षड्ज न्यासांश, युक्तिथी जाणी लीयो. ३९७

दोहरा.

जेथी थाये ताननी, शरुआत सुखदाय ;
तेज तान उद्ग्राह स्वर, समजी लीवो सदाय. ३९८

सैंधव राग लक्षण.

छंद—रोला.

शुद्ध मेलथी जन्म, सुभग साते स्वरवाळो,
धैवतादि मूर्छना, स्फुरित जहां गमक निहाळो ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आरोहे गनि वर्ज्य, सदा आम्रेडित स्वर भर,
सुखप्रद सैंधव राग. अहोनिश अंतरमां धर. ३९९

संपूर्ण धनाश्री रागिणी लक्षण.

छंद–रोला.

आरोहे रि ध वर्ज्य, शुद्ध स्वर युक्त सदाये,
आदि स्वर गान्धार, अंतमां मध्यम ज्यांये ;
छे जाति संपूर्ण, धनाश्री रागिणी गुणीगण,
ध रहित रि. ध करी त्याग, अवर ८ण भेद उभय भण. ४००

मेघमल्लार राग लक्षण.

छंद–रोला.

षड्जादि मूर्छना, वळी त्रय षड्ज समन्वित,
निषादने गान्धार, स्वरो छे तजायला नित्य ;
सुखप्रद वर्षामांहि, मेघ मुदने भरनारो,
अकाल रागालाप, तणा दोषों हरनारो. ४०१

निलाम्बरी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

षड्जादि मूर्छना, पूर्ण नीलाम्बरी उरधर ,
शुद्ध मेलथी जन्म, बहु कंपोथी मनोहर ;
अंश न्यास ए मांहि, सदा प. म. ग. रि. स नि थावे,
षड्जथी पंचम जई, फरी षड्जज आवे. ४०२

मालवश्री रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

शुद्ध मेलना स्वरोवडे, उद्भव पामेली,
मध्यमादि मूर्छना थकी, जाहिर जामेली ;
धैवत स्वर अंशथी, रोज देखाय रुपाळी,
मालव श्रीरागिणी, अंत पंचम स्वरवाळी. ४०३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रक्तहंस राग लक्षण.

छंद रोला.

निषाद आरोहमां, सदाये तजवो तंतथी,
धैवत अवरोहमां, खचित तजवो उर खंतथी ;
षड्जादि मूर्छना, वळी गान्धार रहित छे,
रक्तहंस ए राग, नेह भरनार नित्य छे. ४०४

गौरी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

रिषभ आदि स्वर लइ, अवर स्वर आरंभाये,
रि. ध कोमल ग. नि तीव्र, अंश पण निषाद थाये ;
आरोहे ग. ध रहित, नि कंपे गौरी सुखकर,
मूर्छा मध्यमावाथि, होय आरोहे ग स्वर. ४०५

मल्लारी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

गौरी मेलथी जन्म, निषाद रहित छे नित्यें,
आरोहे गान्धार, त्याग कर चेती चित्तें ;-
षड्ज थकी आरंभी, स्वरो आवे सुखकारी,
मुनिओना मतमांहि, महद रागिणी मल्लारी. ४०६

पंचम राग लक्षण.

छंद रोला.

पंचम रिषभ तजाय, षड्ज स्वर आदि आवे,
मध्यम मन हरनार, न्यासने अंश सुहावे ;
त्वरित तीव्र गन्धार स्वरेथी आनंद भरतो,
पंचम राग प्रसिद्ध, सहु गुणीने सुख करतो. ४०७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वसंत रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

षड्ज स्वरथी आरंभ, वाळी मूर्छना मनोहर,
निषादने गान्धार, तीव्र स्वर आवे अंदर :
मध्यम स्वर अंतमां, लावचो राखी लागणी,
भव्य सुखो भरनार, वखाणो वसन्त रागिणी. ४०८

देश राग लक्षण.

छंद रोला.

रिषभ तीव्रतर रहे, तीव्र गान्धार गणाये,
अवरोहे ध. ग रहित, त्वरित नि तीव्र भणाये ;
गान्धारथी आरंभवाळी मूर्छना बेश छे,
रसिकोने रसभरण, दिव्य ए राग देश छे. ४०९

देशकारी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

निषादने गान्धार, तीव्र स्वर धारी शोभे,
धैवत स्वर ज्यां अंश, ललित जोई मन लोभे ;
धैवतादि मूर्छना, सदा करती सुखशाता,
देशकारी रागिणी, महद गुणें ने मुददाता. ४१०

मुखारी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

पूर्व ग कोमळ रिषभ, पूर्व नि कोमळ धैवत,
आरोहे ध नि वर्ज्य, न्यास स अंश प छे नित्य ;
धैवतथी आरंभी, थाय उद्ग्रह ज्यां नेपा,
मनहर एह मुखारी, जेहनी गुणीयोने गम. ४११

भैरवी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

स ग्रह अंशने न्यास, सदा धैवत कोमळ स्वर,
रिषभ थकी आरोह, थाय तो प स्वर न्यास धर ;
आरोह सु अवरोह, उभय पंचमथी थातां,
निर्ये पंचम न्यास, धरीने गुणीयो गाता. ४१२
षड्ज थकी अवरोह, थाय जो आनंदकारी,
त्यां पण पंचम न्यास, खास श्रुतिथी त्यो धारी ;
प्रबळ प्रजाळी पाप, ताप तन तणा शमावे,
भैरव भय हरनार, भला गुणीयोने भावे. ४१३

भूपाली रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

निषाद मध्यम रहित, धैवत कोमल स्वर,
गान्धारथी उद्ग्राह, रिषभ स्वर न्यास निरंतर ;
अंश स्वर गान्धार, ग्रहण करी सदाय शोभे,
सांभळता भूपाली, लाख गुणीना दिल लोभे. ४१४

प्रसभ राग लक्षण.

सोरठा.

पंचम रहित सदाय, षड्जादि मूर्छा सहित ;
व्हालुं प्रसभ वदाय, रसिक जनोने रसभरण. ४१५

कोल्लहास राग लक्षण.

छंद रोला.

गान्धारादिक गणो, मूर्छना मन हरनारी,
मध्यम स्वरथी रहित, सद्य रचना सुखकारी ;
वळी अवरोहे सदा, त्याग धैवतनो थाये,
सुखप्रद षाडव राग कोल्लहास कहेवाये. ४१६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भैरव राग लक्षण.

छंद रोला.

भैरव रागनी मांहि, रिषभ पंचम नहीं आवे,
धैवत प्रथम धराय, न्यास मध्यम धर भावे;
निषादने गान्धार, तीव्र स्वर तमाम रीते,
कर धैवत कोमलो, चाह धारीने चित्ते. ४१७

वसन्त भैरव राग लक्षण.

छंद रोला.

ध ग्रह अंशने न्यास, रिषभ धैवत कोमल स्वर,
निषादने गान्धार, तीव्र स्वर सदैव सुखकर;
अथवा मध्यम अंश, विकल्पे मुनियो माने,
वसन्त भैरव राग, प्रबल गुणवान पिछाने. ४१८

मध्यमादि रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

धैवतने गान्धार, स्वरो जहां तुरत तजाये,
मध्यमादि मूर्छना, भाव धरी नित्य भजाये;
निषाद मध्यम रिषभ, अंश स्वर आवे अंदर,
मध्यमादि रागिणी, चाह धारी चित्तमां धर. ४१९

बंगाली रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

रि. ध स्वरनो कर त्याग, दीर्घ द्रष्टिथी दाखो,
प तीव्रतर स्वर मान, तीव्र स्वर निषाद राखो;
षड्ज स्वरेथी थती, मूर्छना अंदर घाली,
बनवाने बडभाग, रागिणी गा बंगाली. ४२०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नारायणी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

निषादने गान्धार, तीव्र स्वर लीयो विचारी,
गान्धारथी प्रगटती, मूर्छना मन हरनारी ;
आरोहे ग. नि वर्ज्य, अंश न्यास ध मुददाता,
नारायणी रागिणी, सदा करती सुखशाता. ४२१

बिभास राग लक्षण.

छंद रोला.

म तीव्रतर गनि तीव्र, सदा कोमळ रिध सुंदर,
आरोहे म. नि वर्ज्य, अंश ग. प न्यास ध उर धर ;
गान्धारथी प्रगटती, मूर्छना शोभे भाइ,
श्री हरिनुं कर स्मरण, व्हालथी बिभास गाइ. ४२२

कानडी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

छे मध्यम उदग्राह, अंतमां धैवत छाजे,
सदा तीव्र गान्धार, स्वरेथी रसभर राजे ;
सुखद षड्ज स्वर अंश, कानडीमां कहेवाये,
भजवा श्री भगवान, गर्व तजी गुणीओ गाये. ४२३

मेघराग लक्षण.

छंद रोला.

समारंभ षड्जथी, सर्व स्वरनो ज्यां थाये,
कोमल रिषभ सदाय, कलित स्वर ज्यां कहेवाये ;
वळी मध्यम स्वर वर्ज्य, अंश रि. ग अंदर आवे,
मेघनाद मनहरण, राग षाडव ललचावे. ४२४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तोडी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

रि. ध कोमल षड्जादि, न्यास ध अंश ग उर धर;
मध्यमादि आरोह, मांहि सुख कर न्यास प स्वर ;
पंचमादि आरोह, अने अवरोह महीं भण,
प्रसिद्ध पंचम न्यास, गुणी रागिणी तोडी गण. ४२५

छाया तोडी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

निषाद पंचम त्याग, तोडीमांथी तुरत तुं ;
उरे धरी अनुराग, छाया तोडी सज्जता. ४२६

मार्ग तोडी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

रि. ध कोमल कहेवाय, वळी वर्जित पंचम स्वर,
न्यास षड्ज सुखकारण, अंश मध्यम आनँदकर ;
मध्यमथी आरंभी, मूर्छना मुदे प्रगट कर,
मार्ग तोडी रागिणी, अमित हर्षे उरमां धर. ४२७

घण्टा राग लक्षण.

सोरठा.

आरंभे गान्धार, निषाद आणी अंतमां ;
धैवत कोमल धार, घण्टा राग महीं गुणी. ४२८

वराटी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

रि. ध कोमल ग नि तीव्र वराटीमा तीव्र तर म ;
धैवतादि धर शीघ्र, आंदोलन आणी अधिक. ४२९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्धवराटी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

राखो कोमल रिषभ, पूर्व गान्धार ग्रहीने,
ग तीव्रतर कोमल ध तीव्र स्वर निषाद लहीने;
स्वर धैवत उद्ग्राह, न्यास स्वर निषाद धारी,
शुद्ध वराटी माँहि, अंश मध्यम मनोहारी. ४३०

तोडीवराटी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

म तीव्रतर स्वर दाख, रि. ध कोमल कोडे करी;
प. ध उद्ग्राहक राख, तंते तोडी वराटीमां. ४३१

नागवराटी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

म तीव्रतर स्वर धार, द्रढ धैवत कोमल करी;
ग. ध उद्ग्राह विचार, गौतम नाग वराटीमां. ४३२

पुन्नागवराटी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

ग. ध उद्ग्राहक आण, नि तीव्र मध्यम तीव्रतर;
धारी प्रेम पिछाण, प्रिय पुन्नागवराटीने. ४३३

प्रताप वराटी लक्षण.

सोरठा.

म स्वर तीव्रतर धार, स्वर निषादने तीव्र करीं;
आरंभे गान्धार, पेख प्रताप वराटीमां. ४३४

शोकवराटी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रि. ध. कोमल स. न्यास, ग. पूर्व मध्यम तीव्रतर ;
अंश निषाद प्रकाश, प आदि शोकवरार्टोमां. ४३५

कल्याणवराटी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

म अंश प न्यास जाण, गान्धारादिक मूर्छना ;
कलिंतें मेल कल्याण, वर कल्याण वरार्टोमां. ४३६

खम्बावती रागिणी लक्षण.

सोरठा.

अवरोहे रि विनाश, प वर्ज्य धैवत कोमळो ;
खम्बावर्तोमां खास, गान्धारादिक मूर्छना. ४३७

आभीरिका रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

धैवत कोमल अने, तीव्र नि. स प अंश स्वर,
षड्जादि मूर्छना, कंप छे ध ग स्वर उपर ;
म वर्ज्य आरोहणे, क्वचित अवरोहणमां पण,
आभीरिका अनुप, रागणी भाव धरी भण. ४३८

कल्याण राग लक्षण.

सोरठा.

उद्ग्राहक गान्धार, म. ग. नि. तीव्र स्वर मानवा ;
वर कल्याण विचार, आरोहे म. नि त्यागीने. ४३९

रामकरी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

आरोहे म. नि छोड, रि. ध कोमल ग. नि तीव्र छे ;
जाहिर प अंश जोड, धैवतादिक मूर्छा धरी. ४४०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मनमां आणी मोज, म तीव्रतर स्वर मानजे ;
राम रटणमां रोज, रामकरी गा रागणी. ४४१

सारंग राग लक्षण.

सोरठा,

ग अति तीव्रतम खास, नि तीव्र म. ध स्वर तीव्रतर ;
मध्यम अंश स न्यास, सारंगे मूर्छा षडज. ४४२

मालव राग लक्षण.

दोहरा.

रि. ध कोमल ग. नि तीव्र स्वर, न्यास रि अंश ज्यांहीं ;
षड्जथी अवरोहण क्रमे मूर्छा मालव मांही. ४४३

गुणकरी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

रि. ध कोमल ग. नि त्याग, धैवतादि मूर्छा धरो ;
क्वचित् ग स्वर संस्कार, रसिक गुणकरी रागिणी. ४४४

ककुभ राग लक्षण.

दोहरा.

आरोहे तीव्र ग तजी. धृतिथी धैवत छोड ;
स्वर पंचम उद्ग्राह नित्य, ककुभ रागमां जोड. ४४५

शंकराभरण राग लक्षण.

सोरठा.

ग नि तीव्र ग न्यास, अंश म. शंकराभरणमां ;
षड्जथी आरंभ खास, सुढालु कंप गमक सहित. ४४६

बडहंस राग लक्षण.

दोहरा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सुभग शंकराभरणना, स्वरथी उद्भव थाय ;
षड्ज थकी आरंभ छे, प अंश न्यास सदाय. ४४७
अवरोहे गान्धार नहीं, आरोहे ध त्याग ;
बहुनामीना स्मरणमां, गा वडहंस सु राग. ४४८

वेलावली रागिणी लक्षण.

दोहरा.

रिषभादि अभिरुद्गता, मूर्छा मन हरनार ;
तीव्र ग. नि षड्जंश छे, आरोहे म न धार. ४४९
अवरोहे गान्धार तज, वर वेलावली मांही ;
गांधारादिक मूर्छना, क्वचित् प्रगटती ज्यांही. ४५०

केदारी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

तीव्र ग. नि सु रि. ध त्याग, समारंभ गान्धारथी ;
उरे धरी अनुराग, केदारी गुणी गा मुदे. ४५१

काम्बोधी रागिणी लक्षण.

छंद रोला.

गान्धारादिक ग्रहो, मूर्छना पूरण प्यारी ,
म. नि. स्वर त्याग कराय अंश म. ध स्वर दृढ धारी ;
गणो तीव्र गान्धार, वळी ए तण अभाव,
मूर्छा काम्बोधीमां, उत्तरायताज आवे. ४५२

गोपीकाम्बोधी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

आरोहे नि न धार, म. प अंश स्वर ओपता ;
ध उद्ग्राह न विसार, गोपीकाम्बोधी महीं. ४५३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दीपक राग लक्षण.

सोरठा.

मालव जन्मद जोय, गान्धारथी उद्ग्राह छे ;
आरोहे म. नि न्होय, स न्यासांश दीपक महीं. ४५४

पठमंजरी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

मालव जन्मद जाण, गण पंचम न्यासांश ग्रह ;
आरोहे ग न आण, षड्जादि पठमंजरी. ४५५

ललिता रागिणी लक्षण.

दोहरा.

गौरीथी उद्भव अचल, षड्ज अंश उद्ग्राह ;
पंचम रहित सदाय छे, म अंत ललिता मांह. ४५६

बहुला रागिणी लक्षण.

दोहरा.

गौरी मेलथी उद्भवी, मध्यम रहित मनाय,
स वियोगी नि स्वर सहित, ग उद्ग्राह छे ज्यांय. ४५७
प्रसिद्ध पंचम स्वर जहां, अंश वन्यो अवरेख ;
गुणी गाई बहुला सदा, लक्ष लाभ तुं लेख. ४५८

दक्षिणा गुर्जरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

अवरोहे म. नि वर्ज्य छे, मालव जन्मद मान ;
ग श्लिष्ट मध्यम स्वर सहित, ध श्लिष्ट स स्वर मान. ४५९
शरु थती गान्धारथी, महद मूर्छना होय ;
दिव्य दाक्षिणा गुर्जरी, कहे गुणी सहु कोय. ४६०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

औत्तरागुर्जरी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

सर्व स्वरो सुखकार, दाक्षिण गुर्जरी तुल्य छे ;
धरी शुद्ध गान्धार, गणो औत्तरागुर्जरी. ४६१

कौमारी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

गौरी उद्भव स्थान, ध उद्ग्राह न्यासांश ध ;
बहु कंपित स्वरवान, कौमारी कहे कोडथी. ४६२

रेवा रागिणी लक्षण.

सोरठ.

शुभ गौरी सर्जनार, स उद्ग्राह म नि वर्ज्य छे ;
ग. प एकत्र उचार, रेवा रागणीमां रसिक, ४६३

गौल राग लक्षण.

सोरठा.

धैवत ने गान्धार, तंते त्याग कराय छे ;
छे गौरी सर्जनार, गौल रागने गर्वथी. ४६४

केदारगौल राग लक्षण.

सोरठा.

गणो तीव्र गान्धार, मनहर रजनी मूर्छना ;
पंचम अंश उचार, क्वचित रिषभ पण अंश छे. ४६५
रि. प. म. प योग सदाय, आरोह ग. ध त्यागवा ;
सहु गुणीने सुखदाय, केदारगौल गणाय छे. ४६६

कर्णाटगौल राग लक्षण.

छंद रोला,

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रिषभ तीव्रतर रहे, तीव्र गान्धार गणाये,
न्यास ग अंश म मान, स्वर प अपन्यास भणाये;
प्रगटनार अवरोह प, क्वचित ध आरोहे धर,
सु कर्णाटगौलमां, क्वचित धैवत तुं त्याग कर. ४६७

सारंगगौल राग लक्षण.

सोरठा.

स न्यास म अंश स्थंभ, स्वरो सर्व सारंगना;
ग. ध विण स थीं आरंभ, सारँग गौलतणो समज. ४६८

रीतिगौल राग लक्षण.

सोरठा,

अवरोहे प न आण, स न्यास रि अंश सप्त स्वर;
रीतिगौलमां जाण, धैवतादि द्रढ मूर्छना. ४६९

नारायणगौल राग लक्षण.

दोहरा.

अवरोहे ग ध त्याग कर, धरी तीव्र गान्धार;
निषाद वा कर रिषभथी, समारंभ सुखकार. ४७०
आरोहे रि. प स्वरथीं कर, गमक पुनः स्वस्थान;
पूर्व उत्तराहत गमक, मोद धरीने मान. ४७१
मध्यम स्वर मन मानतो, अंश स्थानमां आप;
ए नारायण गौल गुणीं, गाइ त्याग परिताप. ४७२

मालवगौल राग लक्षण.

छंद रोला,

गौरीथी उद्भव्यो, वर्ज्य करवो धैवत स्वर,
रिषभ थकी आरंभ ग स्वर आरोहे नहीं धर;
आरोहे गान्धार होय तो, आदि प आणो,
मालव गौलनीं मांही, अंत मध्यम स्वर जाणो. ४७३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देशी रागिणी लक्षण.

सोरठा,

रि. ध कोमल स्वर राख, आरोहे ग. नि वर्ज्य छे ;
षड्जथी आरंभ दाख, रि अंश देशी रागिणी. ४७४

हिन्दोल राग लक्षण.

सोरठा;

राग रसिक ललकार, रिषभ अने पंचम तजी ;
धैवत कोमल धार, हर्ष धरी हिन्दोलमां. ४७५

मार्गहिन्दोल राग.

सोरठा,

आणो योग अमोल, रि. प स्वरनो हिन्दोलमां ;
एज मार्गहिन्दोल, सुखदायक छे सर्वदा. ४७६

ढक्क राग लक्षण.

सोरठा,

छे रि. ध स्वर सु कुमार, आभीरी मूर्छा अनुप ;
आरोहे ध न धार, श्रुति धारीने ढक्कमां. ४७७

नाट राग लक्षण.

दोहरा.

तीव्र ग. नि. रि. ध तीव्रतर, अवरोहे ग. ध त्याग ;
छे रिषभादि मूर्छना, रसिक नाट ए राग. ४७८

नटनारायण राग लक्षण.

सोरठा,

मध्यम अंश मनाय, रोज रिषभ स्वर न्यास छे ;
वर उद्‌भव वखणाय, वेलावलीथी विश्वमां. ४७९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अवरोहे ग तजाय, गान्धारादिक मूर्छना ;
भवपति निस भजाय, नटनारायण रागथी. ४८०

सालंकनाट राग लक्षण.

सोरठा.

जाण जन्म देनार, स्वरो शंकराभरणना ;
वळी वर्ज्य गान्धार, स न्यास अंश सुहामणो. ४८१
म. ध आम्रेडित मान, निशें सालँकनाटमां ;
गौतम नेह निधान, सदा षड्ज उद्ग्राह स्वर. ४८२

छायानाट राग लक्षण.

दोहरा.

सुभग शंकराभरण छे, जाहिर जन्मद जाग ;
अवरोहे गान्धार नहीं, आरोह नि त्याग. ४८३
धैवतादि मूर्छा महद, रिषभ न्यास स्वर ज्यांहि ;
अनेक मध्यम आवता, छायानाटनी मांहि. ४८४

कामोदनाट राग लक्षण.

सोरठा,

म अंश स्वर स न्यास, अवरोहे ग. ध त्यागवा ;
तीव्र ग स्वर छे खास, अखिल स्थळे कंपन अधिक. ४८५
धैवतथी आरंभ, नित्य कामोद सु नाटमां ;
दुःखप्रद छोडी दंभ, ईश भजो आनंदथी. ४८६

आभीरीनाट राग लक्षण.

दोहरा.

आभीरीथी उद्भव्यो, अवरोहे ध न खास ;
न्यास विशेषथी युक्त छे, स आदि ग्रह ने न्यास. ४८७
अंश स्वर आनंदमय, गान्धारने निषाद ;
ए आभीरीनाट छे, समजो विना विवाद. ४८८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कल्याण नाट राग लक्षण.

दोहरा.

जाण जन्म कल्याणथी, अवरोहे ग. ध नांहि ;
षड्जादि शुभ मूर्छना, कल्याणनाटनी मांहि. ४८९

केदारनाट राग लक्षण.

दोहरा.

रिषभ ने धैवत स्वरो, आरोहे नहीं खास ;
धैवतने गान्धारनो, छे अवरोहे नाश. ४९०
शरुआत गान्धारथी, निरख तीव्र ग. नि नित्य ;
कीर्तन केदारनाटमां, प्रभुनुं कर धरी प्रीत. ४९१

वैराटीनाट राग लक्षण.

दोहरा.

जन्मद स्वरो वराटीना, अवरोहे ध. ग. छोड ;
स न्यास पंचम अंश स्वर, धैवतादिमां जोड. ४९२
निषादने मध्यम स्वरो, कंपित नित्य कराय ;
वर वैराटीनाटथी, हर्षे हृदय भराय. ४९३

आशावरी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

गौरी मेलथी उद्भवी, मध्यम आदि भजाय ;
गान्धारने निषाद स्वर, आरोहमां तजाय. ४९४
अंश स्वर धैवत अने, पेखो पंचम न्यास ;
आशावरीथी इश भजी, त्वरित हरो यम त्रास. ४९५

सावेरी रागिणी लक्षण.

सोरठा,

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग तीव्र ध आदि धार, म अंश नि वर्ज्य नित्य छे ;
सावेरी सुखकार, आरोहे ग नि त्यागवा. ४९६

सालंग राग लक्षण.

सोरठा,

ध न्यास म अंश आण, कोमल रिषभ ग तीव्र छे ;
ग आदि सालंग जाण, अखिल स्थले कंपो अधिक. ४९७

श्रीराग लक्षण.

दोहरा.

आरँभ त्रय रि वा सधी, ग तीव्र स्वर सुखदाय ;
आरोहे ग. ध त्यागवा, श्रीरागमां सदाय. ४९८

पहाडी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

गौरी स्वरथी उद्भवी, सदा वर्ज्य गान्धार ;
षड्जादि पहाडी महीं, रि न्यास अंश उच्चार. ४९९

विहंगड राग लक्षण.

दोहरा.

तीव्र ग. नि न्यासांश रि, आरोहे रि न आण ,
विहंगड महीं व्हालथी, ग उदग्राह स्वर जाण. ५००
होय पथी आरंभ तो, आरोहे ग तजाय ;
मध्यमनी मूर्छा मळे, सदा प वर्ज्य कराय. ५०१

पूर्वी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

गौरी मेलथी उद्भवी, षड्जोदग्राह सदाय :
न्यास अंश गान्धार ग्रहीं, पूर्वी प्रसिद्ध थाय. ५०२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पूर्वी सारंग राग लक्षण.

दोहरा.

रि. ध कोमल ग. नि तीव्र स्वर, ग न्यास प अंश संग;
प तीव्रतर उद्ग्राह रि, ए पूर्वीसारंग. ६०३

सामंत राग लक्षण.

सोरठा,

रहे ग तीव्र रसवंत, रिषभ तीव्रतर राजतो;
सुभग राग सामंत, स न्यासांश उद्ग्राह स्वर. ६०४

मंगल कोश राग लक्षण.

सोरठा,

ध स्वर अंश ने न्यास, गौरी मेलथी उद्भव्यो;
मंगलकोशे खास, ध उद्ग्राह ध. नि संग छे. ६०५

नादरामक्रिया रागिणी लक्षण.

हारगीत छंद,

गुणदाइ गौरी रागिणी, उत्पत्ति कारण खास छे,
धरी नेह नित्य विराजतो, सु निषाद स्वर ज्यां न्यास छे;
आरोहमां गान्धार स्वरने त्यागवो तेते स भी,
उद्ग्राह षड्ज सुहामणो, छे नादरामक्रिया मही. ६०६

कुडाइ रागिणी लक्षण.

दोहरा.

आरोहे म. नि वर्ज्य छे, ग उद्ग्राह स्वर थाय;
पंचम अंश ग तीव्र गण, धारी स्नेह सदाय. ६०७
धैवतथी वा रिषभथी, छे अवरोहण ज्यांहीं;
क्वचित् ग अवरोहे वरज, कुडाइ रागिणी मांहि. ६०८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गौड राग लक्षण.

सोरठा.

स उदग्राह स्वर ज्यांहीं, आरोहे ग. नि वर्ज्य छे;
ग तीव्र गौडनी मांहि, आरोहित स्वर छे अखिल. ९०९

देवगिरि रागिणी लक्षण.

दोहरा.

म तीव्रतर ग. नि तीव्र छे, ग. ध अवरोहे नांहीं;
षड्जादि मूर्छा सुखद, देवगिरिनी मांहि. ९१०

देवगान्धारी रागिणी लक्षण.

हारगीत छंद.

गान्धारथी आरंभ थाये, षड्ज अंश स्वर सही,
कर रिषभथी आरंभ तो, आरोहमां गान्धार नहीं;
संपूर्ण भैरव रागने, गुणी देव गान्धारी गणो,
गाओ गुणो गोविन्दना, छे समय आज सुहामणो. ९११

त्रिवणी रागिणी लक्षण.

गारी मेलथी उद्भवो, म अवरोहमां नांहीं;
स उदग्राह अंश सु रिषभ, त्रिवणी रागिणी मांहि. ९१२

कुरंग राग लक्षण.

दोहरा.

नि तीव्र ने रि म तीव्रतर, ग अति तीव्रतम राख;
स न्यास प अंश कुरंगमां, स उदग्राह स्वर दाख. ९१३

सौदामिनी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग. उद्ग्राह रि. ध कोमळा, ग. अति तीव्रतम जाण.
म तीव्रतर स्वर तीव्र नि, सौदामिनीमां आण. ९१४

वैजयंती रागिणी लक्षण.

दोहरा.

मानी मध्यम तीव्रतर, धैवत कोमल धार ;
निषाद तीव्र निहाळवो, रि उद्ग्राह सुखकार. ९१५
आरोह सु अवरोहमां, ग. ध स्वर क्वचित गणाय ;
रस भरनारी रागिणी, वैजयंती वखणाय. ९१६

हंस राग लक्षण.

सोरठा.

निषादने गान्धार, त्वरित त्याग करवा पडे ;
दृढ रि. ध कोमल धार, हंसरागमां हेतथी. ९१७

कोकिल राग लक्षण.

दोहरा.

उत्पत्ति कल्याणथी, म. नि स्वर वर्ज्य कराय ;
गान्धारादि मूर्छना, कोकिलमां कहेवाय. ९१८

जयश्री राग लक्षण.

दोहरा.

रि. ध कोमल ग नि तीव्र छे, आरोहे रि ध नाहीं ;
म तीव्रतर उद्ग्राह नि, राग जयश्री मांहीं. ९१९

सुरालय राग लक्षण.

दोहरा.

गौरीथी उद्भव अखिल, आरोहे रिं त्याग ;
धैवत वर्ज्य सदाय छे, एह सुरालय राग. ९२०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अर्जुन राग लक्षण.

दोहरा.

अर्जुन उद्भव गौरीथी, आरोहे म. नि न्होय ;
अवरोहे ग. ध आण नहीं, ग उदग्राह स्वर होय. ६२१

ऐरावत राग लक्षण.

सोरठा.

जन्मद कॅल्याण मेल, ध रहित उदग्राह ग गणो ;
पंचम ने पामेल, स न्यास ऐरावत महीं. ६२२

कङ्कण राग लक्षण.

सोरठा.

कङ्कण ए कहेवाय, जन्म शंकराभरणथी ;
ग. उदग्राह प तजाय, आवे मध्यम अधिक ज्यां. ६२३

रत्नावली रागिणी लक्षण.

सोरठा.

ग उदग्राह स्वर आण, प न्यास म तीव्रतर सदा ;
रि. नि नहीं ग तीव्र जाण, रत्नावलीमां रागथी. ६२४

कल्पतरु राग लक्षण.

सोरठा.

ध वर्ज्य ग तीव्र भाख, रिषभादि मूर्छा रहे ;
रि तीव्रतर स्वर राख, स न्यास कल्पतरु महीं. ६२५

सोरठी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

श्री रागथी उत्पत्ति शुभ, रि उदग्राह सु भणाय ;
प थी रि सुधी स थी म सुधी, हुंफित गमक गणाय. ६२६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षड्ज अग्र स्वस्थान युत, तेमज पंचम पेख ;
च्यावित रिषभ सह सोरठी, दिव्य रागणी देख. ६२७

मारु राग लक्षण.

दोहरा.

शुद्ध स्वरोथी उत्पत्ति, ग उद्ग्राह स्वर मान ;
आरोहे धैवत नहीं, वळी स्वर ग च्यावितवान. ६२८
होय अग्रस्वस्थानने, गमक पुनः स्वस्थान ;
अहनिश आदि निषाद स्वर, आंदोलित धर ध्यान. ६२९
धैवत आंदोलित रहे, विधिवत वारंवार ;
मनहर मारु रागमां, प्रभु गुण गा धरी प्यार. ६३०

कुमुद राग लक्षण.

दोहरा.

नाट रागना मेलथी, उत्तम उद्भव थाय ;
ग उद्ग्राह मध्यम विना, कुमुद राग गुणी गाय. ६३१

चक्रधर राग लक्षण.

दोहरा.

नाट रागथी जन्म छे, स उद्ग्राह शुभ रीत ;
पंचम वर्ज्य प्रसिद्ध छे, राग चक्रधर चित्त. ६३२

सिंहरव राग लक्षण.

दोहरा.

भैरवीथी उद्भव भलो, म उद्ग्राह ग त्याग ;
निषाद आरोहे नहीं, रसिक सिंहरव राग. ६३३

मंजुघोषा रागिणी लक्षण.

दोहरा.

श्री रागथी उद्भव सदा, ध उद्ग्राह म न आण ;
निषाद आरोहे तर्जी, मंजुघोषा जाण. ६३४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शिववल्लभा रागिणी लक्षण.

दोहरा.

मुखारी मेलथी उद्भवी, म वर्ज्य प अंश न्यास ;
निषाद आरोहे नहीं, ग उद्ग्राह स्वर खास. ५३५
अवरोहणे निषाद युत, आनँद भरे अनंत ;
सु शिववल्लभा रागणी, खचित गा धरी खंत. ५३६

मनोहर राग लक्षण.

दोहरा.

शुद्ध स्वरोना मेलथी, जाहिर जन्म जणाय ;
स उद्ग्राह आरोहमां, ग. रि. म. स्वरोज तजाय. ५३७
स. प आंदोलित सिद्ध छे, ध ग्रहण करीज फराय ;
आनंदे ए अवसरे, कंपित गमक कराय. ५३८
पंचमथी स सुधी जई, मध्यम पर अटकाय ;
आंदोलित ए मांहि पण, गुणी नित्य ग स्वर थाय. ५३९
सुभग गमक स्वस्थान युत, गणो सदा गान्धार ;
राग मनोहरमां मुदे, हरि भज वारंवार. ५४०

आनंद भैरवी रागिणी लक्षण.

दोहरा.

भाळो जन्मद भैरवी, नि उद्ग्राह गुणगेह ;
नैम्न्य गमक गान्धारमां, आनँद भैरवी एह. ५४१

मानवी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

स्वर निषादनो योग, आरोहणमां आवतां ;
सैंधवीने कहे लोक, मुदप्रद मानवी रागिणी. ५४२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

राजधानी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

कलित मेल कल्याण, जाहिर जन्मद जेहनो ;
आम्रेडित स्वर आण, आरोहे धैवत नही. ५४३
अवरोहे गान्धार, सदा वर्ज्य स्वर जाणवो ;
पूर्ण वधारी प्यार, राजधानी रागिणी कहे. ५४४

शर्वरी रागिणी लक्षण.

सोरठा.

गौरीमेलथी थाय, स उदग्राह न्यासांश स. प ;
वा स. नि न्यास मनाय, सुखद रागिणी शर्वरी. ५४५

हनुमतमतानुसार षड्रागोत्पत्ति,

दोहा.

हरपंचाननथी थया, प्रगट पंच प्रिय राग ;
एक पार्वती आननें, उपज्यो सह अनुराग. ५४६

राग नाम,

रोलावृत्त.

भैरव आदि कह्यो, द्वितीयने मालकोश भण,
त्रीजो छे हिण्डोल, दिव्य दीपक चोथो गण ;
श्री पांचमो प्रसिद्ध, मेघ छठ्ठो मुददायक,
ए षड् रागो नित्य, नेहथी गाये गायक. ५४७

रागिणी नाम,

रोळावृत.

भैरवी भय हरनार, पछी वैरारी छे वर,
मधुमाधवी महान, सैन्धवी अपूर्व सुखसर ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बंगाली बड भाग, पांच रागिणी रसवाळी,
भैरवनी भामाओ, नित्य नथुराम निहाळी. ९४८
टोडी· गौरी अने, गुनकली जाहिर जाणो,
खंभावती. ककुंभ, अहर्निश उरमां आणो ;
ए पांचे परिपूर्ण, रागिणी रस भरनारी,
मालकोशनी महद, सर्व प्रमदाओ प्यारी. ९४९
रामकली· देशाख· ललित शुभ लक्षणवंती,
बिलावली बलवान, विश्वमांहि विलसंती ;
पटमञ्जरी प्रवीण, रागिणी पांच रुपाळी,
हर्षभरण हिण्डोलतणी भामाओ भाळी. ९५०
दुःखहर देशी नाम, पछीं कामोद सु कहींए,
नट उर भरती नेह, किदारा लक्षें लहींए ;
कही कान्हरा कलित, दिव्य दीपकनी दारा,
नित्य धरे नथुराम, रसिकने उर रसधारा. ९५१
मालश्री मुदखाण, अने आशावरी ओपे
धन्याश्री पछीं धार, व्यापि सहु वसन्त लोपे ;
मनहर छे म्हारवा, पंच रागिणी प्रतापी,
श्यामा श्री रागनी, विश्व आखामां व्यापी. ९५२
आदि उत्तम टंक, ते पछी मॅलहार मनहर,
गुर्जरी गुणभंडार, भुपाली सदाय सुखकर ;
देशकार द्युति भरी, पंच रागिणीओ पेखो,
मानिनीओ मेघनी, स्नेहथी सदाय लेखो. ९५३
हर्ष वधारण हरख, तिलक ते पछी गणीजे,
दिनपुरीया दाखीए, मोदथी माधव लीजे ;
सोहु पछी बलनेह, मधू. पञ्चम मुददाता,
भयहर भैरव तणा, अष्ट पुत्रो कहेवाता. ९५४
मारु ने मेवाड, पछी वडहंस बिराजे,
प्रेम वधारण प्रबल, छटाभर चन्द्रक छाजे ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नन्द. भँवर नथुराम, खास फरी गणीए खोखर,
मालकोशना महद, अष्ट पुत्रो आनंदघर. ९९५
चन्द्रबिम्ब छे चारु, महद मंगलदा भंगल,
शोभा. आनँद विनोद, अहनिश हरे अमंगल;
प्रधान. गौर. विभास, हर्ष रुदे भरनारा,
रसिक राग हिण्डोल तणा पुत्रो ए प्यारा. ९९६
कुन्तल. कमल. कलिङ्ग सदा जगमां सुखसागर,
चित्तहर चम्पक. कुसुम, राम आरामतणुं घर;
लहिल. हिमाल लखाय, कष्टहर अष्ट अनुपम,
दीपकना ए पुत्र, सदा अवनिमा उत्तम. ९९७
सिन्धु मालव गौड पछी गुणसागर गणीए,
कुंभ अने गंभीर, सुखकर शंकर भणीए;
विहागडा बलवान, नेहना निधान सरखो,
सुंदर श्री रागना, पुत्र प्रीतेथी परखो. ९९८
जालंधर सारङ्ग ते पछी नटनारायण,
भव्य शंकराभरण, कलित कल्याण पछीगण;
गजधर ने गान्धार, शहाना अर्थे शान्ति,
मेघ रागना महद, पुत्र हरनारा भ्रान्ति. ९९९

पुत्रवधू नाम.

सुहा विलावली सबल, सोरठी ने खंभारी,
अनदाही ए पछी, भली भलगुजरी भाळी;
पट चंचली चित्तधरो, मीरवी सुदनी भाता,
भैरव रागनी भव्य, पुत्रवधूओ विख्याता. ६६०
धन्याश्री, मालश्री, अने जैतश्री जाणो,
सुघराइ सुखरूप, पछी दुर्गा दिल आणो;
गान्धारी ने भीमपलासी, कामोदी कहीं;
मालकोशनी पुत्रवधू प्रेमे राजी रहीं. ६६१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आदि लीलावती, कीरवी जैती जोइ,
पूरवी पारावती, त्रिवेणी कहे हरकोइ ;
देवगिरी सरस्वती सद्य छे सुखकरनारी,
हृदये गणे हिण्डोल, पुत्रवधूओ ए प्यारी. ९६२
मंगल गुजरी पछी, जाणजो जेजेवंती,
मालगुर्जरी भुंपाली, मनोहरी ललित लसंती ;
अहीरी इमन हमीर हर्ष नित हृदविण आपे,
ए दीपकनी दिव्य, पुत्रवधूओ दुःख कापे. ९६३
विजया जगविख्यात, दयावती कुंभा कहीए,
सोहिणी, सर्वा पछी, खचितें क्षेमा उर लहीए ;
शशिरेखाने सदावती सर्वांगे सुन्दिर,
सुखकर श्री रागनी, पुत्रवधूओ मुदमन्दिर. ९६४
कन्हडनाट सुप्रथम, गावदी कदमनाट कहे,
वहारी माझ महान, परज प्रतिदिन लक्षें लहे ;
नटमङ्जरी शुद्धनाट, नित्य नथुराम कहावे,
पुत्रवधू मेघनी, भलागुणीओने भावे. ९६५

राग जाति.

दोहा.

राग रागिणी सर्वनी, जाति त्रय शुभ जाण,
ओडव षाडव समजीने, वळी सम्पूर्ण वखाण. ९६६

ओडव.

प्रबल पांचे स्वरथी जहां, राग रूपें प्रगटाय,
जाहिर जाति ए स्थळे, ओडव अवरेखाय. ९६७

षाडव.

शुद्धभूप षड् स्वर थकी, जहां रागनुं थाय ;
जाति तहां जयदायिनी, शुभ षाडव कहेवाय. ९६८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सम्पूर्ण.

ज्यां साते स्वरथी सुभग, रागरूप बंधाय ;
नर जाति ज्ञानी वदे, सहु सम्पूर्ण सदाय. ९६९

सोरठा.

राग जातिओ सात, त्रय जातिथी जन्मती ;
भाव धरी भली भात, समजावुं ए सर्वने. ९७०
शुद्ध महाँशुद्ध गणाय, मार्ग अने सालंग छे ;
भली संकीर्ण भणाय, महाँसंकीर्ण देशी कही. ९७१

शुद्ध.

रोळावृत्त.

अन्य राग रागिणीतणुं, मिश्रण नहि थाये ;
रागो रहेने रोज, शुद्ध रूपथी सदाये,
कोइ कोई श्रुतिमात्र, अन्य रागमां विचरती,
जाति ए रागनी, शुद्ध सहुने मुद भरती. ९७२

महाशुद्ध.

अन्य राग रागिणीतणा, मिश्रण विण शोभे,
निज श्रुतिओ पण अन्य रागमां जवा न लोभे ;
शुद्ध रूपथी सदा, शोभतो हर्षे होये,
महाशुद्ध जातिए, रागनी कहे सहु कोये. ९७३

मार्ग.

राग रागिणी जेह, सर्व देशे सुखकारी,
एकज रीते गाय, गुणी गण आनँद धारी ;
मुदप्रद कठिन महान, वडा गुणीओ कहे व्हाले,
एह राग रागिणी, मार्ग जातिमां म्हाले. ९७४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

શ્રી માણેકલાલજી
જૈન જ્ઞાન ભંડાર
ગોપીપુરા, સુરત.

सालंग.

रस सागर जे राग रागिणी होय गवाती,
स्नेहे करतां श्रवण, ठरे सुज्ञोनी छाती ;
जो एमां जरी अन्य, रागनों भास जणाये,
तोए रागनीं जाति, भव्य सालंग भणाये. ५७५

संकीर्ण,

जेमां एकथीं अधिक, राग भेळा थइ भावे,
एक रागनुं रूप, धरी आनँद उपजावे ;
एवीं राग रागिणी, होय जे हित करनारी,
सुभग जाति संकीर्ण, एहनी ल्यो उर धारी. ५७६

महासंकीर्ण.

शुद्ध अने संकीर्ण, मोदथी होय मळेला,
शुद्ध अने सालंग, भावथी होय भळेला ;
सालँग ने संकीर्ण, होय मिश्रित अथवा ज्यां,
सुखद महा संकीर्ण, रागनी जाति बने त्यां, ५७७

देशी.

जेह राग रागिणी, अखिल देशोनी अंदर,
गुणीगण मांहि गवाय, विविध रीते मुदमंदिर ;
सरलताथीं संपूर्ण श्रवणमां सदा छवाये,
एह रागनी जाति, कलित देशी कहवाये. ५७८

सोरठा.

राग रागिणी जेह, विना ध्यान गाये गुणी ;
आपे नहि फल एह, कहेल संगीतशास्त्रमां. ५७९

भैरव स्वरूप. (ध्यान)

मनहर.

बालइन्दु भाल, गले मुंडनी विशाल माल,
गंगना तरंग शिर, पापने प्रजाळे छे ;
कहे नथुराम अंग उरगना आभूषण,
तंते त्रय लोचन तमाम भय टाळे छे.
हाथमां हरिणवाल डाक डमरुने ताल,
शोभे श्वेत वस्त्र व्हाले सिंह्वासन वाळे छे ;
भस्मभर भूतपति रूप राग भैरवने,
गाइ गुणी लोको दिन गम्मतमां गाळे छे. ९८०

दोहा.

शुद्ध **षड्ज** कोमल **रिषभ**, गणो चढी **गान्धार** ;
मध्यम कोमल मानवो, शुद्ध **पंचम** सुखकार. ९८१
धैवत उतरी उर धरो तीव्र **निषाद** तमाम ;
भैरव भयहरनार गुणी, नित्य गाओ नथुराम. ९८२
ग्रह स्वर शुभ ' गांधार ', नित्य ' षड्ज ' स्वर **न्यास** ;
' धैवत ' स्वर **वादी**, ' रिषभ ' **संवादी** सु प्रकाश. ९८३
छे जाति **संपूर्ण** शुभ, **शरद्** ऋतु अनुकूल ;
सूर्योदय पहेलां सदा, गवाय गणी सुखमूल. ९८४
विना बेल घाणी फरे, उत्तम एह प्रभाव ;
कफ प्रधान दरदो हरे, श्रोताओना साव. ९८५
दक्षिण मुख स्मरदहननुं, स्थिर उत्पत्ति स्थान ;
सर्व अंगथी शोभतो, भैरव राग महान. ९८६

भैरवी स्वरूप. (ध्यान)

छंद मनहर.

छाजे छविश्वेत, लखी आस्य अरविन्द लाजे,
अंकुरित यौवने विरूपता वहे रवि ;
कहे नथुराम कंठ भ्राजे श्वेत भूषणथी,
ओढे श्वेत साडी, दाडी हेत भरी हेरवी. ९८७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तालने वजावे, स्तने कंचुकी सुहावे लाल,
चंपकनी माल नांखे मुनिमन फेरवी ;
शंकरने स्थाने रहे, मुखथी महेश कहे,
गुणीमां गवाइ भेरे हर्ष उर भैरवीं. ९८८

दोहा.

षड्ज शुद्ध, कोमल रिषभ, गण कोमल गांधार ;
मध्यम. पंचम. शुद्ध स्वर, कोमल धैवत धार. ९८९
निषाद कोमल नेहथी, भैरवी गातां भाळ ;
ग्रहँ स्वर छे 'गांधार' नित, 'धैवत' न्यास निहाळ. ९९०
'मध्यम' वादी, 'रिषभ ने, निषाद' शुभ संवादी ;
जाति पूर्ण प्रातः समय, मुदे कहे मुनि आदि. ९९१

वैरारी स्वरूप. (ध्यान)

छंद मनहर.

उन्नत उरोज कर्यां, कोडे श्वेत कंचुकीथी,
साविणी समान वेणी पृष्टे त्रिखराय छे ;
कहे नथुराय गुच्छ कुसुमना कर्ण सोहे,
श्यामनो समागम जे चित्ते नित्य च्हाय छे.
कनकना कंकणथी ओपे कर युग्म जेना,
सदा जेने स्पृहा देव दर्शननी थाय छे ;
एवी रागिणी अनुप, अमृतना कूप जेवी,
वैरारी विनोदे गुणीगणमां गवाय छे. ९९२

दोहा.

षड्ज शुद्ध कोमल रिषभ, ग्रहो तीव्र गान्धार ;
मध्यम उतरी आण उर, पंचम शुद्ध प्रचार. ९९३
धैवत कोमल धारवो, नित्य चढेल निषाद ;

१ कोइ कोमल निषाद पण लगावे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वैरारी गाये गुणी, व्हाले विना विवाद. ५९४
जाति पूर्ण संध्या समय, ग्रहँ स्वर 'षड्ज' सदाय;
क्वचित गणो 'गांधार' ग्रह, चित्त वधारी व्हाय. ५९५

मधु माधवी स्वरूप. (ध्यान)

छंद मनहर.

काजळथी भर्यां नेण, कोकिला समान वेण,
स्वर्ण वर्ण, प्रीते पीत परिधान धारे छे;
कहे नथुराम मुख चुमी मनमोहननुं,
हसी हर वख्त बाण नयनना मारे छे.
धरी भुज कंठे, करी कोलि निज कान्त संग,
व्हालानी समीप मोज माणवा विचारे छे;
सदा सुख शय्या सेवनारी मधुमाधवीने,
गाइ गुणी लोको व्याधि उरथी विसारे छे. ५९६

दोहा.

शुद्ध षड्ज पछी राखजे, रिषभ तीव्र तैयार;
ग्रहीँ कोमल गान्धार स्वर, मध्यम पूर्ण विचार. ५९७
शुद्ध पंचम. धैवत अने, निषाद तीव्र गणाय;
पूर्ण जाति प्रातः समय, मधुमाधवी गुणी गाय. ५९८
ग्रह स्वर छे 'मध्यम' महद, जाहिर जोवा जोग;
सुणनाराने सर्वदा, निश्चे करे निरोग. ५९९

सैन्धवी स्वरूप. (ध्यान)

छंद मनहर.

दीपे स्वच्छ देह रमणीय रक्त अंबरथी,
आठे प्होर अंगे ज्वाळा अनंगनी जागे छे;

१ अन्य प्रातः कालनो समय पण कहे छे.
२ क्यांइक गांधार पण लेवामां आवे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कहे नथुराम धार्युं करमां त्रिशूल धींगुं,
पतिपथ पेखवानुं जेने प्रिय लागे छे.
सिधावी शिवालयमां, पूजी परमेश्वरने,
जोडी कर श्यामनो समागम जे मागे छे;
क्रोधथी भरेली सैन्धवीने कोइ गाय त्यारे,
व्याधिनां नगारां विरहीने उर वागे छे. ६००

दोहा.

षड्ज शुद्ध पछी रिषभ[1] स्वर, मनहर तीव्र महान;
धरी कोमल गान्धार[2] द्रढ मध्यम कोमल मान. ६०१
शुद्ध पंचम धैवत चढी, निषाद कोमल खास;
ग्रह. धैवत वा मध्यम, 'षड्ज' वादी ने न्यास. ६०२
जाति छे सम्पूर्ण शुभ, सांझ समय सुखकार;
सहु गुणी गाये सैन्धवी, आनंद धरी अपार. ६०३

बंगाली स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

कलित कपाले कस्तूरीनो अनुलेप कर्यो,
शीशपर जटाजूट, भूति अंग भाळी छे;
कहे नथुराम ग्रही करमां त्रिशूल उभी,
साडी शिरे केसरीआ रंगनी रुपाळी छे.
मंद हसनारी, वन उपवने वसनारी छे,
बाल वये बंगाली विशाल रूपवाळी छे;
शरीरे सु कोमळ ए रागिणी रसाळी अति,
भावथी सुणे ते परिपूर्ण भाग्यशाळी छे. ६०४

---

१ कोइ चढेल निषाद पण कहे छे मतलब आरोहमां तीव्र निषाद अने अवरोहमां उतरी निषाद.

२ कोइ पंचम वर्ज्य करी षाडव कहे छे.

दोहा.

षड्‌ज शुद्ध पछी राखवो, रिषभ तीव्र धरी तंत ;
कहे कोमल गान्धार गुणी, खचित धरी उर खंत. ६०५
मध्यम कोमल मेळीने, शुद्ध पंचम स्वर राख ;
धैवत तीव्र निषादे स्वर, दाखी कोमल दाख. ६०६
सुखद जाति संपूर्ण छे, सांझे समय सुखरूप ;
ग्रह स्वर 'षड्‌ज' थी गाय गुणी, ए बंगालो अनुप. ६०७

मालकोश स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

अभिनव अंग ओपे चारु श्वेत चीरवडे,
कुसुमना हार कंठे धरनारो धीर छे ;
कहे नथुराम छडी करमां सपल्लवने,
कनक किरीट शिरे, श्यामल शरीर छे.
युवतीना युथमां उमंगथी उभेलो सदा,
वळुंधेलो विविध विलासमांहि वीर छे ;
गुणीगणमां गवाय, सुणी दोष दूर जाय,
एवो मालकोश राग अनुप अमीर छे. ६०८

रोळावृत्त.

शुद्ध षड्‌ज स्वर सदा, गणो गान्धार स कोमल,
मध्यम कोमल कलित, धरो धैवत स्वर कोमल ;
निषाद कोमल नित्य, पंच स्वरे प्रमाणवाळो,
मालकोश मनहरण, नेहथी सदा निहाळो. ६०९
ग्रह स्वर सुखप्रद 'षड्‌ज', महद 'मध्यम' स्वर वादी,
दृढ 'धैवत' स्वरे न्यास, 'निषाद' सदा संवादी ;

१ कोइ प्रहर दिवस चढया सुधीनो समय कहे छे.

उत्तम ओडव जाति, शिशिर ऋतु सुखकर सारी,
अर्ध रात्रिने समय, राग गावो ललकारी. ६१०
पत्थर पिगळी जाय, अनुपमें प्रभाव एवो,
वातजन्य व्याधिओ, हरे अरपी सुख मेवो ;
पार्वतीजीए प्रबल, प्रेम धारी प्रगटाव्यो,
मालकोश विण दोष, भला गुणीओने भाव्यो. ६११

टोडी स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

आनंदे उभेली कंजनयनी निकुंज मांहि,
सुंदर धवल साडी ओढी शिर उपरे ;
कहे नथुराम तने कर्पूरनो लेप करी,
उन्नत उरोज पर श्याम कंचुकी धरे.
सुणी वीणानाद रीझे विस्तृत नितम्बवाळी,
काम रंगे भीनां अंग भ्रांति उरमां भरे ;
टोडी रसबोळीतणो स्वर संभळाय त्यांतो,
मुनि मान छोडी सद्य संसारमां संचरे. ६१२

रोळावृत्त.

षड्ज सदाये शुद्ध, रिषभ कोमल रहेल छे,
गण कोमल गान्धार, तीव्र मध्यम कहेल छे ;
पंचम शुद्ध सदैव, सकोमल धैवत धरवो,
निश्चय तीव्र निषाद, भली टोडीमां भरवो. ६१३
ग्रह· वादी 'गांधार,' न्यास 'धैवत' संवादी,
'पंचम' आदि अन्य स्वरो आवे अनुवादी ;

---

१. कोइ आ रागने षाडव जातिनो कहे छे. तेमां मात्र पंचम वर्ज्य करी उतरी निषाद लगावे छे अने कोइ साते स्वर लगावी संपूर्ण जातिनो कहे छे पण आम करवाथी मालकोशनुं शुद्ध स्वरुप थतुं नथी.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छे जाति सम्पूर्ण, प्रथम दिनॅ प्रहर समय छे,
रसिक जनोने सदा, टोडी आनँदआलय छे. ६१४

गौरी स्वरूप. (ध्यान).

छंद–मनहर.

मनोहर कंठ मृदुवाणी कोकिला समान,
सुमन समी सुगन्ध शाणी सदा स्थापे छे;
कहे नथुराम करे नाद नामे वाद्य धर्युं,
कर्णपर आम्रमोर कष्ट बधां कापे छे.
शिरे श्वेत साडी, प्यारी बागमां बिराजे दाडी,
चन्द्रमुखी चतुरां उपाधिने उथापे छे;
निमिषमां नांखे मान मोडी मुनिराय तणा,
गौरी ज्यां गवाय त्यां विनोद घणो व्यापे छे. ६१५

रोळावृत्त.

षड्ज शुद्ध सुखकरण रिषभ कोमल कान्तिभर,
ग्रही तीव्र गान्धार, स कोमल मध्यमॅ स्वर धर;
पछी ले पंचम शुद्ध, धारॅ स्वर धैवत कोमल,
निर्ये तीव्र निषाद, गौरी गाइ मुदने मल. ६१६
ग्रह 'धैवत' ने धार, 'रिषभ' ने न्यास विचारी,
आरोहे 'गांधार' बाद करवो बळ धारी;
शुभ जाति सम्पूर्ण, समय सन्ध्यानो सारो,
गौरी रागिणी गाइ, व्याधिओ विविध विदारो. ६१७

गुनकली स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

वसन मलिन वळी नांखती निःशासा उंडा,
क्षणे क्षणे क्षीण थाती चिन्ता चाकळे चडी;

१. कोइ बे मध्यम पण लगावे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कहे नथुराम आंगी अश्रुथी बनी छे आर्द्र,
लोचनथी अंजन लुछायुं छे रडी रडी.
व्याधि बहु वेठी वेठी बारणुं उघाडी बाळा,
टेकावी कपोले कर, काम ज्वाळथी जळी ;
गाती दुःख गुनकली रागिणीनो स्वर सुणी,
पत्थर समान छातीवाळा [illegible]य पिगळी. ६१८

रोळावृत.

षड्ज शुद्ध संग्रही, रिषभे स्वर कोमल राखो,
ग्रही तीव्र गान्धार, स कोमल मध्यम दाखो ;
पंचम शुद्ध प्रसिद्ध, कोमळो धैवत लावो,
तंते तीव्र निषाद धरी गुनकली कहावो. ६१९
छे जाति सम्पूर्ण, 'षड्ज' वा 'निषाद' ग्रहे स्वर,
प्रथमे प्रहर दिनतणो, समय गावानो सुखकर ;
त्यागी 'धैवत' 'रिषभ', घणा कहे ओडव जाति,
गुणी गाइ गुनकली, ठीक ठारे छे छाती. ६२०

खंभाती स्वरुप. (ध्यान).

छंद मनहर.

खूबीदार खंजन सरीखां चक्षु चंचल छे,
भला भेद संगीतना जेने बहु भावे छे ;
कहे नथुराम वस्त्र कसुंबी बिराजे अंग,
हंस जेवी चाल हैये हर्ष उपजावे छे. ६२१
कोकिला समान वेण वदती मयंकमुखी,
विरही जनोनां जोरे जीगर जलावे छे ;
खंभाती गवाती होय त्यारे सहु कोइ सुज्ञ,
हर्ष घेला बनी सद्य शिरने हलावे छे. ६२२

रोळावृत्त.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षड्ज शुद्ध स्वर पछी, रिषभ गान्धार तीव्र धर,
मध्यम कोमल महद, शुद्ध पंचमॅ प्रेमे कर ;
धैवत तीव्र निषाद तीव्र आरोहे आवे,
अवरोहे कोमल निषाद गुणीगणने भावे. ६२३
आरोहे छे ' रिषभ ' वाद, ' गान्धार ' सुं ग्रहँ स्वर,
' धैवत ' नौतम न्यास, कोइ ' गान्धार ' कहे वर ;
मध्य रात्रिनो समय, जाति सम्पूर्ण सोहाती,
गर्व धरीने गाय, गुणी खंते खंभाती. ६२४

कुकुभ स्वरुप (ध्यान).

छंद मनहर.

वालमनी साथ कर्या विविध विलास व्हालें,
आंखो बनी राती आखी रातने उजागरे ;
कहे नथुराम तुट्या हार, छुट्या शिर केश,
वेण तोतळातां, नेण निश्चे ऋजुता धरें.
आळस मरडती ने करडती दंते ओष्ठ,
तूटी कस, थया क्षत नखना स्तनो परे ;
रागिणी कुकुभनो रसाळ स्वर सांभळवा,
वीतरागी रागी बनी सर्वदा स्पृहा करे. ६२५

रोळावृत्त.

षड्ज शुद्ध ने रिषभ तीव्र गान्धार तीव्र स्वर,
मध्यम कोमल पछी, शुद्ध पंचम भावे भर ;
धैवत तीव्र तमाम, तीव्र छे निषाद नौतम,
कुकुभ महीं कोमळो, अन्य छे निषाद उत्तम. ६२६
ग्रह स्वर ' धैवत ' गणो, सदा अथवा ' मध्यमॅ ' स्वर,
छे जाति सम्पूर्ण, अखिल गुणीने आनँदवर ;
सवारना दश वग्या पछीनो समय सुशोभित,
कुकुभ रागिणी गाइ, चतुर करता चोख्खुं चित्त. ६२७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हिण्डोल स्वरुप (ध्यान).

छंद मनहर.

मस्तके मणि जडेल मुकुट मनोहर छे,
कनक सरीखां अंगे काम उपमा वही ;
कहे नथुराम पहेर्यां पीताम्बर प्रीत धारी,
शृंगारो सजीने सुखदायक बन्यो सही.
हाटकने झूले रामा हर्षथी झुलावी रही,
मंदमंद गाने हरखातो मनडां महीं ;
अति अणमोल बोल हिंडोलनो सांभळीने,
विबुधोनां दिल डोल्या वगर रहे नहीं. ६२८

दोहा.

षड्ज शुद्ध गान्धार ने, मध्यम तीव्र वखाण ;
धैवत. निषाद तीव्र छे, ग्रह 'गान्धार' प्रमाण. ६२९
न्यास 'षड्ज' स्वर वादी छे, 'मध्यम' तीव्र तमाम ;
ओडव जाति ओपती, नित्य कहे नथुराम. ६३०
सुखद समय छे सांजनो, ऋतु वसंत वखणाय ;
उत्तर मुख महादेवनुं, उद्भव स्थान गणाय. ६३१
विना चलाव्ये चालतो, हिंडोळो धरी हेत ;
ए प्रभाव हिंडोलनो, नित आनंदनिकेत. ६३२

रामकली स्वरुप (ध्यान).

छंद मनहर.

नीलाम्बर अंग, रंग पीत रमणीय लागे,
भूषण जडेलां भव्य तेज भरे तनमां ;
कहे नथुराम कीधो कर्पूरनो लेप भाले,
हावभाव युक्त गाती स्नेहथी स्वजनमां.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आसन अनुंप प्राणवल्लभनी पास राखी,
करती हमेश कान्ता उमेरो अतनमां ;
रामकली रागिणीनो सांभळी रसीलो स्वर,
नर मुनि देव नित्य मोद पामे मनमां. १३३

दोहा.

षड्ज शुद्ध कोमल रिषभ, ग्रहो तीव्र गान्धार ;
मॅध्यम तीव्र कोमळ युगल, पंचम शुद्ध प्रकार. १३४
धैवत कोमल, तीव्र छे निषाद नेह निधान ;
रामकली ए रागिणी, जाणे सर्व जहान. १३५
ग्रह स्वर ' मध्यम ' ने गणो, ' धैवत ' वादी न्यास ;
आरोहे ' गान्धार ' ने, ' निषाद ' तजवा खास. १३६
अंश मात्र अवरोहमां, शुभ स्वर ' रिषभ ' रखाय ;
जाति पूर्ण प्रातः समय, रामकली गुणी गाय. १३७

देशाख स्वरूप. (ध्यान)

छंद मनहर.

प्रतिमा प्रचंड, ज्योति कामनी अखंड जागे,
श्याम चीरथी शरीर द्विगुणी वहे द्युति ;
कहे नथुराम जेने व्हालो सदा वीर रस,
नित्य निज नाथने सुभाषणे संबोधती.
कुटिल भ्रकुटि धनु, तेम द्रग तीर जेवां,
शक विण आशकने, घायल करे अति,
देशाखनो दिव्य स्वर सांभळतां डोले दिल,
बोले वाहवाह बधा राखी उरमां रति. १३८

दोहा.

१ कोइ रिषभ पंचम बाद करी ओडव जाति कहे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्ध षड्ज पछी धारवो, तुर्त तीव्र गान्धार ;
मध्यम कोमल मानी कर, शुद्ध पंचम पर प्यार. ६३९
धैवत निषाद तीव्र धरी, षाडव जाति सुधार ;
दिवस तणा दश वागतां, गाय गुणी हरवार. ६४०
ग्रहँ स्वर शोभे ' षड्ज ' शुभ, अथवा गण ' गांधार ' ;
दिलथी कर देशाखनो, वारंवार विचार. ६४१

ललित स्वरुप. (ध्यान).

छंद मनहर.

कंज समी आंखो मांहि अंजन अनुप आंज्यु,
गौर वर्णवाळी गजगामिनी गणाय छे ;
कहे नथुराम अंगे शोळे सणगार सज्या,
वदननी ज्योति विधु सरखी जणाय छे.
आछां वस्त्र मांहि अंग विद्युतसमां विराजे,
हेरती विलास हेते हैयुं हरखाय छे ;
बिम्ब जेवा ओष्ठवाळी ललितनी लटकथी,
रसिक जनोनां मन लट्टु बनी जाय छे. ६४२

दोहा.

षड्ज शुद्ध कोमल रिषभ, तीव्र गॅ स्वर सुखकार ;
मध्यम. धैवत कोमळा, निषाद तीव्र तयार. ६४३
कोमल ' मध्यम ' वादी स्वर, ग्रह. रि वा ' गांधार ' ;
नौतम ' धैवत ' न्यास छे, जाति षाडव सार. ६४४

---

१. कोइ मध्यम तीव्र कोमल बे ले छे.

२. कोइ संपूर्ण जाति गणे छे तेमां पंचम आवे छे. अने कोइ ओडव जाति गणे छे तेमां रिषभ पंचमनो त्याग करे छे पण प्रसिद्ध मत तो षाडव जातिनो छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रात समय सोहामणो, गावानो गंभीर ;
सहुने सुख करनार छे, सुंदर ललित शरीर. ६४५

बिलावली स्वरूप (ध्यान).

छंद–मनहर.

स्तब्ध बनी उभी वने सांकेतिक स्थल मांहि,
आशकने याद करे चिन्तातुर चित्तथी ;
कहे नथुराम व्याप्यो अंगमां अनंग रंग,
शिरपर साडी रक्त धारी पूर्ण प्रीतथी.
चारु नील चोळी कसी उन्नत उरोज पर,
राजे रसत्रोळी रसिकानी शुभ रीतथी ;
षोडश शृंगार धरी क्षणदा समान शोभे,
गांडा बने गुणीओ बिलावलीना गीतथी. ६४६

दोहा.

शुद्ध षड्ज स्वर छे सदा, तीव्र रिषभ. गान्धार ;
मध्यम कोमळ मानवो, पंचम शुद्ध विचार. ६४७
धैवत. निषाद तीव्र स्वर, ग्रह. 'धैवत' ने धार ;
'रिषभ' वाद आरोहमां, वादी स्वर, 'गांधार'. ६४८
न्यास खास छे 'षड्ज' स्वर, पूर्ण जाति परखाय ;
प्रात समय नित प्रेमथी, बिलावली गुणी गाय. ६४९

पट मञ्जरी स्वरुप (ध्यान).

छंद मनहर.

अतनना तापथी तपायमान तनपर,
कुसुमनी माळा करमांय छे फरी फरी ;
कहे नथुराम गमे नांहि खानपान वस्त्र,
भावे नहि आभूषण भीति उरमां भरी.

१. कोइ बे निषाद लगावे छे.

व्हालाना वियोग वडे, वेठतीं अपार व्याधि,
जागे अष्ट जाम वाम धृतिने करी परी ;
मधुर स्वरेथी चित्त मुनिनां चळावनारी,
पृथ्वीमां प्रकाशी रही प्रीते पटमंजरी. ६९०

दोहा.

षड्ज शुद्ध, कोमल रिषभ, छे कोमल गान्धार ;
मध्यम तीव्र कोमल उभय, शुद्ध पँचम सुखकार. ६९१
धैवत कोमल नि युग छे, तीव्र स कोमल अंग ;
प्रीते गा पट मञ्जरी, उरमां धरी उमंग. ६९२
ग्रह स्वर 'षड्ज' सदाय छे, अथवा गण गांधार ;
समय निशि आदि प्रहर, पूर्ण जाति सुकुमार. ६९३

दीपक स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

आनन उमंग भर, बेठेलो मतंग पर,
अंगनाना युथथी, विंटाएलो विलासी छे ;
कहे नथुराम कंठे कान्तिमय मुक्तदाम,
छटादार केश छुटा रम्य सुखराशि छे.
चीरने शरीर तेम लाल द्रग तीर लेखो,
गुंजतो मधुप सम धीर कुंजवासी छे ;
दीपक गवाय त्यां छवाय छे प्रकाश दाडी,
जेनुं रूप जोवा आंख प्रेमीओनी प्यासी छे. ६९४

छन्द हरिगीत.

कोमल रिषभ स्वर कलित, पछी गान्धार शुद्ध विराजतो,
गान्धार कोइ वखत स कोमल, पूर्ण छविथी छाजतो ;
धैवत. निषाद धरायँ द्वयँ, स्वर षड्ज. पंचम त्यागवा,
दानी गुणी नित गाय दीपक, अंतरे अनुरागवा. ६९५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रह, अंश. न्यास सदायँ स्वर, गांधारने गणीं राखवो,
महादेवजीना पूर्व मुखथी, अनुप उद्‌भव दाखवो ;
सुखदायिनी छे जाति षाडव, समय सन्ध्या जाणवो,
विण अग्नि दीपक प्रगटतो, ए प्रभावे प्रमाणवो. ६९६

देशी स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

गौरवर्णवाळी गुणशाळी सुकुमारी सारी,
पीत परिधान व्हेरनारी पूर्ण प्यारथी ;
कहे नथुराम चहे स्नेहे निज श्यामसंग,
कोकिला समान कंठ ओपे छे उचारथी.
यौवन भरेली धरी कुसुमना गुच्छ करे,
रागिणी रहे छे दिनरात दिलदारथी ;
निरखतां नूर, जामे हर्ष उरमां जरूर,
जाये दुःख दूर सदा देशीनां दिदारथी. ६९७

छन्द हरिगीत.

छे षड्‌ज पंचम शुद्ध, रिषभ. निषाद तीव्र गणाय छे,
कोमळ स्वरो बीजा बधा, सम्पूर्ण जाति जणाय छे ;
ग्रहँ स्वर सु ' मध्यम ' मानवो, ' पंचम ' सदा संवादी छे,
छे 'षड्‌ज' स्वर वर वादीने 'गांधार' नित अनुवादी छे. ६९८
वळी अन्य मत मांही ' निषाद ' स कोमळो क्यांइक धरे,
तजी कोइ ' पंचमें ' स्वर मुखेथी जाति षाडव उचरे ;

---

१. आ रागमां केटलाएक साते स्वरो लगावी संपूर्ण जाति पण गणे छे. तेम ' संगीतादित्य ' मां पण संपूर्ण जाति बतावेल छे. ' मध्यम तीव्र, रिषभ कोमल, कोइ कोइ वखत गांधार मेळववामां आवे छे. घणुं करीने तो शुद्ध गांधार अने धैवत निषाद लगाववो कह्यो छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दिनना द्वितीय प्रहरे गुणीजन गर्व धरीने गाय छे,
ए दिव्य देशीना श्रवणथी, जबरॅ व्याधि जाय छे. ६५९

कामोद स्वरुप (ध्यान).

छंद मनहर.

अंबर अरुण रंग अंगनो सुवर्ण समो,
पीन पयोधरपर श्वेत कंचुकी कसी ;
कहे नथुराम मनोहारी लतामंडपमां,
वर पिक वेण लळकारती रही लसी.
जळे काम ज्वाळे राह मित्रनी निहाळे रोज,
टाळे नहि ध्यान तेनुं, प्रेम फन्दमां फसी ;
अन्यने अवाजे चोंकी उठती कामोद कामा,
त्रिबुधना अंतरमां व्हालथी रही वसी. ६६०

छन्द हरिगीत.

मध्यम सिवाय तमाम स्वर, ज्यां तीव्र संज्ञा धारता,
ग्रहँ स्वर सदा 'धैवत' कहे, अथवा 'निषाद' उचारता ;
संपूर्ण जाति सुं द्रढ, तजी 'गांधार' को षाडव कहे,
'गांधार' तेम 'निषाद' तजी, उरमाहि ओडव को लहे. ६६१
'मध्यम' उभय ले तीव्र कोमल, त्यागी रि. ध आरोहमां,
'मध्यम' सुं ग्रह ने न्यास 'धैवत' महद नांखे मोहमां ;
छे समय दिननो याम द्वितीय तमामने मन मुद भरे,
नथुराम सुणतां नेहथी, कामोद सहु कष्टो हरे. ६६२

नट स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

केसर समान काया भ्राजे भव्य भूषणथी,
शशिसम वदननी शोभा सुखकारी छे ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वळी नथुराम हंस गतिथी हरे छे मन,
लाल वस्त्र पहेरी ल्हेरीने लुभावनारी छे.
लटकथी लंके कर धारी फरे आली संग,
शाणी गति नाटकनी स्नेहे साधनारी छे;
महा स्वर मिष्ट नट रागिणीनो सांभळवा,
जीगरमां अनिश अधीरपणुं जारी छे. ६६३

छन्द हरिगीत.

छे षड्ज आदि शुभ, रिषभ गॅन्धार तीव्र गणाय छे,
पछी तीव्र मध्यम, शुद्ध, पंजम भाव धारी भणाय छे;
धैवत. निपाद सु तीव्र नित, सम्पूर्ण जाति सुख करे,
ग्रह 'षड्ज' वा 'मध्यम' गुणी संध्या समय नट उचरे. ६६४

किदारा स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

छाजे लट लटी, रूप राजे ऋषिराय जेवुं,
जाह्नवी जटामां, अंग अति अभिराम छे;
कहे नथुराम तन भूतिथी जणाय भव्य,
अंसे उपवीत रीत सदा सुखधाम छे.
राखी आली कर्णे आस्य गुप्तनो प्रकाश करे,
दीर्घ नील पंकज समान द्रग श्याम छे;
ज्ञानमय मंत्रने उचारे तान मारे तीखां,
किदारा अमारे आज टरवानुं ठाम छे. ६६५

छन्द हरिगीत.

स्वर षड्ज पंचम शुद्ध, रिषभ गॅन्धार तीव्र सुखो भरे,
छे उभय मध्यम तीव्र कोमल, तीव्रता धैवत धरे;
वळी नित्य तीव्र निषादे स्वर को वख्त कोमल थाय छे,
ग्रह. वादी 'मध्यम' न्यासने संवादी 'षड्ज' सदाय छे. ६६६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अनुवादी ' पंचम ' एकलो, सम्पूर्ण जाति सदा सजो,
आरोहमां तजवो ' रिषभ ' ' गांधार ' अवरोहे तजो ;
छे अर्ध रात्रिनो समय, आनंदप्रद उच्चारनो,
कोडे किदारा गाइ गुणी, संग्रह करे छे सारनो. ६६७

कान्हरा स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

श्याम वर्ण अंग पर श्वेत परिधान प्हेर्या,
रीष्ट करनारी रामा, इष्ट उष्ण कर छे ;
कहे नथुराम भाल चंदनथी चार्चित छे,
हस्तमांहिं हास्तिदंत भारे भयहर छे.
कलकंठ कंठमांहि सुमननी माल शोभे,
सेवती हमेशां शीत, निश्चय निडर छे ;
धरामां अपूर्व धाम धरनारी कान्हराना,
अमृत समा अखंड स्वादवाळा स्वर छे. ६६८

छन्द हरिगीत.

धरी षड्ज शुद्ध, रिषभ तुरतमां तीव्र तंते राखवो,
गान्धार मध्यम कोमळा, पछी शुद्ध पंचम दाखवो ;
धैवत. निषाद सु तीव्र स्वर छे, पूर्ण जाति पिछाणवी,
'गांधार' वादी न्यास, ग्रह. नि, कान्हरा उर आणवी. ६६९

श्री स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

रतिपति जेवुं रूप, कवनसुधाना कूप,
स्फाटिकनी माळा गळे भव्यता भरेल छे ;

---

१. कोइ रिषभ वर्ज्य करी षाडव जाति ठरावे छे, अने कोइ रिषभ अने कोइ धैवत त्याग करी ओडव जाति ठरावे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कहे नथुराम भला संगीतना भेद गणे,
श्रुति ग्राम मूर्छनाए मनडां हरेल छे.
एक करमांहि वीणा अन्य करमांहि कंज,
नवल निकुंजे उभो सुझोए स्मरेल छे;
ताल अने काळ तणा क्रमथी रसाळ श्री ए,
कलित स्वरेथीं रागी त्यागीने करेल छे. ६७०

सोरठा.

षड्ज शुद्ध सुखकार, रिषभ कोमल राखवो,
ग्रही तीव्र गान्धार, मध्यम तीव्र महान धर. ६७१
शुद्ध पंचम संभाळ, करीं धैवत स्वर कोमळो,
तीव्र निषाद निहाळ, श्री रागे सुख पामवा. ६७२
'पंचम' ग्रहँ स्वर धार, 'रिषभ' न्यास वादी वडो,
गुणों 'धैवत' 'गांधार,' संवादी स्वर समजजो. ६७३
समय सांझ सुखकार, छे जाति सम्पूर्ण शुभ,
ऋतु हेमन्त विचार, प्रगच्यो हर पश्चिम मुखे. ६७४
शुष्क सपल्लव थाय, प्रभाव एह प्रसिद्ध छे,
करतां श्रवण सदाय, बने दिवाना डाहेला. ६७५

मालश्री स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

आम्र तरुतुळे थाळा आसन लगावी बेठी,
सखीकरसाथे कर मोदथी मिलावीने;
कहे नथुराम अंगे रक्त परिधान प्हेर्यां,
ओपे पीत आंगी स्तन युगम सरसावीने.
व्हालाना वियोगनुं असह्य दुःख वेठे छतां,
हरे मन मंद मंद मुख मलकावीने;
छबीली उदास छतां, हृदये हुलास भरे,
मालश्री मधुर स्वर सुज्ञने सुणावीने. ६७६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सोरठा.

पड्ज शुद्ध, गान्धार, तीव्र शुद्ध पंचम प्रबल ;
धैवत तीव्र सुधार, निपाद तीव्र निहाळवो. ६७७
ग्रहँ स्वर ' पड्ज ' गणाय, ' पंचम ' वादी न्यास छे ;
संवादी [illegible] ाय, गुणीने मत ' गांधारॅ ' स्वर. ६७८
ओडव जाति अनुप, तृतिय प्रहर दिननो समय ;
सुंदर सुखद स्वरुप, मालश्रीनुं मानजो. ६७९

आशावरी स्वरुप. (ध्यान).

छंद मनहर.

बेठेली बगीचा मांहि वृक्षतळे व्हाल धारी,
श्यामल शरीर पर नित्य राखी नागिणी ;
कहे नथुराम श्वेत अंबरथी शोभे अंग,
सुमननो हार कंठे धरती सुहागिणी ;
भाव धरी भाल पर कर्पूरनो लेप कर्यो,
उभी कंजकुंजमां उमंगे अनुरागिणी ;
मधुर स्वरेथी मस्त मनने बनावनारी,
आशावरी एकज छे रसभरी रागिणी. ६८०

सोरठा.

शुद्ध षड्ज द्रढ धार, कोमल रिषभ कहे गुणी ;
ग्रही तीव्र गान्धार, मध्यम कोमल मानजे. ६८१
पंचम शुद्ध प्रकाशॉ, धैवत कोमल धर रुदे ;
तीव्र निपाद तपासॉ, आशावरी गाजे अचल. ६८२
वादी ' धैवत ' न्यास, संवादी छे ' रिषभ ' स्वर ;
' मध्यम ' ग्रह छे खास, स[illegible]ण जाति सुखद. ६८३

१. केटलाक रिषभनो मंद उच्चार करी षाडव जाति टरावे छे. अने कोइ तीव्र मध्यम ग्रहण करी संपूर्ण जाति ठरावे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रात समय सुखधाम, आखिल गुणी आराधता,
नेह धरे नथुराम, राग तणा रागी जनो. ६८४

धनाश्री स्वरुप [ध्यान].

छंद मनहर.

मित्रना वियोग वडे वेठती महान व्यथा,
जेना तनने हमेश, पंचशर तावे छे;
कहे नथुराम वहे नीरनो प्रवाह नेणे,
बोलश्रीने तळे वेसी वासर वितावे छे.
नांखती निःश्वासा उंडा एकली उद्यान मांहि,
दिलासनी आश उरे उदासी उपावे छे;
धन्यवाद योग्य धन्याश्रीना स्वर जन्य हर्ष,
यार अमने हजारवार याद आवे छे. ६८५

सोरठा.

षड्ज शुद्ध सचवाय, रिषभ गँधार स कोमला,
मध्यम तीव्र मनाय, कोमल पण आवे अवर. ६८६
शुद्ध पंचम भल भाळ, धैवत कोमल स्वर सदा,
निषाद[1] तीव्र निहाळ, रि ध आरोहे त्यागीने. ६८७
ग्रह स्वर छे 'गांधार,' 'पंचम' न्यास प्रमाणवो,
प्रबल वधारण प्यार, शुभ जाति सम्पूर्ण छे. ६८८
गुणी गाये गुण ग्राम, तृतीय प्रहर दिनने समय,
धन्याश्री मुदधाम, रससिन्धु छे रागिणी. ६८९

वसंत स्वरुप. [ध्यान]

छंद मनहर.

कुंज तणा पुंज पासे गुंजती मधुप सम,
श्याम वर्णवाळी चित्ते श्याम संग चाहे छे;

१. कोइ तीव्र अने कोमल बे निषाद ले छे.

कहे नथुराम उष्ण वस्त्र श्वेत रंगी ओढयुं,
आनँदना नदमां उमंगे अवगाहे छे.
श्रुति पर धार्या स्नेहे आम्रमोर मेरपींछ,
खचित खीलेलुं उर अमित उछाहे छे ;
रागिणी सुभागिणी विलासिनी वसंततणा,
सुंदर स्वरोने सुज्ञ सघळा सराहे छे. ६९०

सोरठा.

सदा षड्ज स्वर शुद्ध, कोमल रिषभ करो गुणी,
तीव्र गँधार विशुद्ध, मँध्यम तीव्र कोमल उभय. ६९१
पंचम शुद्ध परखाय, धैवत कोमल धारवो,
तीव्र निषाद सदाय, वसन्तमां विगते धरोः ६९२
ग्रह वादी गणी राख, 'मध्यम' 'पंचम' महद स्वर,
'षड्ज' न्यास द्रग दाख, 'धैवत' अनुवादी अनुप. ६९३
गुणीओ नित्ये गाय, ऋतु वसंतमां व्हालथी,
आनँद उर न समाय, वसन्त रूप विलोकतां. ६९४

म्हारवा स्वरुप. [ध्यान]

छंद–मनहर.

ओढी जरीदार साडी बेठी छे संकेत स्थळे,
आभूषण अंगपर धारी मनगमतां ;
कहे नथुराम रीझे व्हाली सखीने विलोकी,
चुंबननी चाहना करे रसीली रमतां.
जेनां अंगोअंगमांहि अनंगनो रंग जाम्यो,
क्षण पण धारण करी शके न समता ;

---

१. कोइ चढी धैवत पण ले छे.

२. कटलीक जगोए म्हारवाने मारु लखेल छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ममता भरेली म्हारवानो स्वर सांभळीने,
रसिक नरो रहे छे नेहे नित्य नमता. ६९५

सोरठा.

षड्ज शुद्ध सुखरूप, **रिषभ** स कोमल रसभर्यो;
गँधार तीव्र अनुप, **मध्यम** तीव्र मुदे ग्रहो. ६९६
धैवत कोमल खास, निरखो तीव्र **निषाद**ने;
'मध्यम' नौतम **न्यास**, अथवा 'धैवत' धारवो. ६९७
'मध्यम' तीव्र **सँवादी**, ग्रह स्वर 'रिषभ गणो सदा;
वर 'धैवत' छे **वादी**, मनहर गाओ म्हारवा. ६९८
'पंचम' तुर्त तजाय, सुखप्रद **षाडव** जाति छे,
गर्व धरी गुणी गाय, तृतीय प्रहर दिनने समय. ६९९

मेघ स्वरुप [ध्यान].

छंद मनहर.

शिर पर धार्युं छे सुशोभित विशाल छत्र,
व्हाले वीरमंडलमां बेठेलो विहारी छे ;
कहे नथुराम मुख श्याम अरविन्द सम,
काया पीत खुली समशेर कर धारी छे.
मस्तके मुकुट, रणधीर शूरवीर महा ;
ताणनारो तीर हर वाते हितकारी छे,
ठार्या प्रीते कर्णपुट मधुर उचारी स्वर,
रम्य मेघ रागे व्यथा उरनी विदारी छे. ७००

सवैया एकत्रीशा.

षड्ज शुद्ध ने **रिषभ** तीव्र छे तीव्र पछी गणवो **गान्धार**,
मध्यम कोमल, शुद्ध **पंचम** छे, **धैवत. निषाद** तीव्र विचार ;
अवर **निषाद** आवतो कोमल, ग्रह स्वर 'धैवत' नित्य धराय,
न्यास स्वर छे 'निषाद' उतरी, जाति **सम्पूरण** सुखदाय. ७०१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कोइ कहे छे पाडव जाति, 'पंचम' अथवा तजी ' गान्धार, '
अन्य मते ओडव पण के'छे 'मध्यम. पंचम' करी हद व्हार ;
वर्षामां हर वख्त गवाये, गावाथी वारिद वरसे,
मनहर गाइ मेघ गुणीजन, हृदय महीं हरदम हरसे. ७०२

टंक स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

व्हालाना विछोहथकी विलखती वामा अति,
पडी पुष्पसेजे उंडा निःश्वासाओ नांखे छे ;
कहे नथुराम नीकां वस्त्र नवरंग वडे,
सु कोमल अंग शाणी रोज ढांकी राखे छे.
चिन्तातुर चित्तें अवरेखी अन्य कन्यकाने,
शरमनी मारी स्पष्ट रीते कष्ट सांखे छे ;
उंचु जोइ उरे कर धारनारी टंकतणा,
स्वरनो सुभग स्वाद चाहे सुज्ञ चाखे छे. ७०२

सवैया एकत्रीशा.

षड्ज शुद्ध, रि ग तीव्र राखवा, मध्यम कोमल, पंचम शुद्ध,
उतरी निषाद रहे अवरोहे, आरोहे चढी रहे विशुद्ध ;
ग्रह न्यास 'ग' 'धैवत' छे वर्जित, आरोहे स्वर 'रिषभ' तजाय,
षाडव जाति टंकनी सुंदर, दिनने [1]द्वितीय प्रहर गुणी गाय. ७०३

मल्हार स्वरूप (ध्यान).

छंद मनहर.

गौर रंग अंगतणो, नयन कुरंग जेवां,
व्हालाना वियोगे दारा पूर्ण दुःखीआरी छे,
कहे नथुराम वेण कोकिला समान वदे,
वसन मलिनवाळी, आंखे अश्रु जारी छे.

---

१. केटलाक अर्ध रात्रिनो समय पण कहे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मित्रना मिलाप केरी माळा कर एकमांहि,
अन्य करे वीणा, तने क्षीणता स्वीकारी छे ;
श्वासोच्छ्वास लेती, कष्ट कोइने न के'ती एवी,
मधुरी मल्हार पंडितोने सदा प्यारी छे. ७०४

सवैया एकत्रीशा.

षड्ज शुद्ध ने रिषभ तीव्र छे, ते पछी तीव्र ग्रहो गान्धार,
मध्यम कोमल, शुद्ध पंचम ने धैवत निषाद तीव्र तयार ;
अवर निषाद आवतो कोमल, जाति पूर्ण 'स' ग्रह ने न्यास,
मनहरनार मल्हार गाय गुणी, वर्षामां धरी हृदय हुलास. ७०५

गुर्जरी स्वरूप. (ध्यान)

छंद मनहर.

अंगे अलंकार बार, सोळे शणगार सज्या,
सुशोभित स्तने पीत कंचुकी कसेली छे.
कहे नथुराम कटि सूक्ष्म केसरी समान,
कंठे मुक्ताहार, लाल साडीथी लसेली छे.
सुमननी सेजपर विलखती बेठी वामा,
विलासनी आश उरे अधिक वसेली छे.
धारी करताल, गाती गुर्जरी रसाल रूपे,
मति मुनिओनी भवफन्दमां फसेली छे, ७०६

सवैया एकत्रीशा.

षड्ज शुद्ध, रि ग कोमल राखो, मध्यम कोमल विना विवाद,
पंचम शुद्ध स कोमल धैवत, निश्चय गणवो तीव्र निषाद ;
ग्रह वादी स्वर 'पंचम' पेखो, लेखो 'रिषभ' सदा संवादी,
गण 'गांधार' अने 'धैवत' स्वर, उर आनंद धरी अनुवादी ७०७

१. कोइ निषाद वर्ज्य करी षाडव जाति पण कहे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मध्यम कोमल बदले कोई, मध्यम तीव्र ग्रहीने गाय,
प्रात समय गावानो सुंदर, कोइ मते मध्यान्ह गणाय.
सम्पूरण जाति सुखदायक, लायक जन चित्तमां लेता,
गाइ गुर्जरी गायक सहुने, दान हर्षनुं नित देता. ७०७

भुपाली स्वरुप (ध्यान).

छंद मनहर.

आभूषण श्वेत अने अंबर छे श्वेत रंग,
आस्य इन्दु जेवुं, आखुं शरीर सफेद छे.
कहे नथुराम करें धारी छे कुसुममाल,
निरखती नाहराह अंतर अखेद छे.
कीधो लेप माधवीनो कलित कपालपर,
कामतणी जेलमांहि जेनुं मन केद छे.
भूरि मित्र मिलननी भाविक भुपालीतणो,
स्वर सुणवानी सदा उरमां उमेद छे. ७०८

सवैया एकत्रीशा.

षड्ज शुद्ध ने रिषभ तीव्र छे, तीव्र पछी **गान्धार** गणाय;
पंचम शुद्ध तीव्र धैवत स्वर, भावथी तीव्र **निषाद** भणाय;
षाडव जाति, समय रात्रिनो, ग्रहवादी स्वर "पंचम" थाय;
"रिध" संवादी अनुवादी स्वर, भुपालीसहु गुणीओ गाय७०९.

देशकार स्वरुप (ध्यान).

छंद मनहर.

स्वर्ण वर्ण अंग, कंठे मनोहर मुक्ताहार,
इन्दुसम आस्य वर आभाने वरेलुं छे;

१. कोइ मध्यम ग्रहण करी आने संपूर्ण जाति माने छे. परंतु ए मत अप्रसिद्ध छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कहे नथुराम सज्या सोळे शणगार तन,
हसी मंद मंद मन सुज्ञनुं हरेलुं छे.
विध विध रंगवाळां प्हेर्यां परिधान तंग,
उरमां उमंग, भाले चन्दन भरेलुं छे.
दुःख हरनारी रम्य देशकार रागिणीए,
कोविदना मंडलने मुदित करेलुं छे. ७१०

सवैया एकत्रीशा.

शुद्ध षड्जे स्वर रिषभ तीव्र छे तीव्र पछी गान्धार विचार,
पंचम शुद्ध, तीव्र धैवत स्वर, ग्रह स्वर 'षड्ज न्यास' गांधार ;
समयै पाछली रात्रितणो प्रिय, ओडव जाति अवरेखो,
स्वर समजी रसप्रद रुपाळी, देशकार द्रगथी देखो. ७११

दिननी पुरिया.

छंद हरिगीत.

छे षड्ज शुद्ध सदाय, पछीथी रिषभ कोमल राजतो,
गान्धार मध्यम तीव्र छे स्वर शुद्ध पंचम छाजतो ;
उतोल धैवत ए पछी, सु निषाद तीव्र सदा भणो,
संवादी 'धैवत' वादी 'रिषभ गंधार' अनुवादी गणो ७१२
सम्पूर्ण जाति, समय सन्ध्या आदिनो गण रागथी,
षाडव जणावे कोइ जाति, स्वर 'रिषभ' ना त्यागथी ;
ओडव कहे छे कोइ 'पंचम' 'रिषभ' त्यागी प्रेमथी,
पुरिया दिवसनी गाय गुणीओ नित्य नवला नेमथी. ७१३

रातनी पूरिया.

शुद्ध षड्ज, कोमल रिषभ छे, स्वर तीव्र ग. म गणवा पछी,
छे शुद्ध पंचम, तीव्र स्वर ध. नि भावथी भणवा पछी ;

१. कोइ पहेली रात्रिनो समय पण कहे छे.
२. कोइ कोमल मध्यम पण ले छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सम्पूर्ण जाति, समय सन्ध्या, वादी. ग्रह 'धैवत' धरो,
नित न्यास 'षड्ज' निभावीने, गुणी रातनी पुरिया करो. ७१४

सोहु.

छे षड्ज शुद्ध, सुरिषभ तीव्र, गँधार मध्यम कोमला,
स्वर शुद्ध पञ्चम कोमला धैवत निषाद स्वरो भला ;
संवादी स्वर 'पंचम' प्रबल, अनुवादी नित्य 'निषाद' छे ;
सोहु महीं स्वर 'षड्ज' वादी, वात रहित विवाद छे. ७१५
सोहु–सुहा छे एक, केवल भिन्न नाम प्रकार छे,
गावो दिवसना दश बजे, सम्पूर्ण जाति सार छे;
कोमल गमनि करमन्द धैवत, ठाठ काफीनो ठरे,
शरुआत मध्यीं वा रिथी सुराग, प्रकाश गान्धारे करे. ७१६

पञ्चम.

छे षड्ज पंचम शुद्ध स्वर, शुभ म. रि. धने कोमल कह्या,
गान्धार तेम निषाद तीव्र, सुपंचमे राजी रह्या ;
वादी 'प' संवादी 'षडज' 'गांधार' अनुवादी गणो,
छे मळसकानो समय, जाति पूर्ण भावेथी भणो. ७१७

सोरठ.

छे शुद्ध पंचम षड्ज स्वर, भल रि. ग. ध तीव्र सुभाळवा ;
म. नि कोमळा करीने तुरत, आरोहमां रिध टाळवा ;
ग्रह 'षड्ज' वासु 'निषाद' स्वर, वळी 'रिषभ' वादी न्यास छे,
सम्पूर्ण सोरठ समय पहेली रात्रिनो सुखरास छे. ७१८

देश.

छे अवर स्वर सोरठ समा, जाति समय सम जाणवां ;
ग्रह न्यास वादी स्वर सकल सोरठ समा उर आणवा ;

१. कोइ आ बन्ने स्वरोने चढ्या पण कहे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सोरठ महीं एकज रहे उतरी 'निषाद' सुवेशमां,
उतरी चढेल 'निषाद' आवे, उभय दाडी देशमां ७१९

विलावल.

मध्यम सिवाय तमाम स्वर नित तीव्रता धारी रहे,
'गान्धार' ग्रह-वादी बने, सु 'निषाद' न्यासपणुं ग्रहे ;
आरोहमां तजवो 'रिषभ' गावो दिवसना दृश वजे,
सम्पूर्ण गुणी गाइ विलावल शान्तिनां साधन सजे. ७२०

मारु.

छे शुद्ध पञ्चम षड्ज कोमल, रिषभ धैवत धारवा,
गान्धार मध्यम ने निषाद सदाय तीव्र विचारवा ;
'गांधार' ग्रह ने न्यास 'धैवत' नित्य स्वर नथुराम छे,
सम्पूर्ण जाति शोभती, मनहरण मारु नाम छे. ७२१

वळी जाति षाडव सभ्य कहे पञ्चम तजीने प्रेमथी,
धारी रिषभ कोमल अवर स्वरनी तीव्रता कोडे कथी ;
द्रढतार्थी ग्रह 'धैवत' धरे, अवलंबी ऋषिमतअवरने,
गुणी गाइ मारु प्रसन्न करता प्रेमथी जन प्रवरने ७२२

वडहंस.

वडहंसमां स. प. शुद्ध धरीने तीव्र रि. ग. ध. नि राखीए,
मध्यम सकोमल, 'षड्ज'[1] ग्रह वा दिव्य 'पंचम' दाखीए ;
स्वर न्यास 'सप्तम', वादी 'पंचम' 'द्वितीय'[3] संवादी गणो,
संपूर्ण जाति, समय दिनना तृतीय प्रहरतणो भणो. ७२३

जैतश्री.

कोमल रिषभ विण सर्व स्वरने तीव्र गणवा तंतथी,
ग्रह 'षड्ज' वा 'गांधार', वादी 'षड्ज' खोळो खंतथी ;

१. निषाद. २. पंचम. ३. रिषभ.

संवादी 'पंचम' न्यासए, अनुवादी 'ध. नि. द्वयंग्रहो ;
दिन तृतीय प्रहरतणो समय, संपूर्ण जैतश्री कहो. ७२४

सुघराइ.

स्वर षड्ज पंचम शुद्ध धरीने, रिषभ धैवत तीव्र कर,
गान्धार मध्यम ने निषाद सकोमला भावेथी भर :
ग्रह 'षड्ज' वा 'गांधार' 'धैवत' वादी 'पंचम' न्यास छे,
सम्पूर्ण सुघराई दिवसने तृतीय प्रहर निवास छे. ७२५

गन्धारी.

धरी षड्ज पंचम शुद्ध स्वर, तेतेथी तीव्र रिषभ करो,
ग. म. ध. नि सकोमल, मग्रह, न्यास रिषभ भूरि भावे भरो ;
दिन प्रथम याम तणो समय सहुने जणाय सोहामणो ;
नथुराम नेह धरी गुणी, सम्पूर्ण गन्धारी गणो. ७२६

भीम पलासी.

भयहरण भीम पलासीमां, स्वर सर्व कोमलता धरे,
गुणी कोइ गातां गान नित, रागेथी तीव्र रिषभ करे,
ग्रह 'रिषभ' 'पंचम, न्यास, 'मध्यम' वादी स्वर वखणाय छे,
सम्पूर्ण जाति, सहु गुणी दिन तृतीय यामे गाय छे. ७२७

कामोदी.

कामोदीमां स. प. शुद्ध स्वर, नित तीव्र रि. ग. ध धराय छे,
म. नि कोमळा करवा सदा, आरोहमां नि तजाय छे ;
ग्रह न्यास मध्यम षड्ज क्रम सह पूर्ण जाति प्रसिद्ध छे,
दिन द्वितीय यामे गाय जे संगीत कळामां सिद्ध छे. ७२८

गौरा.

स. प शुद्ध, कोमल रिषभ छे गणी तीव्र ग. म. ध. नि राखजो,
स्वर वादी 'पंचम' 'षड्ज' संवादी द्रगेथी दाखजो ;

१. केटलाक मध्यम अने निषादनो त्याग करी ओडव जाति गणे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ग्रह धारी 'धैवत' धैर्यथी, सम्पूर्ण जाति सदाय छे,
नथुराम सन्ध्या समयमां गौरा गुणीजन' गाय छे. ७२९

विभास.

म नि त्याग करी, स प शुद्ध धरी स्वर तीव्र रि. ग. ध सुधारतो,
ग्रह. वादी स्वर 'गान्धार,' 'पंचम' न्यास खास प्रसारतो;
उतरी 'रिषभ' कोइ लगावे, जाति ओडव जे धरे,
बडभाग राग विभास, सूर्योदय पहेलां सुख करे. ७३०

पूरवी.

सम्पूर्ण जाति, शुद्ध स. प. कोमल रिषभ धैवत कह्या,
सु म तीव्र कोमल, तीव्र ग नि, रि. ध. वादी संवादी ग्रह्या;
स्वर ग्रह. ग. अथवा 'तीव्र मध्यम,' न्यास 'पंचम' नेमथी,
नित सांज समये गाय गुणीजन प्रबल पूरवी प्रेमथी. ७३१

त्रिवेणी.

स. प. शुद्ध, कोमल रिषभ छे, स्वर तीव्र ग.म.ध.नि धारीए,
छे वादी 'पंचम' शोभतो, संवादी 'ग. नि' संभारीए;
अनुवादी 'धैवत,' स्वर सुखद, शुभ समय छे सन्ध्यातणो,
संपूर्ण जाति तणी त्रिवेणी, भावथी सहु को भणो. ७३२

देवगिरि.

स. प. शुद्ध, मध्यम कोमळो, ले तीव्र रि.ग.ध.नि तंतथी,
संपूर्ण जाति शोभती, धर खचित उरमां खंतथी;
दिन तृतीय प्रहरतणो समय, अति भव्य उर आनंद भरे,
नित दिव्य रागिणी देवगिरि सुणनारनां संकट हरे. ७३३

जैजैवंती.

१. कोइ मध्यम निषादनें ग्रहण करी संपूर्ण जाति गणे छे. पण ए मत प्रसिद्ध नथी.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सम्पूर्ण जाति शुद्ध स प, रि ध तीव्र करीने राखजो,
ग. नि तीव्र कोमल उभय छे, मध्यम स कोमल दाखजो ;
छे समय पाछली रातनो, खूबी वधारे खंतीने,
नथुराम गाये नेहथी, गुणी जबर जैजैवंतीने. ७३४

इमन.

सम्पूर्ण जाति सुखद छे, स्वर अखिल तीव्रज आवता,
कोइक मध्यम तीव्र कोमल, ललित जाणी लगावता ;
ग्रह स्वर स वा ग, ग. वादी. रि.म.ध.प अहरनिश अनुवादी छे,
निशि आदि प्रहर गवाय इमन, 'निषाद, ज्यां संवादी छे. ७३५

हमीर.

सम्पूर्ण जाति. शुद्ध स प. रि.ग.म.ध.नि तीव्र स्वरो धरे,
कोइक मध्यम कोमळो लइ, गान गुणी कोडे करे ;
संवादी. ग्रह 'गांधार,' वादी. न्यास. 'धैवत' धारीए,
अनुवादी. रि. प. निशि आदिमां हर्षे हमीर उचारीए. ७३६

गौड.

मध्यम सिवाय तमाम स्वरने, तीव्र कहे गुणी तंतथी,
कोइ ग्रही गन्धार कोमल, गान करता खंतथी ;
ग्रह 'षड्ज' वा 'पंचम' गणो, संवादी 'षड्ज' सदाय छे,
स्वर वादी 'पंचम' पूर्ण जाति, गौड गुणीओ गाय छे, ७३७

बिहागडा.

स.प. शुद्ध, रिग.धनि. तीव्र, मध्यम तीव्र कोमल कर सुखे,
छे वादी. प. ग. संवादी शुभ, अनुवादी. नि स्वर वद मुखे ;
सम्पूर्ण जाति शोभती, निशि मध्य गाय गुणी वडा,
नथुराम नेह वधारतो, बलवान राग बिहागडा. ७३८

सोहिणी.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.   Jin Gun Aaradhak Trust

शुभ जाति षाडव, त्यागी पंचम, षड्ज शुद्ध स्वर राखजे,
रि.ध कोमळा, ग. नि तीव्र, मध्यम तीव्र कोमल दाखजे;
आरोहमां तज रिषभ स्वर, गान्धार मुख्य गणाय छे
कोइक धैवत तीव्र राखी, सद्य सोहिणी गाय छे. ७३९

सारंग.

गान्धार धैवत त्यागी शुद्ध स. प. रिषभ तीव्र रखाय छे,
कोमल म, नित्य निषाद स्वर, शुभ तीव्र कोमल थाय छे;
ग्रह 'षड्ज' अथवा 'रिषभ' न्यास प वा निषाद अभंग छे
स्वर वादी 'मध्यम' जाति ओडव, सुखद ए सारंग छे. ७४०

शंकराभरण.

स.प. शुद्ध धरी रि.ग.म.ध. नि स्वरने तीव्रता नित आपजे
आरोहमां रि ध त्यागीने, सम्पूर्ण जाति स्थापजे;
अवरोहमांहि रि स्वल्प, मुख्य ग. मध्य रात्रि भांखजे,
शुभ शंकराभरणने गातां, न्यास 'पंचम' राखजे. ७४१

कल्याण.

कल्याणमां स. प. शुद्ध धरी, रि.ग.म.ध. नि तीव्र निहाळजे,
ग्रह वादी स्वर 'गांधार'ने, नथुराम भावथी भाळजे;
धरी राग पहेली रात्रिए, गुणवान गान उचारजे,
सम्पूर्ण जाति सद्य समजी, श्री हरि संभारजे. ७४२

गन्धार.

स.प. शुद्ध तीव्र रिषभ ल्हो, ग.म.ध. नि सकोमल नित धरो;
ग्रह 'षड्ज' वा 'मध्यम' ग न्यास, प. वादी कोड धरी करो;
गाओ दिवसना दश बजे, सम्पूर्ण जाति समजजो,
गान्धारथी गुण गाइ प्रभुना, स्वर्गनां साधन सजो. ७४३

१. धैवत सहकारी स्वर अने कोमल गान्धार ग्रहण करी कोइ संपूर्ण जाति कहे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शहाना.

शुभ शुद्ध स.प.रि. ध. तीव्र करीं, कोमल ग. म. नि स्वर संग्रहो,
'मध्यम' प्रधान ग्रही कहो ग्रह, वादी 'पंचम' ने कहो;
सम्पूर्ण जाति, समय छे निशि अर्ध केरो अभिनवो,
स्नेहे शहाना गाइ गुणीं, राधा रमणने रीझवो. ७४४

परज.

स.प. शुद्ध रि. ध. कोमल कहो, ग. नि. तीव्र भावेथी भणो,
मध्यम सकोमल तीव्र युग, 'गांधार ग्रह वादी गणो;
छे न्यास 'धैवत' स्वर सदा, सम्पूर्ण जाति जाणजो,
पाछली राते परज गाई, गुणी महद सुख माणजो. ७४५

जोगिया.

सम्पूर्ण जाति, शुद्ध स. प. स्वर रि. म. ध. कोमल राखवा;
ग. नि तीव्र धरीने तंतथी द्रढ दिव्य नजरे दाखवा;
चडतां प्रहर दिन प्रातमां, आनंदथी आलाप कर,
जश गाइ हरिना जोगीयामां तुरत तनना ताप हर. ७४६

जोगीया आशावरी.

छे षड्ज पंचम शुद्ध, कोमल रि. ध. म. रागमां राखजो;
ग. नि तीव्र स्वर धरीने गुणी अंतर मही अभिलाखजो;
सम्पूर्ण जाति सद्य समजी, कोडथी गायन करो;
नित प्रात समये प्रीतथी, प्रभु गुण गणी किल्विष हरो. ७४७

खट.

सम्पूर्ण जाति, शुद्ध स.प. रि. ग. म. ध. नि कोमल नित रहे,
तीव्र ग लगावे सहज कोई तीव्र धैवत पण ग्रहे;
ग्रह पेख 'पंचम' न्यास 'मध्यम', सुभग समय सवारनो;
खटपट तजो खट रागथी, जश गाइ जग करनारनो. ७४८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देव गान्धार.

छे षड्ज पंचम शुद्ध स्वर, कोमल रि. म. ध उर आणजो;
गान्धार स्वर छे तीव्र तेम, निषाद तीव्र प्रमाणजो;
सम्पूर्ण जाति शोभती, मनहर मळसकानो समय;
दुःखहरण देवगँधार गाई, विश्वमां पामो विजय. ७४९

सुरपरदा.[1]

धरी षड्ज पंचम शुद्ध स्वर, मध्यम सकोमल मन हरे,
रि. ग. ध. नि. रखाये तीव्र, कोइ निषाद कोमल पण धरे;
गावो दिवसना दश बजे सम्पूर्ण जाति शोभती;
नित नेहथी नथुराम सुरपरदा सुणी मति लोभती. ७५०

अल्हैया बिलावल.

मध्यम सिवाय तमाम स्वर नित तीव्रता धारी रहे,
ग्रह वादीनी पदवी प्रवर 'गांधार' गवैयी ग्रहे;
सम्पूर्ण जाति, समय दिनना दश बज्यानो दाखजो;
अॅल्हैया बिलावल गाइ गुणी, हृदये हरिने राखजो. ७५१

सिन्ध भैरवी.

छे षड्ज पंचम शुद्ध गधनि कोमळा करवा सदा;
स्वर तीव्र कोमल रिषभ युग, अळगी करे छे आपदा;
तेवोज मध्यम तीव्र कोमल, प्रात समय प्रमाणजो;
सम्पूर्ण जाति सिन्ध भैरवी अंतरे नित आणजो. ७५२

गौड मल्हार.

सम्पूर्ण जाति, शुद्ध सप, स्वर तीव्र रि. ग. ध. विचारवा;
म. नि तीव्र कोमल उभय उभय सदाय धृतिथी धारवा;
'गांधार' ग्रह, 'कोमल निषाद' सु न्यास चोपेधार चित्त,
वर्षाऋतुमां स्मर विभुने, गाइ गौडमॅल्हार नित. ७५३

१. आ रागनो ठाठ बिलावलनो छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गौड सारंग.

सम्पूर्ण जाति, शुद्ध स. प. स्वर रि. ग. ध. तीव्र तयार कर,
मध्यम सकोमल तीव्र युग, एमज निषाद उच्चार कर ;
निरखजे 'तीव्र निषाद', ग्रह, 'गांधार' न्यास स्थळे धरी ;
मध्याह्न समये गौड सारँग गाइ स्मर हेते हरि. ७५४

मदमाद सारंग,

छे वर्ज्य धैवत, जाति षाडव, शुद्ध सप स्वर राखवा,
गम कोमळा, स्वर रिषभ तीव्र, नि तीव्र कोमळ दाखवा;
छे ग्रह प वादी न्यास 'मध्यम' शुभ समय मध्याह्ननो,
मदमाद सारँग गाइ हरि भज, मद तजीने माननो. ७५५

बिरवा.

स. प. शुद्ध, म ध कोमळ अने स्वर रिषभ तीव्र प्रमाणजो,
ग नि तीव्र कोमल उभय उभय सु पूर्ण जाति जाणजो ;
संवादी. नि, अनुवादी. रि स्वर ग्रह. म. वादी ग सार छे,
दिन तृतीय प्रहर गवाय तो बिरवा तणी बलीहार छे. ७५६

पीलु.

सम्पूर्ण जाति समय दिनना, तृतीय प्रहर तणो भणो,
स. प शुद्ध, म. ध कोमल करी, ग नि तीव्र कोमल नित गणो;
रहीं तीव्र उतरी रिषभ राजी, सप्त स्वर ओपे अति ;
धरी प्रेम पीलु गाइ रट, राधापति राखी रति. ७५७

जील्लो.

सम्पूर्ण जाति, शुद्ध स.प. म.नि कोमळा स्वर आणजे,
गान्धार कोमल तीव्र युग, रि.ध तीव्र जुगते जाणजे ;
शुभ समय दिनना तृतीय प्रहरथी मध्य रात्रि लगी कह्यो,
जगनाथने स्मर गाइ जील्लो, स्वल्प दिन बाकी रह्यो. ७५८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

काफी.

सम्पूर्ण जाति, ग.म.नि कोमळ, तीव्र रि.ध.स.प. शुद्ध धर,
छे नि. ग्रह, न्यास.प. अने अंश. ग. व्हाल धारी विचार कर ;
दिन तृतीय प्रहरथी मध्य रात्रि, सर्व वख्त वसंतमां,
प्रभु पास माफी माग काफी गाइ, उगरीश अंतमां. ७५९

झंझोटी.

स्वर शुद्ध स.प. सम्पूर्ण जाति. रि.ग.धै तीव्र तमाम छे,
कोमल नि कोमल तीव्र मध्यम नेहथी नथुराम छे ;
दिन तृतीय प्रहरथी मध्य रात्रि लगी समय लेखाय छे,
तजी खोटी जक झंझोटी गा, हरि स्मरण सुखद सदाय छे. ७६०

पहाडी झंझोटी.

स.प. शुद्ध तीव्र रि.ग.ध.म कोमल जाति पाडव जाणजो,
स्वर वादी 'मध्यम', न्यास 'धैवत' अचल उरमां आणजो ;
दिन तृतीय प्रहर तणो समय, भावे कह्यो मन भावता,
पहाडी झंझोटी गाइ भज हरि, पाप ताप शमावता. ७६१

बीसवाडा.

वर्षामहीं हर वख्त गा, सम्पूर्ण जाति सिद्ध करी,
स. प. शुद्ध, मध्यम कोमळो, रि ध तीव्र भावेथी भरी ;
गनि तीव्र कोमल उभय उभय अपार मुदथी आणजे,
बलवन्धु भज गा बीसवाडा जगत स्वप्नुं जाणजे. ७६२

मालीगोरा.

दिन तृतीय प्रहर पछी समय, सम्पूर्ण जाति सुख करे,
स. प शुद्ध, रि ध कोमल अने स्वर तीव्र गमनि चित्त हरे ;
ग्रह 'रिषभ' न्यास. स, वादी 'पंचम' डाट रिथी धैवत लगी,
वनमाली भज गा मालीगोरा, संतति नहि गण सगी. ७६३

१. कोइ तीव्र अने कोमल बे धैवत लगावे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मुलतानी.

स. प शुद्ध कोमल रि ग ध छे, म. नि. तीव्र मोद धरी करो,
स्वर ग्रह. स वा प, प. वादी, 'मध्यम' तीव्र संवादी धरो ;
अनुवादी 'तीव्र, नि' समय दिनना तृतीय प्रहरतणो सजो,
सम्पूर्ण मुलतानी सरव गुणी, गाइ मनमोहन भजो. ७६४

छायानाट.

सम्पूर्ण जाति, शुद्ध स.प, स्वर तीव्र रि ग ध प्रकाश छे,
मनि तीव्र कोमल उभय उभय, ध मुख्य ग्रह रि प न्यास छे;
आरोहमां ग नि बाद, रसंप्रद रात्रि समये रागथी,
छळ छोडी छायानाट गाई ईश भज अनुरागथी. ७६५

माढ.

सम्पूर्ण जाति निशि समय शुद्ध स.प.म कोमल जाणजे,
नि तीव्र कोमल रि.ग.ध तीव्र स. न्यास ग्रह उर आणजे ;
स्वर वादी 'धैवत' द्रढ सदा, वा महद 'मध्यम' स्वर समजं,
गुणी गाढ पाप प्रजाळवाने माढ गाइ मुरारि भज. ७६६

जैत.

दिन तृतीय प्रहरतणो समय सम्पूर्ण जाति सुख करे,
स.प. शुद्ध रि.ध कोमल अने ग.नि तीव्र सहु हानि हरे ;
स्वर तीव्र कोमल उभय मध्यम. ग्रह. नि. न्यास ग नित्य छे,
गुणी गाइ जैत जरुर जो आ अखिल विश्व अनित्य छे. ७६७

नटकन्दर.

सम्पूर्ण जाति, समय रात्रि, शुद्ध स. प. सुखकरण छे,
वळी तीव्र रि.ग.ध.नि. तीव्र कोमल युग म आनंदभरण छे ;
'गांधार' ग्रहने न्यास. 'मध्यम' नेहभर नथुराम छे,
हठ छोडी नटकन्दर गुणी गा, ईशयश अभिराम छे. ७६८

१. कोइ निषादनो त्याग करी षाडव जाति कहे छे.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धौलश्री.

दिन तृतीय प्रहरतणो समय, सम्पूर्ण जाति जाण तुं,
स.प शुद्ध कोमल ग.म.नि स्वर. रि.ध तीव्र उरमां आण तुं ;
स्वर वादी 'पंचम' पेखजे, तंते न मुनिमत तोड तुं,
धौलश्री गाइ अमोल श्रीपति स्मरणमां जीव जोड तुं. ७६९

गारा.

सम्पूर्ण जाति, समय दिननो शुद्ध स. प संग्रह करो,
स्वर तीव्र रि.ग.ध.म कोमळो, हर वख्त धृति धारी धरो ;
नित तीव्र कोमल उभय नि स्वर, अखिल विश्वे ओपजो,
गुणी गाइ गारा प्रभु प्यारा अंतरे आरोपजो. ७७०

श्याम.

मध्यम स कोमल मात्र धर स्वर अवर तीव्र तमाम छे,
सम्पूर्ण जाति शोभती, गान्धार मुख्य मुदाम छे ;
सुखकरण रात्रिनो समय, नेहे कह्यो नथुराम छे,
गुण श्यामना गा हामथी तो राग सार्थक श्याम छे. ७७१.

छाया.

छे षड्ज. पंचम शुद्ध, रि. ग. ध. नि तीव्र रागथी राखवा,
मध्यम स कोमल तीव्र युग, स्वर सप्त नेहे नाखवा ;
सम्पूर्ण जाति, समय रात्रि, व्हाल धारी विचारजे,
हरिगुण न गाया तो जगतने धूप छाया धारजे. ७७२

तिलक कामोद.

सम्पूर्ण जाति, समय रात्रि, शुद्ध स. प. कोमल म धर,
गुणी तीव्र रि.ग.ध तमाम राखी नि तीव्र कोमल त्वरित कर ;
वर वादी 'पंचम, धारी न्यास 'निषाद' स्वरने नांखजे,
गातां तिलक कामोद तुं, रसमूर्ति हृदये राखजे. ७७३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विहंग.

सम्पूर्ण जाति समय रात्रि, उरनीं टाळे आपदा,
स्वर सर्व राख विहाग जेवा, स्नेह धारीने सदा ;
'गांधार' वादी, न्यास 'पंचम' ग्रह. ध स्वरना संगथी,
अव अंगना करवा अलग वलबन्धु स्मर विहंगथी. ७७४

कान्हरा दरबारी.

छे शुद्ध स. प. सम्पूर्ण जाति, रिषभ तीव्र रहेल छे,
ग.म.ध नि स्वरने कोडथी कोमल सदाय कहेल छे ;
ग्रहीं वादी. न्यास. ग, ग्रहस. गण, अहनिश तजी अहमेवने,
गुणीं कान्हरा दरबारी गाई, स्नेहथी हरि सेवने. ७७५

अडाणो कान्हरो.

स.प. शुद्ध, ग. म. कोमल अने, रि. ध तीव्र तुर्तज आणजो,
वळीं तीव्र कोमल युग निषाद, सु पूर्ण जाति प्रमाणजो ;
छे ग्रह. म. न्यास. ग, वादी 'पंचम' रात्रि समय सुखें सजो,
उत्तम अडाणो कान्हरो गाई गुणी गोविंद भजो. ७७६

बागेसरी.

नौतम निशिनो समय छे, सम्पूर्ण जाति सुख भरे,
स. प. शुद्ध, ग म कोमल अने रि ध तीव्र सहु हानि हरे;
कोमल युगल नि, क्यांइ तीव्र ग, ग्रह गॅ, न्यास. नि. नेहभर,
वादी. म स्वर बागेसरीथी श्रीहरिनुं स्मरण कर. ७७७

कान्हरा कोशी.

रसभरण रात्रिनो समय, स्वर तुर्त पंचम त्यागजो,
रि ध तीव्र, शुद्ध स. गमनि कोमल ग्रहीं उरे अनुरागजो ;
सुखकरण षाडव जाति छे, गुणीं व्हाल धारी विचारजो,
कान्हरा कोशी गाइ प्रीतिथी, ध्यान हरिनुं धारजो. ७७८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कान्हरानायकी.

रात्रि समय सम्पूर्ण जाति, शुद्ध स. प. स्नेहेथी भर,
रि.ध तीव्र, ग.म कोमल, स कोमल तीव्र युग नि नित्य धर;
वादी. ग, न्यास प ग्रह. म स्वर ग्रहीं सद्य हरिनुं स्मरण कर,
कान्हरा नायकी गाइ गायक, पापसायकथी उगर. ७७९

कान्हरा गारा.

ग.नि तीव्र कोमल उभय उभय, सदाय स. पं. स्वर शुद्ध ले,
रि.ध तीव्र कर कोमल म कोडे, वादी तीव्र गँधार' दे;
कोमल नि, ग्रह. न्यास. 'म,' समय निशि पूर्ण जाति प्रमाणजे,
कान्हरा गारा गाइ गुणी, अविनाशीने उर आणजे. ७८०

कलिंगडा.

धरीं शुद्ध स. प, करीं रि.म. ध कोमल तीव्र गण ग. नि गर्वथी,
'गांधार' वादी, न्यास 'मध्यम' षड्ज ' ग्रह शुभ सर्वथी;
सम्पूर्ण जाति, निशा अरध पछी वखत कहे विबुधो वडा,
कर कृष्णकीर्तन कोडथी, गुणीं गाइ कलित कलिंगडा. ७८१

परज कलिंगडा.

छे समय कलित कलिंगडा सम, जाति एमज जाण तुं,
स. प. शुद्ध कोमल रि. ध करीने तीव्र ग. नि उर आण तुं;
मध्यम स कोमल तीव्र युग चतुराइ राखी चित्त धर,
धरीं प्रेम परज कलिंगडा गाइ हरिगुण गान कर. ७८२

जोग.

छे अर्ध निशि पछीनो समय, सम्पूर्ण जाति सुखकरण,
स. प. शुद्ध. कोमल रि.म.ध स्वर, ग.नि तीव्र धर आनँदभरण;
गणी वैरीं अळगा राखजे, सहु विषय आदिक रोग तुं,
गोविंदना गुण गानमांहि, जगात्र जाहिर जोग तुं. ७८३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जिल्फ.

निशि तृतीय प्रहर पछी समय, सम्पूर्ण जाति शुद्ध स. प,
कोमल रि.म ध स्वर, तीव्र ग.निनो खंत धारी राख खप ;
नथुराम न्यास. स. ग्रह. ध स्वरने ल्हाव ले महीं लावीने,
गुणी अल्प आयु जाणी भज हरि, जिल्फ राग जमावीने. ७८४

गायक.

दोहा.

मार्ग तथा देशी तणुं, होय जेहने ज्ञान ;
गुणी लोको गान्धर्वनुं, एने दे अभिधान. ७८५
मात्र मार्ग गावा महीं, प्रवीण होय जे पूर्ण ;
स्वरादिनी संज्ञा लहे, तेवा गायक तूर्ण. ७८६
केवळ देशी रागने, जे जन समजी गाय ;
मुनीश्वरोना मतमुजब, ते पदादि कहेवाय. ७८७

रोळावृत्त.

गायकमां गांधर्व, हमेशां उत्तम गणवो,
स्वरादि जोई सदा, भावथी मध्यम भणवो ;
पदादिनी छे पंक्ति, अधम जोतां सहु ठामे,
जे जाणे यतिगीत, एज गायक पद पामे. ७८८
श्रुति जाति स्वरतणुं, ज्ञान अति श्रेष्ठ ग्रहीने,
जातिगान जाणेल होय, गुरु पास रहीने ;
वळि रसज्ञ वखणाय, तालने लयमां पूरो,
भाषाअंग भणेल, विविध आलापे शूरो. ७८९
प्रबंध गाने पूर्ण, होय परिपक्व बनेलो ;
जाहिर स्वर अति मधुर, जबर श्रमने जीतेलो,
कंपआदि दोषोथी, राहित बनी हमेश राजे ;
सावधान जे सतत, बनी अभ्यासी विराजे. ७९०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तरलपणे त्रिस्थान गमकने गाइ बतावे,
शुद्धच्छायालये, सुज्ञ बनीं सदा सुहावे;
उत्तम गायक तणा, गुणो नथुराम गणाव्या,
गुण विशेष विस्तार भयें अहीं नथी बताव्या. ७९१

दोहा.

उक्त गुणोमांना अमुक, गुण जेमां न जणाय,
मध्यम दोष विहीन ए, गायक नित्य गणाय. ७९२
उपरना गुण अखिलथी, रहित बनी जे गाय;
ए गायक आ अवनिमां, सदा अधम कहेवाय. ७९३
खाद्दल कफ धातुक खरे, पित्त धातु नाराट,
वातधातु बोबक गणो, विचारी गायनवाट. ७९४
वात पित्त कफ मिश्रणे, भांखो मिश्रक भेद;
लक्षण तेनां लेखीए, खोई उरनो खेद. ७९५

रोळावृत.

खाद्दलनो ध्वनि मधुर, गणो ए मध्यम गायक,
एने दइ ओदिल्ल, नाम लेखे मुनि लायक;
सूक्ष्म नादथी गाय, सुज्ञ जे त्रणे स्थानमां,
निश्चय ए नाराट, गणाये कुशळ गानमां. ७९६
राग होय अतिरुक्ष, कठिन उंचाध्वनिवाळो,
बोबक संज्ञावान, भलो ए गायक भाळो;
जेमां ए त्रण तणा, गुणो मिश्रित बनीरे' छे,
ए गायकने गान, कोविदो मिश्रक के' छे. ७९७

अन्यमतानुसार गायक प्रकार.

दोहा.

आहिर गायक जगतमां, त्रय जातिना जाण;
उत्तम मध्यम ने अधम, धारी प्रेम पिछाण. ७९८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उत्तम गायक.

दोहा.

वाद्य अने गायक तणी, मदद विना जे गाय ;
उत्तम गायक एह छे, विश्व विषें वखणाय. ७९९

मध्यम.

दोहा.

मदद लई वर वाद्यनी, जे गायक नित गाय,
सहु गायक समुदायमां, मध्यम एह मनाय. ८००

अधम.

गाय वाद्य गायकतणी, मदद मेळवी जेह,
गायकनी गणनामहीं, अधम गणाये एह. ८०१

गायक दोष.

रोळावत.

कंपित तेमज भीत, पछी उद्घुष्ट प्रमाणो,
ए रीते अव्यक्त, जबर अनुनासिक जाणो ;
काकस्वर कहेवाय, ते पछी शिरस्थ ताको,
वळी स्थानवर्जित, विदित छे विस्वर वांको. ८०२
विरस तथा विश्लिष्ट, विषमने मात्र भणजो,
तालहीन मळी चौद, दोष गायकना गणजो ;
गवाय डोलतुं गान, एह कंपित कहेवाये,
भीत एहनुं नाम, गान जे भयथी थाये. ८०३
करी कठिन उच्चार, गावुं उद्घुष्ट गवाये,
एनुं नाम अव्यक्त जेह अस्पष्ट गवाये ;
नासामांथी गवाय, एह अनुनासिक उर धर ;
काक समो करी शब्द, गावुं ए गण काकस्वर. ८०४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अति उंचा स्वरथकी, कपाली गान करावे,
संज्ञा एनी शिरस्थ, धैर्यथी श्रवण धरावे ;
तजी ताल स्वर तणा, स्थान जे गवाय गायन,
वदे एनुँ अभिधान, स्थानवर्जित विद्वज्जन. ८०५

अशुद्धतामय स्वरे, गावुँ ए गणाय विस्वर,
विरस गान रस रहित, मानता महा मुनीश्वर ;
निषिद्ध स्वर सहगान, विदित विश्लिष्ट विचारो,
कालहीन जे गान, एहने विषम उचारो. ८०६

भूली संगीत भान, गान गभराई करवुं,
व्याकुल एनुं नाम, विश्वमां लागे वरवुं;
गातां गातां ताल, जे स्थळे भूली जवाये,
तालहीन ए तुर्त, गुणीमां दोष गवाये. ८०७

छन्द हरिगीत.

वळी अन्य मुनिना मत विषे, संदष्ट तेम अधष्ट छे,
शंकित कुरागी भीत कंपित ने कपाली स्पष्ट छे;
काकी विताल तथा करभ ने अधर, जम्बुक जाणजो,
स्वरभंग वक्री ने प्रसारी प्रीत धारी प्रमाणजो. ८०८

ए रीत उन्मीलक, विरस, कृष, स्थानभ्रष्ट सदा गणो,
अविधान तेमज सानुनासिक, भग्न पण साथे भणो;
सीत्कारीने अस्थित पछी, कर्कष सदा कहेवाय छे,
ए पंचविंशति दोष गायकना प्रसिद्ध गणाय छे. ८०९

ज्यां दांत पीसी गवाय, संज्ञा एहनी संदष्ट छे,
स्वर टोप उपर न जाय, अटके मध्य एह अधष्ट छे;
संदेहयुक्त गवाय तेने सुज्ञजन शंकित कहे,
मुख फाडी गावुँ दुःस्वरे, संज्ञा कुरागीनी लहे. ८१०

भय पामी गातां भीत, थरथरते स्वरे कंपित अने,

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ऊंचे स्वरे गातां **कपाली** दोष जाण्यो बुध जने ;
काक स्वरे गावाथी **काकी** ताल रहित **वित्ताल** छे,
करीं दीर्घग्रीवा उष्ट्रसम, गातां **करभ** विकाल छे. ८९१
स्वर स्थूल तेम अशुद्धथी गातां **अधर** अंकाय छे,
शिरने धुणावी शियाळ सम गावाथी **जम्बुक** थाय छे,
गातां स्खलित स्वर थाय तो **स्वरभंग** झट समजी लिओ,
ग्रीवा करी वांकी गवातां दोष **वक्री** कही दिओ. ८९२
लांवा करी कर उभय गातां प्रवल दोष **प्रसारी** छे,
आंखो वींची गावाथी **उन्मीलक** महा भयकारी छे;
रस रहित गातां **विरस**, **कृप** पतली अवाजे पेखजो,
स्थळ ताल वा स्वरनुं तज्याथी **स्थानभ्रष्ट** उल्लेखजो. ८९३
संगीतनी मर्याद मूकी, गावुं ए **अविधान** छे,
ते **सानुनासिक** नाकमांथी, जे गवातुं गान छे ;
भांगेल स्वर खर तुल्य करी गावाथी **भग्न** गणो गुणी,
सीत्कारी समजो गातां वखते श्वास सह सीत्कृतिसुणी. ८९४
कायम रहे न अवाज गातां एनुं **अवस्थित** नाम छे,
कर्कष कठोर अवाजथी कहेनार गुणीना ग्राम छे;
नथुराम आ पचवीश दोषो गाती वखते परहरी ;
जे गाय गायक तेनी जगमां ख्याति थाय खरेखरी. ८९५

गायक गुण.

सवैया एकत्रीशा

शिक्षाकार प्रथम समजील्यो, पछी **रसिक** उरमां आणो,
रंजनीय ए पछी राखीने **आज्ञाकार** जरुर जाणो,
भाग्यवान भली रीत प्रमाणो, **मृष्ट**, **मधुर** **जद्दपाल** गणो,
तंत तजी त्रिस्थान ते पछी **सुखाभ**ने भावेथी भणो. ८९६
कारुण **कोमल**, **श्रावक** तेमज **गहन** तथा **संघट** साथे,
गाढ **सुलक्षण** **प्रजर** राखीने, **रिक्तयुक्ति** मूको माथे ;
ए रीते एकोनविंशति गुण गायकना छे अवदात,
नित्य जेथी नथुराम थवाये, पंडितना गणमां प्रख्यात. ८९७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

जे निज गुरु पासे शीखेलो, शीखडावे बीजाने सार,
ए **गायकने गणे** गुणीजन, स्नेह धरीने **शिक्षाकार** ;
रसिक गणाये छे ए **गायक,** जेनां गायनमां रस होय,
मुदे गाइ अन्यने रिझावे, एह **रंजनीय** कहे सहु कोय. ८१८
रही पोते गुरु आज्ञामां, निजशिष्योने एमज राखे,
आज्ञाकार गणाय सदा ए भला भला विबुधो भांखे;
शुभ नशीबवाळाने सुज्ञो **भाग्यवान** के' छे भावे,
समग्र गायकनी श्रेणिमां एनी उच्च पदवी आवे. ८१९
मूर्ख अने विद्वान जेहनुं स्वच्छ रसात्मक गान सुणी,
पामे हर्ष हृदयमां तेने **मृष्ट** कहे छे महद् गुणी:
जेना स्वरमां होय मधुरता **मधुर** एह गायक कहेवाय,
होय सुरीलो, गाय हांफतो, सम अवाज **जहपाल** गणाय. ८२०
जेनो स्वर त्रण सप्तक सूधी स्वच्छ रहे ते छे त्रिस्थान,
जेनुं गान सुणी थाय सुखी सहु **सुखाभ** छे एनुं अभिधान;
कारुण ए जेना गायनथी अश्रुपात सहुजनने थाय,
वाळी शके स्वरने रेशम सम **कोमल** ए गायक कहेवाय, ८२१
श्रावक ए सुंदर स्वर जेनो दूरथी पण सारो संभळाय,
दीर्घ अवाज न खाय आंचको गातां, ए जन **गहन** गणाय;
गातां कोइ वखत पण जेनो वेसी जाय न दीर्घ अवाज,
ए **गायकने संघट** के'छे, सुख देनारो सुज्ञ समाज. ८२२
गाढ एहने गणवो जेनो रसभर स्वर होये अति स्थूल,
तोडे नहि दम छोडे नहि लय, सदा **सुलक्षण** ए सुखमूल;
जेनो **स्वर** कलकंठ सरीखो, जाहिर मीठो होय महान,
प्रजर नाम एने आपे छे, व्हालें नित्य वडा विद्वान. ८२३
संगीत केरा नियम साचवी, गानारो हरिगुणनी गाथ,
करी शके जे सकल गानमां, वृद्धि सदैव सुधारा साथ;
रिक्तयुक्ति ए गायक रूडो नेह धरी जाणो नथुराम,
उक्त गुणोथी युक्त गवैया लहे प्रशंसा सघळे ठाम. ८२४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वाद्य.

दोहा.

तत आनद्ध सुषिर अने, घन कहीं गुणीयो गाय ;
वेद जाति ए वाद्यमां, सर्वे भेद समाय. १

ततवाद्य भेद.

दोहा.

पीतळ के पोलादनां, तार तांत चढीं जेह ;
वाजे उत्तम वाद्य गण, तत जातिनां तेह. २

तत भेद.

दोहरा.

ततमां वीणा प्रथम छे, अष्ट भेद अभिराम,
रुद्र ब्रह्म नें तौम्बुरी, स्वरमंडल सुखधाम. ३
प्रबल पिनाकी किन्नरी, दण्डी वीणा देख ;
रावण वीणा रसभरी, लक्षें धारी लेख. ४

रुद्र वीणा भेद.

दोहरा.

थाय रुद्र वीणा तणा, षड् भेदो सुखरूप ;
न्यूनाधिक तारो धरी, आनँद लीओ अनुप. ५
युग तारे नकुली बने, त्रितंत्रीना त्रय तार ;
चार राजधानी तणा, पंच विपंची धार. ६
षड् तारेथी शार्वरी, परिवादिनींना सात ;
नित्य गमे गुणीं लोकने, अखिल भेद अवदात. ७

रुद्र वीणा लक्षण.

छंद रोला.

द्वादश मुष्टि तणो, दंड वीणानो कीजे,
त्रय मुष्टि तजीं वाम भाग मेरु धरी लीजे;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

द्वय अंगुल उंचाइ, मेरुनीं सदाय राजे,
अधिक तेथीं तिलमात्र, कई ते सन्मुख छाजे. ८
यव प्रमाण कईमां, तार स्थानक करी दीजे,
क्रम सह चढ उतरना, एह आकार भणीजे;
दंड मुखे एहने, स्थान आनंदे आपो,
मेरु कई मध्यमां' उभय तुम्बाओ स्थापो. ९
ए तुम्बा मेरुथी, एक आंगुल रहे नीचे,
कई थकी द्वय मुष्टि, ओपतां रहीने उंचे;
तुम्बा दंडनी मध्य, चारु चुनकण धरी राखो,
वाम भाग मेरुथी, उपरे मोरनी दाखो. १०
मोरनीने आश्रये, चार तारो चित्तहारी,
मेरु कईनी मध्य, धृतिथी ल्यो गुणी धारी;
एमां आनंदथी, सदा स्वर सिद्धि करीए,
प्रथम तारमां स्वरो, समजी स. रि. ग. म. धरीए. ११
द्वितीय तारमां धरो, स्नेह धारी प. ध. नी स्वर,
तृतीय तारमां मंद्र, ध्वनियुत स. रि. ग. म. सुंदर;
मंद्र ध्वनियुत धरो, प. ध. नि स्वर चतुर्थ तारे,
वादक वीणा तणा, समजीने पूरण प्यारे. १२
अवर तार त्रय धरो, दंडने दक्षिण भागे,
स्वरनी करे सहाय, बतावे श्रुति अनुरागे;
मेरुथी आदि तार, दीर्घ अष्टमांश दीजे,
अधिक अधिक ए रीत, द्वितीयने तृतीय करीजे. १३
मधुर ध्वनिने माट, एह तारोमां तंते,
जाळवीं जीवा धरो, खचित गुणी लोको खंते;
पक्क वंश त्वक तणी, करो वा रेशम केरी,
शाली तुषा प्रमाण, नहीं बारीक नही गहेरी. १४
कई तंत्री मध्यमा, स्थापवी जीवा मापे,
ते जीवा योगथी, तार सुंदर ध्वनि आपे;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षड्ज आदि स्वर सत, तणी सिद्धिने कारण,
दंड महीं मीणनी, सारिका करवी धारण. १५
जे जे स्थानक मांहि, होय स्वर सिद्ध सुखद अति,
ते ते स्थानक मांहिं, धरो सारिका धरी रति ;
आवा लक्षण युक्त रुद्रवीणा ल्यो भाळी,
सदा रुद्रने प्रिये, रुद्र वीणा रसवाळी. १६
सर्व काळमां सदा, सर्वने सुख करनारी,
स्मरण मात्रथी सद्य, पाप सहु प्रजाळनारी ;
अपूर्व दे आनंद, श्रवण जेनुं भरी शान्ति,
समज एनो सार, नित्य नरदेव महा मति. १७

वीणा महात्म्य.

" छप्पय. "

दण्ड मांहि हर वसे, वसे तांतमां पार्वती,
विष्णु कुकुभमां वसे, पत्रिमांहि श्री राजती ;
तुम्बीमां विधि वसे, नाभिमां वाग्वादिनी वर,
मोरोमां वासुकी, जाण जीवा शशिनुं घर ;
लघुमोरोमां नव ग्रहो, मेरूमां सहु देवता,
देवमयी वीणा गणी, गुणीओ स्नेहे सेवता. १८

वीणा वादकना लक्षण.

छंद घनाक्षरी.

शुद्ध तन सरल विशेष वर युक्तिवान,
सुंदर स्वरुप जेनुं जनचित्त चोरनार ;
नयन विशाल द्रढ आसनथी युक्त होय,
अंतर अखेद सावधान सुमति अगार.
जाणे मेळ रागना प्रवीण पूर्ण गायनमां,
कर नख कालित सरल अंगुली अपार ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नित्य नथुराम योग्य गुणीमां गणाय एवो,
पुरुष पवित्र वीणा वाद्यनो वजावनार. १९

वीणा शीखनार उत्तम शिष्यनांलक्षण.

छंद मनहर.

देव सम गुरुने सदाय सेवे स्नेह धारी,
तन मन धन तेने अर्पण करी रहे;
द्रढ रतिमान धर्म कर्म मांहि सावधान,
वृत्तिनो प्रवाह गुरु वाक्य पाछळे वहे.
गुरुगुणगान करवामां जेनुं तीव्र तान,
भूख प्यास भूली चित्त वीणा वाद्यने चहे;
मानथी सुखी न अपमानथी दुःखी न थाय,
नेहे नथुराम नित्य गुण गुग ए ग्रहे. २०

वीणा शीखनार अधम शिष्यनां लक्षण.

छंद मनहर.

अंतर अशुद्ध छे निरंतर प्रपंच भर्युं,
गर्व भरी सर्व रीत बळथी बतावे छे;
श्रद्धाथी न सेवे गुरु निपट कपट राखे,
अवरेखी गुरुनो उदय दुःख लावे छे.
अन्यने न लेखे करे आपनी वडाइ अति,
आपगुण गाइ गुण गुरुना छुपावे छे;
शीखे ए न वीणा कदी शीखे तो न पामे सुख,
नक्की नथुराम कहे, नरके सिधावे छे. २१

वीणा धारण विधि.

दोहरा.

वीणामुख नीचे धरी, राख उपरे तार;
मयूर स्थानने मोदथी, वाम स्कन्धपर धार. २२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दक्षिण पदनीं एडी पर, आप कुकुभने स्थान;
दंड हृदयथी दाबीने, ग्रह वीणा गुणवान. २३

वीणा वादन विधि.

दोहरा.

दक्षिण करनीं अंगुली, तर्जनीथी सुखदाय;
वजावीए वीणा त्यहां, क्षमाघात गणाय. २४

दक्षिण भुजनी मध्यमा, अंगुलि थकी सदाय;
वजावाय वीणा त्यहां, मध्यम घात गणाय. २५

षड्जादिक स्वरनो ज्यहां, पडदो प्रीतें पेख;
घातक्षमा मध्यम तणुं त्यां स्थानक द्रगदेख. २६

वीणा उभय प्रकारनी, अनिबद्ध, अवनद्ध;
अनिबद्ध पडदा रहित, पडदायुत अवनद्ध. २७

अक्कलथी अनिबद्धमां, समजीने स्वर स्थान;
घात क्षमा मध्यम तणुं, मुदथी स्थानक मान. २८

जे तारे वीणा महीं, रागरूप उपजाव;
कनिष्ठिकाथी निकटनो, वेगें तार वजाव. २९

कनिष्ठिका करवामनी, तेथी दाबो तार;
कर स्वरनो आरोह तुं, भावें सुख भरनार. ३०

वाम हस्तनी तर्जनी, तेते दाबी तार;
आनंदे अवरोह कर, विध विध करी विचार. ३१

जे स्वर जोइए रागमां, तेज स्थानपर तार;
दबावीए दाक्षिण्यथी, हर वीणा मोझार. ३२

ताडन करतां तारपर, प्रगटे स्वर सुखरूप;
स्वरमां स्वर प्रगटाववो, अनुस्वर एह अनुप. ३३

गुरु लघुनी गणती करी, छन्द प्रबंधनी मांहि;
वार तेटली तारपर, ताडन करीए त्यांहि. ३४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्षमा घात को रागमां, कयांइक मध्यम घात ;
गमक सहित अतिचमकथी, त्वरित धारजे तात. ३५

कम्रिका लक्षण.

जीवाथी तजनार तुं, एक बिलस्त प्रमाण,
स्वर सिद्धिने कारणे, तार दाबी सुखमाण. ३६
उपर चढ ताडन करी, हृदय निकट नथुराम,
कहेजे एह क्रिया तणुं, कलित कम्रिका नाम. ३७

सारणा लक्षण.

अनामिका कर वामनी, एथी क्रिया कराय,
नाम कम्रिकानुं त्यहां, सुभग सारणा थाय. ३८

सारणा भेद.

वेद भेद छे एहना, उत्क्षिप्ता उर आण,
सन्निविष्टाने उभयी, पछी कम्पिता जाण. ३९

उत्क्षिप्ता लक्षण.

सोरठा.

दाबी वीणा तार, अंगुलि फरी उठावीने,
अन्यतार पर धार उत्क्षिप्ता ए सारणा. ४०

सन्निविष्टा लक्षण.

धीरे अंगुलि धराय, व्हालें वीणा तार पर,
अवर स्थान अडकाय, सन्निविष्टा समज ए. ४१

उभयी लक्षण.

वीणा तार दबाव, अन्य तार पर अंगुली,
अति धीरें अडकाव, सुखपद उभयी सारणा. ४२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कंता लक्षण.

तार दाबी स्वर धाम, कंपावो करअँगुलिथी,
एह क्रियानुं नाम, कहो कम्पिता कोडथी. ४३

दक्षिण भुजना नव व्यापार.

दोहा.

घात पात संलेख ने, उल्लेख सु अवलेख,
भ्रमर छिन्न नखकर्तरी, सन्धित प्रेमे पेख. ४४
दक्षिण भुजना भाळीए, नौतम नव व्यापार,
नेह धरी नथुराम नित, अंतर मांहि उतार. ४५.

घात लक्षण.

तर्जनी उपर मध्यमा, अंगुली चढे अनुप,
तार वजावे तर्जनी, भव्य घात गुणीभूप. ४६

पात लक्षण.

अंगुलि तर्जनी एकली, जहां वजावे तार,
विश्वमहीं वखणाय ए, प्रबल पात व्यापार. ४७

संलेख लक्षण.

तर्जनी अंगुलि अग्रथी, वजाव अंदर तार,
भलो भेद संलेख ए, अंतर मांहि उतार. ४८

उल्लेख लक्षण.

अंतर तार वजावती, मुदे मध्यमा ज्यांय,
आनंदे उल्लेख गण, तीव्र मतिथी त्यांय. ४९

अवलेख लक्षण.

मुदे अंगुलि मध्यमा, व्हार तरफनो तार,
बजावती बहु वार ए, चर अवलेख विचार. ५०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भ्रमर लक्षण.

क्रम सह चारे अंगुलिथी, त्वरित तार वजडाय,
भ्रमर नामनो भेद त्यां, भाव धरी स्थिर थाय. ५१

छिन्न लक्षण.

तार पास धरी तर्जनी, अनामिकाथी ज्यांय,
बाहिर तार वजावीए, कलित छिन्न कहेवाय. ५२

नख कर्तरी लक्षण.

चारे अंगुलिने नखे, क्रम सह त्वरित सदाय,
तंते तार वजावतां, नख कर्तरी गणाय. ५३

सन्धित लक्षण.

अनामिकाने मध्यमा, व्हार तरफनो तार,
थाय वजावे ते घडि, शुभ सन्धित व्यापार. ५४

अन्यमतानुसार संलेख लक्षण.

सोरठा.

वजाव तंत तार, चारे अंगुलिथी चतुर,
ए संलेख उचार, अन्य मुनीश्वरने मते. ५५

अन्यमतानुसार उल्लेख लक्षण.

त्रय अंगुलिथी तुर्त, तार वजावी धार मुद,
सारी राखी सुर्त, ए उल्लेख उचारजे. ५६

अन्य मतानुसार अवलेख लक्षण.

ताडन पामे तार, जहां उभय अंगुलितणुं
वरिष्ठ ए व्यापार, ओळखजे अवलेख छे, ५७

वाम हस्तना द्वय व्यापार.

दोहा.

प्रथम स्फुरित सु प्रसिद्ध छे, द्वितीय खसित दिल धार,
वाम हस्तना जाण ए, विगते वर व्यापार. ५८

स्फुरित लक्षण.

वाम हस्तनी अंगुली, स्वर कंपावा काज,
आम तेम चाले त्यहां, दाखो स्फुरित दराज. ५९

खसित लक्षण.

वाम हस्तनी अंगुली, जवर तार पर ज्यांय,
वार वार वर्त्तीए तदा, खसित खरेखर थाय. ६०

उभय हस्तना त्रयोदश व्यापार.

घोष रेफ ने बिन्दु छे कलित कर्त्तरी नाम,
अर्ध कर्त्तरी ए पछी, नित्य गणो नथुराम. ६१
नेहभरण निष्कोट छे, ललित स्खलित सुखखाण,
शुभ शुक्र वक्र गण्या पछी, मुदे मूर्छना आण. ६२
ते पाछळ तलहस्त छे, अर्धचन्द्र उरधार,
पछी प्रसार ने कुहर छे, उभय हस्त व्यापार. ६३

घोष लक्षण.

रोलावृत्त.

दक्षिण भुज अंगुष्ठ, तारथी लगावी तंते,
क्रमसह घारे नखोथी, खास बजावो खंते;
तार दबावो तुर्त, वाम कर कनिष्टकाथी,
सजो घोष व्यापार, सद्य संगीतना साथी. ६४

रेफ लक्षण.

दक्षिण करनी अनामिका, अंगुलि केरो नख,
तार हेठळे राख, त्वराथी समजीने तक;
वाम भुजानी मध्य, अंगुलि वडे उपरथी,
तार बजावी रेफ समज, 'र'कार सुस्वरथी. ६५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बिन्दु लक्षण.

दक्षिण भुजनी अनामिका, अंगुलिथी आपे,
छूटो तार बजाव, विना दाबे शुभ मापे ;
वाम हस्त तर्जनी थकी, फरी दबावी लेजे,
प्रगट थाय 'जं' कार, भेद बिन्दु तत्र केजे. ६६

कर्तरी लक्षण.

उभय हस्तनी अनुप, जहां अंगुलिओ चारे,
सत्वर क्रमथी तार, बजावे वारे वारे ;
कलित तहां कर्तरी, नाम व्यापार गणाये,
नेह सहित नथुराम, गुणी ग्रन्थोमां गाये. ६७

अर्ध कर्तरी लक्षण.

दक्षिण भुजनी चार, अंगुलि तार बजावे,
वाम हस्त अंगुलि, तार तंतेथी दबावे ;
सुभग सारणा थकी, तार पर ताडन थाये,
अर्ध कर्तरी एह, विश्व मांहि बखणाये. ६८

निष्कोटक लक्षण.

वाम हस्तथी दाबी तार अंगुलि सरकावो,
दक्षिण भुज तर्जनी थकी तें तार बजावो ;
नक्की ए निष्कोट नाम व्यापार बखाणो,
नेह सहित नथुराम, गुणी अंतरमां आणो. ६९

स्खलित लक्षण.

वाम हस्तथी दाबी तार अंगुलि उठावी,
अन्य जगो दाबीए, तार लक्षे कृति लावी ;
वचमां दक्षिण हस्त तणा नख चारे क्रमथी,
तार बजावे तदा, स्खलित उद्भवे सुगमथी. ७०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुकवक्र.

वाम हस्त तर्जनी, तारने दाबि तंते,
दक्षिण कर अंगुष्ट, तर्जनी तुर्तज खंते ;
मध्य तार उपरे, खेंची छोडी दे छटाथी,
शोभावे शुकवक्र, गुणी गणने सुखमाथी. ७१

मूर्छना लक्षण.

दक्षिण करथी जहां, तारने बजाववामां ;
भावें करीअें भ्रमण, भेद भल भजाववामां ;
वाम हस्त ज्यां करे, सुखद स्वर कंप क्रियाने,
तहां महद मूर्छना, गुणी गण मुदथी माने. ७२

तलहस्त लक्षण.

उलटा जमणा हाथ थकी, ज्यां तार बजावो,
वाम हस्त तर्जनी, जहां तारमां लगावो ;
तुर्त थशे तलहस्त, नाम व्यापार तहां वर,
करे प्रफुल्लित पूर्ण, अमित गुणीओना अंतर. ७३

अर्धचन्द्र लक्षण.

भाव धरीने दक्षिण भुजथी तार बजावीं,
कनिष्टिका अंगुष्ट, वाम करना त्यां लावी ;
पकडी लहीअें तार, तहां व्यापार थाय ए,
अर्धचन्द्र अभिधान, चतुर चित्तें चहाय ए. ७४

प्रसार लक्षण.

चोंपे अंगुलि चार, मोदथी मिलावीं साथें,
बजावाय ज्यां तार, हर्षथी दक्षिण हाथे ;
कनिष्टिका तर्जनी, वाम कर केरी नेमे,
लगावाय तारमां, थाय त्यां प्रसार प्रेमे. ७५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कुहर लक्षण.

संकोचे दक्षिण कर, तर्जनी तार बजावे,
कनिष्ठिका अंगुष्ट, वाम करना त्यां भावे;
लागे तारथी तुर्त, कलित व्यापार कुहर छे,
नित्य कहे नथुराम, गुणी गणने सुखसर छे. ७६

वीणाहस्त.

दोहा.

चतुर्विंश व्यापार ए, समजो गुणी समस्त,
नाम एहनुं नित्य छे, हरेक वीणाहस्त. ७७

वादन.

दोहा.

विध विध वीणाहस्तथी, ज्यां वीणा बजवाय,
नौतम वादन नामथी, विश्वमहीं वखणाय. ७८

वादन भेद.

छंद हरिगीत.

सुखकंद आदि छन्द छे, द्रढ नाम धारा धारजो,
कहीं कैकुटी. कंकाल पछी व्हालेंथी वस्तु विचारजो ;
द्रुत लेखो द्रुत गजलील गणजो दिव्य दण्डकने ग्रहो,
वाद्यक विचारी पक्षिरुत, दश भेद वादनना कहो. ७९

छन्द लक्षण.

दोहा.

खसित स्फुरित व्यापारथी, मन्द्र स्थानमो तार,
वाजे स्थान लगी तहां, वादन छन्द विचार. ८०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

धारा लक्षण.

स्खलित मूर्छना. कर्तरी रेफ अने उल्लेख,
फरी रेफ व्यापार ज्यां, त्यां धारा तुं देख. ८१

कैकुटी लक्षण.

सुंदर ज्यां शुकवक्त्र छे, स्फुरित घोष व्यापार,
अर्ध कर्तरी आवतां, वादन कैकुटी धार. ८२

कंकाल लक्षण.

स्फुरित. मूर्छना. कर्तरी. नख कर्तरी विशाल,
अर्ध कर्तरी आवतां, वादन वर कंकाल. ८३

वस्तु लक्षण.

कर्तरी. खसित. कुहर थकी, तार स्थान स्वर ज्यांय,
धारी व्हाल बजावीओ. वस्तुवादन त्यांय. ८४

द्रुत लक्षण.

जहां कर्तरी. खसितने, कुहर रेफ रस रूप,
भ्रमर. घोष व्यापार त्यां, द्रुत वादन गुणी भूप. ८५

गजलील लक्षण.

बहु मूर्छना मोदप्रद, स्फुरित, कर्तरी ज्यांय,
खसित. घोष व्यापार त्यां, गण गजलील सदाय. ८६

दण्डक लक्षण.

स्खलित. मूर्छना. कर्तरी, रसिक रेफ अवरेख,
खसित पंच व्यापारथी, दण्डक वादन देख. ८७

वाद्यक लक्षण.

तार उपरना भागमां, नित्य रेफ नथुराम,
तार नीचेना भागमां, कर्तरी करे मुकाम. ८८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

निष्कोटिक. तलहस्त ए, उपर आवे ज्यांय,
वर वादनना भेदमां, स्थिर त्यां वाद्यक थाय. ८९

पक्षिरुत लक्षण.

दोहा.

चतुर्विंश ज्यां आवता, क्रम सह वर व्यापार,
पेखो पक्षिरुत तहां, पूर्ण वधारी प्यार. ९०

वादन प्रकार.

वादन उभय प्रकारनुं, आदि सकल उर आण,
करजे निष्कलनी पछी, धारी प्रेम पिछाण. ९१

सकल लक्षण.

छंद हरिगीत.

लइ तारनी जमणी तरफथी, युक्तिअे जीवा लगी,
धरी व्हाल तार बजाववो, दक्षिण करे उरमां उमगी ;
कर वामनी तर्जनी विना, सहु अन्य अंगुलिओ करे,
स्वरनो प्रकाश प्रमाणथी, एने सकल सहु उच्चरे. ९२

निष्कल लक्षण.

तुर्तज दबावे तार, डाबो हाथ हर्ष वधारीने,
दक्षिण भुजा व्हालें बजावे तार ताल विचारीने ;
सु निषाद स्वरना स्थानथी, आरोह क्रमने आदरे,
स्वरनो प्रकाश करे उतरतां, नाम ए निष्कल धरे. ९३

अन्यमतानुसार चतुर्वीणा लक्षण.

रोळावृत.

वीणामां द्वय तार, लागतां नकुलि थाये,
सप्त लागतां सद्य, कलित चित्रा कहेवाये ;
नव तारो लागतां, विपञ्ची गुणीओ गाये,
एकविंश लागतां, मत्तकोकिला मनाये. ९४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वीणाकरण लक्षण.

दोहा.

काळ अने अक्षर तणो, जेमां थाय तोल,
वीणाकरण वखाणीए, आनँद धरी अमोल. ९५

करण भेद.

आदि रूप अवरेखीए, कृतप्रतिकृत उर आण,
पछी प्रतिभेद प्रमाणीओ, रूप शेष सुखखाण. ९६
ओघ अति आनंदमय, छे प्रतिशुष्क प्रसिद्ध,
ए षट् करण उमंगथी, साधे संगीत सिद्ध. ९७

रूपकरण लक्षण.

रोळावृत्त.

मत्तकोकिला अने, विपंची आदि वीणा,
एक संग वजवाय, स्वरो समजीने झीणा ;
मत्त कोकिला महीं, एक गुरु उत्तम आवे,
तो विपंची आदिमां उभय लघु जोर जणावे. ९८
मत्तकोकिला महीं लघु अक्षर लेखावे,
तो विपंची आदिमां, दिव्य द्वय द्रुत देखाये ;
एम अक्षरो तणो, तोल थाये छे ज्यांही,
रूपकरण रसभरण, तुर्त थायछे त्यांही. ९९

कृतप्रतिकृत करण लक्षण.

रूप करणनी रीत, वीणाओ न्यारी न्यारी,
वजावीओ धरी व्हाल, तालने काल विचारी ;
भिन्न भिन्न भाळीओ, तोल अक्षरनो तेमां,
कृत प्रतिकृत शुभ करण, वसे छे वासो एमां. १००

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रतिभेद करण लक्षण.

छंद छप्पय.

मत्तकोकिला महीं, उभय लघुत्व उच्चारो,
विपंची आदि महीं, गुरुने श्रुतिथी धारो;
मत्तकोकिला महीं, युगल द्रुत आवे ज्यारे,
विपंची आदि महीं, त्रेवडो लघुने त्यारे;
व्हाल धरी विपरीत सहु, अक्षर एम उच्चारीअें,
प्रबल करण प्रतिभेद त्यां, स्नेह धरी संभारीअें. १०१

रूपशेष करण लक्षण.

सवैया एकत्रीशा

प्रथम खंड गीतनो खुब्रीथी, व्हाल धरीने ज्यां वजवाय,
मत्तकोकिला मांहि अर्धने, अर्ध विपंची मांहि सदाय,
ए रीते शुभ एक गीतनो, पृथक पृथक ज्यां थाय प्रयोग,
रूपशेष नामना करणनो, अहर्निश त्यां निरखो योग. १०२

ओघ करण लक्षण.

रोळाव्रत.

मत्तकोकिला मांहि, विलंबित लय जब कीजे,
वेगे विपंची मांहि, एक सँग द्रुत लय लीजे,
ताल भंग नहि थाय, उभय वीणामां ज्यारे,
ओघ नामनो करण, उद्भवे तुर्तज त्यारे. १०३

प्रतिशुष्क करण लक्षण.

सवैया एकत्रीशा

अंश अने संवादी स्वरेना मध्य स्वरो सुखदायक ज्यांय,
म्होटी छोटी द्वय वीणाना एकतारमां प्रगट कराय;
त्यां प्रतिशुष्क करणनो वासो हृदय हुल्लासो स्वर समजी,
नेह धरी नथुराम कहे भव सिन्धुतरो भगवान भजी १०४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वीणा धातु करण.

दोहा.

वीणामां ताडन थकी, उपजे स्वर सुखरूप;
उत्तम गुणीओ उच्चरे, एने धातु अनुप. १०५

धातु भेद.

आदि वर विस्तार छे, करण कलित कहेवाय;
ए पाछळ आविद्ध छे, व्यञ्जन पछी वखणाय. १०६

विस्तार भेद.

वेद भेद विस्तारना, संगीत संग सबंध;
विस्तारज संघातज, संवायज अनुबन्ध. १०७

संघातज भेद.

सवैया एकत्रीशा

प्रथम द्विरुत्तर, द्विरधर बीजो संघातजनो भेद भणो,
अधराद्युत्तरान्तक छे त्रीजो, गणनामां गुणवान गणो;
उत्तराद्यधरान्तक एना पछी, चोथा भेदनुं नौतम नाम,
समजनारने सुखनो सागर, नेह वधारण नथ्थुराम. १०८

संवायज भेद.

आदि त्रिरुत्तर, त्रिरधर ते पछी, छे द्विरुत्तराधरोधरांत,
उत्तरादिद्विरधर छे उत्तम, अधरादिद्विरधर हर ध्वांत,
मध्योत्तर द्विरधर मुदमन्दिर, मध्याधर पूरण मन काम,
अष्ट भेद संवाजनाए, अधरमध्यद्विरुत्तर नाम, १०९

करण भेद.

दोहा.

रचित प्रथम, उच्चयद्वितीय, निराटित तृतीय सबंध;
चतुर्थ उरद्राप्रदं गणो, पंच करण अनुबंध. ११०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आविद्ध भेद.

क्षेप प्लुत अति कीर्णने, एह पछी अतिपात,
आविद्धानुबन्ध छे, पांच भेद प्रख्यात. १११

व्यञ्जन भेद.

पुष्प अने कल, तल कहो, बिन्दु रेफनी पृष्ट;
अनिस्वनित, निष्कोटि छे, एह पछी उन्मृष्ट, ११२
अवरेखो अवमृष्टने, वळी व्यञ्जन अनुबन्ध;
दश भेदो दिलमां धरो, पेखी प्रबल प्रबन्ध. ११३

विस्तार लक्षण.

ध्वनिनो करी विस्तार ज्यां, मन्द्रस्थान मोझार;
भावे भेद मळावे, ए विस्तार विचार. ११४

विस्तारज लक्षण.

भिन भिन श्रोताओने, लागे एक समान;
शशि ताडन केरी त्वरा, ए विस्तारज मान. ११५

संघातज लक्षण.

ताडन करतां तारने, उभय वार धरी प्यार;
स्वर सन्धान थतां बने, संघातज सुखकार. ११६

द्विरुत्तर लक्षण.

मन्द्र स्थानना स्वर तणो, उभय वार उच्चार;
ज्यां थये त्यां तुर्त तुं, धातुद्विरुत्तरधार. ११७

द्विरधर लक्षण.

उभय वार ताडन थकी, उभय वार ध्वनि थाय;
तार स्थान स्वरनो जहां, त्यां द्विरधर कहेवाय. ११८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अधराद्युत्तरान्तक लक्षण.

सोरठा.

उभय वार उच्चार, तार स्थान स्वरनो जुहा;
टरमां नित्य उतार, ए अधराद्युत्तरान्तक. ११८

उत्तराद्यधरान्तक लक्षण.

सोरठा.

स्नेहे स्वर सुखकार, युग युग वार उच्चारीऐ,
आदि मन्द्र पछी तार, ए उत्तराद्यधरान्तक. ११९

संत्रायज लक्षण.

दोहा.

ज्यां त्रय ताडन तार पर, वा त्रय मुख उच्चार,
त्यां संत्रायज धातु छे, विचार वारंवार. १२०

त्रिरुत्तर लक्षण.

मन्द्र स्थानना तार पर, ज्यां ताडन त्रय थाय;
अथवा स्वर उच्चार त्रय, कहो त्रिरुत्तर त्यांय. १२१

त्रिरधर लक्षण.

स्वर पर ताडन त्रय वखत, त्रय उच्चार मुख आण,
संत्रायजना भेदमां, जाहिर त्रिरधर जाण. १२२

द्विरुत्तराधरोधरान्त लक्षण.

सवैया एकत्रीशा

मन्द्र स्थान केरा स्वरनो ज्यां, उभय वार उच्चार कराय,
अथवा ताडन तार उपरे, उभय वार स्थिरताथी थाय;
तार स्वरे ताडन करीने वा, उभय वार उच्चारी अंते,
दिव्य धातु जणातो देखो, ए द्विरुत्तराधरोधरान्ते. १२३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उत्तरादिद्विरधर लक्षण.

तार स्थानना शुभ स्वरनो ज्यां, उभय वार करीअें उच्चार,
अथवा करीअें तार उपरें, ताडन पूण वधारी प्यार ;
पछी मोदथी मन्द्र स्वरोनो, उच्चार करी लखो सुख लेख,
संवापजनो भव्य भेद ए, उत्तरादिद्विरधर अवरेख. १२४

अधरादि द्विरधर लक्षण.

मन्द्र तार पर एक वार ताडन वा स्वर उच्चार करो,
तार स्वरोना तार उपरे, उभय पछी आघात धरो ;
अथवा मुखथी तार स्थानना, स्वरनो उभय वखत उच्चार,
ए स्थलमां अधरादिद्विरधर, वास करे धरी पूरण प्यार. १२५

मध्योत्तरद्विरधर लक्षण.

जहां तार स्थानना तार पर, तंते द्वय ताडन थाये,
अथवा एज स्वरो आस्यथी, उभय वखत ज्यां उचराये ;
मन्द्र स्थानना स्वरनो मध्ये, एक वखत उच्चार करो,
मध्योत्तर द्विरधर धातुने, हर्ष वधारी हृदय धरो. १२६

मध्याधर लक्षण.

एक वखत तुं तार स्थानना, तार उपरें कर आघात,
अथवा एक वखत ए स्वरने, भावें भण मुखथी भली भात ;
उभय वखत पछी मन्द्र स्थानना, स्वरनो कर प्रेमेथी पाठ,
ठीक हृदयमां ठसी जशे तुज, मोदे मध्याधरनो ठाठ. १२७.

अधरमध्य द्विरुत्तर लक्षण.

आदिमां उच्चारण करीअें, मन्द्र स्थान केरा स्वरनुं,
तुर्त तार स्वर पछी उचरीअें, अभिमान छोडी उरनुं ;
मन्द्र स्थानना स्वरनो अंते, आनंदथी कर उच्चार,
अधर मध्यद्विरुत्तर धातु, धार गुणी अंतरमां धार. १२८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अनुबन्ध लक्षण.

विस्ताररज संघातजने संत्रायज त्रय धातुना रूप,
मिश्रण थइ उच्चारण थाये, अथवा ताडन थाय अनुप ;
निज निज जातिना स्वर जुगत, मत्र मिलाप करे छे ज्यांय,
अभिनव आनंदनो भरनारो, ए धातु अनुबन्ध गणाय. १२९

करण लक्षण.

दोहा.

अल्प गुरु झाझा लघु, वीणामां वजवाय;
विश्व महा व्याधिहरण, करण धातु कहेवाय. १३०

राचत लक्षण.

ऊभय लघु ज्यां आदिमां, अंत महीं गुरु एक ;
वीणामां वजवाय त्यां, रचित कहो सविवेक. १३१

उच्चय लक्षण.

चार लघु आदि धरी, एक गुरु धरी अंत ;
वजाव वीणा व्हालथी, कहे उच्चय धरी खंत. १३२

निरटित लक्षण.

आदि लघु षट् एक गुरु, आवे अंते ज्यांय ;
वीणामां विगते करी, निरटित जाणो त्यांय. १३३

उरद्वाप्रद लक्षण.

अष्ट लघु आदि महा, अंत एक गुरु धार ;
उरद्वाप्रद उत्पन्न थशे, वजाव वीणा यार. १३४

करण अनुबन्ध लक्षण.

करण धातुना भेद ज्यां, अरसपरस मळी जाय ;
तहां करण अनुबन्ध छे, कोविदमां कहेवाय. १३५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आविद्ध लक्षण.

बहु गुरु अल्प लघु महीं, वाजे वीणा प्रसिद्ध ;
अथवा गुरु अभावथी, अवरेखा आविद्ध. १३६

क्षेप लक्षण.

एक लघु गुरु उभय ज्यां, वाजे धारी व्हाल ;
खंत धरीने क्षेप त्यां, निरखी थाओ न्हाल. १३७

प्लुत लक्षण.

एक लघु, गुरु एक ज्यां, अंत लघु पण एक ;
प्रेमे प्लुत पिछाणजो, करवा रस उद्रेक. १३८

अतिपात लक्षण.

उभय लघु गुरु, उभय ज्यां, वाजे वीणा धाम ;
उद्‌भव त्यां अतिपातनो, नित्य कहे नथुराम. १३९

अतिकीर्ण लक्षण.

चार लघु गुरु चार ज्यां, वाजे वारंवार ;
अभिनव त्यां अतिकीर्ण छे, पेखो धारी प्यार. १४०

आविद्धानुबंध लक्षण.

जहां भेद आविद्धना, मळी जाय द्वय चार ;
आविद्धानुबन्ध त्यां, वेगे नित्य विचार. १४१

गुरु रहित चतुर्धातु लक्षण.

दोहा.

क्षेप लघु द्वय प्लुत त्रय, चार लघु अतिपात ;
नव लघुनो अतिकीर्ण ए, गुरु रहित गण तात. १४२

व्यञ्जन लक्षण.

ज्यां अंगुलि अटथी, स्वर उच्चार कराय ;
व्यञ्जनधातु व्हालथी, ए स्थलमां स्थिर थाय. १४३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पुष्प लक्षण.
सवैया एकत्रीशा

एक तार पर उभय वखत, अंगुष्ट तणा आघात कराय;
एक अंगुलि कनिष्ठिकाथी, प्रम धरी त्रय स्वर प्रगटाय;
प्रबल पुष्प त्यां प्रसिद्ध थाये, वर व्यंजननो भेद वडो,
निय चित्त नथुराम धरीए, एथींथी संगीत पंथ पडो. १४४

कल लक्षण.

वीणा करा उभय तार पर, उर सावध राखी युग वार;
उभय हाथना अंगुठाथी, वजात्र स्वर न्यारा धरी प्यार;
कालिर तहां कलधातु प्रगटे, नथी कांइ रीति न्यारी,
वीनकारने सुख अगार छे, धृतिथी लेजो चित धारी. १४५

तल लक्षण.

वाम हस्तना अंगुठाथी, त्वरा बधारी दाबी तार;
दक्षिण भुजना अंगुठाथी, वजावीओ स्वर अति सुखकार;
तुर्त प्रगट थाशे तलधातु, विकट नथी एनो व्यवहार,
समजनारने सरल सदा छे, गोथां खाये नित्य गमार. १४६

बिन्दु लक्षण.
दोहा.

थाय गाढ ताडन थकी, एक तार पर ज्यांय;
महद ध्वनि ति मोदप्रद, त्यां बिन्दु बोलाय. १४७

रेफ लक्षण.

क्रम सह चारे अँगुलिथी, एकज स्वर उच्चार;
एक तार पर थाय त्यां, व्हाले रेफ विचार. १४८

अनिःस्वनित लक्षण.
रोळावृत्त.

वाम हस्त अंगुष्ट, त्वरांथी तार दबावे,
दक्षिण कर अंगुष्ट, सुस्वर नीचलो वजवे;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अनिःस्वनित उद्भवे, ए जगोए जय धारी,
वाद्य धातुओ वडा, गुणी गणने हितकारी. १४९

निष्कोटि लक्षण.

तार दबावो तुर्त, वाम करने अंगुष्ठे,
ते नीचेनो भाग, दबावो प्रेमे पूंठे ;
दक्षिण करथी पंछी, त्वराए ताडन कराए,
निष्कोटि नथुराम, श्रुतिथी उरमां धरीए. १५०

उन्मृष्ट लक्षण.

दोहा.

मधुर ध्वनि युत स्वर जहां, तर्जनीथी वजवाय,
महद गुणीना मत थकी, त्यां उन्मृष्ट गणाय. १५१

अवमृष्ट लक्षण.

सवैया एकत्रीशा

उभय हाथनी उभय अंगुलि, कनिष्टिका सुमुदेथी मळी,
अने उभय अंगुष्ट करे, उद्योग संग भावेथी भळी ;
आनंदे अवरोह क्रमेथी तंत धरी त्रय तार महा,
एकज स्वर त्रय स्थानक केरो, प्रगट करे अवमृष्ट सही. १५२

व्यञ्जन अनुबन्ध लक्षण.

व्यंजनना नव भेद नित्य छे, तेमांथी द्वय त्रयने चार,
पंच अने षड्. सप्त. अष्ट. नव, भावे भेद भळेला भाळ ;
त्यां व्यञ्जन अनुबन्ध थाय छे, भेद दशम दुःखनो हरनार,
तत, आनद्ध, सुषिरने घनमां, व्हाले धातु करे विहार. १५३

वृत्ति लक्षण.

दोहा.

गीत अने वरवाद्यनो, थतां योग सुखरास ;
जणाय नुन्याधिक जहां, तहां वृत्तिनो वास. १५४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वृत्ति भेद.

दोहा.

चित्रा. वृत्तिवृत्तने, अवर दक्षिणा नाम,
त्रय भेदो वृत्तितणा, नित निरखो नथुराम. १५५

चित्रावृत्ति लक्षण.

वाद्य जणाये मुख्य ज्यां, गौण जणाये गीत,
चारु चित्रावृत्ति त्यां, चाहें धरजो चित्त. १५६

वृत्तिवृत्त लक्षण.

जहां वाद्यने गीतनो, सम संयोग जणाय,
वरिष्ट वृत्तिवृत्त त्यां, भावें भेद भणाय. १५७

दक्षिणा वृत्ति.

मुख्य गीत गौरव भर्युं, गौण वाद्य वरताय,
दिल धर वृत्ति दक्षिणा, लइ संगीत सहाय. १५८

चित्रा वृत्ति.

द्रुत. लघु. लय सु समायति, मागधी गीत प्रमाण,
तत्त्व मार्ग सु अनागत, ग्रह चित्रामां आण. १५९

वृत्तिवृत्त.

मध्य लये स्रोतोगता, यति सँभाविता गीत,
अनुगत मार्ग सु सम ग्रहे, वृत्तिवृत्त धर चित्त. १६०

दक्षिणावृत्ति.

रोळावृत.

लय सु विलम्बित लेख, यति गोपुच्छा गगजे,
पृथुला गीत प्रसिद्ध, भावथी नित्ये भणजे ;
ओघ मार्ग अवदात, अतीत अति उत्तम ग्रह,
दिव्य दक्षिणावृत्ति, समुद्भवती संग्रह सह. १६१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वाद्य विचार.

दोहा.

गीत संग वजवाय ए, वाद्य चतुर्विध जाण,
तत्व अनुगत ओघने, गीतानुग उर आण. १६२

तत्व लक्षण.

सामग्री सहु गीतनी, प्रगट बतावे जेह,
गीत संग चाले मळी, तत्त्व वाद्य छे एह. १६३

अनुगत लक्षण.

रोलावृत्त.

गीत तणी सामग्रीने, प्रगट करे न तमाम;
ताल विरामे गीत सँग, ले न्यारो विश्राम. १६४
गीत विलंबित लय ग्रहे, वाद्य ग्रहे द्रुत ज्यांय;
ताल भ्रो संगे रहे, ए अनुगत कहेवाय. १६५

ओघ लक्षण.

प्रगट करे नहि गीतनी, सामग्री तिल भार,
चाले निज चतुराइथी, पूर्ण वधारी प्यार. १६६
ताल निभावे गीतनो, श्रोताने सुख रूप,
भिन्न न भासे गीतथी, ए छे ओघ अनुप. १६७

गीतानुग लक्षण.

दोहा.

बंसी शरणाई अने, मुरली मन हरनार,
ए मुखवाद्य तमामने, गीतानुग गण यार. १६८

शुष्कवाद्य लक्षण.

विना गीत वजवाय जे, वाद्य वधारी व्हाल,
शुष्कवाद्य एने कहे, गुणीगण बुद्धि विशाल. १६९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुष्कवाद्य भेद.

रेलाकृत.

आश्रावण आदिमां, द्वितीय आरंभविधि छे,
वक्रपाणिए तृतीय, सद्य संज्ञा लीधी छे;
संखोटना चतुर्थ, परिघट्टना सु पंचम,
मार्गासारित भेद, चक्रनी गुणीओने गम. १७०
लीलाकृत सप्तमो, एक कल अष्टम गणीए,
नवम द्विकल निर्दोष, भाव धरीने भणीए;
दशम त्रिकल छे दिव्य भेद सर्व भयहारी,
शुष्क वाद्यना-सरस, धीर ल्यो हृदये धारी. १७१

आश्रावण लक्षण.

वर धातु विस्तार, चतुर्दश भेदो जेना,
प्रयोग करीए पूर्ण, सक्रम युग युग ग्रहीएना;
प्रथम द्वितीयने तृतीय, चतुर्थ पंचपट् जाणो,
सप्त अष्टने नवम दशम उरमां नित आणो. १७२
एकादश द्वादश सुत्रयोदश, अने चतुर्दश,
ए रीते करी ग्रहण, सप्त करी प्रयोग ले यश;
शुष्कवाद्यनो सुखद, भेद आश्रावण ए छे,
जेने गुणीगण सर्व, दिव्य अभिनन्दन दे छे. १७३

आरंभविधि लक्षण.

विस्तारजना विमल, भेद चौदे चित्त धारी,
आरोह सु अवरोह, सर्व नोकर सुखकारी;
वचमां त्र्श्ने रचित, [illegible] सहु त्रय,
क्रमथी चौदे भेद मही, लावजे तजी भय. १७४
फरी रचित त्रयवार, [illegible] विस्तारज अंते,
अन्य भेद करणम, सुधी थी वरजे खंते;

शुष्क वाद्यनी सरल, भेद आरंभविधि भल,
यथा वाद्यवेद वीर, साधे स्वर छोडीने दल. १७५

वक्रपाणि लक्षण.

करण अने आविद्ध, धातुना भेद अधिकतर,
व्यंजन धातु तणा, भेद भावेथी अल्प भर,
विस्तारज धातुना, भेद सौने त्यागी ;
शुष्क वादना सरल, वक्रपाणि ले मागी. १७६

संखोटना लक्षण.

कोणा केरो तार, एक अंगुठे दबावो,
ताडन तर्जनी थकी, वरीने स्वर प्रगटावो ;
बिन्दु गमकयुत वादी, अने संवादी मिलावो,
दरवादी अनुवादी, विवादी अल्पज लावो. १७७
करो एज स्वर मांहि, भेद विस्तार सजावो,
ए पण मेळवी अन्य धातु भेदथी बजावो ;
एम उभय के तृतीय, वखत धरी व्हाल बजवीए,
संखोटना सुभेद, शुष्क वाद्यमां समजीए, १७८

परिघट्टना लक्षण.

रोळावृत.

व्यंजन धातु तणा, भेद दश मांहि भळीने,
करण धातुना पांच, भेदथी जुदे मळीने ;
आवे अति आरोह, स्वल्प अवरोहो जाणो,
सतत शुष्क वाद्यमां, परिघट्टना प्रमाणो. १७९

मार्गासारित लक्षण.

अन्य भेद विस्तार, करण आविद्ध तणा धर,
कल तार धातु संग, मेळवी संक्रम सिद्ध कर ;

बाकर कर सब संग, करणना भेद प्रकाशित,
शुष्क वाद्यमां सिद्ध, मुदे कर मार्गासारित. १८०

लीलाकृत लक्षण.

वार्तिक मार्गथी जाति, पादनी तथा अंशे स्वर,
उत्तम अभिसृत गीत मांहि, धृति धारी नित्य धर;
दार्तिक मार्गथी जाति, मध्यमाने धरी चित्ते,
अंश स्वर एहना, धारजे परिसृत गीते. १८१

मार्ग लयेथी द्विगुण, ललित जेनी लय जाणो,
एह लयांतर गीत, सदा अंतरमां आणो;
अभिसृत परिसृत अने, लयांतर वर्जवे ज्यां तत,
शुष्क वाद्यमां सदा, लेखजे त्यां लीलाकृत. १८२

एककल द्विकल त्रिकल लक्षण.

रोळावृत.

चंचतपुट ज्यां एक, ताल षट्पितापुत्रेक्य,
कानि आसारित, एककल त्यां पामे कथ;
जहां षट्पितापुत्र, ताल द्वय प्रगट प्रगटीए
मध्यम आ रत, द्विकल त्यां रागे रटीए. १८३

चार वखत प्रगटतो, षटपित ताल ज्यां,
ज्येष्टासारित त्रिकल, दृढ जाणी लेखो त्यां;
पेखो ए प्रत्येक तणा, त्रयत्रय भेदो मर्मी,
आदि यथाक्षर द्विसंख्यात ने त्रिसंख्यात गर्मी. १८४

यथाक्षर द्विसंख्यात त्रिसंख्यात लक्षण.

रोळावृत.

एक वार उच्चार करी बे प्रगट करावे,
तेह यथाक्षर भेद, सदा ध्याने स्थिर थावे;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

द्वय उच्चारथी जेह, प्रगट थाये छे प्रीते,
द्विसंख्यात ए भेद, गाय छे गुणीओ गीते. १८५
त्रय उच्चारथी जेह, आप आस्तितक धरीवे,
त्रिसंख्यात ए भेद, भला गुणीओने भावे;
वृत्ति वार्तिक मार्ग, स्ताइ आदि भेदे भळी,
थाये त्रेसठ भेद, शके केवळ गुणीओ कळी. १८६

ब्रह्मवीणा लक्षण.

दोहरा.

करीए तुम्बा काष्टना, समजी संगीत राह;
अधो भाग कांइक करो, चोडो धारी चाह. १८७
दीर्घ रुद्र वीणा सदृश धारी प्रम पिछाण;
स्थिति सारिकानी सरव, सदा पूर्ववत जाण. १८८
आदि तार द्वय लोहना, राख षड्ज स्वर स्थान;
अष्टमांश एथी अवर, पुष्ट तार द्वय मान. १८९
ए त्रीजोने पांचमो, ललित लोहना तार;
चोथो छठ्ठो सातमा, सप्त धातुमय धार. १९०
दीर्घ तृतीय पंचम थकी, अष्टमांश अवरेख;
स्वर सहायता कारणे, तार सातमो लेख. १९१
बजाव अंगुली उभयथी, सर्व गमकनी साथ;
भली ब्रह्मवीणा गुणी, हर्ष धरी ले हाथ. १९२

तौम्बुरी वीणा लक्षण.

छंद रोला.

तौंबुरु गन्धर्वनुं, वाद्य तौम्बीरी वखाणो,
सुखनुं साधन सरस, जन्म दक्षथी जाणो;
एक बाजुए अंत, तुंबडुं ललित लगावो,
कालित काष्ट पाटीयो, एह तुम्बाने छावो. १९३

लघु दीर्घता तमाम, रुद्र वीणा सम राखो,
चार तार लोहना, धरी अमृत रस चाखो;
स्वर सहायता काज, तार एकजने छोडी,
बाकी तारो एक स्वरे, जुगतें द्यो जोडी. १९४

उभय भेद एहना, निबद्धा निबद्ध जाणो,
परदा सहित निबद्ध रहित अनिबद्ध प्रमाणो;
मेरु कहने दंड, रुद्र वीणा सम राजे,
तौम्बुरीवीणा एह, सदा गुणीओमां गाजे. १९५

स्वरमंडलवीणा लक्षण.

दोहरा.

रचना स्वरमडल तणी, जे वीणामां होय;
स्वर मंडल वीणा कहे, तेने गुणी सहु काय. १९६

एक अंगुलि अंतरे, षड्जादिक स्वर केरी,
राखो तारा तोलथी, शुभ संगीत मत हेरी. १९७

मंद्र सथी मध्यम स लगी, अष्ट तार द्रग दाज;
स्वर जमाववा कारणे, घाटि बन्न करी राख. १९८

आरोहण क्रममां अखिल, षड्जादिक स्वर जेथी;
विण दाब्ये बोले नहा, पंच कोण कर तेथी. १९९

मध्यम स्थानी स्वर षड्ज ने, तार स्थानी स विचार;
अलग अलग ए सर्वना, तंते बांधो तार. २००

मंद्र स्थानना तार सहु, ध्वनि विचित्रता काज;
क्रमथी कांइक पातळा, तेमज धरो दराज. २०१

ते नीचेना तार सहु, जाडा मोटा जोय;
चढता तारो पातळा, उंचा स्वरना होय. २०२

स्वर साधन ग्रहीं काष्टनुं, करीए ताडन तार;
आरोहण अवरोहमां, वाम हस्त व्यवहार. २०३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दक्षिण करनी अंगुली, महद मध्यमा नेह,
ताड़न करतां तार पर, उपजे गमक अछेह. २०४

मत्त कोकिला लक्षण.

दोहरा.

विवेकथी वीणा सदश, सीधा तारो सात;
सप्त धातुना सर्व ए, धर विचारीने वात. २०५
वाम भाग ए तारने, दे जीवा सुखदान;
घोडच बाहिर तारमां, राख गमकनुं स्थान. २०६
दक्षिण करनी अगुलिए, सदा नियम निरवाही;
कर स्वर कंप तणी क्रिया, मत्तकोकिला मांहि. २०७

रावण हस्त वीणा लक्षण.

छद रोला.

दांडी सागनी सुखद, काष्ठनुं पेट प्रमाणो,
ते तुंबाने स्थान, जरुर अति लांबु जाणो;
साग दंड उपरे, इष्टन मेरु करीए,
तार ताणवा काज, खुंटीओ तेमां धरीए. २०८
करी तार तांतना, चार वात्रय अति तंते,
काष्ट तुंबडा तणी, कटिपर बांधो खंते;
अश्व पुच्छ वाळनी, कमाने घर्षण करतां,
वीणारावणहस्त, वजवीए श्याम स्मरतां. २०९

पिनाकी वीणा लक्षण.

दोहरा.

दीर्घ रुद्र वीणा थकी, अर्ध प्रमाणे राख;
तारो त्रय वा चार छे, सहु गुणी पूरे साख. २१०
मन्द्र मध्यने तारना, यथारुचि कर स्थान;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

घर्षण कर हय पुच्छना, करीं वाळनी कमान. २११
तार पकडवा कारणे, वाळें मीण लगाव ;
नारिकेल वा कांस्यनुं, प्रांते पेट बनाव. २१२
वाम हस्तनी अँगुलिए, दाडी तार दबाव ;
पिनाकी वीणामां प्रबळ, दिव्य स्वरो दरशाव. २१३

किन्नरी वीणा लक्षण.

दोहरा.

सदा रुद्र वीणा सदश, त्रय तुम्बाओ दाख ;
द्वादश आंगुल मेरुपर, उभय तारने राख. २१४
ए मेळवीं स्वर एकमां, अवर तार लइ एक ;
सुखकर आंगुल सप्तनो, धरजे करी विवेक. २१५
मोरकीना आश्रय वडे, अलग रहने बांध ;
गिहुं प्रमाण द्वयतारमां, अंतर करें साध. २१६
स्वर सहायता कारणे, द्वय अथवा त्रय तार ;
अलग एक बाजुं परे, गुणी श्रुतिथी धार. २१७
आदि तारो उभयने, परदा उपर दबाव;
उभय तारने एक सँग, किन्नरी मांहि बजाव. २१८

दंडी वीणा लक्षण.

छंद रोला.

दंडी केरो दंड, रुद्र वीणा सम करजे,
वाम तरफ रहने, तुंबडुं एकज धरजे ;
अग्रमूल दंडनुं, रहेलुं तुम्बा मांही,
तंते बांधो तार, मेरु नहीं करता त्यांही. २१९
ए तारो त्रय, दंड जीवनी तरफ विचारी,
तुंबा सम्मुख, कई मांहीं बांधो सुखकारी ;

ए वीणा अनिबद्ध, निबद्ध सदाय प्रमाणो,
रहित सारिका सहित, उभय भेदो उर आणो. २२०

किन्नरी वीणा भेद.

दोहरा.

वर किन्नरी वीणा तणा, भणो उभय सहु भेद;
एक लघु बीजी बृहत, खचित हरे उरखेद. २२१

लघु किन्नरी वीणा लक्षण.

दोहरा.

त्रय वितस्त पंचांगुली, दीर्घ वंशनो दंड;
पंचांगुली प्होळाइमां, ल्यो अवरेखी अखंड. २२२
अष्टांगुल चोडो अने, लांबो आंगुल पांच;
कुकुभ करो बाबळ तणो, कदी न आवे आंच. २२३
चोडी आंगुल उभयने, लांबी साडा चार;
कूर्म पीठ सम लोहनी, पटुली, ते पर धार. २२४
गीध अस्थि वा लोहनी, वा कांसानी कराय;
कनिष्ठिका अंगुली सदश, पोकल भूंगळी थाय. २२५
द्वय सप्तकना स्थानमां क्रम सह धारी कोड;
दंड पीट पर मीणथी, एह चतुर्दश चोड. २२६
शुभ बीजा सतक तणो, शुद्ध निषाद निहाळी;
प्रथम सारिका धारजे, सहृदय गुणी संभाळी. २२७
धर धैवतनी सारिका, उपर आंगुल एक;
षड्ज लगी पंचम थकी, ए उपर सविवेक. २२८
आंगुलथी कांइक अधिक, पांच सारिका नाख;
द्वय आंगुलने अंतरे, रिषभ सारिका राख. २२९
दूर तेथी त्रय अंगुली, षड्ज सारिका स्थाप;
ए रीते आनंदथी, बीजुं सप्तक माप. २३०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

षड्ज लगी सुनिषादथी, सप्तक प्रथमनी सारी;
त्रय अंगुलथी अधिक जरी, धीर सप्त ले धारी. २३१

आदि सप्तकनो षड्ज, अने रिषभ मोझार;
रसिक गुणी तुं राखजे, अंतर अंगुल चार. २३२

दंड कुकुभनी संधिमां, एक तुंबडुं धार;
अवर एथी कांइक वडुं, शोधीने सुखकार. २३३

त्रीजी चोथी सारीना, मध्यमहीं दे स्थान;
दंड पीठमां छिद्र करी, बांध तांत बळवान. २३४

लोह टिकडीमां छिकरी, सुखकर तांते सांध;
तुम्बा मुख टिकडी धरी, तांत दंडथी बांध. २३५

खूब तांतने खेंचीने, द्रढ कर तुंबडुं यार;
नीफोय सम कील करी, मेरु स्थानपर मार. २३६

षड्ज लगी सुनिषादथी, सप्तक प्रथमनी सारी;
त्रय आंगुलथी अधिक जरी, धीर सप्त ले धारी. २३१

हस्ती वाळ सम लोहनो, बांधी कुकुभथी तार;
फोय महीं धरी मेरुनी, डोली पट्टिमां धार; २३७

मरोड खुंटी सुद धरी, त्यां लगी तुं गुणी राय;
ज्यां लगी द्रय सप्त स्वरो, प्रेम धरी प्रगटाय. २३८

लघुकिन्नरी वीणा तणुं, लक्षण ललित विचारी;
हर्ष वधारी हृदयमां, धीर गुणी ल्यो धारी. २३९

बृहत् किन्नरी वीणा लक्षण.

दोहरा.

व्हाल धरी कर वामनी, त्रय आंगुलीथी तुर्त;
दाना तार दबावजे, सारी राखी सुर्त. २४०

दक्षिण करनी आंगुली, तर्जनीथी धरी तंत;
त्रिगतें तार वजावजे, खचित धरीने खंत. २४१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लगावजे त्रय तुंबडां, त्रय तांतोना तार;
बृहत किन्नरीनुं भलुं, लक्षण उरे उतार. २४२

देशी किन्नरी भेद.

दोहरा.

देशी किन्नरीना कलित, वह्नि भेद वखणाय;
लघु मध्यम ने बृहत कही, गुणीयो गीते गाय. २४३

देशी बृहत् किन्नरी लक्षण.

दोहरा.

दंड परिघ षड् आंगुली, प्रीतें करो प्रकाश;
ललित करो लंबाइमां, प्रिय आंगुल पचाश. २४४
द्वय आंगुल चोडो अने, लांबो आंगुल चार;
दंड अग्रना मध्यमां, कुकुभ धरो सुखकार. २४५
षड आंगुलना अग्रमां, कछवा पीठ समान;
लोह तणी पटुली धरो, मुदें वधारी मान. २४६
नीचे वीणा मस्तकथी, द्वय आंगुल ग्रही रीत;
आरपार करी छिद्र त्यां, खुंटी नांख खचित. २४७
शिर नीचे कुकुभथी उरध, मेढ बांध मुद धारी;
यथायोग्य ते पर रचो, मनहर मीणनी सारी. २४८
तार तांत के लोहनो, तुम्बा त्रयज धराय;
बृहत किन्नरीमां अवर, प्रथम प्रमाणे थाय. २४९

देशी मध्यम किन्नरी लक्षण.

दोहरा.

त्रेतालीश आंगुल तणो, दीर्घ बनावो दंड;
षड् आंगुलनी सुखकरण, ओपे परिघ अखंड. २५०
साडा त्रय अंगुल तणो, लांबो कुकुभ बनाव;
दंड शीशनां मध्यमां, कोडे कुकुभ लगाव. २५१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छोडी आंगुली एक तुं, दंड अंतमां यार;
मेढ लगावी मुद धरी, सुखद सारिका धार. २५२
प्रथम प्रमाणे तारने, त्वरित तुंबडां बांध;
मध्यम किन्नरीमां मुदे, द्वय सप्तक स्वर साध. २५३

देशी लघु किन्नरी वीणा लक्षण.

दोहरा.

पांतरीश आंगुल तणो, दीर्घ दंड दिल धार;
त्रय आंगुल चोडो कुकुभ, सदाय सुख करनार. २५४
मेढ तारने तुंबडां, सारी खुंटी सर्व;
लघु किन्नरीमां राखजे, प्रथम तुल्य तजी गर्व. २५५

एकतंत्री वीणा लक्षण.

दोहरा.

गांठ फाटने वांक विण, पक्व खदिरनो खास;
गोल अने पोकल करो, सरल दंड सुखराश. २५६
एक त्रिलस्त तणी परिध, दीर्घ हस्त त्रय होय;
पोकल युग महोरा महीं, दोढ आंगुली जोय. २५७
माथे टचली आंगुली, कर एवा त्रय छेद;
दंड मध्यमां दीपता, खास हरी उर खेद. २५८
अथवा तर्जनी आंगुली, माप एटले माप;
द्वय छिद्रो करी दंडमां, तुर्त त्याग परिताप. २५९
खदिर तणो वा सारनो, चोडो आंगुल दोढ;
अधो भागमां दंडना, राख कुकुभ धरी कोड. २६०
अवर कुकुभ अष्टांगुली, तिरछो लांबो लेय;
डाबो जमणो छोलीने, मध्य [illegible] करी देय. २६१
छिद्र करो ते मध्यमां, योनिने आकार;
पक्व काष्टनो कील करी, एह छिद्रमां मार. २६२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लांबी आंगुल अष्टने, उभय आंगुली चोडी;
पटुली अग्र धातु तणी, कुकुभ मध्य दे जोडी. २६३
कुकुभ तणे नीचे उभय, लघु दंडीओ लगाव;
एक कील अष्टांगुलनी, बळीया फरी बनाव. २६४
कील उपरथी गोळ करी, दीर्घ त्रयांगुली लेय;
कुकुभे लगावी कोडथी, दंड सुखे धरी देय. २६५
सप्तदशांगुल दंडनो, अधोभाग करी त्याग;
अधोभागमां छिद्र द्वय, कर धरीने अनुराग. २६६
कुकुभ तरफमां एकने, परिघ तरफ कर एक;
उभय छिद्रमां तांत द्वय, बांधो करी विवेक. २६७
एज तांतने उल्ट करी, बाहिर राखी थोडी;
परोवीने द्वय छिद्रमां, द्यो जुगतीथी जोडी. २६८
अडतालीश आंगुल उदर, उत्तम उंचुं होय;
द्वादश आंगुलनुं गळुं, बाहिर नजरें जोय. २६९
गोळ अने परिपक्व अति, द्वय तुम्बा लइ तुर्त;
दंडनी संग लगावज, सारी राखी सुर्त. २७०
मध्य छिद्र मुख हेठळे, त्रय आंगुलनी चोडी;
नीचे तुम्बा कंठने, नित्य नाभि दे जोडी. २७१
नारि केलना खंड द्वय, तुम्बा अंदर धारी;
उभय छिद्र करी तांत द्वय, व्हालें धार विचारी. २७२
नारि केलना खंडमां, न्हानी कील नखाय;
ते फेरवतां दंडथी, नाभि द्रढ थइ जाय. २७३
रेशम वा सुतर तणी, लइ दोरी सुखदाय;
नागपाशथी बांधतां, द्वय तुम्बा द्रढ थाय. २७४
कुकुभ दंडथी बांधीए, प्रबल तांतथी पूर्ण;
प्रबल वंश त्वकनी जीवा, तार नीचे धर तूर्ण. २७५
नख प्रमाण जाडी अने, लांबी आंगुल बार;
तुम्बा नीचे दंडथी, लपेट धरीने प्यार. २७६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मन्द्र स्थानने जे थकी, मध्य जणाये भेद;
एकतंत्री वीणा करी, खचित हरो उरखेद. २७७

वीणा भेद.

दोहरा.

वीणा भेद वखाणीए, नेह सहित नथुराम;
श्रुति वीणा आदि कही, स्वर वीणा सुखधाम. २७८

सारंग देव मतानुसार रुद्र वीणा भेद.

दोहरा.

भेद रुद्र वीणा तणा, एकतंत्री अवरेख;
नकुली त्रितंत्री किन्नरी, चित्रा निशंक देख. २७९
आलापिनी विपंचीने, मत्तकोकिला मान;
पिनाकी सह दश विध कह्या, नौतम नेह निधान. २८०

रुद्र वीणा भेद.

दोहरा.

भेद रुद्र वीणा तणा, व्हाले युगल विचार;
शुद्धमेल आदि अने, मध्यमेल उर धार. २८१

शुद्धमेल वीणा लक्षण.

दोहरा.

उपरना तारो महीं, मंद्र मध्यने तार;
समान ए त्रय स्थानसं, शुद्धमेलमां धार. २८२

मध्यमेल वीणा लक्षण.

पंचम वा मध्यम महीं, मुख्य होय स्वर एक;
मध्यमेल वीणा गुणी, समजी ल्यो सविवेक. २८३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्धमेल वीणा भेद.

दोहरा.

शुद्ध मेल वीणा तणा, उभय भेद अवरेख;
अखिल राग मेला अने, राग मेल द्वग देख. २८४

मध्यमेल वीणा भेद

दोहरा.

मध्यमेल वीणा तणा, द्वय भेदो दरशाय;
अखिल रागमेला अने, मध्यमेल स्थिर थाय. २८५

शुद्धमेल अखिल राग मेला लक्षण.

दोहरा.

मंद्र मध्यने तारना, त्रय सप्तक ज्यां होय ;
अखिल राग मेला कहे, शुद्धमेलमां स्होय. २८६

शुद्ध मेल एकराग मेला लक्षण.

दोहरा.

मध्य तार स्थानक तणा, स्वरनो सुंदर मेल;
रागराग प्रतिभिन्न कर, समजी स्वरने स्हेल. २८७
एकराग मेला कही, शुद्धमेलमां सिद्ध ;
गुणीजन ग्रहण करी क्रिया, प्रीतें करो प्रसिद्ध. २८८

शुद्ध मेल वीणा प्रथम भेद.

छंद रोला.

विचित्रत वीणा बनावेल, कोडे धारी कर,
तेना उपर चार तार, धृति धारीने धर;
जमणी बाजुपरे, तार त्रय धरजे न्यारा,
वाम चार तारमां, स्वरो गोठवजे सारा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रथम तारमां राख, षड्ज अनुमंद्र विचारी,
स्वर पंचम अनुमंद्र द्वितीय तार ले धारी;
तृतीय तारमां षड्ज मंद्र, स्वर धर सुखदायक,
चतुर्थ तारे मन्द्रमध्य, लेखी ले लायक. २९०
जमणी बाजु तणा, तार त्रयमां आनंदे,
मध्यग्रामनो षड्ज राख, पहेलें स्वच्छन्दे;
बीजे पंचममंद्र, स्नेह धारीने सजजे,
त्रीजे तारे मंद्र षड्ज भावेथी भजजे. २९१
आ त्रय तारो तणु, नाम श्रुतिस्थान समजजे,
सुखकर धरी सारिका, सर्व शंकाओ तजजे,
जहां षड्ज अनुमंद्र, रिषभजहां शुद्ध विराजे;
प्रथम सारिका तहां, रोज रसवंती राजे. २९२
एज तारमां तुर्त, शरू गान्धार थाय ज्यां,
द्वितीय सारिका धरो, महद मुदधारीने त्यां;
साधारण गान्धार, स्थानमां तृतीय सारी,
लघु मध्यम स्थानके, धरो चोथी सुखकारी. २९३
शुद्ध मध्यम स्थानके, पांचमी सारी शोभे,
छठी लघु पंचमे, जोइने दिलडुं लोभे;
आ षड सारी थकी, तार बीजामां तंते,
षड् स्वर थाये प्रगट, गुणी खोजी ल्यो खंते. २९४
वाम तरफना द्वितीय तारनी पहेली सारी,
रहेछे रसप्रद सदा, शुद्ध धैवत स्वर धारी;
एज तारनी द्वितीय, सारीमां सुख करनारो,
रहेछे शुद्ध निषाद, पूर्ण गुणीयोने प्यारो. २९५
द्वितीय तारनी तृतीय सारी कैशिक निषाद मय,
चतुर्थ सारीपरे, कहो लघु षड्ज तजी भय;
पंचम सारी परे, रहेछे शुद्ध षड्ज स्वर;
षष्टम उपर शुद्धरिषभ, आनंदे उर धर. २९६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वाम भागना तृतीय तारनी, प्रथम सारी ज्यां,
शुद्ध रिषभ सुखरूप, तुर्त देखाइ जशे त्यां;
बीजी सारी मांहि, शुद्ध गांधार विराजे,
साधारण गांधार, त्रीजीमां गर्वथी गाजे. २९७
चोथी सारी महीं, लघु मध्यम लेखाये,
सारी पांचमी सदा, शुद्ध मध्यमथी छाये;
तेज तृतीय तारनी, सुभग छठ्ठी सारीमां,
लघु पंचम लइ जन्म, बतावे सुखनी सीमा. २९८
विचार करतां वाम भागने, चतुर्थ तारे,
लघु पंचम ले स्थान, प्रथम सारीमां प्यारे;
द्वितीय सारीमां दाडी, शुद्ध पंचम सुखकारी,
त्रीजी सारी महीं, शुद्ध धैवत ल्यो धारी. २९९
शुद्ध निषादे रहे, शोभती चतुर्थ सारी,
निषाद कैशिकवडे, पंचमी लागे प्यारी;
छठ्ठी सारी मांहि, स्थान लघु षड्ज लहे छे,
स्वर रचना ए रीत, कर्यानुं शंभु कहे छे. ३००
एक एक श्रुति मांहि, कांइ पण वधघट थाये,
मन्द्र अने अनुमन्द्र, मध्यने तार मनाये;
सारीनी स्थापना, करो मध्यमथी तारे,
तारथी ग्रहीं अतितार, स्वरो प्रगटावो प्यारे. ३०१
चारे तारो मांहि, षड्ज पंचमनी साथे,
मनहर मध्यम षड्ज बजावो हेतथी हाथे;
संगीत विद्यातणी, इच्छनारा आवादी,
सारीमां स्वर सर्व, समजी लेजो संवादी. ३०२
मध्यम स्थाननी सारी, तार त्यां चतुर्थ जे छे,
तेना शुभ स्वरनेज, सुज्ञ साचो स्वर के'छे;
सुंदर लघु षड्जमां, एक श्रुति घाटी वजावी,
सारी काकली निषादनी, काढो उपजावी. ३०३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

लघु मध्यममां एज रीतिने ध्यानें धरजो,
अंतर गांधारनी सारी सुखदायक करजो ;
ज्यारी सारी कथें, सारी संकीर्ण गणाशे,
वगाडवानुं काम, एथी अति विकट जणाशे. ३०४

लघु पंचम लघु षड्ज, उभयनी अकेक श्रुतिने,
सहज नीची सरकावी, बजावो स्थिर करी मतिने ;
उपरना स्वर उभय, तुर्त प्रगटे छे त्यारे,
जे श्रोताने उरें, अमित आनंद वधारे. ३०५

जेम अन्य स्वर मांहि, चढी उतरी ध्वनि थातां,
भासे छे स्वर भेद, श्रवण पुट अंदर छातां ;
धैवत श्रुति चारनो, पांचमो मध्यम पेखो,
उंची नीची सरकावी, सारी ए रीतें लेखो. ३०६

शुद्ध मेळ वीणानी, सरस छे रीति आवी,
समजी लेवी सद्य, वादके खास वजावी ;
मत महान मुनितणा, व्हालथी बधा विचारी,
कवि नथुरामे काव्य मांहि, वार्ता विस्तारी. ३०७

शुद्धमेल वीणा द्वितीय भेद.

छंद हरिगीत.

जे शुद्ध मेळ वीणा तणा तारो उपरना चार छे,
तेमां यथाक्रम निम्नलिखित स्वरो महा सुखकार छे;
अनुमन्द्र पहेले षड्ज युत लक्षें हमेशां लाववो,
अनुमन्द्र मध्यम युक्त, बीजा तार मांहि बजाववो. ३०८

अनुमन्द्र षड्ज समेत त्रीजा तारमां तंते धरो,
चोथे स वा अनुमन्द्र पंचम युक्त प्रीतेथी करो;
तेमां प्रथमना तार केरी, छए सारीमां क्रमे;
गणवा रिषभ गांधार बन्ने, शुद्ध जे सह दुःख दमे. ३०९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गांधार साधारण वळी ते बाद लघु मध्यम गणो,
पछी शुद्ध मध्यम तेम लघु पंचमॅ स्वरो मात्रे भणो ;
सारी प्रथम छे शुद्ध रिषभें युक्त बीजा तारनी,
सारी द्वितीयमां थाय छे उत्पत्ति शुद्ध गांधारनी ३१०

सारी तृतीय शोभे सदा, गांधार साधारण वडे,
चाहेथी चोथी सारी पर स्वर सरस लघु मध्यम चडे;
स्वर शुद्ध मध्यम पांचमी सारी महीं शोभा ल्हे,
वळी छठ्ठी सारी मांहि गुणभर स्थान लघु पंचम ग्रहे. ३११

छे शुद्ध धैवत तार चोथानी प्रथम सारी महीं,
स्थिति द्वितीय सारी मांहि शुद्ध निषादनी शोभी रही;
सारी तृतीय कैशिक निषादें चोथी स्वर लघु षड्जथी,
शोभा ल्हे छे शत गुणी मत भेद ए अंदर नथी. ३१२

स्वर शुद्ध षड्जे पांचमी सारी बहुं प्यारी बने,
सारी छॅठी शुद्ध मध्यमे हद हृदय हरनारी बने :
पंचम श्रुति त्रयनो प्रमाणो षड्ज युत तार स्वरे,
श्रुति चारनो मध्यम कदी ए त्रे समागम ना करे. ३१२

सम श्रुति तणा संवादी स्वर अन्योन्य मोद धरी मळे,
नथुराम म पॅ स्वर षड्जनो लेतां मनोरथ नहि फळे ;
आ भेदने आनंदथी जे ध्यानमां निशदिन धरे,
ए वादको वादक सभामां विजयलक्ष्मीने वरे. ३१४

शुद्धमेल वीणा तृतीय भेद.

छंद मनहर.

शुद्ध मेल वीणा तणा उपरना चार तार,
तेमांनो प्रथम अनुमन्द्र षड्जथी भरो ;
कहे नथुराम बीजे अनुमन्द्र मध्यमने,
त्रीजे अनुमन्द्र षड्ज धृतिथी सदा धरो ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

बीजा तार पेठे युक्त अनुमन्द्र मध्यमथी,
चतुर बनीने चोथा तारनी कृति करो,
सुणी भलो भेद थशे उरनी उमेद पूर्ण,
खलकमां वादकने मार्ग मळशे खरो. ३१५
पहेला तार केरी पे'ली सारीमां रिषभ शुद्ध,
बीजी शुद्ध गान्धारें सुशोभित गणाय छे;
सारी त्रीजी श्रेष्ठ लागे साधारण गांधारथी,
चोथी लघु मध्यमथी जामेली जणाय छे.
सारी पांचमीमां शुद्ध मध्यम रहे छे सदा,
छठ्ठी सारी स्वर लघु पंचमथी छाय छे,
कहे नथुराम आम वजावे बराबर तो,
वादकनां सर्व मन काम सिद्ध थाय छे. ३१६
छे जे बीजा तार तणी प्रथमनी सारी शुद्ध,
स्वर लघु पंचम त्यां स्थिर थइने रहे,
कहे नथुराम त्रीजी शोभे शुद्ध पंचमथी,
त्रीजी शुद्ध धैवतने व्हालथी सदा वहे,
चोथी सारी मांहि स्थाने पामे छे निषाद शुद्ध,
कैशिक निषादें सारी पंचमी प्रभा लहे,
छठ्ठी शुद्ध षड्जने गणे छे प्राण तुल्य प्यारे,
तेम शुद्ध षड्ज गोद छठ्ठी सारीनी ग्रहे.
त्रीजा तारनी जे सारी प्रथमनी होय तेमां,
स्वर शुद्ध रिषभनुं रम्य रहेठाण छे,
कहे नथुराम बीजी सारीमां गांधार शुद्ध,
साधारण गांधार त्रीजीने सुखखाण छे.
चोथी सारी साथ लघु मध्यमनो मेळ लखो,
पंचमीमां स्वर शुद्ध मध्यम सुजाण छे.
छठ्ठी सारीमां प्रमाण पेखो लघु पंचमनुं,
पामशे प्रमोद जेने स्वर पहिचाण छे. ३१७

हवे तार चोथानी विचारी जोतां सारी छए,
जे जे स्वरथी संबंध राग युक्त राखे छे.
कहे नथुराम तेनां नाम क्रम युक्त नेहे,
चारु रस जेनो शोखी संगीतना चाखे छे.
पे'ली लघु पंचमने बीजी शुद्ध मध्यमने,
त्रीजी शुद्ध धैवतने दैवसम दाखे छे.
चोथी पांचमीमां शुद्ध कैशिक निषाद क्रमे,
छठ्ठी शुद्ध षड्जथी उमंगे अभिलाखे छे. ३१९

उक्त भेदें चार श्रुतिओनो स्वर मध्यमने,
तेम त्रय श्रुतिओनो पंचम प्रमाणवो;
अनुमन्द्र षड्ज युक्त तारना स्वरोमां तेनो,
एने पण जराए संबंध नहि जाणवो.
घाटी अने बांधी तिओथी ए उभय स्वर,
संवादी नथी ए उरमां विचार आणवो.
न मळे परस्पर म प नथुराम कही,
तेथी षड्ज तारमां न तेनो योग ताणवो. ३२०

शुद्ध मेळ वीणा चतुर्थ भेद.

जे शुद्ध मेळ वीणाना उपरि तार चारो,
ते मांहि तार पहेले अनुमन्द्र षड्ज धारो;
पंचम समेत मन्द्रे करी सज्ज तार बीजो,
अनुमन्द्र षड्ज वाळो तंते बनावो त्रीजो. ३२१

बीजा समान चोथो पंचम समेत मन्द्रे,
बुद्धि बळे बनावो शुभ भान राखी भद्रे;
ए चार तारमांना पहेलानी प्हेली सारी,
स्वर रिषभ शुद्ध साथे राखे हमेश यारी. ३२२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सारी द्वितीय शोभे गांधार शुद्ध गातां,
दीपे तृतीय साधारण ग स्वरे छवातां,
स्थिति चोथी सारी मांहे लघु मध्यमे लही छे,
शुद्ध मध्यमें सुखेथी, चित्त पंचमी चही छे. ३२३
सुणतां सहु जनोना महा दुःख मेटनारी,
लघु पंचमे लपेटी, छठ्ठी जणाय सारी;
जे द्वितीय तार केरी छे सुभग सारी पे'ली;
रहे शुद्ध धैवतेथी, रस ए हमेश रेली. ३२४
बीजी निषाद शुद्धें अतिशय विनोद आपे,
कैशिक निषाद त्रीजी, प्रगटी लसें प्रतापे;
सारी चतुर्थ शोभा, लघु षड्जथी लहे छे.
सुखकारी शुद्ध षड्जे, दुःख पंचमी दहे छे. ३२५
स्वर रिषभ शुद्ध छठ्ठी, सारी महीं समायो,
सुणतां मजे सदाये, मुद सुज्ञने सवायो;
आ द्वितीय तार केरा, स्वरमां सुधारी हेवा,
शुद्ध रिषभ षड्ज बन्ने बनतां लगी न लेवा. ३२६
जे सारी प्रथम होये, शुभ तृतीय तार केरी,
तेने रहे हमेशां, स्वर शुद्ध रिषभ घेरी;
गांधार शुद्ध बीजी, सारी महीं विराजे,
सारी तृतीय साधारण ग स्वरेथी छाजे. ३२७
चारुपणुं चतुर्थी लघु मध्यमे धरे छे,
स्वर शुद्ध मध्यमेथी मन पंचमी हरे छे;
स्थिति छठ्ठी सारी मांहे लघु पंचमे करी छे,
संगीत रीत एवी भारे प्रभा भरी छे. ३२८
तेमज चतुर्थ तारें, जे सारी प्रथम देखो,
ते शुद्ध धैवतेंथी, शोभायमान लेखो,
सुखकर निषाद शुद्धें शोभे द्वितीय सारी,
कान्ति तृतीयमां ले, कैशिक निषादें न्यारी. ३२९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सारी सदैव चोथी, लघु षड्जथी लसे छे,
शुद्ध षड्ज पंचमीमां, नित व्हालथी वसे छे;
छठी महीं छटाथी, स्वर रिषभ शुद्ध राजे,
पंचम समेत मन्द्र, आ भेद सूत्र भ्राजे. ३३०

स्वर षड्ज रिषभ बन्ने, आमां न शुद्ध आवे,
मुनिराज सर्व एवा, मत जगतमां जणावे;
जे शुद्ध मेल वीणाना चार भेद जाणे,
नथुराम नित्य तेने सहु वादको वखाणे. ३३१

मध्य मेल वीणा लक्षण.

सवैया एकत्रीशा

मध्य मेळ वीणा मांहे पण उपर तारो चार करो,
ते मांहेना प्रथम तारमां पंचम युत अनुमन्द्र धरो;
द्वितीय तारे मन्द्र षड्ज युत दाखल करी हर्षित होजो,
पंचम युत अनुमन्द्र तार त्रीजे धरी खेद बधो खोजो. ३३२

चोथे तारे चारु षड्ज युत मध्यमने सुखथी स्थापो,
उभय बाजुना तारनी व्याख्या भणी ध्यान धृतिथी आपो,
प्रथम तार जमणी बाजुना त्रणे तार मांहि जे छे,
तेमां मध्यम ग्राम तणो स्वर षड्ज महा शोभा ले छे. ३३३

स्थान मन्द्र पंचमनुं बीजे, मन्द्र षड्ज त्रीजे सुख कूप;
त्रणे तार ए श्रुतिने स्थाने आभा पामे छे अनुरूप,
उपरना पहेला बीजाने त्रीजा तार महीं ज्यारे,
षड्ज रिषभ आदि स्वर सघळा सम श्रुतिना होये त्यारे. ३३४

अनुमन्द्र मध्यम पंचम युत तार तणा ष.रि.शुद्ध स्वरो,
प्रयोगमां लेवा नहि एवी प्रबल प्रतिज्ञा तुर्त करो,
च्यार तारमां पंचम युत जे प्रथम तार कहेवाइ गयो,
तेनी प्रथम सारीमां धैवत शुद्ध विशेष विराजी रह्यो. ३३५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

द्वितीय सारीमां शुद्ध निषादें स्थान मेळव्युं स्नेह धरी,
त्रीजीमां कैशिक निषादनी खूबी नित्य जणाय खरी;
चोथीमां लघु षड्ज, पांचमी मांहि षड्ज स्वर शुद्ध गणो,
रिषभ शुद्ध छठ्ठी सारीमां भाव धरी जन सुज्ञ भणो. ३३६
उक्त तारनी छए सारीमां शुद्ध षड्जने शुद्ध निषाद,
वादक वर्गे विवेक पूर्वक बनतां सूधी करवा बाद;
द्वितीय तारनी प्रथम सारीमां शुद्ध रिषभनुं स्थान लसे,
बीजी सारीमां बळधारी सदा शुद्ध गांधार वसे. ३३७
साधारण गांधार सुशोभित मनाय त्रीजी सारी मंहीं,
चोथी सारीमां लघु मध्यम ले छे स्थान महान सही;
पंचमी सारी मांहि प्रमोदे वसे शुद्ध मध्यम स्वर खास,
लघु पंचम छठ्ठी सारीमां पामे प्रतिदिन पूर्ण प्रकाश. ३३८
मृदु पंचम युत तृतीय तारनी प्रथम सारीमां धैवत शुद्ध,
शुद्ध निषादे सद्य मेळव्युं द्वितीय सारीमां स्थान विशुद्ध,
स्थिति होय कैशिक निषादनी तृतीय सारी मांहे तेवी,
स्नेह धरी चोथी सारीने स्वर लघु षड्ज रह्यो सेवी. ३३९
शुद्ध षड्ज पंचमी सारीमां वस्यो निरंतर व्हाल धरी,
रिषभ शुद्ध छठ्ठी सारीमां रह्यो सर्वना हृदय हरी;
शुद्ध षड्ज ने रिषभ शुद्ध अहीं तृतीय तारना तजो देवा,
मुनीश्वरोना भिन्न भिन्न मत लक्ष्य महीं धारी लेवा. ३४०
मन्द्र षड्ज युत चोथा तारनी छए सारीमां यथा क्रमे,
शुद्ध रिषभ गांधार शुद्ध, ने साधारण गांधार रमे,
लघु मध्यम ते बाद शुद्ध मध्यम ने लघु पंचम लेखो,
नेह धरी नथुराम भेद आ प्रथम गीत पंडित पेखो. ३४१

मध्य मेल वीणा द्वितीय भेद.

दोहरा.

चार तारमांनो प्रथम, मन्द्र मध्ययुत थाय ;
मन्द्र षड्ज युत द्वितीय बनों, शोभा लहे सदाय. ३४२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मन्द्र मध्यमे युक्त करीं, तेमज त्रीजो तार ;
मन्द्र षड्ज चोथे धरी, आनँद लहो अपार. ३४३
स्वर मध्यम श्रुति चारनो, पंचम त्रय श्रुतिवान ;
अहीं मध्य युत तारना, स्वरमां ले छे स्थान. ३४४
षड्ज युक्त तारो महीं, भाव धरी भरपूर;
मध्यम पंचम उभयने, दाडी करवा दूर. ३४५
त्रय तारोना स्वर तणी, श्रुतिओ होय समान;
तोज सुज्ञने अन्तरे उपजे मोद महान. ३४६
पहेला तारनीं प्रथम जे, सारीं होय सुखरूप;
स्वर लघु पंचम ए स्थलें आभा लहे अनुप. ३४७
स्थान शुद्ध पंचमतणुं, द्वितीय सारींमां देख;
शोभा सारीं तृतीयनी, शुद्ध धैवते लेख. ३४८
सारी चोथीमां सुभग, रे'छे शुद्ध निषाद;
निषाद कैशिकथी बने, पंचमीं अति आह्लाद. ३४९
शुद्ध षड्ज छठी महीं, प्रगट थाय धरीं प्यार ;
हवे तार बीजा तणो, व्हालें करो विचार. ३५०
द्वितीय तारनी सारीं जे, गुणभर प्रथम गणाय ;
शुद्ध रिषभनी ए महीं, ज्योति अपूर्व जणाय. ३५१
द्वितीय सारींमां दीप्ति ले, सदा शुद्ध गांधार;
साधारण गांधारनुं स्थान तृतीय सुखकार. ३५२
लघु पंचम स्थितिने लहे, चोथीमां धरीं चाह;
शुद्ध मध्यमे पंचमी, दूर करे दिल दाह. ३५३
छठी सारीमां रहे, लघु मध्यम दिन रात;
एमां मत मुनि अन्यनो, अवरेखो अवदात. ३५४
द्वितीय तारनी सारींना स्वरमां मध्यम शुद्ध;
तेमज लघु पंचमतणुं वसवुं गणो विरुद्ध. ३५५
तृतीय तारनी सारीनुं, प्रीतें करो प्रमाण;
लघु पंचमने लेखजो, प्रथम सारींना प्राण. ३५६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

द्वितीय सारी मांही करे, पंचम शुद्ध प्रकाश,
सारी धैवत शुद्धथी तृतीय हरे छे त्रास. ३५७
सारी चोथीमां स्नेहथी शुद्ध निषाद समाय;
पंचमी रूप पयोधिमां, निषाद कैशिक न्हाय. ३५८
शुद्ध षड्जथी छट्ठीनी, रीति वखाणे दक्ष,
खात्री करजो खंतथी, प्रमाण लहीं प्रत्यक्ष. ३५९.
चारु तार चतुर्थनी, प्रथम सारी पर स्थान,
शुद्ध रिषभ पामी रहे, वदे एम विद्वान. ३६०
द्वितीय सारीमां दीप्ति मय, गणो शुद्ध गांधार,
साधारण गांधारनो, पूर्ण तृतीयथी प्यार. ३६१
चोथी सारीमां चतुर, वेगे करो विचार,
स्वर लघु मध्यम सर्वदा, विविध करे विहार. ३६२
पंचमी मध्यम शुद्धथी, प्रभा धरे छे पूर्ण,
वळी लघु पंचम छट्ठीमां, ताप हरे छे तूर्ण. ३६३
शुद्ध मध्य पंचम लघु, लागे नित्य ललाम,
द्वय स्वर दूर न होय तो, नूर वधे नथुराम. ३६४

आनद्ध वाद्य लक्षण.

दोहा.

विना तारनां वाद्य जे, चर्म मढेलां चारु,
अखिल एह आनद्ध छे, नित्य करे दुःख न्यारुँ. ३६५

आनद्ध वाद्य-भेद.

दोहरा.

पटह. मृदंग. हुडुक गग, अवर हुडुक्का नाम,
करटा. घडा. घडस. ढवस, छे ढक्का सुखधाम. ३६६
कुडुवा. रुंजा. डमरु वर, चक्रवाद्य छे चारु,
कलित पछी करचक्र छे, रसिक रवावह प्यारुं. ३६७

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दुन्दुभि. डंका. देखीए, मन्डी डक्का. मान,
देख डक्कुली सेल्लुका झल्लरी नाद निधान. ३६८
त्रिवली. धोंसा. धारीए, भेरी अने निशान,
तंबकी सह आनद्धना, मनहर भेदो मान. ३६९

पटह भेद.

दोहरा.

देशी. मार्गी द्वय विधि, पुनित पटह ने पेख,
उत्तम. मध्यम ने अधम, एह अभयने लेख. ३७०

पटह लक्षण.

छंद रोला.

आंगुल अठ्यावीश, परिधि लांबी विस्तारे,
मध्य देश आंगुलो साठनो सदाय धारे ;
छे साडा अग्यार आंगुलो शुभ दक्षिण मुख,
साडा दश आंगुलो वाम मुख सदा भरे सुख. ३७१
मनहर समजो माप, उभय मुख गोळ करी जे,
वाम मुखें लोहना दंडनुं कडुं धरी जे ;
दक्षिण मुखने काष्ट, हांसोलीं यो पहेरावी,
मुदें पशुना चर्मथकी, ए लोओ मढावी. ३७२
जाडे चर्म वाम, पातळुं दक्षिण मुख पर,
सप्त सप्त कर छिद्र उभय मुख हांसोलीं अंदर;
द्रढ रेशमनी दोरी, छिद्र मांहि दाखल कर,
कडीओ धातु तणी, कलित दोरी अंदर धर. ३७३
चढ उतारनुं काम, एह कडीओथी करवुं,
षड्ज आदि स्वरतणुं, ज्ञान उरअंदर धरवुं;
बांधी दोरी थकी, गळा मांही लटकावी,
वजाव मार्गी पटह, मुदें मनडुं अटकावी. ३७४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

देशी पटह लक्षण.

छंद रोला.

दोढ हस्त लंबाइ, सप्त आंगुल मुख दक्षिण,
साडा छ आंगुली, वाम मुख व्हाल धरी गण;
आछा पशुना चर्म थकी, नित्य कहेल रीते,
मार्गी पटह प्रमाण, मढी ल्यो पूरण प्रीते. ३७५

खदिर काष्टना खास, पटह ए उभय बनावो,
काष्ट दंडथी एक, एक मुख करे बजावो;
अष्टादश आंगुली, दंडनुं प्रमाण राखो,
अग्रभाग पातळो, पीठथी जाडो दाखो. ३७६

ग्रहण कर्यानी जगो, मीगनुं वस्त्र लगावो,
भात्रे भुजमां ग्रही, पटहने पछी उठावो;
द्रढ पद्मासन करी, बेसी वळी जंघा माथे,
देशी पटह बजाव, अपूरव आनँद साथे. ३७७

पटह पाठाक्षर.[1]

दोहा.

क. ख. ग. घ. ट. ठ. ड. ढ णे. अने, त. थ. द. ध. न. र. ह विचार,
पाठाक्षर ए पटहना, सुभग सोळ उर धार. ३७८

उलट पुलट षोडश थतां, उपजे भेद अपार,
हर पंचाननथी थया, प्रथम पंच मुखकार. ३७९

छन्द हरिगीत.

हर सुमुख सद्योजातथी प्रिय नागबन्धन प्रगटीयो,
मुख वामदेवथी नाम स्वस्तिक नगट पाठाक्षर थयो;

---

1. क्णि. खण. जिण. घण. टग. ठग. तण. थण. दण. धण. हण.

उत्तम अघोरा मुखथकी, सु अलग्न उद्भव पामियो,
तत्पुरुष मुखथी शुद्धि नामक पाठ जगमां जामीयो.
एमज इशान मुखथकी, सम स्खलित नित सुखकरण छे, ३८०
अवनि महीं गुणीओ अमितने भव्य आनंदभरण छे;
विधि. विष्णु. शिव. ने सूर्य छे. वळी चन्द्र जाहिर जाणजो,
ए पंच पाठाक्षर तणा शुभ पंच देव प्रमाणजो. ३८१

नागवन्धन भेद.

दोहा.

प्रथम पवन सुप्रसिद्ध छे, नामण द्वितीय विचार,
तृतीय एकसर समजजे, द्विसर चतुर्थ प्रकार. ३८२
पंचम शुभ संचार छे, षड विक्षेप समर्थ,
नागवन्ध सप्तम गणो उत्तम समजी अर्थ. ३८३

स्वस्तिक भेद.

वलि कोहल आदि गणो, वर कुण्डली विक्षेप,
पछी प्रफुल्ल विक्षेप छे, नित्य रहे निर्लेप. ३८४
संचारी विलखी सुभग, खरो खण्ड अहिवन्ध,
पूरक प्रगट प्रमाणजे, स्वस्तिक भेद स्वबन्ध. ३८५

---

१ ननगिड गिडदगि. २ गिड गिड दत्थ.
३ किट तत ४ नखु नखु ५ खिर तकिट.
६ थोंगि थोंगि. ७ टन गिन गिन नगि.
८ थो हंता. ९ थोंथों गोंगों. १० थोंगिन थोंगिन थोंगिन.
११ थोंगिन तत्ता. १२ किट थोंथों गिन खेंखें. १३ टकु झेंझें.
१४ तत किट कि.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अलग्न भेद.

अलग्नने उत्सार छे, पछी विलोक विश्राम,
विषमखली एना पछी, नित्य गणो नथुराम. ३८६
सैरी स्फुरी ने स्फुरण छे, सप्त भेद सुखरूप,
अलग्नथी उत्पन्न थइ, आनँद दिए अनुप. ३८७

शुद्धि भेद.

शुद्धि स्वरे स्फुरण उच्छल वलते ते पछी अघट तकार.
गण माणिक्य सुवलि सह, सत भेद सुखकार. ३८८

सम स्खलित भेद.

छे समस्खलित विकट सदृश, खलित अर्द्धखली नाम,
अनुछल्ला ने खुत्त गण, नित्य भेद नथुराम. ३८९

नन्दीजनित. पाठाक्षर.

कोणाहत. संभ्रांतने त्रिषम. अवर्तम धार,
नंदी मुखथी निकळ्या, प्रिय पाठाक्षर चार. ३९०

---

१. नन गिड गिड दगिदा. २ दत्थारिकि दत्थरिकि.
३. तकि धिकि तकि धिकि. ४ टगु नगु टगु टगु.
५ खिरि तु खिरि तु. ६ खिरि खिरि.
७ न र कि त्थ रि कि. ८ दरि गिड गिड दगिदा.
९ ट ट कु ट ट. १० न न गि न खरि खरि.
११. दखें दखें दखें खे. १२ थों गिनगिथों गिनगि.
१३ तत्ता. १४ धिधि. १५ तझें तझें झें.
१६ गिरिग्ड गिटिग्ड. १७ कण कण कि.
१८ धिधि किट की. १९ दिगि नागि दिगि नगि.
२० धर कट धर कट. २१ दों न कट दों न कट.
२२ खुं खुं धरि. खुं खुं धरि कर गिड कर गिड.
२३ दर गिड दर गिड गिरि गिड द. दाण किट. मट ट कु. ।
२४ दह्रें दहें खुं खुं दह्रें खुं खुं दह्रें त त कि त त कि.
२५ द द गिद. गिगिरिकि द द गि थों थों गिद थों गिद ॥

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हस्त पाठ भेद.

सवैया एकत्रीशा

आनँद घर उत्फुल्ल. खलंक छे पाण्यन्तर निरकुट्टक जाण,
दण्ड हस्तने पिण्ड हस्त, युगहस्त अहर्निश उरमां आण ;
ऊर्ध्व हस्त. स्थूल हस्त अने अर्धार्ध पाणि प्रीतिथी पेख,
पार्श्वपाणिने अर्धपाणि, कर्तरी. समकर्तरी अवरेख. ३९१

विषम कर्तरीने समपाणि. विषमपाणि विगतेथी विचार,
पाणिहस्त छे प्रबल ए पछी, नित्य नागबन्धक चित धार ;
एह पछी उत्तम अवघट छे, स्वैरिन समग्र छे सुखधाम,
एकविंश ए हस्तपाटना, नौतम भेद कहे नथुराम. ३९२

१. क हे क हे. २. दांगिड गिड गिदा.

३. द गि ड दां. ख रि क्क दां खरिक्क. ४. दात रि कि ट दां खरि खरिदां। . ५. थरि किटझें थरि किटझें.

६. द्रें द्रें दां दां. ७. द र गिड दां दां. ।

८. खुं खुं द. खुं खुं द. ९. खुं दा. खुंदा. ।

१०. थ र गि ड. दा गि ड. द गि ड दगिड

११. द गि ड द गि ड द र गिड दरगिड. १२. टि रि टि रि टि रि कि ट थों दि गि दां तिरिटिरि कि टझें झें. तकिकिट.

१३. झिंनकिट. कनकिट. किटझेंथो दिगिद् तिरिटि. तिरिटिकि.

१४. टि रि टि रि थों दि गि द टि रि टि रि कि द.

१५. दां गिड गिड दां दां। १६. दां दां गिड गिड दां दां.

१७. तर गिड. दरगिड. १८. तत गिडि किट.

१९. तत गिड गिड दगि ट न गिन गिन नगि.

२०. तकिट तकिट तकि २१. तकिट कि ट त क.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अन्यषोडश हस्त.

छन्द हरिगीत.

उल्लोल पोण्यन्तर अने, निर्वोपं नित्य वखाणीअें,
छे खण्डकर्तरी, खास पछीं, प्रिय दण्डहस्त प्रमाणीए,
समनख अने बिन्दु सरस, गण यमलहस्त उमंगभर,
रेचित सदा रसरूप छे, भयहरण तेह पछी भ्रमर. ३९३

त्रिद्रद्रिलास विलासदायक, अर्धकर्तरी याद कर,
एना पछी सुअलग्न सुंदर, भ्रांतिथी रेफनुं ध्यान धर;
समपाणि सुख करनार छे, परिवृत्तहस्तक पेखीअें,
ए सुभग षोडश हस्तने, नित लक्षमां लइ लेखीअें. ३९४

---

१. झेंथां झेंथां थांथां झें. २. नखें नखें नखें खेंखें खें नखे नखेंनखें खें खें खें खें दखुं खुंद खुंद. ३. नखखि थोंथों दिगिदा. ४. दां खु खु दां खुखुग थोंट झेंदें झेदों गिथोंटे. । ५. खुखुणं खुखुणं झेंद्र झेंद्र टिरि टिरि. ६. रह रह तरकिट धिकिट तकिधकि टें हें टहें त्र. ७. दें दिगि दें दिगि गिर गिड. ८. कुंद कुंद झेंद्र झेंहें झेंहें. ९. दें दें थोंथों दें दें नखझें नहन हटें॥ १०. खेखेणं खुंखुणं खु २ णं झेंद्र २ ण ह करें झें. ११. तणे ३ तिर झों झों द्रि ३ त्रां। १२. दो खुं खुं ३ ग्रेह घेट ३ झेहें धिगिगि धोंटें. १३. खुं खुं २ नखें झेहे गि. २ थोंटे. १४. हनथों झेंझें द्रं २ झेंद झेंहेंद्र. १५ नन गि. २ देगि थों गिनह २ झें॥ १६. झें थें ४. गिणनां ३ ॥

अष्टाव प ठ हस्तक.

रोलावृत्त.

तलँ प्रहारने प्रहर वलितँ पछीँ गुरुगुंजित छे,
अर्धसंच प्रपंच, त्रिसंचँ, विपर्यहस्तक छे;
अभ्यस्तक ए पछी, अष्ट भेदो अति सुखकर,
नित्य नित्य नथुराम, चतुर गुणी चाहें चित्त धर. ३९५

अन्य उभय पाठ.

दोहा.

भ्रमर भेद साथे मळ्यो, गुंजित जहां गणाय;
तल प्रहार ने वलित मळी, चित्र पाठ द्वय थाय. ३९६

संच लक्षण.

पाठाक्षर प्रगटावतां, पटह हुडुक्कामांय,
काय कंप कहेवाय छे, सुभग संच सुखदाय. ३९७.

संच भेद.

उत्तम मध्यम अधम छे, त्रिविधे संच सुखरूप,
अनेरे ओ आनंदथी, प्रान सहित गुणी भूप. ३९८

---

१. दे थों द्रें धिकिट किट झें धितिरि। २. झेंदां थों गिदि गि-द।२। किट धोंथों ॥ ३. खुंखुं दरि। दां थोंगि. ४. थुकर।४। थों २ गिडिदा।२। धिकि थोंटें. ५. खेंखें दरि।२। खें खेंट।२। ६. खेंद खें खें दखेंद। ७. खेंदं धरि।२। थों दिगि धरिखें।८. खर कट।२॥ ८. खण गिण खड्गि।२। तकि धिकित्त॥

९. दं थं द्रें झेंद्र खुं खुं धरि।१। दथों गि।१। कुंजि त्त खुं खुं धरि।२। धरि गिगिड।२। दहें।२। खुं खुं दहें।२। गिरि गिडिद।२। दत्थोंगि थोंगि।२।

१०. थुकर।२। गिणणं।२।

उत्तम संच लक्षण.

सोरठा.

बजावतां बहुवार, पोंचो ने अंगुष्ट ज्यां,
कंप धरे त्यां धार, उत्तम संच अनुभवे. ३९९

मध्यम संच लक्षण.

भुजा उपरनो भाग, अने स्कन्ध कंपे जहां,
उरें धरी अनुराग, मध्यम संच मनाय त्यां. ४००

अधम संच लक्षण.

सोरठा.

डाबो पग दुःखदाय, व्हाले पटह बजावतां,
कंपे त्यां केहवाय, अधम संच उद्भव थयो. ४०१

पाठविन्यास भेद.

दोहा.

बोल्लावणीं चल्लावणी उड्डय कुचुम्बिणीं वेद,
चारुं स्वर्णिकाना उभय, शुद्धा चित्रा भेद. ४०२
अलग्न ने परिस्वणिका, समें प्रहर सुखरूप,
कुडुपवारणा पछीं गणो, करवारणा अनुप. ४०३
दण्डहस्त देखो पछी, नौतम घनरव नाम,
द्वादश भेदो दिव्य ए, नित्य कहे नथुराम. ४०४

बोल्लावणी लक्षण.

रोळावत.

निज बुद्धिबळ थकी, पाठ नाना प्रकारना,
रचे युक्तिओ सहित, आणीं उद्गार प्यारना;

प्रथम द्वितीय खंडमां आदि मध्यने अंते,
दे "दंकार" विशेष, जाण वोल्लावणी खंते. ४०५

चल्लावणी लक्षण.

दोहा.

पाठाक्षरनो समूह ज्यां, भिन्नाक्षरनो जोय,
"दंकारादिक" दे तहां, चल्लावणी शुभ होय. ४०६

उडुव लक्षण.

रोलावृत्त.

वाम हस्तथी रीति जहां, तल हस्तनी करीने,
दक्षिण कर अंगुलिं, त्वरित संकोची धरीने;
वजावतां वडभाग, उडुव उद्भव पामे छे,
समजी जेने सद्य, गुणी सुखमां जामे छे. ४०७

कुचुम्बिणी लक्षण.

दोहा.

स्वस्तिक हस्तनी रीतिथी, वजावतां बहुवार,
दे "खोंकार" विलंबथी, कुचुम्भिणी त्यां धार. ४०८

चारुस्त्रवणिका लक्षण.

एक हॅंग द्वय करथी वा, पाठाक्षर क्रम युक्त,
गाढ ध्वनिथी वजवतां, चारुस्त्रवणिका उक्त. ४०९
शुद्ध पाठथी वजवीओ, त्यांए शुद्धा थाय,
भिन्न भिन्न पाठो भळे, त्यां चित्रा कहेवाय. ४१०

अलग्न लक्षण.

रोळावत.

डंका वा अँगुलिमी, किनारथी विना लगाव्ये,
पुडाथी वजवीने, मधुरध्वनि ज्यां प्रगटावे;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अलग्न एनुं नाम, विश्वमांही वखणाये,
भव्य गणी गुणभुवन, सदा गुणींगण गुण गाये. ४११.

परिस्त्रवणिका लक्षण.

दोहा.

ज्यां समपाणि हस्तने, कर्तरी हस्तथी होय,
वजाववुं व्हालें तहां, **परिस्त्रवणिका** जोय. ४१२

समप्रहार लक्षण.

उभय हाथथी एक संग, पुडापर धरी प्यार,
ताडन थायें त्वराथकी, **समप्रहार** सुखकार. ४१३

कुडुपवारणा लक्षण.

डंकाना ताडन थकी, पाठाक्षर प्रगटाय,
कुडुपवारणा कोडथी, ए स्थलमां स्थिर थाय ४१४

करवारणा लक्षण.

पाठाक्षर प्रगटायें ज्यां, करथी धारी कोड,
कवित तहां **करवारणा**, गणता गुणी शिर मोड. ४१५

दण्डहस्त लक्षण.

दोहा.

कोमल कर दक्षिण अने, तीक्ष्ण वजावे वाम ;
दण्ड हस्त त्यां देखीए, नेह धरी नथुराम. ४१६

घनरव लक्षण.

एक करथी वा उभयथी, गाढ ध्वनिथी सुखधाम ;
पाठाक्षर अति प्रेमथी. वाजे विण विश्राम. ४१७
प्रगट थाय घनरव तहां, घनरव सम सुखरूप ;
प्रबळ पाठ विन्यासता, द्वादश भेद अनुप. ४१८

गमक रचना भेद.

सवैया एकत्रीशा.

प्रथम वल्ली. पछी वल्ली पाठ छे द्वितीय तृतीय घत्ता धारो,
भेद चतुर्थ, झडप्पर्णी पंचम, प्रज्ञ जनोने अति प्यारो ;
षष्टम अनुस्रवणिका धरो उर, सप्तम हस्त अंग सहचार,
चतुरस्र ने त्र्यस्र. मिश्र पछी, खण्ड हस्तना भेद विचार. ४१९
अष्टम जोडणी, नवम त्रिगुणा, प्रसाद्य आदि अष्ट प्रकार,
पञ्चहस्त छे दशम दिव्य अति, पञ्चपाणि एकादश धार ;
पञ्चकर्तरी द्वादश देखो, तेम त्रयोदश चन्द्रकला,
गणो गमक रचनाना गुणी जन, मृदंग माटे भेद भला. ४२०

वल्ली लक्षण.

दोहा.

कलितें स्कन्धनो कंप करी, पोंचा अंगुलि समेत,
वजावतां प्रगटावीअें, लहरी नेह निकेत. ४२१
वल्ली त्यां वखणाय छे, गमक भेद गुणग्राम,
ग्रहण करो गुणीगण सहु, हृदयें धारी हाम. ४२२

वल्लीपाठ लक्षण.

प्रथम कहेला पाठमां, मळे अर्ध वा एक,
वाजे मुदे मृदंगमां, वल्लिपाठ सविवेक. ४२३

घत्ता लक्षण.

प्रथमखंड "झेंकार" युत, बोल्लावर्णोनो ज्यांय,
तालबद्ध रीति थकी, वाजे घत्ता थाय. ४२४

भेद लक्षण.

पाठाक्षर बहु वाद्यना, मिलावी एथी अखेद,
पाठ निराला प्रगटीने, वजावीअें ते भेद. ४२५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

झडप्पणी लक्षण.

आदि मध्यने अंतमां, विविध वाद्यना पाठ,
मेळवी क्रम सह वजवीअे, झडप्पणीनो ठाठ. ४२६

अनुस्रवणिका लक्षण.

दोहा.

जहां पाठना अक्षरो, विलोकीए बहुवार ;
व्हालें वाद्य वजावतां, अनुस्रवणिका विचार. ४२७

हस्त लक्षण.

ज्यां युग चतुर्थ, अष्ट वा, वा षोडश रचीं खंड ;
पाठाक्षर प्रगटावीअें, ए छे हस्त अखंड. ४२८
चंचतपुट आदि जहां, प्रीतें ताल प्रगटाय ;
भेद हस्तनो हर्षथी, त्यां चतुरस्त्र गणाय. ४२९
केवल चंचतपुट जहां, प्रगट ताल परखाय ;
द्वितीय भेद देखाय छे, त्र्यस्त्र हस्तनो त्यांय. ४३०
मळेल एक बीजा जहां, प्रगटे तालें स्वरूप ;
भेद हस्तनो मिश्र ए, अवरेखजो अनुप. ४३१
खंड ताल खंते करी, पामे जहां प्रकाश ;
हरदम त्यां तुं हस्तनो, खण्ड भेद गण खास. ४३२

जोडणी लक्षण.

जहां अर्ध चोथो कही, अथवा अष्टम भाग ;
पूर्ण पाठ प्रगटे तहां, लिये जोडणी लाग. ४३३

त्रिगुणा लक्षण.

दोहा.

एक गुणो करी एकने, द्विगुणो द्वितीय कराय,
तृतीय खंड त्रिगुणो करी, श्रुतिथी जहां धराय. ४३४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

त्रय खंडो रचीं तंतथी, पाठाक्षर प्रगटाय,
त्वरित तहां **त्रिगुणा** बने, सुगुणीथी समजाय. ४३५
त्रय खंडो रचीने फरी, आदि उभय रचाय ;
ते त्रिगुणना भेदमां, प्रीतें **प्रसाद** गणाय. ४३६
त्रयखंडो रचीने फरी, रचीअे आदि खंड,
द्वितीय भेद ए दाखवो, त्रिगुणामां सुखकन्द. ४३७
त्रय खंडो रचीनें तुरत, फरी मध्यम उचराय,
तृतीय भेद त्रिगुणा तणो, प्रेम सहित परखाय. ४३८
रचाय त्रय खंडो पछी, द्वितीय खंड द्वय वार,
चतुर्थभेद चित्तें धरो, त्रिगुणा करी तयार. ४३९
उभय वखत रचीअें जहां, अंतिम खंड उदार,
फरी द्वितीय रचीए तहां, **पञ्चम** थायॅ प्रकार. ४४०
त्रय खंडो रचीने पछी, प्रथम द्वितीय प्रगटाय,
फरी द्वितीय देखाडीअें, **षष्ठमभेद** भणाय. ४४१
प्रथमॅ द्वितीय प्रगटी पछी, तृतीय खंड द्वयवार,
द्वितीय खंड फरी वजवीअें, ए **सप्तम** सुखकार. ४४२
त्रयखंडो रचीने रचो, तृतीय खंड युगवार,
वजावीअें फरी द्वितीयने, ए **अष्टम** उर धार. ४४३

पञ्चहस्त लक्षण.

हस्तपाटने मेळवी, कर शब्दोथी ज्यांय,
प्रेम धरी प्रगटावीअें, **पञ्चहस्त** छे त्यांय. ४४४

पञ्चपाणि लक्षण.

अर्ध पाणि आदिक तणा, पाणि हस्तनी रीत,
प्रगट थाय पाठाक्षरो, **पञ्चपाणि** धर चित्त. ४४५

पञ्चकर्तरी लक्षण.

कर्तरी हस्तनी रीतथी, पाठाक्षरना भाग,
स्वल्पॅ स्वल्प मेळवी मुदे, **पञ्चकर्तरी** माग. ४४६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चन्द्रकला लक्षण.

चन्द्रकला पेठे जहां, वधवट मात्रा होय,
त्वरित तालने त्यां कहे, चन्द्रकला सहु कोय. ४४७

वाद्यप्रबन्ध भेद.

रोळावृत.

यति ओता ने गजर, रिगोणी कवित पछी पद,
मेलापक उपशम उदग्राह अने प्रहरण वद;
वत्सक च्छंडक तुडुक मलप मलपांग महद छे,
मलपपाटने छेद् थकी, रूपक सुखहद छे. ४४८
अंतर अंतरपाट खोज खण्डयति अवयति,
खण्डपाटने खण्डछेद छे खण्डभेद कृति;
खण्डक पाछळ खण्डहुल्ल सम पाटवाद्य भण,
ध्रुवक अंगने ताल वाद्य सुविताल खलक गण. ४४९
सुखकर छे समुदाय, जोडनी उडुव अनुपम
ते पछी छे तलपाट उद्गवर्णी तुण्डक उत्तम;
अंगपाट पैसार भेद त्रेंतालीश भाळो,
वाद्य प्रबंध वरिष्ठ, इष्ट गणी उरे उतारो. ४५०

यति लक्षण.

दोहा.

जहां अनेक विराम सह, समलगाथी सुखदाय,
वाद्यखंडने वजवीओ, कलित यति कहेवाय. ४५१

ओता लक्षण.

हथेळीना ताडन थकी, पाठाक्षर प्रगटाय,
बहु "दें कारे" दीपतो, ओता उद्भव थाय. ४५२

---

१. गड्द्‌ गथों गकथोंटे गड्दगथों गकथोंटे गड्दगथों गकथोंटे।
२. तकथों रेगड तक्कों रेगडथों रेगडतक्धिक् थोंगटे।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गजर लक्षण.

एक तालीथी आदिमां, अन्य तालथी अन्त,
पाठाक्षर प्रगटे तहां, मानो गजर महंत. ४९३

रिगोणी लक्षण.

त्रय खंडो शुद्ध पाठना, अन्य कूटना होय,
शुद्ध कूट ताडन थकी, जनित रिगोणी जोय. ४९४

कवित लक्षण.

प्रथम खंड न्हानो अने, शुद्ध पाठनो थाय,
वा सीधा अक्षरतणो, धारी कोड कराय. ४९५
पुनः शुभ उद्‌ग्राहनो, ध्रुवा अंतरो धार,
ए उद्‌ग्राहनो अंतमां, ताल पूर्ण कर यार. ४९६.
अथवा ए उद्ग्राहनो, अर्ध भाग उर आणी,
पूर्ण ताल करी प्रेमथी, कवित भेद ले जाणी. ४९७

पद लक्षण.

स्वल्प पाठ उद्‌ग्राहनो. स्वल्प ध्रुवा पण होय,
वा पाठाक्षरमां प्रगट, कहे ध्रुवा सहु कोय. ४९८

---

१. तड्दग्थों गक्कथों हरघेंथों हटं।

२. टैथों टैगें थोधिप्तोंङि ध हटे॥ तक्कगंद ड र द गडक् धिक गद्-उद्धिक्क तक गद् उङ कथों गतक् धिक् धिक् कुधिटें गेंनथों थोंग थोंगक्कथों॥

३. गडदक् दगि न दं दागिनथोंग धिक्कांत काधितक देहें कद् गद्ङ दरिक। २। कथरीकुं।

४. तकिट धिकिट धिधिकिट धिक्किट गांङ्धक तक धिकथों तकिट धिधिकिट धिकि गग धि धिकिट धिक्कि गुङा। गधिधिग किड गुडागधिं गथों।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रबंध केरा मध्यमां, यति बजावी सुखरूप,
पाठाक्षरथी छोडीण, ए पद भेद अनुप. ४५९

मेलापक लक्षण.

ताल एक ताली तणा, द्रुत मानमां सप्रेम ;
अने नृत्य आरंभमां, नौतम धारी नेम. ४६०
पूर्ण प्रबंध बनाववा, स्वल्प वाद्यनो खंड ;
वारंवार वजावीअें, मेलापक सुखकन्द. ४६१

उपशम लक्षण.

शुद्धादिक पाठथी जहां, वा अक्षरथी शुद्ध,
लघु प्रमाण कोमल ध्वनि, वर शशिखंड विशुद्ध. ४६२
नेहें प्रगटे नृत्यमां, कोमल अक्षर धारी,
उत्तम उपशम भेदने, व्हालें लिओ विचारी. ४६३

उद्ग्राह लक्षण.

प्रथम खंड ढक्का तणो. वाद्य प्रबंधनी मांर,
शुद्ध पाठाक्षरथी प्रगट, नेहें करो सदाय. ४६४
पूर्ण प्रबंध थता लगी, ए शुभ खंड सत्राह,
एक वार के युग रखवा, बजावतां उद्ग्राह. ४६५

प्रहरण लक्षण.

ध्रुवामांहि धृति धारी के, अभोग मांहि अखंड,
अनेक पाठोथी करो, उच्च ध्वनि युत खंड. ४६६

१, थों ग टें ग ड् दग्न थों ग टें ।
२. टें थों क्क गे थो ट टे थों ह ट गे था थें थों टे ॥
३. ते टें है त ट्टें त क्क त टें
४. क थों ग क्क थों ग त्थों ग ट थों ग क्क थो ग थो ग.
थो क् क थो ग क् थों क ट थो ग क् थो क टं थो ग क् ।
ग ड द क्का धि क थों ग क् । ट गें दं थों ह दि ङ् न कु
कु थि त्थो ह धि क्कं थि टें ॥

એક વાર કે યુગ વખત, એક તાલી પ્રતિ તાલ,
નિત્ય નૃત્યમાં યોજીએ, એ પ્રહરણ ગુણમાલ. ૪૬૭

વત્સક લક્ષણ.

કરી ખંડ ઉદ્ગ્રાહનો, પછી વધારી પ્રેમ;
અવર ખંડ શુદ્ધ પાઠથી, નિર્મો ધારી નેમ. ૪૬૮

કૂટ પાઠથી વા કરો વા શુદ્ધાક્ષરવાન;
ઉભય વખત એ ઉભયને, પ્રગટો નેહ નિધાન. ૪૬૯

પ્રથમ ખંડ ફરી પ્રગટ કરો, દ્વિતીય ખંડ જે જાણ;
અર્ધપાઠ અક્ષર પ્રગટો, અર્ધ વાદ્યમાં આણ. ૪૭૦

દ્વિતીય ખંડ પૂરણ કરો, રસિક રાખી એ રીત;
વત્સક ભેદ વિલોકજો, પ્રતિદિન ધારી પ્રીત. ૪૭૧

ચ્છંડણ લક્ષણ.

કૂટાક્ષરથી ખંડ રચ, વા શુદ્ધાક્ષર ધારી,
પ્રગટ કરીને છોડી દે, ઉરમાં વાત વિચારી ૪૭૨

વાદ્યતણી ભાતી થકી, પ્રીતે ખંડ પ્રકાશી,
એમ ભેદ આનંદપ્રદ, છે ચ્છંડણ સુખરાશિ. ૪૭૩

---

૧. ગ ડ્ દ ગ્દં દં ગ ડ્ દ ત્થિ ક્ક ટ ત ક ધિ ક્ક ટ ત ક્ ધિ ક્ ત ક્ । ખ ડિ ખ ડિ ખ ખ ન ખ ખિ દ ક્ ઝેં ખ ખ ન ખ ખિ દ ક્ત દ ક્ક ધિ ક્ક ક્ ક ગિ ણ ન ગ થોં ગ દિ હિ કિં થો ગ દિ હિ ક્કિ ત ક ધિ ક થોં ગ ટે ગ ડ ક્ ત ક ધિ ક થોં ગ ટેં ઝ ક ઝ ખિ ખિ ન્ન ખ ન ખ ખિ ત હૈં ખ ખ ન ખ ઝેં ખ ન ખ રિ વ તુ ડિ હિ દિ હિ ક થોં ગ ક્ ત ક ધિ ક ત ક્ક રે ઘ ટ થ થોં ગ ક્ક થોં ગ ક્ક ટેં ।

૨. ઉદગુદેદં ગુંદે દગ્નથોં હ ટ હ ટ હેં યા હથોં તકથોં તકથોં ધિ ક થોં તક ધિધિ થોંથોં થટે ટૈથોં તેંથોટે ।

तुडुक लक्षण.

ज्यां उदग्राह ध्रुवा अने, अभोगमां सोल्लास,
स्वल्प खंड पाठाक्षरे, प्रगटये तुडुक प्रकाश. ४७४
अथवा ध्रुवा अभोग पछीं, प्रगट थाय उदग्राह,
तुडुक भेद प्रगटे तहां, नित्य कहे गुणी नाह. ४७५

मलप लक्षण.

एक वखत वा युग वखत, सु उदग्राह प्रगटाय,
ध्रुवका एकज स्थानपर, वारवार वरताय. ४७६
व्यापक पाठाक्षर थकी, खंते रचीए खंड,
यति निरंतर होय त्यां, मानो मलप अखंड. ४७७

मलपांग लक्षण.

मलप प्रगट करी मलपनो, एक खंड स उमंग,
स्वल्पाक्षरनो प्रगटीओं, मान एह मलपांग, ४७८

छेद.

झट झट जहां हथेलीथी, रहीं रहीं वाद्य वजाव,
ताल न तूटे छेद कहीं, भला गुणीने भाव. ४७९

रूपक.

पाठाक्षर उद्ग्राहना, मेळवीं करो उचार,
एक वखत वा युग वखत, परम वधारी प्यार. ४८०

---

१. टें दंद गित थोंगटें धिकततथतटे हक थोंटे गेधिकत टथों
२. गड्दक् तद्दित्थों हथों हरे घंटे गणनगतक धिक कथौं हटें हैं
थोदगक। तक्क तहधिक थोक कोद्दकथो ३ हट्टै डिं खिखर
खिखि खेर थटैं हैं थोहगकदिहं क ट द हं क ट ग ड् द ग थ
रिकटै २ थरिकटतक ३ ततक धिधिक थोऽ थोंदटें।

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मध्ये लय राखी करी, फरी पाठाक्षर जोड,
दिव्य दंत कृत करो सदा, कहे रूपक धरी कोड. ४८१

अन्तर.

जहां ताल सह वाद्यमां, गीततणो क्रम थाय,
मद्दद गुणीना मत थकी' ए अन्तर कहेवाय. ४८२

अन्तरपाट.

आदि निबद्ध बजावीने, फरी पाठाक्षर धार,
ताल छन्द युत गीतमां, अन्तरपाट विचार. ४८३

खोज.

कोमल कर चालाकीथी, गहरी ध्वनिथी ज्यांय,
पाठाक्षर प्रगटावीऍ, खरे खोज छे त्यांय. ४८४

खण्डयति.

पाठाक्षरनो खंड रची, वारवार यति पेर,
पूर्ण प्रबंध लगी प्रगटी, हाल खण्डयति हेर. ४८५

अवयति.

ताल अंत विश्राम लइ, वारवार यति तुल्य,
'टेंटें' पाटाक्षर प्रगटी, अवयति गणो अमूल्य. ४८६

खण्डपाट.

ज्यां पाठाक्षर पुंजना, अक्षरखंड तमाम,
भिन्न भिन्न करी प्रगटीऍ, खण्डपाट सुखधाम. ४८७

खण्ड छेद.

पाठाक्षरना पुंजना, स्वल्प स्वल्प करी खंड,
प्रबंधमां प्रगटावीऍ, खण्ड छेद सुअखंड. ४८८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

खण्ड भेद.

ज्यां पाठाक्षर खंडना, स्वर खंड करी खास,
भिन्न भिन्न भली भातथी, प्रीते करो प्रकाश. ४८९
फरी ए खंडो मेळवी, एक खंड करी आप,
प्रेम सहित प्रगटावतां, खण्ड भेदने माप. ४९०

खण्डक.

एक खंडमांथी करी, उत्तम खंड अनंत,
भिन्न भिन्न सहु प्रगटीने, खण्डक गण धरी खंत. ४९१

खण्ड हुल्ल.

श्रोतोगता यति महीं, पाठाक्षरना खंड,
प्रकाश करतां प्रगटशे, खण्डहुल्ल सुखकन्द. ४९२

सम.

प्रबंधना पाठाक्षरो, गीत नृत्य अनुरूप,
ताल यति सह वजवतां, सम समजे गुणी भूप, ४९३

पाटवाद्य.

ज्यां केवल पाठाक्षरे, ताल भरी गुण जेह,
प्रबंधनो निर्वाह कर, पाटवाद्य छे एह. ४९४

ध्रुवक.

ज्यां अनुरंजन कारणे, खंड रची सुखदाय,
अमित वादना मध्यमां, प्रगटे ध्रुवक गणाय. ४९५

अंग.

"तताखिट" पाठाक्षर विना, "दंदे टेंटे झेंझें"
प्रेमे ग्रहीने पूर्ण कर, ताल अंग गण स्हेजे. ४९६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तालवाद्य.

चंचतपुट शुभ तालमां, "झेंझें" अक्षर लाव,
चोसट मात्रा खंड रचीं, तालवाद्यें पगटाव. ४९७

विताल.

एक गुरुना द्वय लघु. द्वय लघुनो गुरु एक,
गुरु लघु स्थाने धारीओं, व्हालें करी विवेक. ४९८
प्रबंधादि के मध्यमां, वा अंतमां विशाल,
विकृत मात्राओ थतां, वेगे बने विताल. ४९९

खलक.

अंगुठो फेलावीं करीं, सीधी अंगुली साव,
पताक हस्तनीं रीतिथी, पाठाक्षर पगटाव. ५००
एने अति आनंदथी, सर्वे सुगुणीं सुजाण,
खलक नाम खासुं दिए, जगने करवा जाण. ५०१

समुदाय.

सहु वाद्योमां स्नेहथी, एक साथ पगटाय,
पेम सहित पाठाक्षरो, सहु कहेंछे समुदाय. ५०२

जोडनी

अनेक पाठाक्षरतणो, एक एक लइ अंश,
खास एहनो खंड रच, हेतें शुभ गुणी हंस. ५०३
भिन्न भिन्न तालो महीं, प्रगट करी धरी स्नेह,
महद गुणीना मत थकी, उत्तम जोडनी एह. ५०४

उडुव लक्षण.

लय युत ताल महीं जहां, लय तजी जळवी ताल,
प्रगट थाय पाठाक्षरो, कहो उडुव धरी व्हाल. ५०५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तलपाट.

मलप पाटनी रीतिथी, पाठाक्षर द्वय चार,
मेळवीने तलपाटमां, करीं प्रबंध अनुसार. ६०६

उद्दवणी.

'घोंटे' अक्षर आपी वा, निज पाठाक्षर धारीं,
आदि अंतमां खंतथी, दे 'देंकार' विचारीं. ६०७
ललित विलंबित लय महीं, रसभर खंड रचाय,
ए स्थलमां आनंदथी, स्थिर उद्दवणी थाय. ६०८

तुंडक.

ज्यां प्रबंध के गीतने, आदि मध्य के अंत,
गहरीं ध्वनि के तीक्ष्णथी, वजावीएं धरी खंत. ६०९
हाथ तणी चालाकीथी, खंड प्रगटाएं खास,
प्रगट थाय त्यां प्रेमथी, तुंडक सहित हुलास. ६१०

अंगपाट लक्षण.

दोहा.

ज्हां सरल पाठाक्षरें, वारवार वजवाय,
खंड अखंडानंदथी अंगपाट स्थिर थाय. ६११

पैसार.

एक खंडना खंड करीं, भिन्न भिन्न सह भाव,
भिन्न भिन्न वाद्यो महीं, प्रगटो धरीं चित्त च्हाव. ६१२
सहु वाद्यो मांहि करो, एक ताल निर्वाह,
प्रेम धरी पैसार ए, नित्य कहे गुणी नह. ६१३
पटह भेद पाठाक्षरो, हस्त पाठ विन्यास,
वाद्य प्रबंध गमक सहित, करे मृदंगे वास. ६१४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मृदंग लक्षण.

छंद रोला.

वितयसार वा खदिर, रक्त चंदन सुखराशि,
शुष्क काष्ठ पर करो, नित्य कारीगरी खासी;
शुद्ध स्वच्छ सळ हीन, गांठ फाटो विण सुंदर,
मृदंग करवा शोध, काष्ट कोविद कारीगर. ९१५
आंगुल साडा एक वीश, मध्ये मृदंग कर,
द्वादश मुष्टि दीर्घ, प्रीतथी प्रमाण उर धर;
चौद आंगुलीतणुं, चारु दक्षिण मुख करीए,
सत्तर आंगुलतणुं, वाम मुख करी उर ठरीए. ९१६
उभय मुखें लोहना, कडां वा कलित काष्टना,
लपेट चर्मे ललित, युक्तिथी थाय भ्रष्ट ना,
आंगुलने अंतरे, छिद्र यत्र प्रमाण हामे,
उभय कडे करी वीश, वीश द्वय मुख मढ चामे. ९१७
छिद्र महीं चर्मनी, दोरी चाहेथी धरजे,
खेंचीने खुबीथी, प्रगट प्रीतें ध्वनि करजे;
दक्षिण मुखना चर्म, मध्य षड् आंगुल मांही,
लोह चूरनी श्याही, जमावी दे चित्त चाही. ९१८
गोधूम पिष्ट पलाळी, पाणीमां पिंड बनावो,
षड् आंगुल मध्यमां, वाम मुख परें लगावो;
छिद्र करी स्वर सात, वजावो आनंद धारी,
मरदल मुरज मृदंग भेद त्रय भव्य विचारी. ९१९

मृदंगना शुद्ध पाठाक्षर.

सोरठा.

त धि थो ठें उरआग, ने हें दें सह सप्त ए,
मृदंगना मुखखाण, पाठाक्षरो पमाणवा. ९२०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

ट ठ ल्हां द्र ध लां खास, वाम मुखे वजवाय छे,
वसे मृदंगे वास, सोळ पटह पाठाक्षरो. ९२१

कूट पाठाक्षर.

सोरठा.

कटे खटे कहेवाय, गटे घटे गणवा पछी,
कूट कहीं गुणीं गाय, पाठाक्षरो प्रसिद्ध ए. ९२२
तान समाप्ति मांय, प्रेमेथी लय पूरवा,
दधि गनथो वपराय, कोविद वादकने करे. ९२३

अकारादि स्वरोनां उदाहरण.

दोहा.

जग झग टकुने थढड णडतत थां दंदां देख,
धलां पछी नग ननगिकिट, किड किण किटगिझि लेख. ९२४
ढिढि कं दिगि थिगि हिटॅकुकु, कुंदारिक तुतुक विचार,
झें थें थोथों थै कही, थैय धृतिथी धार. ९२५

अकारादि स्वरोनां प्रति उदाहरण.

झक तक धिक नक तुड नडे, किडदे थैय किरंट,
वल धल धींहं किट किडि, गिड धिभि इगु छे अंत. ९२६

पाठ रचना.

त धि थोन पाठ तयार करी, वाद्यें द्विगुण वजाव,
थ किट ते पछी स्थिर करी, पूर्ण पाठ प्रगटाव. ९२७

पाठ प्रस्तार.

दोहा.

थक्किट धिक्किट थोंकिट, नकिट तथकिट तयार,
धद्धिक्किट थोंथोंकिट, नंनाकिट निरधार. ९२८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सवैया एकत्रीशा.

तत्ता थकिट किटकिट कहीअें, धिद्धि धिकिट किट किट सु विचार.
थोंथों थोंथों किट किट किकिनं, नांनं किट किट किट फरीथार,
तत्त त्तत्त थक्किट किट किट किट, अंतर मांही एह उतार,
थक्किट थाक्किट किट किट किटॅ, प्रगट करी ले धारी प्यार. ६२९

अन्यपाठ उदाहरण.

कुंदरिकुं थरिकुकु क्रुदकुकु, त्वरित उच्चार करीने तोल,
क्रुंद किटनॉ पछीं ताक्किड गिडि, धाक्किड गिडि, थोंगिड गिड गिड बोल,
तांगिड गिड गिड वदी व्हालथी, पछी जंग जगथो कहीअें,
द्रिगि द्रिगिदां, तग तग तग तग पछीं ललित उच्चारॅ क्रमे लहीए. ६३०

मृदंगवादक लक्षण.

छंद मनहर.

बुद्धिमान बळवान मधुर उच्चारवाळो,
दीर्घ भुजवाळो द्रड आसनमां देखीअें,
कहे नथुराम हस्त भेदमां प्रवीण होय,
पाठाक्षर नवा प्रगटावनारो पेखीअें;
शुद्ध श्रुतितालमां सुधीर भक्त सज्जननो,
गायकनी साथे अनुकूल अवरेखीअें;
वादक विचक्षण जे मृदंग बजाववामां,
एने शुभ लक्षणथी सदा श्रेष्ठ लेखीअें. ६३१

मृदंग वादक भेद.

दोहा.

वादी आदिमां कह्यो, मुखरी महद मनाय,
प्रतिमुखरी पेख्या पछी, गीतानुग स्थिर थाय. ६३२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वादी लक्षण.

दोहा.

वाद्य तणी चर्चा महीं, जे वादक सुखकारी;
पुष्ट करे निजमत सदा, बुद्धिबळ विस्तारी. ६३३
अवर तणा मतनुं करे, खंडन धारी खंत;
वादक वादी नामनो, महिमावान महंत. ६३४

मुखरी लक्षण.

दोहा.

वादीने मत अनुसरी, वाद्य वजावे खास;
रस उपजावे संगमां, निजमत करी प्रकाश. ६३५
गुरु मुखथी भणी शास्त्र सहु, जोड तोडनी रीत;
अभय सभा मांही रहे, प्रविण वाद्यथी प्रीत. ६३६
नर्तकी जेना संगथी, नृत्यें निर्भय होय;
वादक मुखरी नामनो, कहे तेने सहु कोय. ६३७

प्रतिमुखरी लक्षण.

दोहा.

उभय वादीना मत तणुं, खंडन करी हमेश;
नविन शास्त्र रीति तणो, नित्य करे निर्देश. ६३८
खावानो अभ्यास क्रम, नौतम ज्ञान निधान,
वादक प्रतिमुखरी तणी, प्रेमे करो पिछाण, ६३९

गीतानुग लक्षण.

उभय वादीना मत महीं, चर्चामां जे चारु;
करे मान भंग वादीने, स्वकीय प्रतिष्ठा सारु. ६४०
विध विध नूतन वाद्यनो, भले प्रगटावे भेद,
निखिल गीतने निर्वहे, आपे रही अखेद. ६४१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

'तकार' आदिमां लहे, ग्रहे अन्त 'थेंकार';
विबुधो गीतानुग वदे, परम अपारी प्यार. ५४२

स्थापन लक्षण.

सोरठा.

मन्द्र मध्यने तार, त्रय स्थानकनां शुद्ध जे;
आनँद भरे अपार, कर्णप्रिय बनी सर्वदा. ५४३
वजावतां जे वाद्य, मधुर ध्वनिने उद्भवे;
निर्विघ्ने नृत्याद्य, सुखद बने स्थापन थतां. ५४४

टाकणी वादन लक्षण.

छप्पय.

बहु आरंभ समाप्ति मांहि, 'थेंकार' बिराजे,
मिश्र त्र्यस्र चतुरस्र, ताल चंचतपुट राजे;
वळी षट्पितापुत्र, ताल ग्रही वादक व्हाले,
देशी मार्गी तालें ग्रही, गायक संग चाले;
कहेलमांथी कोइ ग्रही, विविध वाद्य वजवाय ज्यां,
नेह सहित नथुराम नित, टाकणी वादन धायँ त्यां. ५४५

टाकणी वादन भेद.

दोहा.

ए टाकणी वादन तणा, उभय भेद छे धन्य,
एक सरावादन अने, जोडावादन अन्य. ५४६

---

१ तद्धि तोटें ।१। तत धिधि थें थेंटेटें ।२। त त त धि धिधि थेंथें थेटे टेटें ।३। त त त धि धिधि थों थों यो ठे टे टे टें ।

२ तक धिकट तकधिकट धिकटतक तकाधि कट तकतक धिकट तधिकटतक धिकट.

सरावादन लक्षण.

दोहा.

एक संग आठे कला, प्रगट जे महीं थाय;
वादनमां ए व्हालथी, कलित सरा कहेवाय. ५४७

जोडावादन लक्षण.

दोहा.

अष्ट कला एकी वखत, वागें ज्यां हुयवार;
जोडावदन जुगितथी, समजो ए सुखकार. ५४८

हुडक्का लक्षण.

छंद रोला.

षोडश आंगुल तणुं, एक तबलुं कर प्रीतें,
चतुर्दशांगुलतणुं, अवर करवुं शुभ रीते;
अष्टांगुल मुख उभय, गोळ नीचेथी करी ले,
सप्त सप्त द्वय मुखे, चडाव उतार धरी ले. ५४९
काष्ट तणा कंकणो, लपेटी कोमल चामे,
द्वय तबलांने मुखे, चडावो चतुरो हामे;
मढ द्वय मुख चर्मथी, मृदंग प्रमाणे मनहर,
उभय कंकणो मांही, छिद्र षट् षड सुखथी कर. ५५०
तेमां नांखी दोरी, खेंचजे मृदंग पेठे,
करवा स्वरने सिद्ध, काष्ट खंडो धर हेठे;
चडाव मुख एकने, लोह चूरणनी श्याही,
लगाव गहुनो पिष्ट, अवर केरा मुख मांहीं. ५५१
मृदंग पेठे सर्व, सिद्ध करवा पाठाक्षर,
वजावजे धरी व्हाल, ओळखी अक्षर अक्षर;
सर्व काळमां स्नेह धरी, हरिनाम स्मरी ले,
हाथ हुडुक्का ग्रही, काम धर्मना करी ले. ५५२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

हुडुक्क लक्षण.

दोहरा.

द्विमुख सूक्ष्म मध्यथी, लांबुं आंगुल सोळ,
अष्टांगुलना उभय मुख, पेखो अंदर पोल. ५५३
उभय मुखे कंकण धरो, सप्त सप्त करीं छिद्र ;
चाहे चर्म मुखं मढो, भलुं पामशो भद्र. ५५४
दोरीथी खेंची खचित, स्वरो सिद्ध कर सर्व ;
मान हुडुक्क मृदंग सम, गुणीजन त्यागी गर्व. ५५५

करटा लक्षण.

दोहरा.

चोवीश आंगुल दीर्घकार, मध्य बनावी ढाल ;
चालीश आंगुलनी परिघ, व्हाले राख विशाल. ५५६
उभय मुखो पर बांधजे, ताणी त्रय त्रय तांत;
लोह कडां द्वय मुखपरें, खचित धार धरी खांत. ५५७
मढजे चारु चामथी, उभय मुखो तजी खेद ;
ए द्वय मुख पर राखजे, चौद चौद शुभ छेद. ५५८
एक एक तजीं छिद्र ए, चर्म दोरीं भरी ताण ;
पातळीं दोरी चर्मनी, अवर छिद्रमां आण. ५५९
प्रथम छिद्रनी दोरीना, द्वय द्वय बंधन मांहीं ;
छक्काना आकारथी, बांध सदा चित्त चाहीं. ५६०
काष्ट दंडने कर थकी, वजावीं जगयश जोड ;
भेद पटहनो पेखजे, करटा धारी कोड. ५६१

घडा लक्षण.

दोहरा.

कंठ दीर्घ मोटुं उदर, न्हानुं मुख सुखधाम,
ललित घडो करीं लोहनो, मुख पर मढजे चाम. ५६२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तबलां सम कंकण धरी, तुर्त दोरीथी ताण,
मृदंग सम वजवाय जे, घटित घडा ए जाण. ५६३

घडस लक्षण.

दोहरा.

तबलां उभय बनाववां, प्रथम हुडुक्का पेर,
एक एक कर छिद्र तुं, उभय तळे धरी ल्हेर. ५६४
तबलुं दक्षिण हस्ततुं, मढाव झीणे चाम,
जाडे चामे वाम मढ, निस्य ढोलुं नथुराम. ५६५
दोरी बांधी किनारी पर, नीचे छिद्रमां नाख,
वाम हस्त अंगुष्टथी, बांधी दोरी राख. ५६६
दक्षिण दक्षिण कर थकी, वामे वाम वजाव,
खेंची दोरी वजावतां, शुभ गोंकार गजाव. ५६७
प्रगट सरव पाठाक्षरो, तबलां सम उर आण,
अभिनव वाद्य अमूल्य ए, व्हालें घडस वखाण. ५६८

ढवस लक्षण.

दोहरा.

विजयसारना काष्टनुं, ढवस करो गुणी ईश;
चोवीश आंगुल दीर्घ ने, परिघांगुल चालीश. ५६९
बार बार आंगुलतणा, द्वय मुख कर धरी धीर;
पटह तुल्य मढ चर्मथी, व्हालें वादक वीर. ५७०
दक्षिण दक्षिण कर थकी, वाम करेथी वाम;
करटा पेठे कोडथी, नित्य वजाव नथुराम. ५७१

ढक्का लक्षण.

दोहरा.

विजयसारना काष्टनुं, समजी करो सुजाण;
चालीश आंगुल परिघने, लांबु हस्त प्रमाण. ५७२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

द्वादश आंगुल उभय मुख, ते पर कडा चडाव;
सात सात छिद्रो करी, मुदथी चर्म मढाव. ९७३
खूब खेंचीने दोरीथी, लइ कंठे लटकाव;
उभय मुखो कर उभयथी, ढक्का धीर वजाव. ९७४

कुडुवा लक्षण.

दोहरा.

एकवीश आंगुल दीरघ, विजयसार ले वीर,
सत्त सत्त आंगुलतणा, कर द्वय मुख धरी धीर. ९७५
त्याग चडाव उतारनो, काष्टतणो आकार,
सर्व काष्ट सम राखजे, कुडुवाना करनार. ९७६
उभय मुखो पर वेलना, चाहे कडा चडाव,
सत्त सत्त छिद्रो करी, चर्म मुखो मढाव. ९७७
बांधी दोरी चर्मनी, खंत धरीने खेंच,
द्वय मुख द्वय डंका थकी, वजावी वर सुख व्हेंच. ९७८

रुंजा लक्षण.

छंद रोला.

धातु वा काष्टथी, जन्म जेनो नित्य जाणो,
अष्टादश आंगुलो, प्रेमथी दीर्घ प्रमाणो;
एकादश आंगुली, प्रति मुख प्होळां कीजे,
कंकण दोरी सहित, चारु चर्मे मढी लीजे. ९७९
अधिकुं कंकण एक, व्हालथी वाम आस्य पर,
मुखथी आंगुल चार, तणा अंतर उपर धर;
तांतथी जाळीदार, करो ए कंकण कोडे,
सात सात करी छिद्र, प्रथम सम बांधो जोडे. ९८०

---

१. क ध दा ट न मा र ख.
अथवा केटलाएक आचार्य एम कहे छे केः—क र ग ध द न ख हो।

बक्री कृत वंशना, घर्षणे प्रिय प्रगटे स्वर,
चर्मपट्टीथी बांधी, बराबर बगल महीं धर;
अभिनव दे आनंद, गाढ स्वरथी ए गाजी,
रुंजा वाद्य वजाव, थशे महादेवजी राजी. ५८१

डमरु लक्षण.

दोहरा.

लांबु एक विलस्तनुं, कोडे लइने काष्ट;
उभय मुखो प्होळां करो, अहनिश आंगुल अष्ट. ५८२
मध्य भाग करीं पातळो, मढ द्वय मुखपर चाम;
दाबी दोरा मध्यथी, व्हालें ग्रह कर वाम. ५८३
गण वजाववानो गुणी, हर वडीं दक्षिण हाथ;
डमरु वजावीं दिन रजनी, रीझवजे सतीनाथ. ५८४

चक्रवाद्य लक्षण.

दोहरा.

हस्त एक विस्तीर्ण गण, चारु चक्र आकार;
दश आंगुल गंभीरता, धीर वृत्तिथी धार. ५८५
स्थूल चर्मथी मुख मढो, आनंदथी एक;
चक्रवाद्य चाहे गुणी, वजाव सहित विवेक. ५८६

स्वावह लक्षण.

दोहरा.

कल्पित कटहना काष्टनो, हस्त दीर्घ जे होय;
काष्ट तणी कथरोट शुभ, बनाव जुगती जोय. ५८७
अर्ध तुंबडाना समो, अधरेखी आकार;
दंड मुखे करीं बेसती, मढ चर्म धरीं प्यार. ५८८

१. क. र. ख. ट.

कर सन्मुख कथगेटने, सत्त छिद्र सुखरूप ;
तेमां तांतो बांधीने, आनंद लीओ अनूप. ९८९
अग्रभागमां दंडना, खुंटी नाखी खास ;
त्यां छेडा तांतो तणा, बांधो धरी हुल्लास. ९९०
ए साते तांतो महीं, साते स्वर करीं सिद्ध ;
हस्तीं दंनना दंडथी, प्रांतें करो प्रसिद्ध. ९९१
चर्म मढेला भागने, वाम हस्तथीं बजाव ;
दक्षिण हस्ते तांतने, बजावीं गाम गजाव. ९९२
चार तांत आगळतणी, म. प. ध. नीं स्वर युत होय ;
पाछळनी त्रय तांतमां. स. रि. ग कहे सहु कोय. ९९३
रवने वहन करे अति, तेथीं रवावह नाम ;
बजावीं कर स्मरहर स्मरण, नित्य कहे नथुराम. ९९४

दुन्दुभि लक्षण.

छंद रोला.

लोहना के ताम्रतणा पतराना प्यारे,
अर्ध गोळ मुख एक कटोराने आकारे,
उभय करो ए रीत, एक न्हानुं ऍक म्होटुं,
छिद्र उभयनी मध्य, पाडवुं छोटुं छोटुं. ९९५
न्हानुं नारी गणाय, मनाये छे मोटुं नर,
चर्म चढावो लइ, पातळुं मादी मुखपर ;
फरी चर्ममां छिद्र, पाछळे कुंडली धारी,
चर्म दोरीथी खेंचो, मोटथी मढो विचारी. ९९६
ए बजावती वखत, अग्नियी जरा तपावो,
अथवा रविनी आंच, जेम जोइ तेम आपो ;
स्थूळ चर्मनुं मढो, नेह धारी नरनुं मुख,
एना मुखपर धारी, लेपो ले बजावतां सुख. ९९७
करो डंका काष्टना, उभय लघु दीर्घ यथाक्रम,

वजाव बे हस्तथी, गुणी राखी उरमां गम;
मृदंग पेठे प्रगट थाय, सघळा पाठाक्षर,
सर्वे शुभ कार्यमां, दुन्दुभि सदाय सुखकार, ५९८

डंका लक्षण.

दोहरा.

सुकाष्ट एक विलस्ततुं, मध्य पातलुं राख;
अंदरथी पोकल करी, चतुर गुणी रस चाख. ५९९
पिंड अर्ध आंगुल तणो, ललित क्रियाथी लेख;
अष्ट अष्ट आंगुल तणा, द्वय मुख व्होळां देख. ६००
चार चार द्वय मुख परें, ताम्र कील धर धीर;
बे नीचे बे मुख उपर, व्हालें गोठव वीर. ६०१
ए संगे अनुक्रम सहित, ताणी बांधवी तांत;
मधुर ध्वनि जेथी मळे, सुणी थाये मन शान्त. ६०२
द्वय मुख मढवा चर्मथी, हस्तीदंतने दंड;
वाम करे डंका वजवी, आनंद लीओ अखंड. ६०३

मन्डी डंका लक्षण.

दोहरा.

सुकाष्ठ आंगळ सोळनुं, मध्ये सूक्ष्म सदाय;
अष्ट अष्ट आंगुल तणा, युग मुख अवरेखाय. ६०४
ताम्रकील द्वय मुख परे, चार चार लइ चोड;
डंका पेठे ते थकी, जाहिर तांतो जोड. ६०५
उभय मुखो चर्म मढी, तांते कडी द्वय नाख;
वाम करनी अंगुलि वडे, प्रीते पकडी राख. ६०६
वाम करनी तर्जनी थकी, द्रढ किनारी सुदवाव;
व्हाल धरी विगतें करी, दक्षिण करे वजाव. ६०७
अथवा कर डंको ग्रही, वजावजे वर वीर;
मंडीडंका श्रवण करी, सुखीयुं थाय शरीर. ६०८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

डक्कुली लक्षण.

दोहरा.

वृषभ शृंग नव आंगुली, वा हस्तीनो दंत;
वा कांसानी भुंगळी, खोळो थाशे खंत. ६०९
चार चार आंगुळ तणा, उभय मुखो उत्कर्ष;
मढ मेढ़ानी खालथी, ए द्वय मुख धरी हर्ष. ६१०

उभय मुखें आनंदथी, चित्ते वधारी चाव;
ताम्र कांस्य वा लोहना, कंकण चारु चडाव. ६११
ए कंकण महीं कोडथी, पंच पंच करी छेद;
परोव दोरी चर्मनी, भलो समजीने भेद. ६१२
नहीं ढीली नहीं तंग अति, बांधो दोरी सुखसाध,
मध्ये ए दोरी उपर, एक दोरी फरी बांध. ६१३
वाम करनी आंगुली थकी, ए दोरीने ताणी;
अवर अंगुली कंकणे, लगाव जुगती जाणी. ६१४
उर्ध्व मुखें आपेल जे, चर्म तणी कडी चारु;
आधारे अंगुष्टने, खेच व्हालथी वारु. ६१५
वजाव जमणा कर थकी, हर्षे गुणी हमेश;
दिव्य वाद्य ए डक्कुली, रीझे सुणी महेश. ६१६

सेल्लुका लक्षण.

दोहरा.

छवीश आंगुल दीर्घ कर, सुकाष्ट धरी चित चाव;
जाडुं आंगुल त्रीशनुं, अंदर पोकळ साव. ६१७
उभय मुखो आनंदथी, मढ लइ कोमल चाम;
कंकण उभय लगाव त्यां, हृदये धारी हाम. ६१८
षड् षड् छिद्रो स्नेहथी, प्रति कंकणमां राख;
चर्म दोरी ए छिद्रमां, बंध बांधवा नाख. ६१९

खूत्र खेंचों मुख वामना, चामनी संग लगाव;
तांत बांधी कंकणथी कसी, वाम करेंथी बजाव. ६२०
दक्षिण कर डंको लइ, दक्षिण मुख पर मार;
सद्य बजावी सेल्लुका, हृदये हर्ष वधार. ६२१

झल्लरी लक्षण.

दोहरा.

पचीश टका भारनी, ताम्र भुंगळी एक;
द्वादश आंगुल दीर्घ कर, वर झल्लरी सविवेक. ६२२
चोडी अढार आंगुली, पोकल गोळ प्रमाण;
रहित चडाव उतारनी, सहु स्थलमां सम जाण. ६२३
कंठ महीं द्वय छिद्र करी नेहे दोरी नांख;
वाम हस्त अंगुष्टमां, गांठ दईने राख. ६२४
चारु चर्मे मुख मढी, बलथी दोरे बांध;
दक्षिण कर डंको ग्रही, बजावी हर आराध. ६२५

त्रिवली लक्षण.

दोहरा.

एक हस्त लंबाइनुं, सुकाष्ट सळ विण शोध;
पोकल कर अंदर थकी, वर्जी सर्व विरोध. ६२६
मुष्टि मांहि समाय सम, मध्य पातळुं राख;
सप्त सप्त आंगुल तणा, द्वय मुख प्होळां दाख. ६२७
सात सात छिद्रो सहित, चर्मे मुखो मढाव;
लोह तणां कंकण करी, ते पर चारु चडाव; ६२८
नाखी दोरी छिद्रमां, मध्य कसी कर धार;
बजाव त्रिवली कर थकी, पूर्ण वधारी प्यार. ६२९

धोंसा लक्षण.

दोहरा.

आम्र काष्टनुं एक कर, नौतम वडुं नगारुं;
दुन्दुभि तुल्य दीपावडुं, मुदप्रद मन हरनारुं. ६३०
कांस्य धातुना चक्र लघु, तांते परोवी तुर्त;
बांध नगारानी महीं, सारी राखी सुर्त. ६३१
मुख मढ जाडा चर्मथी, चर्म दोरीथी ताण;
काष्ट दंडथी द्वय करे, घोंसा वजत सुजाण. ६३२

भेरी लक्षण.

छंद रोला.

त्रांबा वा कांस्यनो, ढोल त्रय हस्त दीर्घ कर,
एक एक हस्तना, उभय मुख करी उरमां ठर;
काष्ट लोह के तांत, त्रण कंकण मुखपर धर,
पटह तुल्य चर्मथी मढी खेंची प्रगटो स्वर. ६३३
त्रय आंगुल चर्मनी, पट्टी लइ नित्य नेमथी,
मध्य बांधी लटकाव, गळामां पूर्ण प्रेमथी;
काष्ट दांडी मुख एक, एक मुख हस्त बजावे,
फाटे अरिना हृदय, भेरी रणभूमि गजावे. ६३४

निशान लक्षण.

दोहरा.

कांस्य लोह वा ताम्रनुं, कर नगारुं सुखकार;
दीर्घ हस्त त्रय एक मुख, यव सरखो आकार. ६३५
कांस्य कटोरी झांझ सम, एमां धर सउमंग;
महिष चर्मथी मुखमढो, स्नेहे कंकण संग. ६३६
खेंचो दोरी चर्मनी, कंकण छिद्रे नाखी;
बजाव बहु जोरे करी, काष्टदंड कर राखी. ६३७
फाटे छाती भीरुनी, समरे सुणी ध्वनि कान;
शूर उरे उत्साह दे, नौतम एह निशान. ६३८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तंबकी लक्षण.

दोहरा.

नित्य निशान प्रमाणथी, ध्वनि कर गाढ विशेष;
जन्म ताम्रथी तंबकी, आनँदभेर अशेष. ६३९

सुषिरवाद्य लक्षण.

दोहा.

जे वाजे मुख पवनथी, व्हाल भरण विण तार;
सुषिर वाद्य तेने कहे, संगीतना सरदार. ६४०

सुषिरवाद्य भेद.

दोहा.

बंसी पछी पावो कह्यो, वळी पाविका नाम;
मुरलि. मधुकरि. कालहै, तुण्डकिनी सुखधाम. ६४१
चुक्का. श्रंग. ने शंख छे, सुनारि श्रेष्ठ प्रमाण;
मुखवीणा ने नागस्वर, चक्र. चंग उर आण. ६४२
स्वर सागर ने पत्रिका, सुषिर वाद्य समजाय;
अवर भेद अगणित कही, गुणीओ प्रभु गुण गाय. ६४३

बंसी प्रमाण.

अष्टा दश अंगुल तणी, बंसी सहज बखणाय;
सौरभ बंसी स्नेहथी, वीश अंगुलनी थाय. ६४४
श्रुति निधि बंसीनुं सरस, बत्रीश अंगुल माप;
यादव पतिना यश जपी, हरो प्रबल परिताप. ६४५

बंसी भेद.

सवैया एकत्रीशा

एकवीरने उमापति छे, पछी त्रिपुरुष गणो गुणवान,
वळी चतुर्मुख, पञ्चवक्त्र छे, षण्मुखने मुनिराज महान;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वसु नाथेन्द्र सुमहानन्दने, रुद्र षष्ठी आदित्य गणो,
मनु कलानिधि कही कोडथी, अन्त मही अन्वर्थ भणो. ६४६

एक वीर लक्षण.

दोहा.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रमां, अंतर अंगुल एक;
अढार अंगुलनें करो, एकवीर सविवेक. ६४७

उमापति लक्षण

दोहा.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रमां, द्वय अंगुल अवकाश;
ओगणीश अंगुल तणी, खरे उमापति खास. ६४८

वंसी लक्षण.

दोहरा.

सुंदर सरल सु वंश वा, खदिर काष्टनी खास;
अथवा हस्ती दंत के, श्रीचंदन सुखरास. ६४९
रक्त चँदन वा हेमनी, कांस्य. लोह. रुपानी;
गोल सचिक्रण शोभती, कर वंसी मन मानी. ६५०
समाय टचली आंगली, कर पोकल ए रीत;
उपरनुं मुख बंध कर, पुण्य वधारी प्रीत. ६५१
दीर्घ अंगुली अष्ट दश, शुभ शास्त्रोक्त प्रमाण;
द्वय त्रय वा चतुरांगुली, तजी कर छिद्र सुजाण. ६५२
वगाडवानुं छिद्र ए, मनहर आंगुल माप;
चतुष्कोण मुखरन्ध्र ए, नाम नेहथी आप. ६५३
एथी आंगुल अंतरे, नादरन्ध्र कर एक;
चतुरांगुली तजी एथी कर, सप्त छिद्र सविवेक. ६५४
एक एक आंगुलपरे, कर ए छिद्र तमाम;
एकवीरवंसी निरख, नेह सहित नथुराम. ६५५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

अन्य आचार्यमतानुसार वंसी प्रमाण

दोहरा.

बत्रीश आंगुल वंसीमां, अति मंद्र ध्वनि होय;
एथी एवी वंसीने, ग्रहण करे गुणी कोय. ६५६
एक चार त्रीश आंगुलनी, बंसीमां वजवाय;
अति तार ध्वनि ए थकी, विरल स्थळे वपराय. ६५७
अष्टादश आंगुल लगी, नव आंगुलथी नित्य;
सप्त स्वरोनें उद्भवे, वरवंसी धरी प्रीत. ६५८
पांत्रीश आंगुलनी अनुप, ज्यारे बंसी वजाव;
नाद रन्ध्र खुल्लुं करी, भला गुणीने भाव. ६५९
पवन पूर मुख रन्ध्रथी, सप्त दबावी छेद;
षड्ज मंद्र स्थानी तहां, भलो उद्भवे भेद. ६६०
तेत्रीश आंगुल वंसीना, बंध छिद्र कर सात;
रिषभ मंद्र स्थानी तहां, पूर्ण थाय प्रख्यात. ६६१
एकत्रीश आंगुल तणी, वंसी वजव ए रीत;
मन्द्रस्थानीं गांधार स्वर, नेहे प्रगटे नित्य. ६६२
आंगुल ओगणत्रीशनी, वंसीमां ए पेर;
मन्द्रस्थानीं मध्यम तणी, सुण लाखेणी लेर. ६६३
अठ्यावीश आंगुल तणी, बंसी जव वजवाय;
मंद्र स्थानीं पंचमतणी, सत्वर सिद्धि थाय. ६६४
सत्यावीश आंगुल तणी, बंसीमां सुखरूप;
मंद्र स्थानीं धैवत तणी, छे उत्पत्ति अनूप. ६६५
छवीश आंगुल वंसीना, सत्त दबवतां छिद्र;
निषाद मंद्र स्थाननो, भावे प्रगटे भद्र. ६६६
पचीश अंगुल वंसीना, सात छिद्र मुदाय;
मध्यम स्थानी षड्ज तव, प्रेम सहित प्रगटाय. ६६७
चोवीश आंगुल बंसीने, वजावतां धरी व्हाल;
मध्यम स्थानी रिषभनो, खूब करी ले ख्याल. ६६८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वर त्रेवीश आंगुलतणी, बंसी वजवतं वार ;
मनहर मध्यम स्थाननो, गजाव स्वर गांधार. ६६९
बावीश आंगुल बंसीने, मुदे वजवी ले मानी ;
बंध छिद्र साते थतां, मध्यम मध्यम स्थानी. ६७०
एकवीशने वीशनी, बंसी मांही वीर ;
मध्यस्थानी मानने, पंचम धैवत धीर. ६७१
ओगणीश आंगुल तणी, वंसीमां तजो वाद ;
मुदथी मध्यम स्थाननो, निरखो नित्य निषाद. ६७२
अढार आंगुल वंसीना, साते छिद्र दबाव ;
तार स्थाननो षड्ज स्वर, धारी व्हाल वजाव. ६७३
पंदर आंगुल बंसीना, अंत द्वि छिद्रो खोल ;
पंच बंध करी आदिना, उपाव रिषभ अमोल. ६७४
चार बंध करी आदिना, त्रय अंतना उघाड ;
वजावतां गान्धार स्वर, कोडे परखी काड. ६७५
त्रय आदिना बंध करी, खोल अंतना चार ;
प्रगटे मध्यम मोदथी, वजावतां धरी प्यार. ६७६
द्वय आदिना बंध करी, खोल अंतना पांच ;
पंचम स्वर प्रगटावीने, रसिक उमंगे राच. ६७७
एक आदिनुं बंध करी, उघाड छिद्र छ अंत ;
प्रेम धरी स्वर प्रगटशे, धैवत धारी खंत. ६७८
खुल्लां करीने खंतथी, साते छिद्रो यार ;
प्रगटे नित्य निषाद स्वर, वजावतांनीवार. ६७९
पांत्रीश आंगुल वंसीना, अंतिम द्वि छिद्र खोल ;
मंद्र स्थाननो रिषभ स्वर, प्रगटे आवी अमोल. ६८०
त्रय खोल्ये गांधार स्वर, चारे मध्यम मान ;
पंचे पंचम पड खुल्ये, धैवत नेह निधान. ६८१
साते छिद्रो खोलतां, निषाद प्रगटे नित्य ;
वंसीना वादक समज, प्रबल धरीने प्रीत. ६८२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

छंद रोला.

कलानिधि वंसीमां, आदि गांधार वखाणो;
मनुमां मध्यम आदि,, प स्वर आदित्ये जाणो;
धैवतादि रुद्रमां, महानंदमां नि निरखो,
मध्यस्थानी षड्ज, प्रगट नाथेन्द्र परखो. ६८३
ए सहु वंसी तणा, आदि द्वय छिद्र खोलतां,
षड स्वर थाये प्रगट, एम गुणी लोक बोलता;
वसु वंसीना आदि, खोलीए द्वय छिद्रो जत्र,
मध्यम स्थानी रिषभ, शोभतो स्वर प्रगटे तत्र. ६८४
मुनिराज वंसीमां, एज रीति जत्र राखो ,
प्रगट थशे गांधार, दिव्य द्रष्टिथी दाखो ;
मध्यम षड मुख मांहि, पंच वक्त्रे छे धैवत ,
चतुर्मुख मुनिषाद, प्रगट थाये मुनिने मत. ६८५
त्रिपुरुष वंसी अने, उमापति वंसी अंदर,
तार स्थानना षड्ज, आदि प्रगटे छे षड् स्वर ;
एक वीरमां एज रीत खोलतां आदि द्वय,
तार स्थानना रिषभ, आदि षड् स्वरनो परिचय. ६८६
सर्व वंसीना भेद मांहि स्नेहथी सदाये,
नाद रन्ध्रने खोली सप्त जत्र बंध कराये ;
पहेलो स्वर ते वखत पाछला स्वरथी प्यारे,
उपने छे आठमो, व्हालथी वनवो उचारे. ६८७

दोहरा.

जे स्वर छिद्र उपर थकी, अंगुली अलग कराय ;
ते स्वर निज श्रुति पूर्णथी, प्रेम सहित प्रगटाय. ६८८
खुल्यां छतां स्वर छिद्रने, अंगुली अलग न राख ;
स्वल्प कंप अँगुली तणे, एक श्रुति हीन भाख. ६८९

अर्ध छिद्रने बंध करी, अर्ध छिद्रने खोल;
उभय श्रुतिनो हीन स्वर, प्रगटे आवी अमोल. ६९०
अर्ध छिद्रने बंध करी, अर्ध खोलीए ज्यांही;
आधिक कंपथी उद्भवे, त्रिश्रुति हीन स्वर त्यांही. ६९१
चार श्रुतिना स्वर तणी, जे रीति तुं जाण;
द्वय श्रुति त्रय श्रुतिना स्वरनी, एज रीति उर आण. ६९२

अन्य मतानुसार वंसी हस्त.

दोहरा.

डाबा कर केरी जगे, जाहिर जमणो आप;
जमणा कर केरे स्थले, डाबो कर स्थिर स्थाप. ६९३
उभय हस्तनी अँगुलीथी, छिद्र दबाव सप्रीत;
द्वय करना अंगुष्टने, नीचे राखी नित्य. ६९४
अर्धचंद्रहस्त सुप्रथम, द्वितीय **नागफणहस्त**;
मुख्य वंसीमां मानजो, उभय हस्त गुणी मस्त. ६९५

वंसी धारण विधि.

दोहरा.

वाम करनी अंगुली महीं, कनिष्ठिकाने त्यागी;
म. रि. ग. स्वरोना छिद्र त्रय, बंध करो वडभागी. ६९६
दक्षिण करनी दीपती, चाहे अंगुली चार;
म. प. ध. नि. स्वरना छिद्र पर, धीर धृतिथी धार. ६९७

अन्यमतानुसार स्वरोत्पत्ति.

दोहरा.

मंद पवन ढीले मुखे, मुख रन्ध्रे भरभाइ;
मंद्र स्थानना सर्व स्वर, त्वरित प्रगटशे त्यांइ. ६९८
जरा कठिन मुख राखतां, मध्य स्थानी ले मानी;
पूर्ण कठिनताथी स्वरो, प्रगटे तार स्थानी. ६९९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मुखपवनानुसार स्वर भेद.

दोहरा.

कंपित वलित वखाणीए, भणो मुक्त भली भात;
अर्धमुक्त सुनिपीडित, पंच भेद प्रख्यात. ७००

कंपित लक्षण.

दोहरा.

स्थाई आदि वर्णो विविध, प्रसन्नाद्यलंकार;
अखिल गमक विकृत स्वरो, प्रकाशवा धरी प्यार. ७०१
अंगुलि केरा चलनथी, करो कंप धरी कोड;
कलित भेद कंपित कहे, मुदे गुणी शिर मोड. ७०२

वलित लक्षण.

दोहरा.

मात्र जहां संचारीना, वर्ण प्रगटवा खास;
वर वंसी करमां ग्रहो, हृदये धरी हुल्लास. ७०३
टेडी सीधी आंगुली, डाबी जमणी कोर;
स्वर रन्ध्रो पर रगडतां, वलित बने चित्त चोर. ७०४

मुक्त लक्षण.

दोहरा.

शुद्ध स्वरो प्रगटाववा, स्वर रन्ध्रोथी ज्यांहीं;
सकंप अँगुली उठावीए, मुक्त मानी ले त्यांहीं. ७०५

अर्ध मुक्त लक्षण.

विकृत स्वर वरतावधा, अर्ध छिद्र करी बंध;
अर्धमुक्तमां अर्ध ध्वनि, रोक सदा गुणसिन्धु. ७०६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

निपीडित लक्षण.

दोहरा.

सर्व छिद्रने बंध कर, ध्वनि जमाववा काज;
नित्य निपीडित भेद ए, ओळख सुणी अवाज. ७०७
तीक्षण. कोमल. शिघ्र. शिथिल. पूर्ण. अपूर्ण प्रमाण;
न्यूनाधिक मुख पवनथी, बहु स्वर भेदो जाण. ७०८

पावा लक्षण.

दोहरा.

सरल शुद्ध ले शोधीने, नव आंगुलनो वंश;
छेडा पर मुख रन्ध्र कर, हर्ष धरी गुणी हंस. ७०९
स्वर पुष्टिने कारणे, लपेट वंसे पान;
अवर रन्ध्र नाथेन्द्र सम, मनहर पावा मान. ७१०

पाविका लक्षण.

दोहरा.

द्वादश अंगुलि दीर्घने, स्थूल अंगुष्ट प्रमाण;
अंदर माप अनामिका, एवो पोकल आण. ७११
वजाववानुं छिद्र कर, ए वंशे तुं एक;
पांच पाविका मांहि कर, स्वर छिद्रो सविवेक. ७१२

मुरली लक्षण.

दोहरा.

उभय हस्तथी जरी अधिक, व्हाल धरी ले वांस;
एक छिद्र कर आगळे, वजाववानुं खास. ७१३
स्वरना रन्ध्रो रागथी, चाहे करजे चार;
बजाव मुरली मनहरण, आनँद धरी अपार. ७१४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मधुकरी लक्षण.

दोहरा.

अष्टाविंश आंगुल तणी, पूंगी सिसमनी सारी ;
तुम्बी वाद्य आकारनुं, कर मुख रन्ध्र विचारी. ७१५
मुख रन्ध्रथी चतुरांगुली, त्याग करीने तुर्त ;
सात छिद्र स्वर सातना, कर राखी शुभ सुर्त. ७१६
ए मध्ये आनंदथी, नीचे धारी नेह ;
एक छिद्र कर अभिनवुं, गोर करी गुणगेह. ७१७
जव प्रमाण जाडी अने, लांबी आंगुल चार ;
त्वरित नळी लइ ताम्रनी, एह रन्ध्रमां धार. ७१८
ए नळीना मुख उपरे, छीपतणी सुखकार :
वा करी दंतनी गोळ करी, धर चकती धरी प्यार. ७१९
करी नरसाल सुपत्रनी, केलाकार चवेली ;
भावे भिंजावी दूधमां, दे नळी मुखमां ठेली. ७२०
वंसी पेठे व्हालथी, वजावजे गुणी वीर ;
मुद भरनारी मधुकरी, सुखीयुं करे शरीर. ७२१

काहल लक्षण.

दोहरा.

कांस्य रुप्य वा सुवर्णनी, दीर्घ भुंगली त्रय हस्त ;
चारु चडाव उतारथी, अंदर पोली समस्त. ७२२
कनकपुष्प सम मुख करी, अंतिम भागे भाइ ;
मध्य छिद्र करी मोदथी, धर कटोरी सुखदाइ. ७२३
राखी कटोरी रन्ध्रपर, सुमुखी पवने पूर ;
काहल वजाव कोडथी, समजी सद्गुणी शूर. ७२४

तुंडकिनी लक्षण.

दोहरा.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

भली द्रय हस्तनी भूंगळी, काहल तुल्य तमाम ;
तुं बजाव गुणी तुंडकिनी, अवर तित्तरी नाम. ७२५

चुक्का लक्षण.

दोहरा.

चार हाथनी भूंगळी, अवर तुंडकिनी तुल्य;
चारु ए चुक्का कहो, आनँद धरी अमूल्य. ७२६

शृंग लक्षण.

दोहरा.

पाडानुं लइ पीन अति, शोधी सारुं श्रंग;
प्रीतेंथी पालैस करी, करो सचिक्कण अंग. ७२७
गोल करी मुख गुणीजनो, आगळ धरी उमंग;
वृषभ श्रंग अष्टांगुलनुं, सांधो छेडा संग. ७२८
वृषभ शृंग द्वय आंगुली, कापी करीए छेद;
त्यां मुख राखी वजवीए, भलो शृंगनो भेद. ७२९

शंख लक्षण.

एकादश आंगुल तणो, शंख सुशोभित शोध;
शुद्ध नाभि उंपर सुभग, अंदर नहीं अवरोध. ७३०
शंख मूळने वर्सी करी, धातु भुंगळी धार;
मुख राखी त्यां मोदथी, शंख बजव सुखकार. ७३१

सुनारि लक्षण.

दोहरा.

चारु रक्त चंदन तणी, पोकल वंशाकार;
भव्य बनावो भूंगळी, पूर्ण वधारी प्यार. ७३२
कनक पुष्प आकार मुख, कर धरीने अनुराग;
एक बिलस्त उमंगथी, त्यागी उपरनो भाग. ७३३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

एक एक अंगुष्टना, अंतरपर सुखराशि ;
अष्ट छिद्र कर गोळ शुभ, जाणी जुगति खासी. ७३४
देवनाल कर मुखपरे, लांबो आंगुल चार ;
दीर्घ चतुर आंगुलतणी, नरसल भुंगळी धार. ७३५
हस्ती दंतनी दीपती, वा काष्टनी कराव ;
भुंगळी मुखपर भावथी, चकरी गोळ चडाव. ७३६
नरम अति नरसल तणो, कोडे कलश बनाव ;
भुंगळीना मुखमां सुखे. धृतिथी सुदृढ धराव. ७३७
ए भुंगळी मुखमां धरी, पूर्ण पवन भर भाइ ;
कर अंगुलिथी बंध कर, षड छिद्रो सुखदाइ. ७३८
नाद रन्ध्र आदि तणुं, षड्जनुं सुरन्ध्र अंत ;
उभय रन्ध्र ए अहरनिश, खुलां राख धरी खंत. ७३९
क्रम सह षड् स्वर समजजे, षड् छिद्रोमां शुद्ध ;
गमको आंदोलन सहित, वजव सुनारि विशुद्ध. ७४०

नागसर लक्षण.

दोहरा.

लांबी नाळी निरखीने, तुंबी लीजे एक ;
तेनी नीचे छिद्र कर, व्हाल धरी सविवेक. ७४१
द्वय मुरलि नरसल तणी, बनावी रूडी रीत ;
जमाव मीणथी छिद्रमां, पूर्ण धरीने प्रीत. ७४२
खुल्लुं करी मुख तुंबीनुं, मुख राखी ते संग ;
नित्य बजावो नागसर, उरमां धरी उमंग. ७४३

मुखवीणा लक्षण.

दोहरा.

नेह धरी नरसल लई, उत्तम एक त्रिलस्त ;
भव्य भुर्जपत्रो थकी, सुगुणी लपेट समस्त. ७४४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

प्रेमधरी मुख पवनथी, विधिवत् नित्य वजाव;
मुखवीणा मनहरण ए, ले वजावीने ल्हाव. ७४५

चंग लक्षण.

दोहरा.

ललित लोह धातु लई, कर त्रिशूल आकार;
आडी चतुरांगुलतणी, लोह शलाका धार. ७४६
सरल शलाका मध्यनी, पंचागुलनी राख;
मुखे ग्रह्याना भागनो, अग्र पातळो दाख. ७४७
मुख बाहिर रहे भाग ते, कर शुभ वांको साव;
वधघट करवा स्वर तणी, मुखपर मीण लगाव. ७४८
दंते भींसी अग्रने, तर्जनी अंगुली यार;
मध्य शलाका वक्रपर, मोद धरीने मार. ७४९
सप्त स्वरो समजी करी, गुणी गान जमाव;
चाहे चंग वजावतां, भला गुणीने भाव. ७५०

पत्रिका लक्षण.

दोहरा.

कलित तरुत्वक्नी कर नली, प्होळी आंगुल एक;
लांबी सार्धद्वयांगुली, सदाय कर सविवेक. ७५१
दंत संग दबवी करी, जुगतें जीभ लगाव;
मुख पवनेथी पत्रिका, वारंवार वजाव. ७५२

स्वरसागर लक्षण.

दोहरा.

एक हस्त लांबो अने, प्होळो अरधो हाथ;
जाडो आंगुल चारनो, कर पाटो मुख साथ. ७५३
अंदरथी पोकल अखिल, पक्व काष्टने पेख;
सारुं सरल सुंदर सदा, द्रष्टि पथथी देख. ७५४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

दोढ हस्तनी दीर्घ द्वय, मुरलि मनहरनार;
द्वय आंगुलने अंतरे, दक्षिण बाजु धार. ७५५

देवनाल नरमल तणुं, बनावीं रुडी रीत;
चोड खदिर भुंगळी परें, मीण थकी धरी प्रीत. ७५६

द्वय मुरलीना मुखपरें, ए भुंगळी धुरी भाव;
बखणाया वादुक महीं, जुगती सहित जमाव. ७५७

काष्ट तणा पाटापरे, स्वर उपावबा शुद्ध;
चोवीश छिद्रो चोंपथी, व्हालें करो विशुद्ध. ७५८

शुद्ध अने विकृत स्वरो, अंगुली थकी उपाव;
स्वरसागरने स्नेहथी, वळीया नित्य बजाव. ७५९

वक्रीरणशृंग लक्षण.

दोहरा.

पीतलनी के ताम्रनी, कर भुंगळी त्रय हस्त;
मध्ये आंटावाळ त्रय, सर्पाकृति समस्त. ७६०

पुच्छ भाग मुखमां लई, भर समीर भरपूर;
ए वक्रीरणशृंगने, सदा बजावे शूर. ७६१

चतुर्विधि वाद्य गुण.

दोहरा.

रक्ति विरक्त मधुर अने, शुभ अक्षरसम जाण;
शुद्ध सुकल घनने गणी, स्फुट प्रहार उर आण. ७६२

सुभर विघुष्ट वखाणीए, सहु वखतें सुखधाम;
ए दश गुण वाद्यो तणा, नित्य कहे नथुराम. ७६३

रक्ति लक्षण.

दोहरा.

प्रिय लागे अति कर्णने, वाद्य तणी ध्वनि ज्यांहीं;
रस भरनारो रक्ति गुण, प्रगट थाय छे त्यांहीं. ७६४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विरक्त लक्षण.

दोहरा.

अन्य वाद्य संगे मळी, वाजे वाद्य सुरूप ;
निज रस न्यारो उद्भवे, एह विरक्त अनुप. ७६५

मधुर लक्षण.

दोहरा.

व्हाल भरण जे वाद्यनी, ध्वनि गंभीर गणाय ;
एह मधुर गुण मानवो, श्रवण महीं सुखदाय. ७६६

अक्षर सम लक्षण.

दोहरा.

गुरु लघु अक्षर गीतना, उर धरी ए अनुसार ;
मुखथी वाद्य वजावीए, द्रढ अक्षरसम धार. ७६७

अक्षर सम भेद.

दोहरा.

आदि अंगसम. तालसम. यतिसम लयसम लेख ;
नित्य न्याससम. नेहभर, दिव्य नजरथी देख. ७६८

अपर भेद अपन्याससम, समपाणि छे सात ;
अक्षरसमना उर धरो, अखिल भेद अवदात. ७६९

अंगसम लक्षण.

दोहरा.

वाद्य गीत आरंभथी, समाप्ति सूधी स्होय ;
नित्य करे निर्वाह त्यां, भेद अंगसम होय. ७७०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

तालसम लक्षण.

दोहरा.

वाद्य तालने जाळवी, करे गीत निर्वाह ;
तुर्त प्रगटशे तंतथी, भेद तालसम त्यांह. ७७१

यतिसम लक्षण.

दोहरा.

बजवाये वर वाद्य ज्यां, यति समान सुखरूप ;
अक्षर समनो भेद भल, यतिसम एह अनुप. ७७२

लयसम लक्षण.

दोहरा.

लय द्रुत मध्य विलंबित, त्रय तालेनी जेह ;
बजाव वाद्य बतावी ए, गण लयसम गुणगेह. ७७३

न्यास सम लक्षण.

दोहरा.

न्यास स्वर पर गीतना, वाद्ये लियो विराम ;
एह न्याससम निरखीअें, नित्य कहे नथुराम. ७७४

अपन्यास सम लक्षण.

दोहरा.

गीत तणो अपन्यास स्वर, बतावी वाद्य बजाव;
एह भेद अपन्याससम, हरदम लक्षे लाव. ७७५

समपाणिसम लक्षण.

दोहरा.

सम पाणि अवपाणिने उपरि पाणि उर आण ;
बजाव वाद्यो सहित ए, समपाणिसम जाण. ७७६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्ध लक्षण.

दोहरा.

बनेल होये वाद्य जे, सदा शास्त्र अनुसार ;
वा लौकिक रीति मुजब, एह शुद्ध सुखकार. ७७७

कल लक्षण.

दोहरा.

वाजे वाद्य व्यंजन विना, जहां गीत अनुसार ;
अनुरंजन सहुने करे, त्यां कल भेद विचार. ७७८

घन लक्षण.

दोहरा.

जेह वाद्यनी गाढ ध्वनि, सदा दूर संभळाय ;
भव्य भेद घन नामनो, गुणीमां नित्य गवाय. ७७९

स्फुट प्रहार लक्षण.

दोहरा.

ताडन करतां वाद्यने, प्रगटे ज्यां ध्वनि शुद्ध ;
स्फुटप्रहार भल भेद ए, व्हालें गणो विशुद्ध. ७८०

सुभर लक्षण.

दोहरा.

जे वाजानी ध्वनिथकी, कंठ तणी ध्वनि ज्यांहीं ;
बने मनोहर मोदथी, सुभर भेद छे त्यांहीं. ७८१

विघुष्ठ लक्षण.

दोहरा.

वजावतामां श्रवणमां, जेह वाद्य सुखरूप ;
रंजन करे उदासी हरी, एह विघुष्ठ अनुप. ७८२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

वादुक लक्षण.

दोहरा.

डंकाथी वा हस्तथी, ताडन करी रसाल ;
ताल यति लय जाणीने, वजवे वाद्य विशाल. ७८३
जेवुं वाद्यनुं काम ज्यां, वजवे तेवी रीत ;
कर्या विना ध्वनि वाद्यनी, समजे स्वर सह प्रीत. ७८४
गायक केरा दोषने, प्रगट करे नहीं क्यांय ;
आरंभथी समाप्ति लगी, साचवी रहे सदाय. ७८५
गीत नृत्यना भेदनी, समजणमांहीं सुजाण ;
विविध वाद्यना भेदनी, पूरेपूरी पिछाण. ७८६
अखिल गुणो ए एकमां, सदा वसे सुखदाय ;
विश्वमहीं वादुकगणे, ए **वादुक** वखणाय. ७८७

वादुक हस्त गुण.

दोहरा.

वजाववामां वाद्य जे, हरदम लायक होय;
कोमल सुंदर सुद्रढ अति, सदाय रसप्रद स्होय. ७८८
वळी सचिक्कण गाड नख, स्वेद रहित सुखकार ;
चाले चारु अँगुलिओ, अखिल अनंत प्रकार. ७८९
श्रमित न थाय वजावतां, ताडन समय प्रमाण ;
हर्षे **वादुकहस्तना**, जाहिर गुण ए जाण. ७९०

त्रिपुरुष लक्षण.

दोहा.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रथी, ज्यां त्रय अंगुल जाण,
अंगुल वीशतणी असल, वर **त्रिपुरुष** वखाण, ७९१.

चतुर्मुख लक्षण.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रमां, अंतर अंगुल चार,
एकवीश अंगुल अनुप, धीर **चतुर्मुख** धार. ७९२

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पञ्चवक्त्र लक्षण.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रमां, शर अंगुलनो फेर,
बावीश अंगुलनी बने, पञ्चवक्त्र शुभ पेर. ७९३

षड्मुख लक्षण.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रथी, षड् अंगुल सुखरूप,
प्रमाण त्रेवीश अंगुली, षड्मुख एह अनुप. ७९४

मुनिराज लक्षण.

नादरन्ध्र मुखरन्धथी, शुभ सप्तांगुल मान,
चारु चोवीश अंगुलनी, छे मुनिराज महान. ७९५

वसु लक्षण.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रमां, अंतर अंगुल अष्ट,
प्रमाण अंगुल पचीशनुं,समजो वसु विण कष्ट. ७९६

नाथेन्द्र लक्षण.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रथी, दूर नव अंगुले ज्यांय;
छवीश अंगुल शोभती, नित नाथेन्द्र गणाय. ७९७

महानन्द लक्षण.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रथी, दश अंगुल रहे दूर;
अठयावीश अंगुल सुखद, महानन्द भरपूर. ७९८

रुद्र लक्षण.

एकादश अंगुल अलग, नादछेद मुखछेद;
अठयावीश अंगुल कदे, खाचित रुद्र हर खेद. ७९९

आदित्य लक्षण.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रथी, द्वादश अंगुल देख;
ओगणत्रीश अंगुल तणी, लही आदित्य सुलेख. ८००

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मनु लक्षण.

अलग त्रयोदश अंगुलि, नादछेद मुखछेद;
अंगुल त्रीश तणी अनुप, भव्य मनु छे भेद. ८०१

कलानिधि लक्षण.

चारु चतुर्दश अंगुलि, मुखथी छेद सुनाद,
अंगुल एकत्रीशनी, कलानिधि विणवाद. ८०२

अन्वर्थ लक्षण.

नादरन्ध्र मुखरन्ध्रथी, पंदर अंगुल पेख;
बत्रीश अंगुलनी बने, अन्वर्थ सु अवरेख. ८०३

फुत्कार लक्षण.

मोढें जे मुख पवनथी, वर बंसी वजवाय,
एज पवन फुत्कार छे, विश्वे जे वखणाय. ८०४

फुत्कार भेद.

सुखदायक छे स्निग्धता, घना रक्ति शुभ रीत;
पछी व्यक्ति ने प्रचुरता, लेखो प्रिय ललित. ८०५
कोमलता नादानुरण, गणतां कलित गणाय;
त्रिस्थानत्व पछी त्वरित, श्रावकत्व समजाय. ८०६
मुददायक माधुर्यने, सावधानता सार;
द्वादश ए फुत्कारना, भेद खेद हरनार. ८०७

घना लक्षण.

दोहा.

एक रूप अति गाढ ध्वनि, बंसीमां वजवाय;
घना नाम फुत्कारनुं त्यां, सहज महीं समजाय. ८०८

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

रक्ति लक्षण.

श्रोतानां मन वश करे, श्रवण थतां सुखरूप;
ए रक्ति फुरकार छे, अवनि मांहि अनुप. ८०९

व्यक्ति लक्षण.

गीत प्रबंधादि महीं, लय स्वर जाति ताल;
पाठाक्षरे प्रगटे ध्वनि, ए व्यक्ति सुखमाल, ८१०

प्रचुरता लक्षण.

प्रगट थाय सहु वाद्यमां, मुदें मुख्ये महीं धाम;
अति मन्द अति तीव्र नहि, ध्वनि प्रचुरता नाम. ८११

लालित्य लक्षण.

श्रोताओ करवा श्रवण, जे ध्वनिनुं ललचाय;
आनँद आपे अभिनवो, ए लालित्य गणाय. ८१२

कोमलता लक्षण.

रोगी सुखी निर्बल सबल, बाल वृद्ध नरनारी;
जे ध्वनि प्रिय सहुने बने, त्यो कोमलता धारी. ८१३

नादानुरण लक्षण.

नाद अने अनुकरण सह, करे वाद्यनो संग;
ए ध्वनि गण नादानुरण, उरमां धरी उमंग. ८१४

त्रिस्थानत्व लक्षण.

जे ध्वनि अनुरंजन करण, मन्द्र मध्यने तार;
प्रगट थाय त्रये स्थानमां, त्रिस्थानत्व विचार; ८१५

श्रावकत्व लक्षण.

ज्यां जोइए जे रीतथी, त्यां तेवो सँभळाय;
गमक आदिथी युक्त ध्वनि, श्रावकत्व कहेवाय. ८१६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

माधुर्य लक्षण.

श्रोताओने श्रवणनी, रुचि उपजावे जेह;
महद एह माधुर्य छे, गणता गुणी गुणगेह. ८१७

सावधानता लक्षण.

नहि स्थूल ने सूक्ष्म नहि, वधघट नहीं जराय;
आनँददायक ए ध्वनि, सावधानता थाय. ८१८

फुत्कार विकार लक्षण.

श्रोताओने श्रवणमां, विरस बने बहुवार;
कर्णकटु कोविद गणे, ए फुत्कारविकार. ८१९

विकार भेद.

स्तोक प्रथम कृष द्वितीय छे, तृतीय, स्खलित उच्चार;
त्रय फुत्कार विकारना, दिसें भेद विचार. ८२०

स्तोक लक्षण.

स्वल्प समय समता ग्रहे, तूटे वारंवार;
स्तोक नाम फुत्कार ए, बने हर्ष हरनार. ८२१

कृष लक्षण.

स्थिर लघु समय रहे अने, करे नहीं ध्वनि स्पष्ट;
कृष नामे फुत्कार ए, दिए कर्णने कष्ट. ८२२

स्खलित लक्षण.

वखतें लघु वखतें महद, स्थिति नहि एक समान;
स्खलित नामनी विकृति, वदे वडा विद्वान. ८२३

फुत्कार दोष भेद.

कपिल तुम्बकी कार्कीने, पर्छी मंदष्ट प्रमाण;
दोष अव्यवस्थित सहित, पांच युक्तिथी जाण. ८२४

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

कपिल लक्षण.

करुं विकारने कारणे, होये जे स्वर हीन ;
अथवा फाटी फुत्कृति, मनाय कपिल मलिन. ८२५

तुम्बकी लक्षण.

एकॅ स्थळे आवी मळे, क्रम तजीं ज्यां फुत्कार ;
तेने कहीए तुम्बकी, दोष दुःख हरनार. ८२६

काकी लक्षण.

घडि मन्द घडि तीव्र वनीं, करे प्रगट स्वर काक ;
ए काकी श्रोताओनां, चित्त चडावे चाक. ८२७

मंदष्ट लक्षण.

दांत भींतीं फुत्कार जे, कर्णे प्रगट कराय ;
महा दोष मंदष्ट ए, सुणतां शोक छवाय. ८२८

अव्यवस्थित लक्षण.

वधघटथी स्वर तोडतो, करे जेह फुत्कार ;
एह अव्यवस्थित अजब, दोष महा दिलद्वार. ८२९

वंसी वादक गुण.

सवैया एकत्रीशा

जेनी अंगुलि चाले सीधी जे जाणे त्रय स्थानकने,
राग मेळमां कुशळ द्रुतादिक वेगमांहि बहु चतुर बने ;
मधुर पणे प्रगटवीं रागने तजे नहीं सँग वाद्य तणो,
कट्टुर दांकतो वादक केरी देशीं रागमां प्रविण वणो. ८३०
गीत प्रबंधादिकनी रचना गर्व वकी करनारो होय,
मन्द्र तार आदि स्थानोने विधिवत निर्वहनारो होय ;
उलटपुलट गाथा बजावता मांहि स्वरो लघु दीर्घ करे,
एवो बंसी बजावनारो खलक मांहि वखणाय खरे. ८३१

घनवाद्य लक्षण.

दोहरा.

विना चर्म विण तारना, जन्म धातुथी धार ;
अवाज आघातें करे, ए घनवाद्य विचार. ८३२

घन वाद्य भेद.

दोहरा.

ताल कांस्यतालनें पछी, गुणिजन घंटा लेख ;
खचित क्षुद्रघंटा अने, जयघंटा द्रग देख. ८३३
कलित पछी कम्राट छे, शुक्तिवाद्य सुखरूप ;
पट्टवाद्य सुप्रसिद्ध छे, घट जलयंत्र अनूप. ८३४
कल्पतरु पछी कोडथी, काष्टताल गण मित्र ;
ए भेदो घनवाद्यना, परखो गुणी पवित्र. ८३५

ताल लक्षण.

दोहरा.

शुद्ध करीने अग्निमां, कांस्य धातुने शोधों ;
उभय ताल एना करो, अलग धरी अवरोधीं. ८३६
अष्टावीश आंगुल तणां, प्होळां मुख धरी प्रीत ;
नीचे झारी लीजिअे, समजी सारी रीत. ८३७
ए नीचेना भागमां, धीरा करजे ढाळ ;
कर नाभिमां छिद्र शुभ, नहीं लघु नहीं विशाल. ८३८
गुंजा प्रमाण कर गुणी, तालथी यवभर दूर ;
देढ आंगुली उपरे, नाभि सांधे कर शूर. ८३९
ए नाभिना छिद्रमां, दाना दोरी नाख ;
परोवीने द्वय तालमां, बांधी द्रढ करी राख. ८४०
लघु दिरव तालो उभय, करजे आणी रीत ;
उभय हाथमां उभयनी, दोरी ग्रहो खचित. ८४१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

डाबा करनी तर्जनी आंगुली संगे यार;
लइ दोरी लघु तालनी, लपेट धारी प्यार. ८४२

दीर्घ तालनी दोरीनी, धरी आनंद उरमांय;
दक्षिण करनी तर्जनी, संग लपेट सदाय. ८४३

लघु मादा नर दीर्घ छे, व्हालें वात विचार;
नर मुख नीचे राखीने, मादा उपर मार. ८४४

अल्प ध्वनि मादातणी, नरनी ध्वनि विशाल;
आदि भेद घन वाद्यनो, तेते कहे गुणी ताल. ८४५

कांस्य ताल लक्षण.

दोहरा.

कमलपत्र सम गोल कर, उभय कांस्यना ताल;
द्वय आंगुलनी नाभि कर, मध्य वचारी व्हाल. ८४६

नाखी दोरी त्यां छिद्र करी, वींट राखी आधार;
कांस्यताल द्वय कर थकी, वजाव वारंवार. ८४७

घंटा लक्षण.

दोहरा.

घंटा करीए कांस्यनी, उंची आंगुल आठ;
उपर पिंड अष्टांगुले, सछिद्र धर भर ठाठ. ८४८

चाहे मुख चतुरांगुलि, पहोलुं गोळ बनाव;
पिंड छिद्रमां दंड धरी, भला गुणीने भाव. ८४९

माय मुष्टिमां एवडो, ए पीतळनो दंड;
ए पर मूर्ति गरूडनी, प्रीतें धरो प्रचंड. ८५०

मध्ये लोलक लोहनुं, लांबुं आंगुल एक;
बांधो घंटा मांहि ए, विधविध करी विवेक. ८५१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

क्षुद्र घंटा लक्षण.

दोहरा.

लघु घुघरी के घूघरा, सुकांस्यना सुखधाम;
खचित क्षुद्रघंटा तणुं, नौतम धारे नाम. ८९२

जयघंटा लक्षण.

दोहरो.

देवमंदिरे दीपनी, आरती वखते जेह;
जाहिर बाजे झालरी, छे जयघंटा एह ८९३

महा घंटा लक्षण.

दोहरा.

महिपतिओने मंदिरे, वखत बतावना काज;
बाजे झालर ए गणो, महाघंटा गुणीराज. ८९४

कम्राट लक्षण.

दोहरा.

पहोळी आंगुल उभयनी, खदिर पट्टीओ खास;
द्वादश आंगुल दीर्घ कर, हृदये धरी हुल्लास. ८९५
चार पट्टीओ चाहथी, साफ बजाव सुजाण;
करीने कांइक पातळा, अग्रभाग सुखमाण. ८९६
मध्य भाग मरजी मुजब, कर प्रमाण कर यार;
एक करे द्वय द्वय ग्रही, द्वय कर मांही धार. ८९७
अंगुलीने अंगुष्टना, दाडी मूळे दबावी;
पहोंचा केरा कंपथी, ले कम्राट बजावी. ८९८

चतुर्वाद्य भेद.

दोहा.

तत आनद्ध सुषिर अने, घन सह वाद्यो चार;
प्रगट थायँ प्रत्येकना, प्रेमे चारँ प्रकार. ८९९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

आदि शुष्क अवरेखीने, गीतानुग गण यार;
नौतम नृत्यानुग गणी, पछी द्वयानुग धार. ८९०

शुष्क लक्षण.

दोहा.

नृत्य गीत विण नेहथी, मात्र वाद्य वजवाय;
महद गुणीना मतथकी, एह शुष्क कहेवाय. ८९१

गीतानुग लक्षण.

गीत संग अति चित्तहर, वाजे वाद्यो जेह;
कहे संगीताचार्य सहु, गीतानुग छे एह. ८९२

नृत्यानुग लक्षण.

दोहा.

सुंदर संगीत नृत्यमां, वाद्य जेह वपराय;
नेहे नृत्यानुग कही, गुणीओ गीते गाय. ८९३

द्वयानुग लक्षण.

व्हाले वाजे वाद्य ज्यां, गीत नृत्यने संग;
धीर द्वयानुग धारी ले, उरमां धरी उमंग. ८९४

चतुर्वाद्य.

नन्दी. स्वातिगण अने, तुम्बुरु नारद आप;
चतुर्वाद्यने उद्भव्यां, मोद धरी सह माप. ८९५

नर्तन भेद.

दोहा.

त्रय भेदो नर्तन तणा, छे मुद मंगल रुप;
नाट्य नृत्यने नृत्त शुभ, अवनि मांहि अनुप. ८९६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नाट्य लक्षण.

वेद भेद अभिनय तणां, ग्रहण करी गुणवान;
नर्तन करता नेहथी, मानो नाट्य महान. ८६७

नृत्य लक्षण.

दोहा.

चारुं चार अभिनय थकी, प्रगट करे भल भाव;
नृत्य कहो गुणी तेहने, चित्तें वधारी चा'व. ८६८

नृत्त लक्षण.

आंगिक अभिनय मात्र ग्रही, अन्य सुअभिनय त्यागी;
थाय गात्र विक्षेप ते, कहो नृत्त अनुरागी. ८६९

नृत्य नृत्त भेद.

नृत्य नृत्तना निरखीए, उभय भेद अनुकूल;
उद्धत मधुर सुकार्यमां, बने सदा मुद मूल. ८७०
अवर नाम ए उभयना, गण तांडव ने लास्य;
तांडव तंडुथी लास्यनो, पार्वती थकी प्रकाश. ८७१

नर्तक भेद.

कंचनी नट भगतनट, चतुर्थ चारण नाम;
वैतालिक कोलाहट, षड नर्तक सुखधाम. ८७२

कंचनी लक्षण.

छप्पय.

रूपवतीने तरुण, शरीर सुकुमार बिराजे;
नाजुक अंग उपांग, वरष षोडश वयराजे;
नैतम स्तन नथुराम, रसिक चित निर्लज्ज नमणी;
गीत वाद्य नृत्यमां, प्रविणता प्राप्त करी वर्णी;

भाषा विविध प्रकारनी, जाणे जे जुगती भरी;
हाव भाव चतुराइ भर, कंचनी कहीए ए खरी. ८७३

नट लक्षण.

दो .

चारु अंग चेष्टा थकी, प्रगट करे रस भाव;
एह पुरुष नट पेखीअें चित्तें वधारी चा'व. ८७४

भगतनट लक्षण.

दोहा.

नाचे गाये नित्य जे, प्रभु आगळ धरी प्यार;
एह भगतनट भव्य छे, समजे संगीत सार. ८७५

चारण लक्षण.

बनावी जाणे बहु विधि उत्तम रीते आप;
घुवरा अथवा कणगती, महद तालने माप. ८७६
गीत कही जाणे गुणी, हास्य वचन वदनार;
सदा सुकंठे शोभतो, चारण लक्षण चार. ८७७

वैतालिक लक्षण.

दोहा.

प्रबल हास्य प्रगटावतो, नाची जाणे नित्य;
प्रगट करे पाठाक्षरो, ताल गती धरी चित्त. ८७८
चतुर सरव संगीतमां, शखिवी जाणे नृत्य;
सरल स्वभावे शोभतो, शुभ वैतालिक सत्य. ८७९

कोलाहट लक्षण.

दोहा.

खड्ग धारवा थाली पर, नृत्य करे जे नित्य;
मुखथी मोती परोवतो, चतुर राखी स्थिर चित्त. ८८०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उतारे सांसो शिरथी, पट्टो ग्रहे प्रसिद्ध ;
अनेक क्रम ए वार ए, ए कोलाहट सिद्ध. ८८१

नृत्य मंदिर लक्षण.

छप्पय.

निर्मल शुभ्र दिवाल, रत्न पाषाणनी पेखो,
मनहर मणिथी जटित, गवाक्षो अति अवरेखो ;
पडदा विविध प्रकार, रंगबेरंगी द्वारे,
नरम बिछायत गरम, गलीचानी करी प्यारे ;
षड् ऋतुमां सुख उपजे, वळी विशाल नथुराम छे,
सदा सुगंधिथी भर्युं, नौतम नृत्यनुं धाम छे. ८८२

सभा लक्षण.

रोळावृत.

वेद पाठीने वैद्यक विजोतिषज्ञ पंडित,
वर लौकिक वार्ताज्ञ धर्मशास्त्री गुण मंडित ;
दक्षिण बाजु एह, सर्वना स्थानक सुंदर,
देव समान दिदार, महद गुण केरा मंदिर. ८८३

डाब बाजुए वीर क्षत्रि रणरागी राजे,
राज्य काजमां निपुण, अमित अमात्यो छाजे ;
मध्य बिराजे महिप, पाछळें परिजन उभा,
छत्र चमर धरनार, नकीबनी सुंदर शोभा. ८८४

सन्मुख उभी होय, नृत्य कारिणीनी श्रेणी ;
विधुवदनी वरवेश, गुंथी पुष्पोथी वेणी ;
विविध वाद्य स्वर साथ, नृत्य आरंभ करावे,
जयजयकार उच्चार, मंगलाचरणे थावे. ८८५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सभापति लक्षण.

छप्पय छंद.

महादानी गुणजाण, धीर शूरवीर रसिकवर,
पात्र कुपात्र विवेक, कौतुकी सहुने सुखकर,
गुणग्राही शास्त्रज्ञ, प्रियंवद जनहितकारी,
सर्व कलामां प्रविण, सत्यवादी सुविचारी,
स्नेह अति संगीतमां वळी रसीला रुपनो,
नेह धरी नथुराम कहे, थाओ विजय ए भूपनो. ८८६

आचार्य लक्षण.

रोलावृत्त.

नृत्य भेदनुं सर्व तत्व, परिपूर्ण पिछाणे,
ताल तणा ग्रह मोक्षभेद, जुगतिथी जाणे,
घटवध सहु रागनी, गमक सह गुणी उर धरतो;
लय यति वाद्य प्रबंध, प्रगट पाठाक्षर करतो. ८८७
वाद्यो वेद प्रकार, बजावी जाणे बहु विधि,
भला पात्रने मात्र, शिखावे नेहे गुण निधि;
पात्रतणा हृदयनी, वात जाणे विण वारे,
नृत्य तणा गुणदोष, अखिल अंतरे उतारे. ८८८
प्रेक्षकनी चितचाह, जाणवामां जोरावर,
रीझवी जाणे राज, प्रबल वाचाल वीरनर;
क्षमा शील संपन्न, प्रसन्न वदन मृदु वाणी,
उत्तम ए आचार्य लीयो जुगतिथी जाणी. ८८९

संप्रदाय लक्षण.

दोहा.

आगळना आचार्यनो. बतावेल पथ जेह;
तेम प्रमाणे नाचवुं, संप्रदाय छे तेह. ८९०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संप्रदाय भेद.

संप्रदायना भेद त्रय, नित्य अंतरमां आण ;
उत्तम. मध्यम. ते पछी, कनिष्ठ जुगते जाण ; ८९१

उत्तम संप्रदाय लक्षण.

रोळावृत.

ताल बजावे उभय पुरुष, करताल बजावे,
झांझ बजावे उभय, चार वंसी स्वर छावे ;
उभय वंसीधर अन्य, मदद देनारा लायक,
स्वर सहायको अष्ट, उभयं छे अग्रणी गायक. ८९२
मुख्य गायको उभय, अष्ट स्त्री सहाय काजे,
नृत्य कारिणी एक, एक नर्तक भल भ्राजे ;
चंदन चर्चित भाल, पुष्पमालाथी भूषित,
हर्ष भरेलां हृदय, कोइ रति मात्र न दूषित. ८९३
सहुनां सुंदर रूप, सहु श्रंगारे शोभे,
अधिक छतां मन एक, प्रेक्षकोनां मन लोभे ;
गीत वाद्यने नृत्य, मळी स्वर संगे थाये ;
ए उत्तम संप्रदा, नित्य नथुराम गणाये. ८९४

मध्यम संप्रदाय लक्षण.

दोहा.

उत्तम करतां अर्धजन, नृत्य महीं योजाय ;
मानो मध्यम संप्रदा, ए स्थलमां स्थिर जाय. ८९५

कनिष्ट संप्रदाय लक्षण.

मध्यम करतां पण अरध, लिए नृत्यमां भाग ;
कहीं कनिष्ट संपदा, उर धरी अनुराग. ८९६

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्ध पद्धति लक्षण.

रोळावृत.

रंग भूमिमां प्रथम, मात्र आचार्यज आवे,
पछी समाजी सर्व, विविध सहु वाद्य मिलावे;
कंठथी करी ' आकार ' परीक्षा स्वरनी करता,
गजर प्रबन्धथी गुणी, मोद मन मांही धरता. ८९७
रंग भूमिनी एक, बाजुए पडदो नाखे,
नृत्यकार नरनार, अंदरे उभां राखे;
अंगुलिमां ग्रही पुष्प, नत्य करनार रहेछे,
समाजी स्तुति देवनी, प्रबंधे गाइ कहे छे. ८९८
तुर्त तजी अवरोध, रंगभूमिमां आवे,
पात्रो परम हुल्लास, धारीने धूम मचावे,
गाय प्रवेश प्रबंध, समाजी आनँद साथे,
नृत्यकार देवने, दिये पुष्पांजलि हाथे. ८९९
नाट्य नृत्य ने नृत्त थकी पछी नर्तन थाये,
शुद्ध पद्धति एह, गुणी सहु गीतें गाये;
क्यांइ कहेछे प्रथम, वाद्यसम पाठे वागे,
प्रवेश पात्रो करे, तेज समये अनुरागे. ९००
गीत भिन्नने वाद्य भिन्न, कोइ मते कहे छे,
पात्र प्रवेशनी रीत, निराली सर्व ग्रहेछे;
नित्य निरखो नथुराम, शुद्ध पद्धतिना सुंदर,
देश देश प्रति भिन्न भिन्न, भेदो मुदमंदिर. ९०१

पेरुणी लक्षण.

रोळावृत.

भस्मे भूषित अंग, श्वेत वस्त्रोथी शोभे,
चंदन चर्चित भाल, पुष्पमाले मन लोभे;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शिरपर लांबा वाळ, छेक राखे छोडेला,
घणा घुंघरा पाय, जबर गुणथी जोडेला. ९०२

पंच अंगनी प्रबळ, चतुर चेष्टामां पूरण,
ताल लये नाचतो, एक वाते न अपूरण;
त्रिविध स्वांग धरनार, नकल अभिनव करनारो,
नृत्यकार नथुराम, सभा प्रिय पेरुणी प्यारो. ९०३

तांडव लक्षण.

दोहा.

रावणादि राक्षस तणी, उद्धत चेष्टा ज्यांय;
नित्य बतावी नाचीए, तांडव प्रगटे त्यांय. ९०४

अंगहार लक्षण.

नेहे नृत्यादिक महीं, वर विलासथी जेह,
मनहर अंग मरोडवुं, अंगहार छे एह. ९०५

सोरठा.

रहे शंभुने अंग अंगहार एथी कह्या;
उरमां धरी उमंग, कहुँ भेद तेना भला. ९०६

अंगहार भेद.

रोळावृत्त.

छे आदि स्थिरहस्त पछी पर्यस्तक प्यारो,
सूचिविद्ध. अपविद्ध. अने आक्षिप्त विचारो;
उद्घट्टित. विष्कंभक, अपराजित अवरेखो,
विष्कंभापसृत वळी, मुदें मत्ताक्रीड देखो. ९०७

१. तांडव नृत्यना तमाम भेद विस्तार युक्त अमारा नाट्य शास्त्रमां लखाइ चुक्या छे एटले पछी आंही नाम मात्रज आपीशुं.

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

स्वस्तिक रेचित अने, पार्श्वस्वतिक परमाणो,
चारु वृश्चिक. चमर. मत्तस्खलित सु उर आणो ;
मदाद्विलसित महान, सु गतिमंडल. परिच्छिन्न,
परिवृत्त रेचित रसिक, वळी वैशाख अभिन्न. ९०८

परावृत्त पेखीअें, अलातक. पार्श्वच्छेद छे,
विद्युद्भ्रान्त वरीष्ट, अने उद्वृत्त भेद छे ;
एना पछी आलीढ, राख रेचित पछी रागे,
आच्छुरित आनंदरूप लखीं भय सहु भागे. ९०९

आक्षिप्त रेचित, सर्व गुणीने सुख करनारो,
सरल भेद संभ्रान्त, भाव नवला भरनारो ;
एह पछी अपसर्प, सु अर्धनिकुट्टक नाम,
अंगहार बत्रीश, नित्य कहे छे नथुराम. ९१०

नृत्यकरण लक्षण.

दोहा.

नृत्यमहीं सुविलासथी, बतावा रस रीत ;
चेष्टा हस्त चरणतणी, नृत्यकरण ए नित्य. ९११

नृत्यकरण भेद.

छन्द हरिगीत.

तल पुष्प पुट. वर्तित अने, चलितोरु पछी अपविद्ध गण,
समनख सु लीन. स्वतिक रेचित भेद शुभ भावेथीं भण ;
मनहरण मंडल स्वस्तिक, निकुट्टक सु अर्धनिकुट्टक,
कटिछिन्न आगळ अर्ध रेचित, वळी वक्षः स्वस्तिक. ९१२

उन्मत्त स्वस्तिक. पुष्प स्वस्तिक, सु दिक् स्वस्तिक संग्रहो,
विक्षिप्त क्षिप्तक. अर्ध स्वस्तिक, एह अंते अंचित,
सु भुजंगा त्रासित. उर्ध्वजानु, नित्य जाण निकुंचित. ९१३

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सु मतल्लि. अर्धमतल्लि छे रेचक निकुट्टित भाव भर ;
पादापविद्ध, वलित. सु घुर्णित. ललित लक्षण युक्त कर ;
अहित्रस्त रेचित दंडपक्ष, नूपुर अने संभ्रान्त वर,
वैशाख रेचित भ्रमर चतुर, भुजंग अंचित चित्त धर. ९१४
वृश्चिक कुट्टन लता वृश्चिक छिन्न वृश्चिक रेचित,
कटिभ्रान्त वृश्चिक वळी व्यंसित क्रन्त ने पछी कुंचित,
पछी पेख पार्श्वनिकुट्टक, सुललाट तिलक उरे लहो,
आक्षिप्त पछी वर वक्र मंडल, उरोमंडल चित्त चहो. ९१५
छे तल विलासित अर्गलसु, विक्षिप्त ने आवर्त छे,
देखवा लायक दोल पादक, विवृत्त ने विनिवृत्त छे ;
पछी पार्श्वक्रान्त निशुंभित सु, वळी विकट विद्युद्भ्रान्त छे,
गजक्रीडित सुविवर्तित, तल संस्फोटित अतिक्रान्त छे. ९१५
छे गरुडप्लुतक गंडसूचि परिवृत्त सन्नत सूची खरो,
गृध्रावलीनक पार्श्वजानु अर्धसूचि उरमा धरो ;
सूचिविद्धने अपक्रान्त, मयूर ललित सुसर्पित हरिणप्लुत,
छे दंडपाद नितान्त प्रेंखोलित अने खासो स्खलित. ९१६
छे सिंह कंपित सिंह विक्रीडित अने करिहस्तक,
उद्वत अपसृत जनित बहित्रक पेखजे सुप्रसर्पितक,
तल घट्टितकने मौलिकाक्रीड, उर विचार उरुदूवृत्त ;
सुविष्णुक्रान्त निवेशकरण, तुं मानजे फरी मदस्खलित. ९१७
संभ्रान्त ने विष्कंभ उद्घाटित वृषभक्रीडित वळी,
लोलित अने सामापसर्पित, भेद नित्य रहे भळी ;
शकटास्यने रंगावतरण सुदंडरेचित नाम ए,
छे कष्ट साध्य तमाम भेदो, नथी सरल नथुराम ए. ९१८

दोहा.

उभय करणथी उद्भवे, नृसमातृका एक ;
कलित कलापा थाय छे, त्रय करणे सविवेक. ९१९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

चार करणथी खंडने, शर संघात सोहाय;
एक गुरु अक्षर तणी, एक कला कहेवाय. ९२०

लास्य लक्षण.

सोरठा.

जहां नृत्य सुकुमार, काम उपावे कोडथी;
पूर्ण वधारण प्यार, लास्य नृत्यमां लेखीए. ९२१

लास्य भेद.

दोहा.

विषम विकट लघु लेखीए, भला लास्यना भेद;
शुभ लक्षण लक्षे लखो, आनंद धरी उछेद. ९२२

विषम लक्षण.

पढी शास्त्र चेटी तणुं, वांकी टेढी रीत;
भ्रमण करे नट नेहथी, थये विषम प्रतीत. ९२३

विकट लक्षण.

होय रूप बेडोलने, चेष्टा पण बेडोल;
तहां विकटनो वास छे, कहुं बजावी ढोल. ९२४

लघु लक्षण.

दोहा.

चेष्टा चित या चित्रथी, नेहे नृत्य कराय;
ललित भेद तहां लास्यनो, तृतीय लघु लेखाय. ९२५

मार्गीलास्य भेद.

छप्पय छंद.

प्रथम गेयपद पछी, भेद स्थितपाठ्य भणाये,
एह पछी आसीन, पुष्पगंडिका गणाये;

प्रच्छेदकने त्रिगूढ, सैन्धव. द्विगूढ देखो.
अवर उत्तमोत्तम, लक्षमां धारी लेखो ,
अंते उक्तप्रयुक्त सह, नौतम ए दश नाम छे ;
मार्गीलास्य तणा ललित, नित्य भेद नथुराम छे. ९२६

देशीलास्य भेद.

दोहा.

चाली. आलीवड अने, ज्ञुगतें लढि. सुक जाण ;
धसक. उरोङ्गण द्रढ करी, अंगहार उर आण. ९२७
ओयारक. त्रिहसी. मनम्, दरद हरण दश भेद ;
लेखो देशी लास्यना, खचित त्रिसारी खेद. ९२८

संगीतसारानुसार मार्गीद्वादश लास्यांग स्थित

पाठ्य लक्षण.

रोळावृत्त.

अंग अनंगथी तप्त, बनी विव्हल अति मनमां,
विर अवस्था करे निवेदन जे सखिजनमां :
व्यंग्य वाक्यवर वदे, प्रगट करीं प्राकृत वाणी,
नृत्य करे धरीं नेह, लीओ स्थितपाठ्य प्रमाणी. ९२९

आसीन लक्षण.

रोळावृत.

नृत्यकारिणी नारीं, करीने उदास आनन,
संस्कृत आर्या करे, शोक चिन्ता धारी मन ;
क्रिया खंडितातणी, करे जन रंजनकारी,
ए स्थलमां आसीन, भेद ल्यो भव्य विचारी. ९३०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

सैन्धव लक्षण.

रोळावृत.

नेह धरी नर्तकी, क्रिया मूर्खनी स्विकारे,
संस्कृत त्यागी साव, वाणी पंजाबी उच्चारे ;
प्रेक्षकने पारिपूर्ण, प्रसन्न करे नर्तनथी,
सुखप्रद सैन्धव भेद, मुदे मानी ल्यो मनथी. ९३१

पुष्पगंडिका लक्षण.

रोळावृत.

गान नर्तकीतणुं, होय मनने हरनारुं,
संगे विधविध वाद्य, श्रवण लागे अति सारुं ;
चेष्टा मन वच अने, कायनी ज्यां नहि जाणो,
होय नृत्य विचित्र, पुष्पगंडिका प्रमाणो. ९३२

प्रच्छेदक लक्षण.

उदय जोइ चंद्रनो, अधिक तनमां जे त्रासे,
उपालंभ आपीने, कलहना भाव प्रकाशे ;
वासकसज्जा तणी, कहे चेष्टा उर भेदक,
नाचे नविन प्रकार, नर्तकी त्यां प्रच्छेदक. ९३३

गेयपद लक्षण.

मृदंगादि अवनद्ध, सुषिर वर वांसळी आदि,
कांस्य ताल. घन वाद्य तत छे वीणादि ;
वेद भेद ए वाद्य, संग मळी गाये नाचे,
गुणी गेयपद कही, सदा एं रंगे राचे. ९३४

द्विगूढ.

अभिनव अर्थ सहित, भाव युत श्लेषे शोभे,
समाधान सह पूर्व पक्ष, वचने मन लोभे ;

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

गौतम नृत्यें निरखनारनां मन ललचाये,
भावें भेद द्विगूढ, एह स्थलमां स्थिर थाये. ९३५

त्रिगूढ.

प्रिय मळवानी वात, उच्चारे अंग मरोडी,
तन सरोम रस चाह, अमित अभिलषा जोडी;
भावें अलंकृति सहित, छंद बोली सुखदायक,
नाचे नर्तकी तहां, त्रिगूढ कहे गुणी लायक. ९३६

वैभाविक.

चेष्टा उत्कंठितातणी, ज्यां नर्तकी करती,
काम पीडित पति विना, आर्त वचनो उच्चरती;
भाव बतावी भव्य, दर्शकोनां दुःख कापे,
अभिनव नृत्यें एकताळी, वैभाविक स्थापे. ९३७

चित्रमद.

जोइ पतिनुं चित्र, करी चेष्टा दरशननी,
कामदेवथी पीडित, बतावे चेष्टा मननी;
जोवा पति प्रत्यक्ष, करे मुख काव्य रूपालुं,
नाची रीझावे सभा, चित्रमद जाणो चारु. ९३८

उक्तप्रयुक्त.

रूठेला पति पास, मनावा जाये नारी,
प्रसन्न करवा काज, वदे वातो अति प्यारी;
ए चेष्टा अनुकूल, जहां नर्तकी प्रकाशे,
उक्तप्रयुक्त अनुप, भेद ते स्थलमां भासे. ९३९

उत्तमोत्तम.

अवलोकन अगणित, अने आलिंगन अगणित,
सरोष भाषण सजल, नेत्रनी चेष्टा अगणित;
हावभाव रस भरित, रचना वदी नर्तकी निर्त्यें,
नाचे त्यां ज्यो निरखों, उत्तमोत्तम अति प्रीते. ९४०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

श्री अशोकमल्लकथित देशी सप्तत्रिंशलास्यांग

चाली.

एकी संगे चलित थाय, कटि भुजा जांघ पद,
सुंदर लयथी मळे नित्य, जाळवी ताल हद ;
मधुर विलासथी युक्त, अमित कोमलता घाली,
नहीं त्वरित नहीं मंद, नृत्य ए चारु चाली. ९४१

आलीवड.

एक संग कटिभुजा, जांघ पद चलावी चंपे,
नृत्य करे नर्तकी, अमित द्रुत गतिए ओपे ;
प्रेक्षकनां मन पूर्ण, प्रफुल्लित करे पलकमां,
ए आलीवड भेद, खूब व्याप्यो खलकमां. ९४२

सुक.

कर्णाभूषण सहित, कंचनी रसिक रतिथी,
कर्ण चलावे कलित त्वरित वा मंद गतिथी ;
करे भावथी भरित नृत्य, नर्तकी विना चुक,
लास्य भेद लेखाय, सर्वने सुखदायक सुक. ९४३

मनस्.

भरवानां शृंगार थकी, उत्तम गुण जेह,
काजळ गुणसम सूक्ष्म, करी बतलावे तेह ;
वडो जाणवा मांहे, परंतु ते गुण आवे,
नृत्य द्रुतादि लये, मनस् भल भेद सुहावे. ९४४

लटी.

कोमळ मधुर विलास, युक्त भुज वक्र व्हालथी,
चलवे एकज तरफ, चित्त चोरे सुचालथी ;
सुंदर मन वश करण, गीत गाये सुखकारी,
नाचे धरी नेह, सर्व ल्यो लटी स्विकारी. ९४५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

उरोङ्गण.

उभय स्कंध कुच उभय, एक संगे वा न्यारा,
ताल गतिमां चलित थाय, प्रेक्षकने प्यारां;
आगळ पाछळ उर्ध्व अधो, भावो दरशावे,
एह उरोङ्गण भेद भव्य भाविकने भावे. १४६

ढिल्लाइ.

नृत्य महीं नर्तकी, अंग सुंदरता संगे,
जरा जरा बतलावी, चलित करी फेरे उमंगे;
हाव भाव लीला, विलासथी करती रंजन,
धरो उरे ढिल्लाइ भेद, करशे दुःख गंजन. १४७

त्रिकली.

चारी वा स्थानमां, त्वरित तालनीलय संगे,
कंप शरीरनो करे, नर्तकी अमित उमंगे;
जोनाराने उरे जबर आनंद वधारे,
विकलपणुं हरनार, भेद त्रिकली छे भारे. १४८

कितु.

उभा भुजा कुच कटि, ताल लय संग मिलावे,
नृत्य महीं नर्तकी, धरी चतुराइ चलावे;
प्रेक्षकने परिपूर्ण, उरे आनंद भरे ज्यां,
कितु भेद कमनीय, अमित गुणीओ उच्चरे त्यां. १४९

देशीकार.

गौडादिक शुभ देश, परत्वे संप्रदाय सम,
नेहे करवुं नृत्य,ताललय संग अनुपम;
देश रीति अनुकूल, नृत्यने ठाठ ठरेले,
देशीकार विचार, भेद त्यां मात्र भरेलो. १५०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

निजायत.

नृत्य महीं नर्तकी, गान करती शुभ गाथे,
हस्त चलावी करे, द्रष्टि सुंदरता साथे;
भावभरित द्रष्टिए, करे वश सभा सर्वने,
भव्य निजायत भेद, कहे गुणी तजी गर्वने. ९९१

उल्लास संग.

त्वरित ताल संघात, उछाळे अंगोरमणी;
अभिनव रसभर देह कान्ति करी बमणी तमणी;
नाची खेंचे नेण, प्रेक्षकोनां परिपूरण,
अनहद मुदप्रद भेद, एह उल्लास संग गण. ९९२

धसक.

स्नेहे कर कमनीय, करी कुच उपर धारण,
भाव बतावे भला, कंचनी काम वधारण;
प्रेक्षकनां मन नृत्य, निरखी बनी वारि वहे छे,
ललित लास्यनो भेद, रसिक जन धसक कहे छे. ९९३

भाव.

गाये नर्तकी गीत, जहां नृत्यानुसारे,
मधुर नृत्य लययुक्त, विलास विशेष वधारे;
प्रबल प्रेक्षको तणा, बनेछे खचित खेद हर,
गुणीओने गरकाव, करेछे भाव भेद वर. ९९४

सोपहास्य.

चारी आदि नृत्यना, अंग रचि भयहर भावे,
अंग अने प्रत्यंग, चलित करी रस उपजावे;
वाद्य गीतनो संग, कदी छोडे नहीं क्षणभर,
नयनाकर्षक नृत्य, सुखद ए सोपहास्य वर. ९९५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

संघतलय.

संकोचन करी नृत्य, नृत्यमां नर्तकी नमणी,
लय संगे मळी करे, नृत्य रागेथी रमणी ;
प्रेक्षकने अंतरे, अमित आश्चर्य उपावे,
संघतलय ए भेद, भलागुणीओने भावे. ९९६

ढाल.

कमलपत्रमां मंदमंद, जळबिन्दु चाल,
एज रीत नर्तकी, अंग निज चलवे ढाले;
प्रेक्षकनुं मनहरण, करे नृत्यमां सुनारी,
भलो लास्यनो भेद, ढाल त्यो उरमां धारी. ९९७

छदा.

भ्रकुटि चडावी, नेत्र तणा खुणाथी खास,
चंचलताथी जुए, करीने भाव प्रकाश ;
नाचे नमणी रीत, गीत गाये सुखदायक,
सुभग भेद लास्यनो, छदा कहे छे गुणी लायक. ९९८

अंगहार.

रोळाव्रत.

सुंदरताथी शरीर, नमावी नाभि स्पर्शे,
चरण आदि धनु तुल्य, वक्र अंगो करी हर्षे ;
ताल संग मळी नृत्य करे शुभ भाव प्रकाशी,
अंगहार ए भेद, कहे नृत्यना विलासी. ९९९

लंघित.

नृत्य महीं वाद्यनी, गतिना खंड विचारी,
नृत्य करे लइ विराम, त्यां त्यो लंघित धारी ;
मंद हास्य मन हरे, जहां नर्तकी नाचे,
विहस भेद वर थाय, रसिक निरखीने राचे. ९६०

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

नीकी अने नमनिका.

गीत वाद्य लय ताल, संग मळी नित्य नर्तकी;
सावधानीथी नृत्य करे ते मानो नीकी;
स्थान स्थानमां अखेद, अंग नमावतां भाळो,
कठिन भेद नृत्यना, करतीं नमनिका निहाळो. ९६१

शंका अने वितड.

निर्लज्जताथी अंग, बतावी फरी जरी ढांके,
उंचकावे उर उभय, जोइ, शंका जन छाके;
स्वभावथी सुखरूप, चारी स्थानक ज्यां भासे,
कठिन नृत्यना अंग, वितड त्यां पूर्ण प्रकाशे. ९६२

गीत वाद्यता अने निर्वन.

वाद्य तणी लय संग, ग्रही गीताक्षर गाये,
नयनाकर्षक नृत्य, गीतवाद्यता गणाये;
फरे मंडलाकार, हस्तचारीना करणथी,
प्रबंध बोल प्रमाण, नृत्य करती निर्वनथी. ९६३

थरहर अने स्थापना.

कपावी पद कलित, विलासथी भुजा हलावे,
नृत्य करे नेहथी, भेद थरहर त्यां भावे;
मुख मिठाश मनहरण, अंग राखी शुभ रीतें,
उभी रहे करी नृत्य, स्थापना पेखो प्रीते. ९६४

सौष्टव अने स्नुवा.

सुंदरताथी चारु, चार अंगो चमकावे,
शरीर नमावे सम, नृत्य सौष्टव सुख छावे;
डोले दीपक ज्योति, जेन अति हळवे वाये,
डोलावे त्यम अंग, नृत्यमां स्नुवा सदाये. ९६५

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

मस्तृणल अने उपार.

मुग्धा नर्तकी ज्हां, स्नेह युत रसभर रीते,
रचे द्रष्टि करीं हस्त, मस्तृणल पेखो प्रीते;
नर्तकी ज्यां नृत्यांग, प्रथम प्रगटेला करतां,
पाछळ प्रगटे अधिक, नाम त्यां उपार धरतां. ९६६

अंगानंग अने अभिनय.

अंगहार नृत्यना, मेळवी करणो संग,
नाचे तांडव नृत्य, एह छे अंगानंग;
हस्त आदि अंगथी, हस्त करणादि रचाये,
प्रगटे नृत्ये भाव, एह अभिनय कहेवाये. ९६७

कोमलिका अने मुखरी.

ज्हां नर्तकी तणी, क्रिया कोमलता वाळी,
जोइ वधे अनुराग, लिओ कोमलिका भाळी;
छेकापन्हव युक्त, कथन कही नर्तकी नाचे,
मुखरी भेद महान, जोइ सहु रंगे राचे. ९६८

नृत्य वृक्ष.

छंद छप्पय.

चारु चरणना भेद मूल, कटि मध्यभाग भण,
हस्त भेद डाळीओ, भ्रकुटि द्रग ग्रीवा पत्र गण,
हाव भाव सुकटाक्ष, पुष्प स्मित केरां सुंदर,
अविलोकी आनंद प्राप्ति, फल त्यो मुद मंदिर;
शाम्ब शिवाथी प्रगटीयुं, मन हरनार मुदाम छे,
हरण अमंगल अहरानिश, नृत्यवृक्ष नथुराम छे. ९६९

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

विज्ञाप्ति.

दोहा.

सुखद सार संगीतनो, रच्यो रसिकने काज,
दोष दूर करी गुण ग्रहो, स्नेहे सुज्ञ समाज. ९७०

छंद मनहर.

रचाया छे गद्य मांहि, संगीतना ग्रन्थ घणा,
याद रहेवुं अशक्य, विगते विचारीने,
गद्य थकी पद्य कंठे सहज करी शकाय,
एटलाज माटे श्रम आ वडो स्वीकारीने;
थाउंछुं निवृत्त आज, आयुनो अमूल्य वख्त,
केटलोक आज ग्रन्थ ग्रथने गुजारीने,
संगीतना मार्ग मांहि अमित अजाण छतां
दोड्यो नथुराम आम हैये हाम धारीने. ९७१

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

शुद्धिपत्र.

पृष्ट.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२	१३	उचरे	उचारे
२	१६	कीध	कीधा
४	१९	नीकळवा	नीकळवा
५	१	ओज, सह	ओजसह
६	१२	पेखी	पेखो
७	४	पूसे	पूरो
७	८	पवन	पावन
७	१०	स्थन	स्थान
७	११	वोपट्	वौपट्
७	१७	दाडी	दाडो
८	१०	निय	नित्य
९	२०	हले	दले
१०	१	तूतीय	तृतीय
१०	२	ज्ञानरूपनुं	ज्ञान रूपनुं
११	१	आदि	आदि
११	६	परमात्मा	परमात्मा
११	७	शुभग	सुभग
११	१५	मध्ध	मध्य
११	२०	ब्रह्म अव ारणी	ब्रह्मअवतरणी
१३	८	नगने	रागने
१३	१०	धृतिधी	धृतिथी
१३	११	आदिमां	आदिमां
१४	७	उतरे छे	उतरे छे
१४	८	सभ	सम
१४	१७	छे	×
१४	१७	अष्ठमी	अष्टमी

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४	१७	नान	नाम
१४	१७	यशस्वि नी	यशस्विनी
१४	२०	अलम्लुशा	अलम्बुशा
१५	८	क ळ	काळ
१५	१०	क ल	कांळ
१५	१७	अनाहद	अनाहत
१६	५	शुति	श्रुति
१६	१०	वप्तनार	वसनार
१६	१८	अग्निन	अग्निना
२१	१६	कु'	कुल
२२	४	रवर	स्वर
२३	१९	नथुरम	नथुराम
२४	११	क्षात्रि	क्षात्र
२४	१२	वतना	धैवतना
३०	६	अतिकाकली	अतिकाकर्ली
३२	१४	रहेता	रहेतां
३२	१४	रोद्री	रौद्री
३३	२	श्राति	श्रुति
३३	१९	श्राति	श्रुति
३४	१	श्राति	श्रुति
३४	१०	ठेर	ठरे
३७	६	श्रुतिं	श्रुति
३७	१०	धरी	धर्री
३९	१०	मघ्यय	मध्यम
४०	१२	मध्मय	मध्यम
४४	१२	जणो	जाणो
४४	१३	अणे	आणो
४५	११	ए	ए कहॉए

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४५	१३	मन्द्रस्थाननी	मन्द्रस्थाननो
४८	९	चह	चाह
४८	१०	रवर	स्वर
४९	१२	स्वने	स्वरने
४९	१३	उलटक्रमे	उलटक्रमे
४९	१४	मुदमंदिर	मुदमंदिर
५०	१७	तनजो	तजजो
५१	१२	अन्यना	अन्यनां
५१	१३	नि ाद	निषाद
५२	५	अभिरुद्रता	अभिरुद्रता
५४	५	मूर्छना माहे	मूर्छनामांहि
५४	१३	असग्निष्टोम	असग्निष्टोम
५५	९	ग्रा ानी	ग्रामनी
५५	१४	कहेवाय	कहेवाये
५६	५	उच्चरुं	उच्चारुं
५६	९	प्रकशी	प्रकाशी
५६	१२	न नि	नविन
५६	१४	पुष्टि त	पुष्टिकृत
५६	१७	ग्राम ां	ग्रामनां
५८	३	जन्मे छे	जन्मे छे
५८	६	अथवर्णथी	अथर्वणथी
५९	९	अरोह	आरोह
६०	११	स्थइ	स्थाइ
६१	१०	पट्ट	पट्ट
६१	१०	विचा	विचार
६१	११	छ	छे
६१	१३	म ते	मते
६१	१३	सात ाा	सातना

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
६१	१३	नि य	नित्य
६२	६	स्था न मां	स्थानमां
६२	९	जे	जो
६४	६	वद नां	वदतां
६८	७	अभं ।	अभंग
६८	८	गणा ।	गणाय
६९	९	दीर्व	दीर्घ
६९	९	उच्चर	उच्चार
७०	४	रवर	स्वर
७०	७	वंजे	बीजो
७०	७	र व र	स्वर
७०	९	स र	स्वर
७६	१०	ग ये	गाये
७६	१५	व । नो	वर्णनो
७६	१६	सि । र	स्थिर
७७	८	अ ठ ने	आठने
७७	११	म न ह र	मनहर
७७	११	मन्द्राम्त ुं	मन्द्रान्तनुं
८२	२	व र	वार
८५	९	ह्लादमान	ह्लादमान
८७	३	महवाज्र	महावज्र
८८	९	लघु	लघुं
९१	३	रवर रचना	स्वर रचना
९१	५	थय	थाय
९१	८	जण	जाण
९२	१०	स त	सप्त
९२	१०	य ु	वसु
९९	६	वि िथी	विश्विथी

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.		Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ट.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
९५	१७	रवर	स्वर
९८	१३	ज्यांहां	ज्यहां
१००	६	पर्वोक्त	पूर्वोक्त
१००	८	सग्रश्चुं	संग्रहुं
१०२	११	सं गा त	संगीत
१०४	८	कां ड र णा	कांडारणा
१०८	१८	नीच	नीचे
११३	९	गुणींने	गुर्णीने
११४	९	रवर	स्वर
११४	१०	चेसठ	चोसठ
११४	१२	उपत्रण	उपावण
११६	७	धैवती	धैवता
११७	७	विक्रत	विकृत
११७	१०	विकत	विकृत
११८	४	जाति ।।	जातिना
११९	१	पाडजी	पाडजी
११९	१०	रवतगांधार्से	रक्तगांधारी
११९	१६	रनेहे	स्नेहे
१२०	१	रस भर	रसभर
१२०	१९	ग तां	गातां
१२२	२	मूर्छ ॑ ा	मूर्छना
१२२	११	पाड ा नु	पाडवनुं
१२२	१२	ओड ा	ओडव
१२२	१३	निपाद्	निषाद
१२२	१५	सुखनिवि	सुखनिधि
१२२	१८	अठयावींसे	अठयावीशें
१२३	६	न्यस	न्यास
१२३	११	पाडव	पाडव
१२४	७	निरखीए	निरखीए

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१२६	७	ज तिमां	जातिमां
१२६	९	हा॑	हानि
१२७	१५	पाडव	षाडव
१२८	५	ग्रह	ग्रह
१२८	६	रि । भ	रिषभ
१२८	७	रि ˉ भ	रिषभ
१२८	८	अटकग	अष्टकला
१२८	१०	अ । न्यस	अपन्यास
१२८	१२	नथु । ।	नथुराम
१२८	१२	ग ।	नव
१२८	१३	सनचु	सरखुं
१२९	१४	गुणीयो	गुर्णायो
१२९	१७	धरी	थारी
१३०	१२	गुर्णा	गुणी
१३१	९	स्वरोमधी	स्वरोमधी
१३३	११	अथमागधी	अर्धमागधी
१३३	१	कला ां	कलानुं
१३३	८	वर्धनानक	वर्धमानक
१३४	८	गुणीयो	गुर्णायो
१३४	११	तालपाण	तालप्राण
१३४	१५	पष्टग	पष्टम
१३५	५	वींधता	वींधतां
१३५	१७	लेख । य	लेखाय
१३६	७	वाल	काल
१३६	१७	ध्रु । ने	ध्रुवने
१३८	९	ए क	एक
१३९	४	व ाणार्धे	वर्पणार्ध
१३९	८	द्वितो ।	द्वितीय

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध
१३९	८	सुखदगग	सुखदगण
१३९	९	ना ।	नाम
१३९	९	भे । युत	भेदयुत
१३९	९	भा ठ	भाळ
१३९	१०	वाद्य ।	वाद्यने
१३९	१३	विचारीने	विचारीने
१४०	२	स शब्दनो	सशब्दनो
१४०	८	अंगुलीओ	अंगुलीओ
१४०	१६	अंगुली	अंगुलि
१४१	७	सुखमल	सुखमाल
१४२	१२	चवका मा	चचकारमां
१४२	१३	मरुत	मारुत
१४२	१६	विराम द्रु । नुं	विराम द्रुतनुं
१४२	१९	स्व रूप	स्वरुप
१४३	३	म ा ।	मात्रा
१४३	३	गा ।	गाय
१४३	४	दिय	दिव्य
१४४	४	भवा ी	भवानी
१४३	१०	उतम	उत्तम
१४३	१०	ठा ।	ठाम
१४३	१९	उतति	उत्पत्ति
१४४	२	स्व ल्प	स्वल्प
१४४	७	बुक्कुट	कुक्कुट
१४४	७	अर ो	अरपे
१४४	७	मे द	मोद
१४४	७	म न	महान
१४४	८	रा ी ने	राखीने
१४४	९	प्य । र	प्यार
१४४	९	स्व ं प	स्वरूप

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
१४४	११	अर्धद्रु ा	अर्धद्रुत
१४४	१२	अणु द्रुत	अणुद्रुत
१४४	१४	अर्धमात्रि मे	अर्धमात्रि ने
१४६	३	सामोद्भव	सामोद्भव
१४८	७	शुद्र	शूद्र
१४९	२	खें च ये	खेंचाये
१४९	१९	अ दि	आदि
१४९	१९	न म	नाम
१५४	११	गुणी	गुर्णी
१५५	७	द्वि ि य	द्वितीय
१५५	७	कहे ा य	कहेवाय
१५६	६	त लनो	तालनो
१५९	३	उमग	उमंग
१६०	८	गुणीमां	गुर्णीमां
१७२	३	त ल	ताल
१७३	९	द्र त	द्रुत
१७५	१२	त्र मेथी	क्रमेथी
१७५	१३	शे भ तो	शोभतो
१७६	१२	निभवता	निभावता
१७९	८	वर्णभिन्नमां	वर्णभिन्नमां
१८८	१९	लघ	लघु
१९२	१९	चित्त	चित्त
१९३	११	अते	अंते
१९४	३	ल घु	लघु
१९४	१५	द्र ा	द्रय
१९५	४	केल्याण म ां	कल्याणमां
१९८	१७	द्रव द्रु ा	द्रय द्रुत
२०३	३	वि ा म	विराम
२०४	२	दोह	दोहा

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ट.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
૨૦૪	૧૩	दाहा	दोहा
૨૦૫	૭	णक्षल	लक्षण
૨૦૫	૧૪	मधेनु	कामधेनु
૨૦૯	૯	रवर	स्वर
૨૧૦	૧૨	गुणीओ	गुणीॅओ
૨૧૧	૩	ं णो	तणो
૨૧૧	૧૮	वि कार	विकार
૨૧૨	૧૦	गुणीनाह	गुणीॅनाह
૨૧૩	૧૪	काशक	कौशिक
૨૧૩	૧૪	पछी	पछीॅ
૨૧૯	૨૧	विमापा	विभाषा
૨૨૨	૬	धरी	धरीॅ
૨૨૪	૧૬	मॅल्हारी	मॅल्हारी
૨૨૫	૨	रोलवत	रोलावृत्त
૨૨૫	૧૭	गणीए	गणीॅए
૨૨૫	૧૮	भणीए	भणीॅए
૨૨૭	૨૧	.सं ा र ण	संपूरण
૨૩૦	૩	रवर	स्वर
૨૩૦	૯	आदि	आदि
૨૩૦	૧૯	वे	वे
૨૩૧	૮	जाणीए	जाणीॅए
૨૩૧	૯	मूर्छना वान्	मूर्छनावान्
૨૩૪	૪	वॅवत	वर्जित
૨૩૫	૧૭	र म र	स्मर
૨૩૫	૧૮	मव्य	मध्य
૨૩૫	૧૯	समय र	समयमां
૨૩૬	૪	काकली	काकलीॅ
૨૩૬	૨૦	गु णी ओ	गुणीॅओ

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S.

Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ट	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध
२३७	२०	सुखकर	सुखकार
२३७	२१	कुंचुकी	कंचुकी
२३९	९	जाति	जाति
२३९	१७	षडज	षड्ज
२४०	५	आण	जाण
२४३	९	ग ये	गाये
२४३	२०	म ध्यम	मध्यम
२४३	२२	म ्छा	मूर्छा
२४५	४	गुर्णा हंस	गुर्णाहंस
२४५	५	रा	राग
२४६	२१	प्री ा	प्रीत
२४८	१५	दैबत	दैवत
२४८	१६	द्रष्ठिर्थी	द्रष्टिर्थी
२४८	१९	रंगान्तिका	रगन्तिका
२४९	२०	धॅ	धॅ
२५०	५	र व र	स्वर
२५१	५	तपरॅ ीओने	तपस्वीओने
२५१	१४	दा ह रा	दोहरा
२५२	१२	वाजत	वर्जित
२५२	१३	रागणी	रागिणी
२५२	१७	गुणायो	गुर्णायो
२५३	६	संधवी	सैंधवी
२५३	९	ध व त	धैवत
२५३	१५	ा गिणी	रागिणी
२५६	१५	हिंटोलनी	हिंदोलनी
२५८	१९	तु र ष्क	तुरुष्क
२५९	२३	गैरव	भैरव
२६१	१७	प्रगटय	प्रगटाय

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
२६७	२३	ग न्धार	गान्धार
२६७	२३	अ नंद	आनंद
२६८	२१	धै । त	धैवत
२६८	२२	घ	ध
२६८	२३	उद्ग्रह	उद्ग्राह
२६९	१९	संभाळ ।।	संभाळवा
२७०	१०	र व र	स्वर
२७२	१३	र व र	स्वर
२७६	१९	तण	तणे
२७९	६	सो र टा	सोरठा
२८३	१५	।व हंगड	विहंगड
२८४	१४	हारगीत	हरिगीत
२८५	१०	हारगीत	हरिगीत
२८५	१७	गारी	गौरी
२८७	२०	र व र	स्वर
२९२	३	भंगल	मंगल
२९२	१०	अवनिमा	अवनिमां
२९६	१०	पड्ज	षड्ज
२९९	२०	वसनारी छे	वसनारी
२९९	२४	ल । मे	ले छे
२९९	२५	नि ष द	निषाद
२९९	२६	ष डव	षाडव
३०४	९	(ध्यान)	(ध्यान)
३०८	३	(ध्यान	(ध्यान)
३१०	१७	उरमाहि	उरमांहि
३१२	२१	रवानुं	रवानुं
३१५	२४	. स रण	सम्पूरण
३१६	१७	ती व्र	तीव्र

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ट.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३१७	२१	क ट ली क	केटलीक
३२२	८	शुब्द्	शुद्ध
३२३	४	द्ध	शुद्ध
३२४	२३	स र्‍	सर्व
३२७	७	कोइक	कोईक
३२८	२२	षड्ज	षड्ज
३२९	२२	क मल	कोमल
३३१	२	सभ्पूर्ण	सम्पूर्ण
३३१	६	सा र ग	सारंग
३३६	१	कान्रानायकी	कान्हरानायकी
३३९	५	मध्यग	मध्यम
३३९	२२	उद्बुष्ट	उद्घुष्ट
३४१	२१	त्रि स्थान	त्रिस्थान
३४२	१७	दूरथी	दूरथी
३४९	१	कता	कम्पिता
३५०	१५	तंत	तंते
३५२	१९	नक्कां	नक्कों
३५७	३	थाय	थाये
३५७	२२	िचारी	विचारी
३५८	१७	की ो	कीजे
३६०	२	ध्लुत	प्लुत
३६०	१०	मोझर	मोझार
३६०	१३	भिन भिन ा	भिन्न भिन्न
३६०	१७	रवर	स्वर
३६०	१९	स्थान न ा	स्थानना
३६०	२०	यां	त्यां
३६०	२२	वर	वार
३६१	३	जहा	जहां

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ट.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३६१	२३	रवरो	स्वरो
३६२	३	पूण	पूर्ण
३६२	४	रवरोनो	स्वरोनो
३६२	१०	वस	वास
३६२	२१	अधरमध्य	अधरमध्य
३६३	४	जुगत	जुगतें
३६३	१०	राचत	रचित
३६३	१४	लघुं	चार लघुं
३६३	१८	करा	करी
३६३	२४	नु	अनुबन्ध
३६४	९	उद्रक	उद्रेक
३६४	२२	ल न	लघुनो
३६४	२४	अंगुलि अप्ट	अंगुलि अष्टथी
३६४	२४	उच्चर	उच्चार
३६५	३	तण ा	तणा
३६५	८	करा	केरा
३६५	१०	न ी	नथी
३६५	२२	उचार	उच्चार
३६५	२७	वजवे	वजावे
३६७	३	अव ा	अवर
३६८	१३	भ ी	भरी
३६८	१८	निन्न	भिन्न
३६९	६	ग म	गम
३७०	१	वाद्य ो	वाद्यनो
३७०	२	थव वद्य द	थवा वाद्यविद
३७०	४	ेद	भेद
३७०	५	ध ुं	धातुं
३७०	५	भ ेंथीं	भावेंथीं

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३७०	६	स्थि रज	स्थिरज
३७०	६	मवैने	मवैने
३७०	७	शुष्क वाद्यना	शुष्कवाद्यना
३७०	९	वीण केरो	वीणा केरो तार
३७०	१०	वरीने	करीने
३७०	१०	स्वर	स्वर
३७०	११	बिन्दु	बिन्दु
३७०	१३	फरी एजस्वर मांहि	फरी एजस्वरमांहि
३७०	१५	व्हल	व्हाल
३७०	१५	वजवीए	वजवीए
३७०	१६	शुष्क	शुष्क
३७०	२१	अति	अति
३७१	१	वाकर कल	वाकर कल
३७१	२	वाद्यम	वाद्यमां
३७१	४	जति	जाति
३७१	५	तणा	तणा
३७१	६	वार्तिक मार्गथी जाति	वार्तिक मार्गथी जाति
३७१	६	मध्यमाने धरी चित्ते	मध्यमाने धरी चित्ते
३७१	८	लयेथी	लयेथी
३७१	९	सदा	सदा
३७१	१०	वज	वजवे
३७१	११	शुक	शुष्क
३७१	१४	षट् पितापुत्र द्रय	षट्पितापुत्रद्रय
३७१	१५	कनि	कनिष्ठ
३७१	१६	तल	ताल
३७१	२३	वाद्ये स्थिर	वाद्ये स्थिर
३७२	११	प्रम	प्रेम
३७२	१६	मातमा	मातमो

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ट.	लींटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३७२	१७	अवरख	अवरेख
३७२	२८	अ	अर्थ
३७३	११	स्वरमडल	स्वरमंडल
३७३	१२	काय	कोय
३७३	१५	उ ष्ट	अष्ट
३७३	१६	ध क री ख	बंध करी राख
३७३	१७	वर	स्वर
३७३	१८	नहा	नहीं
३७३	१९	वि ा र	विचार
३७३	२१	विचि ँ ता	विचित्रता
३७३	२२	द र ज	दराज
३७३	२३	मे टा	मोटा
३७३	२४	र रना	स्वरना
३७३	२६	व म हस्त व्हार	वाम हस्त व्यवहार
३७४	२	तडन वरतां तर	ताडन करतां तार
३७४	५	वीण	वीणा
३७४	८	घोडव	घोडच
३७४	८	त र म ां	तारमां
३७४	१०	र व र	स्वर
३७४	१३	कष्ठ ुं	काष्ठनुं
३७४	१५	स ग	साग
३७४	१८	कष्ट	काष्ट
३७४	१९	कमाने घ ण	कमाने घर्षण
३७४	२०	स्तरतां	स्मरतां
३७५	१०	त र	तार
३७६	१०	पं च गुलीं	पंचांगुलीं
३७९	२४	टाळ	ढाळ
३८०	१६	लगावज	लगावजे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ट.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
३८२	१४	दोदरा	दोहरा
३८७	१८	हे	लहे
३८८	१८	गखता	रेखता
३९४	४	भेदा	भेदो
३९४	१६	ा म	वाम
३९५	२३	ट	प्रगट
३९६	३	रखलित	स्खलित
४००	१४	भद	भेद
४०१	२१	रोळावत	रोळावृत्त
४०२	१६	कुचुम्भिणी	कुचुम्बिणी
४०२	२३	रोळावत	रोळावृत्त
४०३	१६	कवित	कलित
४०४	२४	पाठक्षर	पाठाक्षर
४०४	२४	भिलावी	मिलावी
४०५	१०	हरत	हस्त
४०६	४	त्रिगुण ना	त्रिगुणाना
४०६	१४	षष्ठम भेद	षष्ठम भेद
४०७	१४	अनुपम	अनुंपम
४०८	१०	उद्ग्र हनो	उद्ग्राहनो
४०९	१४	प्रबंध	प्रबंधनी
४०९	१९	सद ा	सदाय
४०९	१९	ध्रुवा माहि	ध्रुवामांहि
४१०	२	नृत्यम	नृत्यमां
४१४	३	चोसट	चोसठ
४१४	२०	ग्रगट	प्रगट
४१६	१०	ठरीए	ठरींए
४१७	६	प्रसेद्ध	प्रसिद्ध
४२०	१२	चच्रतपुट	चंचतपुट

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ट.	लींटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४२१	८	जोडा व दन	जोडावादन
४२१	१६	द्धय	द्वय
४२२	१२	चालीश	चालीॅश
४२३	१७	ढवस	ढवस
४२४	१२	सुखो	मुखो
४२८	१६	खेच	खेंच
४३०	६	काच्ट	काष्ट
४३१	१८	अष्टा दश	अष्टादश
४३१	२१	यादव पतिना	यादवपतिना
४३४	१	व ज व र्ती	वजवर्ती
४३५	२३	अल ।	अलग
४३५	२४	श्राति	श्रुति
४३५	२६	श्रति	श्रुति
४३६	७	वंसी	वंसी
४३६	१५	वंसी	वंसी
४४०	१८	वातु	धातु
४४३	४	चेड	चोड
४४८	६	पड्मुख	पड्मुख
४५१	३	गुणगह	गुणगेह
४५१	१५	हरनर	हरनार
४५६	३	घुघरीॅ	घुघरीॅ
४५७	२३	र त न	स्तन
४५८	४	दो	दोहा
४५८	६	चित्तें	चिॅत्तें
४५९	१५	व जु	बाजुं
४५९	१६	दे ।	देव
४५९	१९	म य	मध्य
४६०	१०	रोला ८ त्त	रोलावृत्त
४६०	२६	मनाणे	प्रमाणे
४६२	८	नृन्यकर	नृत्यकर
४६५	९	नत्य	नृत्य
४६५	११	पाश्चक्रान्त	पार्श्वक्रान्त

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust

पृष्ठ.	लीटी.	अशुद्ध.	शुद्ध.
४६९	११	विकट	विकट
४६५	११	विद्युद्भ्रान्त	विद्युद्भ्रान्त
४६५	१४	अर्धसूचि	अर्धसूचि
४६६	२४	॰ णा यें	गणावे
४६७	१६	विर	विरह
४६८	२	रोळावृत	रोळावृत्त
४६९	६	रोळावृत	रोळावृत्त
४६८	१७	प्रच्छेक	प्रच्छेदक
४६९	५	अभिलपा	अभिलाषा
४६९	१६	क ा	कवे
४६९	१७	न र्चा	नार्चा
४६९	२५	भ षण	भाषण
४७०	६	त ा रि त	त्वरित
४७०	१०	प्रक्षकनां	प्रेक्षकनां
०७०	११	व्वार्पायो	व्यार्पायो
४७०	१७	कर्णा भू ा ण	कर्णाभूषण
४७०	१८	श्रं ार	श्रंगार
४७०	२१	द्रुतादि	द्रुतादि
४७०	२४	सुचालथा	सुचालथी
४७१	४	दरश वे	दरशावे
४७१	७	सुंदरत	सुंदरता
४७१	१७	उभ ा	उभय
४७१	२४	नृसने	नृसनो
४७१	२४	ठरलें	ठरलो
४७२	१	ानजायत	निजायत
४७२	७	अंगोर मणी	अंगो रमणी
४७२	२९	सोपहास्थ	सोपहास्य
४७३	७	चाल	चाले
४७४	१५	नृस	नृस
४७४	१७	कपावीं	कंपावीं
४७४	१९	मिट श	मिठाश
४७४	२२	ननावे	नमावे

P. P. Ac. Gunratansuriji M.S. Jin Gun Aaradhak Trust